भारत–बंगलादेश संबंध (1990 से वर्तमान तक)

कोटा वि"वविद्यालय, कोटा की
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत
भाोध प्रबन्ध

भाोध निर्दे" ाकः
डॉ. बी. एल. सैनी
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
हाल–पोस्ट डॉक्टरेल फैलो
राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान वि" वविद्यालय
जयपुर

प्रस्तुतकर्ताः
योगेश सोनी

राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय,बून्दी
वर्श–2015

डॉ. बी. एल. सैनी
व्याख्याता राजनीति विज्ञान
पोस्ट डॉक्टेरल फैलो
राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

पता– 70, चन्द्रकला कॉलोनी, दुर्गापुरा
जयपुर–302018 राजस्थान
फोन–9413313344
ईमेल-**sainibl@gmail.com**

निर्देशक प्रमाण पत्र

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि योगेश सोनी ने प्रस्तुत भाोध प्रबन्ध, ''**भारत–बंगलादेश संबंध (1990 से वर्तमान तक)**'' मेरे निर्देशन में लिखा गया है। इनका यह कार्य सवर्था मौलिक तथा स्तरीय है। मैं इसे कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ।

योगेश सोनी ने यथासंभव स्त्रोतों की सहायता से अपने दायित्व का निर्वहन किया है। इस श्रमसाध्य और जटिल विषय को इन्होंनें सरल व सटीक ढंग से विश्लेषित किया है। योगे" ा सोनी ने वर्ष में 100 से अधिक दिन मेरे पास आकर निर्देशन प्राप्त कर उक्त कार्य को पूर्ण किया है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ. बी. एल. सैनी)

प्राक्कथन

भारत में वैदे" िक संबंधों के बारे में प्राचीन काल से ही राज व्यवस्था में चिंतन का प्रमाण मिलते हैं। एक देश को दूसरे देश के साथ संबंधों के निर्वहन के लिये प्राचीन भारतीय चिंतन में मनु, कौटिल्य, भाुक्र आदि के द्वारा अपने चिंतन और सिद्धांतों में वि" ाद् रूप से चर्चा की गयी है। ऐसे सिद्धांत और नीतियॉ वर्तमान के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में विदेश संबंधों अथवा द्विपक्षीय संबंधों का आधार है। देश के अन्य देशों के साथ संबंधों के निर्वहन को इतना अधिक महत्वपूर्ण माना गया है कि भारत के संविधान तक में राज्य के नीति निदे" ाक तत्वों में विदेश नीति तथा अन्य देशों के साथ निभाये जाने वाले संबंधों, संधियों, समझौतों के प्रति वचनवद्धतता व्यक्त की गयी है।

बांग्लादे" ा वैश्विक जगत में एक नया देश है जिसका इतिहास आधी भाताब्दी से भी कम है। भारतीय उपमहाद्वीप से औपनिवे" िक सत्ता के बहिर्गमन के पश्चात् भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ था। यह विभाजन की योजना जिन्ना के द्विराष्ट्र सिद्धांत को पुष्ट करते हुये हिन्दु बहुल क्षेत्र भारत के रूप तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान के रूप में वर्ष 1947 में अस्तित्व में आये थे। पाकिस्तान के दो भाग रहे जिसमें आज का बांग्लादे" ा पूर्वी पाकिस्तान के रूप में सामने आया था।

बांग्लादे" ा के उदय मे भारत की अहम भूमिका रही है। बांग्लादे" ा पि" चमी पाकिस्तान के प्रति असंतोश के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया। पि" चमी पाकिस्तान की दमनकारी व अत्याचारपूर्ण नीति के कारण पूर्वी पाकिस्तान में विद्रोह हुआ। एक खुनी संघर्श के बाद 16 दिसम्बर 1971 को पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादे" ा के रूप में उदित हुआ। बांग्लादे" ा के उदय में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी व पूर्वी पाकिस्तान के आवामी लीग के नेता भोख मुजीबुर्र रहमान ने अपना योगदान दिया। बांग्लादे" ा के उदय में भारत को यह आभास हुआ कि उसे एक अच्छा पड़ौसी मित्र राश्ट्र मिल जायेगा तथा दोनों तरफ के दु" मन की जगह एक मित्र मिल जायेगा। अतः दोनो राश्ट्रो के मध्य द्विपक्षीय सम्बंधों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जायेंगी। बांग्लादे" ा का उदय 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान हुआ। 4 दिसम्बर 1971 से युद्ध प्रारम्भ हुआ जो लगभग 13 दिन तक चला। 16 दिसम्बर 1971 को भारतीय सैना प्रमुख जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के सम्मुख पाकिस्तान के लेफ्टिनेन्ट जनरल नियाजी ने 93000 सैनिकों के साथ रेसकोर्स मैदान मे आत्मसम्पर्ण किया।

प्रस्तुत काय के प्रेरक आदरणीय डॉ. बी.एल. सैनी व्याख्याता राजनीति विज्ञान पोस्ट डाक्टरेल फैलों राजनीति विज्ञान विभाग राजस्थान वि" वविद्यालय, जयपुर के प्रति लेखक श्रद्धानवत है जिन्होने भाोधकाल में सदैव उत्साहवर्धन किया, साथ ही उचित मार्गद" ाक के रूप में भाोध कार्य मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान वि" वविद्यालय जयपुर की आदरणीया डॉ. अल्पना पारीक के प्रति वि" ोश आभार जिनकी सतत् प्रेरणा व मार्गद" ान से भोध का कार्य सम्पूर्णतः सम्पन्न हुआ।

राजनीति विज्ञान विभाग राजकीय महाविद्यालय बून्दी के श्रद्धेय डॉ. जयराम दायमा के प्रति लेखक वि" ोश हार्दिक आभार व्यक्त करता है जिन्होने सदैव हर सम्भव सहयोग व सुझाव दिया।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय तलवास के व्याख्याता (अंग्रेजी) तथा परम मित्र गोवर्धन गोपाल सनाढ्य साथ ही भूगोल जगत से जुड़े मित्र दिने" ा भार्मा व्याख्याता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अलोद के प्रति आभार व्यक्त करता हूॅ। जिनके सामयिक सुझावों से भोध कार्य को गति मिलती रही ।

परम मित्र अरूण जैन, दिने" ा जैन, मधुसुदन टेलर का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूॅ। जिन्होनें समय–समय पर अपने अमूल्य सुझावों से मुझे लाभान्वित किया।

लेखक अपने पूज्यनीय पिता श्रीमान भवानीभांकर सोनी तथा माता श्रीमती भान्ति सोनी का चिरऋणी है जिनके वात्सल्यपूर्ण आ" ीर्वाद से यह भोध कार्य पूरा हुआ है।

अपनी जीवन संगीनी श्रीमती रेणु सोनी, अग्रज मुकुट बिहारी सोनी, अग्रजा संतोश सोनी तथा अनुज डॉ. श्रीनाथ सोनी तथा भतीजे पराग, अंकित, श्रेया" ा एवं जीजाश्री जगदी" ा प्रसाद जी, श्री बनवारी जी के अविस्मरणीय योगदान व स्नेहिल प्रेरणा से भोध प्रबंध को पुरा करने में निरन्तर ऊर्जा मिलती रही।

प्रस्तुत भोध प्रबंध को मुर्त रूप देने के लिए कम्प्यूटर एवं टंकण एवं ग्राफिक्स के लिए f" ाव कम्प्यूटर, बून्दी के सुनिल भार्मा के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूॅ।

योगे"ा सोनी

विषय सूची

अध्याय		पृष्ठ सं.
अध्याय– 1	परिचयात्मक	**1—37**
अध्याय–2	भारत–बांग्लादे" ा संबंधों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य	**38—64**
अध्याय–3	भारत–बांग्लादे" ा संबंधों में मुख्य बाधाऐं व समस्याऐं	**65—112**
अध्याय–4	भारत–बांग्लादे" ा संबंधों का सकारात्मक पक्ष	**113—157**
अध्याय–5	भारत–बांग्लादे" ा संबंधों मे प्रवासी बांग्लादे" ायों की समस्या	**158—189**
अध्याय–6	निश्कर्श	**190—200**
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची		**201—213**

अध्याय –1
परिचयात्मक

हमारे दे" ा भारत की सभ्यता वि" व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। यह 4000 से भी अधिक वर्शो से चली आ रही ह इसन अनेक साम्राज्यों का उत्थान व पतन देखा है और विभिन्न संस्कृतियों और धराहरों की अपने आप म समाहित किया है। इसलिए ही भारत की संस्कृति को कालजयी को संस्कृति कहा जाता है। विविधता में एकता हमारी संस्कृति की एक मुख्य पहचान है। सहिश्णुता और सांस्कृतिक विविधता ने दे" ा को धर्मनिरपेक्ष राश्ट्र का रूप दिया हैं जिसने वै" वक परिदृ" य में अपनी धाक जमायी है।

भौगोलिक दृश्टि से भारत दक्षिण एवं दक्षिणी पूर्वी ए" ाया के परिमण्डलों से आबद्ध ग्लोब के बड़े भाग पर स्थित है। विस्तार की दृश्टि से वि" व के सातवें स्थान पर है। देश का कुल क्षेत्रफल 32,287,263 वर्ग कि.मी. है।

प्राचीनकाल में भारत को आर्यवृत्त कहा जाता था जबकि ऋगवेद में आर्यो के प्रभुत्व वाले भाग को सप्त सैधव कहा गया है। बाद म आर्यवृत के स्थान पर भारतवर्श कहा जाने लगा। पुराणों मे इसे जम्बूदीप कहा गया है। युनानियों व रोमनवासियों ने भारत को इण्डिया नाम दिया। बाद में इण्डिया को भारत व हिन्दुस्तान कहा जाने लगा। संविधान ने हमारे दे" ा का भारत का इण्डिया माना है।

भारत एक विविधताओं वाला राश्ट्र है। भारत धर्म, जाति, भाशा, क्षेत्र, संस्कृति इत्यादि की दृश्टि से अनेक समूहों में विभाजित है। इन विविधताओं के बावजूद यहां पर एकता देखने को मिलती है। इसका मुख्य कारण है ''**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया**'' का अपना आद" ार माना है। यहां भौव, वैश्णव, हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई अनेक सम्प्रदाय के लोग निवास करते है। हालांकि समय–समय पर भारत में अनेक बाहरी और आंतरिक संकट आते रहे है लेकिन भारत के अस्तित्व को कोई भी चुनौती मिटा नही सकी है। भाायर इकबाल की यह पंक्तियॉ भारत के अनादि काल से अस्तित्व को पुष्ट करती है कि ''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी सदियों रहा है दु" मन द भोरे जमा हमारा''।

देश में बाहरो आक्रमणों के बाद से ही हिन्दु मुस्लिम समुदाय के मध्य तनाव की मुख्य चुनौती सामने आयी फिर भी दे” ा आज तक अखण्ड है। भारत को वि” व गुरू माना जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति ने अपनी छाप सभी जगह स्थापित की है। भारत के भौगोलिक और सांस्कृतिक परिवे” ा का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि राजनीतिक दृश्टि से भी भारत ने अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति मे सदैव मित्रता और सहयोग की नीति का पक्षधर रहा है। भाांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति सदैव भारत की रही है। भारत की आजादी के बाद भारत ने गुटो से निरपेक्ष रह कर अपने तथा सम्पूर्ण वि” व में भाांति की नीति का अवलम्बन किया है। आजादी के आन्दोलन से सृजित मूल्यों को हमने अपने संविधान में भी स्थान प्रदान किया है। संविधान का अनुच्छेद 51 जिसमें भारत ने अन्य देशों के साथ अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की वचनबद्धतता व्यक्त की है।[1]

दुनिया के सभी दे” ा अपनी भौगोलिक व राजनीतिक, आर्थिक स्थिति को ध्यान मे रखकर अपनी विदे” ा नीति का निर्धारण करते ह। भारत ने भी अपनी विदे” ा नीति मे इन बिन्दुओं का समावे” ा किया है। साधारण तरीके से समझने के लिए ऐसा माना जाये की एक राश्ट्र के दूसरे राश्ट्र के साथ सम्बधों का अध्ययन ही विदे” ा नीति के निर्धारिक तत्व है। आज हमारे दे” ा भारत की गिनती दुनिया के प्रमुख विकास” ील राश्ट्रों मे की जाती है। इसलिए भारत ने भी अपने राश्ट्रीय नोति की अभिवृद्धि को ध्यान मे रखते हुये अपने पड़ौसी दे” ाों व विभिन्न मित्र राश्ट्रों के साथ सम्बंध स्थापित करने के लिए अपनी नीति का निर्धारण किया है।

भारत एf” ाया महाद्वीप का एक मुख्य दे” ा है इसलिए भारत ने एf” ाया महाद्वीप के दे” ाों के साथ ही संबंधों की भाुरूआत की है। प्रारम्भ में अपने पड़ौसी दे” ाों के साथ ही संबंधों का निर्धारण किया जाना आव” यक है।

भारत ने अपनी विदे” ा नीति के निर्धारण में निम्नलिखित तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इन्ही तत्वों के आधार पर भारत अपने पड़ौसी दे” ाों के साथ सम्बंधों का निर्वहन करता आ रहा है।

(1) गुट निरपेक्षता।

(2) भाान्ति की विदे” ा नीति।

[1] भारत का संविधान, अनुच्छेद 51

(3) मैत्रीपर्ण सह अस्तित्व की नीति।

(4) विरोधी गुटों के बीच सेतु बंध बनाने की नीति।

(5) साधनों की पवित्रता की नीति।

(6) पंच" ाील पर जोर देने वाली नीति।

(अ) एक दूसरे की प्रादे" ाक एकता व अखण्डता की रक्षा
(ब) अनाक्रमण
(स) अहस्तक्षेप
(द) समानता व पारस्परिक लाभ
(य) भाान्तिपूर्ण सह अस्तित्व

भारत के पड़ौसी दे"ा

भारत अरब सागर, बंगाल की खाडो तथा हिन्द महासागर से घिरा है तथा उत्तर पूर्व मे इसकी सीमाओं को हिमालय पर्वत श्रृंखला श्रेत्र को निर्धारित करता है। भारत के पूर्व में बांग्लादे" ा, म्यामांर, पि" चम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान है। भारतीय सीमा के दक्षिण पूर्व तथा पूर्व की और सिन्धु नदी व ब्रह्मपुत्र नदी की सीमाऐ है। यह 2400 कि.मी. लम्बी है। इन्ही नदियों के बीच वाले भाग म नेपाल, भुटान है। समुद्री सीमा के आधार पर भारत का सबसे निकटतम पड़ौसी श्रीलंका है। दूसरा निकटतम पडोसी दे" ा इण्डोने" िया है जो निकोबार द्वीप समूह के दक्षिण में स्थित है तथा लक्ष्यदीप के दक्षिण में मालदोप स्थित है। इस प्रकार भारत के पड़ौसी दे" ाों में पाकिस्तान, बांग्लादे" ा, नेपाल, भुटान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, मालदीप आदि है।

भारत दक्षिणी ए" िया का सबसे भाक्ति" ााली राश्ट्र है। भारत ने अपने अन्तर्राश्ट्रीय संबंधो के संचालन हेतु दक्षिण ए" िया के विभिन्न राश्ट्र जो कि भारत के पड़ौसी राश्ट्र कहे जाते हैं, प्रारम्भ से ही उनके साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना के द्वारा पारस्परिक सहयोग द्वारा विकास का सूत्र अपनाया है।

प्रस्तत भोध प्रबन्ध की मुख्य विषयवस्तु भारत और बांग्लादे" ा संबंधों का वर्ष 1990 के बाद के विकास यात्रा का वि" लेषण कर संबंधों मुख्य उपलब्धियों और चुनौतियों को ज्ञात करना है। चूंकि यह विषय अत्यन्त जटिल है। किसी भी देश के पारस्परिक संबंधों के अध्ययन में सम्बन्धित दे" ाों के बीच में होने वाली ि" खर वार्ताओं, राज्य प्रमुखों की यात्राओं एवं यात्राओं के दौरान होने वाली घोषणाओं,

संधियों और समझौतों के आधार पर समीक्षा की जा सकती है। वर्तमान वैश्विक राजनीति में केवल राजनीतिक संबंध ही महत्वपूर्ण नहो है। इसके अलावा संबंधों का आर्थिक पक्ष भी महत्वपूर्ण हो गया है। दक्षिण एशिया की जनांकिकी संरचना में भारत और बांग्लादे" ा दोनों ही दे" ा जनाधिक्य अर्थात् आबादी के बोझ से जुझ रहें है। लाखों करोड़ों लोगों की जरूरतों को उपलब्ध स" ाधनों से पूरा करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। ऐसे में करोड़ों लोगों के विकास, रोजगार और उत्थान के लिये पड़ौसी देश अपने पारस्परिक अनुभवों, संसाधनों आदि का आदान–प्रदान कर सकते है।

बांग्लादे" ा भी भारत का एक पड़ौसी दे" ा है जो भारत के उत्तर में स्थित है। भारत बांग्लादे" ा की स्वतंत्रता से लेकर वर्तमान समय तक सहायता करता चला आ रहा है। भारत ने समय–समय पर बांग्लादे" ा की महत्वपूर्ण आव" यकताओं की पूर्ति की है। एक प्रकार से हम कह सकते है कि बांग्लादे" ा को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित करने मे भारत की अहम भूमिका रही है।

बांग्लादे" ा का निर्माण भारत–पाक युद्ध के दौरान 16 दिसम्बर 1971 को हुआ। भारत ही पहला दे" ा है जिसने दिसम्बर 1971 को बांग्लादे" ा को मान्यता दे दी। भारत की सेनाओं ने बांग्लादे" ा की मुक्तिवाहिनी से मिलकर 16 दिसम्बर 1971 को स्वतंत्र राश्ट्र बांग्लादे" ा की स्थापना करवायी। 4 दिसम्बर 1971 की भारत व पाकिस्तान के मध्य युद्ध भ्रुरू हुआ। 13 दिन के युद्ध के बाद पाकिस्तान के कमाण्डर लेफ्टिनेट जनरल नियाजी ने 93 हजार सिपाहियों और अधिकारियों के साथ भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी सेना के समक्ष भ्राम 4.30 बज 16 दिसम्बर 1971 की रेसकोर्स मैदान पर बिना भार्त समर्पण किया। लेफ्टिनेट जनरल नियाजी के द्वारा हस्ताक्षरित समपर्ण पत्र भारतीय लेफ्टिनेट जनरल अरोड़ा के द्वारा उसी दिन स्वीकार कर लिया गया और बांग्लादे" ा 9 माह लम्बे खुनी संघर्श के बाद अन्ततः एक राज्य के रूप मे जन्मा। इस प्रकार बांग्लादे" ा एक वास्तविकता बना और इसने भारत व बांग्लादे" ा के मध्य नये सम्बन्धों की भ्रुरूआत की जो आपसी सम्मान, सम्प्रभुता और सीमाबद्धता, आंतरिक मामलों मे अहस्तक्षेप, आपसी लाभ मे समानता के सिद्धान्तों पर आधारित थे।

द्विपक्षीय सम्बन्धों की पृश्ठभूमि

भारत के बांग्लादे" ा के सम्बन्ध किसी भी दक्षिण एि" ायाई पड़ोसी की तरह सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक एवं आर्थिक आदि विशयों के साथ जुडे है इसके अतिरिक्त बहुत कुछ है जो दोनों दे" ाों को एक सूत्र में बांधता है एक सांझा इतिहास, एक सांझी विरासत, भाशा, संस्कृति का मेल साहित्य, संगीत आर कला से प्रेम भारत के साथ बांग्लादे" ा का न केवल, स्वाधोनता संग्राम के संघर्श और मुक्ति की सांझो विरासत है। अपितु दोनो एक दूसरे के अंतरग भावनाओं का भ्रातत्व भाव से अनुभव करते है। यही सांझेदारी बांग्लादे" ा के साथ बहुआयामीय सम्बंधों के विभिन्न स्तर के क्रिया कलापों में झलकती है। उच्च स्तरीय आदान–प्रदान यात्राऐं, बैठक आदि नियमित रूप से चलती रहती है। व्यक्ति से व्यक्ति के बीच व्यापक स्तर पर अन्तर्कियाकलापों का भी संचालन होता रहता है। बांग्लादे" ा स्थित भारतीय मि" ान प्रतिवर्श लगभग 5 लाख वीजा प्रदान करता है तथा हजारों बांग्लादे" ाी छात्र स्वयं के व्यय के आधार पर भारत में अध्ययन कर रहे है। 100 छात्र प्रतिवर्श भारत सरकार की छात्रवृति पर अध्ययन करने के लिए भारत आते है। ये आदान–प्रदान और ये अर्न्तक्रियाकलाप, राजकीय स्तर के क्रियाकलापों के लिए एक महत्वपूर्ण अनुबंध का कार्य करते है। बांग्लादे" ा के साथ भारत की भू भागीय सीमायें 4096 के आस–पास है जो भारत के अपने पडोसी दे" ाों के साथ की सीमाओं मे सबसे लम्बी है।

बांग्लादे"ा संक्षिप्त परिचय–

राजधानी	ढ़ाका
मुद्रा	टका
भाशा	बंगाली (अधिकारिक व अंग्रेजी)
कुल जनसंख्या	15,60,50,883 लगभग
क्षेत्रफल	1,44,000 वर्ग कि.मी.
प्रमुख नदियां	गंगा एवं ब्रह्मपुत्र
बड़े भाहर	ढ़ाका, चिटगांव, मैमन सिंह कोमिला, राज" ाही

भाासन पद्धति	गणतंत्रात्मक
स्वतंत्रता दिवस	16 दिसम्बर 1971
प्रमुख धर्म	इस्लाम (राज्य धर्म)
लिंगानुपात	93 पुरूश/100 महिला
साक्षरता दर	47.9 प्रति" ात
वर्तमान राश्ट्रपति	श्री अब्दुल हामीद (कार्यवाहक)
प्रधानमंत्री	श्रीमती भोख हसीना
राश्ट्रगीत	आमार सोनार बांग्ला (मेरा स्वर्ण बंगाल)

भारत संक्षिप्त परिचय–

राजधानी	नई दिल्ली
मुद्रा	रूपया
भाशा	हिन्दी
कुल जनसंख्या	1.252 बिलियन–2013
क्षेत्रफल	32,28,7263 वर्ग कि.मी.
प्रमुख नदियां	गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, गोदावरी, कावेरी
बड़े भाहर	दिल्ली, मुम्बई, कोलकात्ता, चेन्नई, हैदराबाद, बैगलुरू, इलाहबाद आदि
भाासन पद्धति	ससंदात्मक प्रजातंत्र
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त 1947
प्रमुख धर्म	सर्व धर्म समभाव
लिंगानुपात	943/1000
साक्षरता दर	74.04
वर्तमान राश्ट्रपति	श्री डॉ. प्रणब मुखर्जी
प्रधानमंत्री	श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी
राश्ट्रगीत	वन्दे मातरम्

सीमा प्रबंधन एवं सुरक्षा–

लगभग 4096 किलोमीटर लम्बी भारत बांग्लादे" ा सीमा पर गस्त लगाना अत्यधिक कठिन है, क्योकि इसके पीछे नदियों के कटाव, घने जंगल वाली पहाड़िया, कृशि क्षेत्र तथा मानवीय बस्तियां, भौगोलिक विविधतायें आदि इसका कारण है। सीमा के छिद्र पूर्ण प्रकृति का होने के कारण अनेकों सीमा पार की समस्यायें जिसमें सम्मिलित है। घुसपैठ हथियारों और मादक द्रव्यों की तस्करी (फेसेडिल और न" ाली दवाये इत्यादि) प्रतिबन्धित वस्तुएं, गैर कानूनी लोगों का आवागमन तथा फिरोती के लिए अपहरण, प" jुओं की चोरी और अवैध रूप से धन छीनना जैसे अपराध सम्मिलित है।

सीमाओं का बेहतर प्रबंधन सुनिचित करने के लिए सीमा के साथ चार दिवारी बाड बनाये जा रहे है ताकि अवैधानिक सीमा पार के आवागमन को रोका जा सकें। इसके अतिरिक्त सीमा प्रबंधन के अंतर्कियाकलापों की संस्थागत प्रणाली प्रदान करने के लिए दोनों दे" ाों के गृह सचिवों तथा सीमा सुरक्षा बल और बांग्लादे" ा राइफल्स के महानिदे" ाक स्तर पर वार्ताऐं चल रही है। ये बैठके नियमित रूप से होती रहती है। दोनों दे" ाों के बीच मादक द्रव्यों, न" ाीली दवाओं मनोविकारी द्रव्यों के अनैतिक तस्करी को रोकने के लिए परस्पर सहयोग के द्विपक्षीय समझौते पर मार्च 2006 मे हस्ताक्षर किये गये ।

गैर कानूनी अप्रवास

भारत मे अवैध रूप से बांग्लादे" ा लोगों की घुसपैठ लगातर एक गम्भीर समस्या बनो हुई है। लम्बे और छिद्र पूर्ण सीमा, सामाजिक और आर्थिक दबावों के कारण प्रभाव" ाली ढंग से सीमा का नियंत्रण करने मे प्रमुख रूप से सहयोग एक अपरिहार्य पक्ष है। जनसंख्या का उच्च घनत्व, असाध्य गरीबी तथा प्राकृतिक प्रकोप (तूफान बाढ़ का प्रकोप) आदि भारत में बांग्लादे" ा से गैर कानूनी अप्रवास के अंर्तप्रवाह को बढ़ाने के मुख्य कारण है।

इस भयानक समस्या से भारत के सरोकारों को नियमित रूप से बांग्लादे" ा को अवगत कराया जाता है जिसमें उच्च स्तरीय लोग भी सम्मिलित है। सीमा प्रबंधन तथा गैर कानूनी सीमा पार घुसपैठ आदि की अनेकों समस्याओं पर वार्ता

करने के लिए एक संस्थागत संरक्षण की स्थापना की गयी है। जिसमे महानिदे" ाक सीमा सुरक्षा बल और बांग्लादे" ा राइफल्स के महानिदे" ाक तथा दोनों दे" ाों के गृहमंत्रियों क बीच नियमित रूप से बैठके होती रहती है।

भू–भागीय सीमा समझौता (एल.बी.ए.1974)–

भू–भागीय सीमा समझौता(एल.बी.ए.) पर हस्ताक्षर भारत और बांग्लादे" ा के बीच 1974 म किये गये और इसके तीन मुद्दों को छोड़कर पुरी तरह से इसको क्रियान्वित किया गया। इन तीनों मुद्दों में (1) लाठी टीला दुमाबाड़ी (आसाम क्षेत्र) दक्षिण बेरू बाडो (पि" चम बंगाल क्षेत्र) और मुहरी नदी (बेलोनिया क्षेत्र) (त्रिपुरा क्षेत्र) आदि तीनों क्षेत्रों के 6.5 कि.मी. की सीमा को चिन्हित किया जाना ।

(2) विपरीत कब्जों को आदान–प्रदान

(3) क्षेत्रों का आदान–प्रदान आदि सम्मिलित है।

दिसम्बर 2001 में दोनों दे" ाों ने मिलकर एक द्विपक्षीय यांत्रिकी स्थापना की जिसको संयुक्त सीमा कार्य दल (जे.बी.डब्ल्यू.जी.) के नाम से जाना जाता है। इसका गठन उपर्युक्त लम्बित पडे मुद्दों को सुलझाने के लिए सिफारि" ा प्रस्तुत करने के लिए किया गया है। जे.बी.डब्ल्यू. अब तक तीन बैठकें कर चुका है। जिसमें जुलाई 2001, मार्च 2002, जुलाई 2006 की बैठकें सम्मिलित है।

नदियों के जल की भागीदारी

भारत व बांग्लादे" ा के बीच 54 नदियां सांझी है। और दोनों के बीच गंगा नदी क जल के मंद जल प्रवाह के समय (1 जनवरी से 31 मई के बीच) जल की भागीदारी पर गंगाजल संधि समझोता 12 दिसम्बर 1966 को किया गया । गंगाजल संधि समानता के सिद्धान्त तथा उभय पक्षों मे भय मुक्त और छति मुक्त के सिद्धान्तों पर आधारित है तथा लगातार संतोश जनक कार्य कर रहा है। दोनों दे" ाों के बीच द्विपक्षीय संयुक्त नदी आयोग (जे.आर.सी.) की स्थापना जून 1972 मे दोनों दे" ाों के बीच सांझे नदी प्रणाली का अधिकाधिक लाभ लेने बाढ़ नियंत्रण कार्यो के लिए नियमन अग्रिम बाढ संकेतों के प्रस्तावों बाढ और समुद्री तुफान की चेतावनी बाढ की भविश्यवाणी और समुद्री तुफान की चेतावनी बाढ़ नियंत्रण और सिचाई परियोजनाओं आदि पर अध्ययन भी करने के लिए जन सम्पर्क को बनाये रखने के लिए किया गया है। जे.आर.सी. की पिछली बैठक सितम्बर 2005 मे हुई

सितम्बर 2006 मे दोनों दे" ाों के जल संसाधन मंत्रियों ने संयुक्त रूप से दोनों दे" ाों की कुछ नदियों का निरीक्षण किया और नदी के तटों के संरक्षण लघु सिंचाई के लिए नालों और पेयजल योजना आदि विशयों पर वार्ता भी की ।

भाुल्क सूची में भारत द्वारा बांग्लादे"ा को प्रदान की गयी छूट–

साफ्टा, सापता तथा आपता के अन्तर्गत बांग्लादे" ा को भाुल्क में पर्याप्त छूट प्रदान की गई है। नई दिल्ली में आयोजित 14 वें सार्क सम्मेलन अप्रैल 2007 मे प्रधानमंत्री द्वारा की गई घोशणा के अनुपालन में भाुल्क भाून्य बाजार मे पहुंचा । 1 जनवरी 2008 से उन उत्पदों के लिए लागू कर दिया गया जो सार्क के एलडीसी के मूल के है। जिसमें बांग्लादे" ा सम्मिलित है। इसमे संवेदन" ाील सूची की कुछ वस्तुऐं अपवाद है। संवेदन" ाील सूची को भी कुछ कम किया जा रहा है। परस्पर व्यापार असंतुलन का समाधान पाने की दृश्टि से भारत पुनः तैयार वस्त्रों के 8 मिलियन नग को भाुल्क मुक्त करने पर सहमत हो गया जो साफ्टा के अंतर्गत प्रति वर्श बांग्लादे" ा से भेजा जाता है। व्यवस्था की प्रक्रिया के एक संयुक्त विज्ञप्ति पर ढ़ाका में सितम्बर 2007 मे हस्ताक्षर किये गये तथा सीमा भाुल्क की सूचना भारत के राजस्व विभाग द्वारा 21 अप्रैल 2008 को जारी किया गया ।

व्यापार व आर्थिक सहयोग के लिए संस्थागत संरचना–

भारत व बांग्लादे" ा के बीच प्रथम व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर 1972 में किये गये। भारत बांग्लादे" ा सं" ाोधित व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर मार्च 2006 मे किये गये जो दोनो दे" ाों के बीच वर्तमान में संचालित व्यापारों की व्यवस्था का नियंत्रित करता है। अन्य समझौते और संयुक्त विज्ञप्तियां जो व्यापार तथा आर्थिक सम्बंधों में सहायक है। उनमें सम्मिलित है–

– व्यापार तथा अंतर्दे" ाीय जल संक्रमण पर प्रोटोकाल
– (आई.डब्ल्यू.टी.टी.)
– भारत बंगलादे" ा के बीच विकास सेवाओं का समझौता।
– संयुक्त आथिक आयोग जे.ई.सी. की स्थापना पर द्विपक्षीय समझौता।
– संयुक्त आर्थिक आयोग जे.ई.सी. की स्थापना पर द्विपक्षीय समझौता
– भारत बांग्लादे" ा के बीच दोहरे कर से बचने का समझौता।
– भारत बांग्लादे" ा के बीच यात्रा व्यवस्था में संसोधन पर समझौता।

– बी.आई.एस. और.बी.एस.टी.आई. के बीच मानक क्षेत्रों मे संचालन पर संयुक्त विज्ञप्ति।

– कृशि क्षेत्र में सहयोग पर संयुक्त विज्ञप्ति।

– विज्ञान और प्रोद्योगिकी क्षेत्र में संयुक्त विज्ञप्ति।

– ढाका कलकत्ता तथा ढाका अगरतला के बीच यात्री बसों के संचालन पर प्रोटोकाल यात्री और मालवाहक वाहनों के यातायात पर नियमों से सम्बन्धित समझौते के सं" ाोधन पर वार्ता जारी है।

द्विपक्षीय व्यापार से सम्बन्धित :–

दोनों सरकारों के बीच व्यापार से संबंधित विशयों पर चर्चाए निम्नलिखित द्विपक्षीय यांत्रिकियों के माध्यम से होती रहती है जिनकी बैठके एक अंतराल पर नियमित रूप स आयोजित की जाती रहती है।

(1) व्यापार संयुक्त कार्यदल (जे.डब्लू. जी.)

(2) सीमा भाुल्क अधिकारियों का संयुक्त दल (जे.जी.सी.)

(3) व्यापार तथा अंतरदें" ाीय जल सक्रमण के प्रोटोकोल के क्रियान्वन और समीक्षा की स्थायी समिति और नवीनीकरण समिति पर प्रोटोकाल।

(4) अंत" ार्ासकीय रेल बैठक।

(5) वाणिज्य सचिव स्तरीय वार्ता।

(6) विदे" ा कार्यालय पराम" ार्।

(7) संयुक्त आर्थिक आयोग (जे.ई.सी.) मंत्री स्तर की।

प्रस्तावित द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौताः–

द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता (एफ.टी.ए.) पर हस्ताक्षर के लिए प्रस्ताव भारत के पक्ष से 2002 में रखा गया था। प्रस्तावित समझोते का मसौदा बांग्लादे" ा पक्ष को अग्रसारित किया गया था। वार्ता बैठकों के दो दौर का आयोजन 2003–04 मे किया जा चुका है और वर्तमान मे इस विशय पर कोई ठोस प्रगति नही हो रही है।

पारस्परिक निवे"ाः–

वाणिज्यिक व्यापारों के साथ पारस्परिक निवे" ा संवर्धन तथा प्रोद्योगिकी में संयुक्त उद्यम के प्रयास चल रहे है। भारतीय औद्योगिक समूहों (टाटा एस्सार इत्यादि) से व्यापक स्तर पर बांग्लादे" ा मे निवे" ा के उल्लेखनीय प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त अनेकों अन्य लघु एवं मध्यम आकार की भारतीय कम्पनीयां भी बांग्लादे" ा में निवे" ा करने मे रूचि ले रही है । भारी संख्या में भारतीय कम्पनीया निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों से बांग्लादे" ा में ऊर्जा, सम्प्रेशणलाइन, कपडा, रसायन और औशध उत्पाद कांच और प्लास्टिक तथा अभियांत्रिकी क्षेत्रों मे टर्नकी पर आधारित विभिन्न परियोजनाओं पर कार्यरत है और अधिक निवे" ाीय प्रवाह को प्रोत्साहित करने के लये द्विपक्षीय निवे" ा संरक्षण एवं संवर्धन समझौते (बी.आई.पी.पी. ए.) पर वार्ता चल रही है जो लगभग पूरी हो चुकी है।

भारत सरकार ने बांग्लादे" ाो नागरिकों तथा बांग्लादे" ा में समायोजित उद्यमियों द्वारा भारत में निवे" ा किये जाने पर लगे प्रतिबद्ध हटा लिया है और ऐसे निवे" ाों को अनुमति दे दी है जिनका अनुमोदन विदे" ा नीति बोर्ड, भारत सरकार द्वारा पहले से कर दिया गया है। कुल 181 प्रत्यक्ष विदे" ाी निवे" ा तथा संयुक्त उद्यम में भारत से 435 मिलियन डालर से भी अधिक के निवे" ा का प्रस्ताव है। जिन्होने बांग्लादे" ा सरकार के निवे" ा बोर्ड में पंजीकरण करा लिया है जो बांग्लादे" ा के कृशि उद्योग कपडा, रसायन तथा अभियांत्रिकी की उद्योग आदि क्षेत्रों के निवे" ा में रूचि रखते है। 181 परियोजनाओं मे से 57 से भी अधिक पहले ही उत्पादन करने की स्थिति में पहुंच गये है।

व्यापार ढांचा और सम्बद्धता :–

सड़क मार्ग से मालवाहक वाहनों का संचालन, 20 भू सीमा " ाुल्क स्थान को (एल.सी.एस) जो सीमाओं पर स्थित है के माध्यम से किया जा रहा है। भारत सरकार ने दो चरणों मे 7 एलसीएस को उन्नोकृत किया है, और उनका विकास समन्वित चेक पोस्ट (आईसीपी) के रूप में किया है। इन आईसीपी मे सम्मिलित है। पेट्रोपाल हीली, चन्ग्राबन्धां, अगरतला, दाउकी, सुतारकदो तथा देभागिकी आदि है। पेट्रोपाल जो भारत बांग्लादे" ा के दा तिहाई से भी अधिक के व्यापारों को सभालता है को प्रथम चरण मे ही विकसित किया जायेगा। व्यापार पर गठित संयुक्त कार्यदल

के अधीन एक उप दल का गठन नवम्बर 2007 मे किया गया है जो सीमा व्यापार के आधारभूत ढांचें को अधिक समन्वित ढंग से मजबूत बनाने के तरीकों और मार्गो का पता लगाऐगा।

अंतरर्दे" ीय जल व्यापार एवं सक्रमण (आई.डब्ल्यू.टी.टी.) पर प्रोटोकोल 1972 से संचालित है। यह मालवाहकी को बांग्लादे" ा की नदियों की प्रणाली के माध्यम से 8 निर्धारित मार्गो के बीच पि" चम बंगाल और बांग्लादे" ा कोलकाता और आसाम में (धुबकी, करीमगंज) तथा आसाम के बिन्दुओं के बीच संचालन की अनुमति देता है। इस प्रोटोकाल को वर्श 2007 मे नया करके मार्च 2009 तक की अवधी के लिए नया कर दिया गया है।

रेल द्वारा माल के यातायात संचालन के लिए सीमा पर 4 बिन्दु स्थापित है । इसी प्रकार की रेल सेवा को 43 वर्श पूर्व मार्च 1965 में भंग कर दिया गया था। ढ़ाका और कोलकाता के बीच सीधी यात्री रेल सेवा का संचालन 14 अप्रेल 2008 को सप्ताह मे दो बार भाुरू किया गया ।

अंत" ासिकीय समझौते पर 10 अप्रैल 2008 को ढाका मे किये गये हस्ताक्षर के बाद ऐसा सम्भव हो सका। ढाका और कोलकाता के बीच सीधी बस सेवा 1999 मे प्रारम्भ हुई, ढाका अगरतला के बीच मे 2003 मे भाुरू हुई भारत मे अगरतल्ला और कोलकता के बीच ढाका होते हुए सीधी बस सेवा का अनुरोध किया है।

भारत बंगलादे" ा के बीच द्विपक्षीय विमान सेवा समझौता के अन्तर्गत कुल 61 उड़ानों को संचालित करने की अनुमति दोनों पक्षों से नियुक्त विमान कम्पनियों को दी गयी है। बंगलादे" ा विमान, एयर इण्डिया, इण्डियन एयर लाईंस, जी.एम.जी. एयर लाईन्स, जेट एयरवेज आदि कोलकाता ढाका ओर दिल्ली ढाका क्षेत्रों मे अपनी सेवाओं का संचालन कर रही है। दोनों पक्षों की एयर लाइन्स इन क्षेत्रों तथा नये गतंव्यों को सम्मिलित करते हुए अपन संचालनों के विस्तार की योजना बना रही है। सप्ताह मे महानगरों के लिए 61 उडानों के अतिरिक्त वर्श 2006 से भारत ने सार्क के सदस्य दे" ाों के लिए भारत के 18 पर्यटक गंतव्यों के लिए मुक्त आका" ा नीति की सुविधा प्रदान की है।

व्यापार ढांचे मे सुधार और सम्बद्धता की और अधिक गति प्रदान करने के लिए (भारत और बांग्लादे" ा के बीच तथा भारत के पूर्वोत्तर प्रान्तों के बीच) दोनों

सरकारों के बीच वार्ता विभिन्न स्तरों पर चल रही है। उदहरण के लिए भारत ने नदी और रेल मार्गो के माध्यम से चिटगांव बंदरगाह तक पहुंचने के लिये भारत के पूर्वोत्तर प्रान्तों द्वारा उपयोग में लाये जाने के लिए कंटेनर के संचालन को भारत म प्रस्तावित किया है तथा आखौरा अंगरतला रेल सम्बंध विकसित करने, अ" ाुगंज को नये बंदरगाह के रूप मे आई डब्ल्यू टी.टी. के अंतर्गत घोशित करने और नये व्यापार मार्गो को खोलने जिसमें कोरापुच्छिया/डेनागिकी (भारत) तेगामुख (बांग्लादे" ा) तथा सबरूम (भारत) रामगढ (बांग्लादे" ा) आदि सम्मिलित परियाजनायें प्रस्तावित है। इन सभी प्रस्तावों पर बांग्लादे" ा के उत्तर की प्रतीक्षा की जा रही है।

व्यापार की सर्वोच्च संस्था/ संघो के बीच सहयोगः–

भारतीय उद्योग महासंघ (सी.आई.आई.) भारतीय वाणिज्य उद्योग सदन महासंघ (फिक्की) तथा एसोसिएट चेम्बर्स आफ कामर्स ऐसोचैम ने संस्थागत सम्बंद्ध बांग्लादे" ा के अपने प्रतिमूर्ति मेट्रोपोलिटन चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री (एम. सी.आई.आई.) और ढाका वाणिज्य उद्योग सदन (डी.सी.आई.आई.) का गठन जुलाई 2007 मे किया गया था जो दोनों दे" ाों के व्यावसायी समुदायों के बीच अंतरक्रियाकलापों के व्यापक संवर्धन और सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिए एक उपयोगी मंत्र सिद्ध हुआ है।

बांग्लादे"ा को भारत की आर्थिक सहायता :–

आर्थिक सहायता के पक्ष पर भारत हमे" ाा ही बांग्लादे" ा की आव" यकता के समय खडा रहा है। वर्श 2007–2008 मे भारत ने 250 करोड टका से अधिक (37 मिलीयन अमेरिकन डालर से अधिक) बांग्लादे" ा को अपने प्राकृतिक आपदा और बाढ का सामना करने के लिए प्रदान किया । भारत ने बांग्लादे" ा सरकार के साथ मिलकर बांग्लादे" ा के दक्षिणी भाग के 10 तुफान प्रभावित गांवों के पुर्नवास के लिए कार्य किया।

तकनीकी सहयोग :–

बांग्लादे" ा आई.टी.ई.सी. का एक महत्वपूण भागीदार दे" ा है और अनेक बांग्लादे" ायों ने आई.टी.सी.कार्यक्रम के अंतर्गत प्र" ाक्षण पाठ्यक्रमों का लाभ उठाया है।

इकतालीस साल देर से ही सही लेकिन बांग्लादे" ा के साथ भूमि सीमा समझौता होना दोनों दे" ाों के लिए तो खु" ाी की बात है ही। यह समझोता भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की 6 जून 2015 की दो दिवसीय बांग्लादे" ा यात्रा के दौरान हुआ जिसमे बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना एवं पं" चम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी मौजूद थी। दुनिया के उन तमाम पड़ौसी दे" ाों के लिए भी सबक है जिनके बीच सीमा विवाद चल रहे है। बांग्लादे" ा के साथ हुए ऐतिहासिक करार के बाद बे" ाक दोनों दे" ाों के नक" ो बदल गए हो लेकिन इस बदलाव मे नए युग का सूत्रपात अव" य किया है। बांग्लादे" ा का जन्म भारत के प्रयासों से हुआ यह सब जाते है फिर भी दोनों दे" ाों के बीच 41 साल से सीमा विवाद चल रहा था। समझौते मे दोनों दे" ाों ने क्या खोया अथवा क्या पाया, इससे बड़ा सवाल ये है कि भविश्य में दोनों दे" ा इससे क्या पा सकते है ? भारत और बांग्लादे" ा ने भले अलग अलग दे" ा के रूप में अपनी पहचान बनाए रखी हो लेकिन इससे पहले सैकडों साल तक दोनों एक ही दे" ा के रूप मे रहे है।

मजबूती से करें सामना–

हमारे राश्ट्रीय व प्रादें" ाक नेताओं के पास आतंकवाद से निपटने की इच्छा" ाक्ति नहीं है। जब कभी भी आतंककारी हमले होते है तो एक राजनीतिक पार्टी दूसरी राजनीतिक पार्टी पर आरोप लगाती रहती ह। कुछ समय बाद फिर आतंककारी हमला हो जाता है। हर हमले के बाद नेताओं का रटा रटाया बयान आ जाता है कि हम आतंकवाद के सामने झुकेंगे नहीं और मजबूती से उसका सामना करेंगे ।

यह कोई पहली बार नहीं हुआ है कि आतंककारियों ने समुद्री मार्ग को चुना है। इससे पहले 1993 में समुद्री मार्ग से हथियार व आरडीएक्स लाए गए थे जिनका इस्तेमाल मुम्बई में 93 में श्रृंखला बम धमाकों में किया गया था। उसके बाद गोवा, महाराश्ट्र, गुजरात के समुद्री इलाकों में कोस्टल पेट्रोलिंग भ्रारू की गई थी लेकिन दो–तीन साल बाद इसे बंद कर दिया गया।

यह बिल्कुल सही है कि हमारा सेंट्रल खुफिया, राज्य खुफिया व विदे" ाी खुफिया तंत्र पूरी तरह से विफल रहा। निर्दोश जनता मर रही है। पुलिस मर रही

है। पुलिस के पास आधुनिक हथियार नहीं है। बुलेट प्रुफ जाकेट, बुलेट प्रुफ हेलमेट नहीं है। अगर हमारे दे" ा के नेताओं का यही हाल रहा तो आतंकवाद घटने की जगह बढ़ता ही रहेगा और नित नई जगह आतंककारी घटनाएं होती रहेंगी।

हमारे यहां तो आतंककारी हमले हो रहे है उनमें से ज्यादातर में विदे" ाी आतंककारी सक्रिय है। इनको नश्ट करने के लिए सबसे पहले खुफिया तंत्र को मजबूत करें तथा पुलिस का आधुनिकीकरण किया जाए। पुलिस या अन्य एजेन्सी को स्वतंत्र रूप से काम करने दिया जाए। उसके काम में किसी भी तरह का राजनीतिक दखल न किया जाए। तभी आतंकवाद पर काबू पाया जा सकता है।

तंत्र सुधारें–

मुट्ठी भर आतंककारियों ने मुम्बई पर हमले के जरिए परमाणु भाक्ति सम्पन्न भारत को चुनौती देने का दुस्साहस किया है। दे" ा की अर्थव्यवस्था, प्रतिश्ठा और अखण्डता पर भीशण प्रहार किया है। उन्होने ग्रेनेडों और स्वचालित हथियारों से मुम्बई में 150 से ज्यादा लोगा की हत्या करके कुत्सित इरादे और ताकत जताने की कोि" ा" ा की है। अब तो सरकारों, नेताओं और आम जनता सभी को यह मान लेना चाहिए कि ये कुछ सिरफिरे लोग नही है। इनका अपना लक्ष्य है। इनसे उसी तरह से निपटना होगा जिस तरह से किसी युद्ध में दु" मन से निपटा जाता हे। किसी भी युद्ध में खुफिया एजेंसियों की बेहतद महत्पूर्ण भूमिका होती हे। युद्ध के दौरान दु" मन की एक सूचना युद्ध का रूख बदल देती हे। इसलिए आतंककारियों के साथ चल रहे इस युद्ध में खुफिया एजेंसियों के महत्व को दरकिनार नहीं किया जा सकता । समुद्री मार्ग से दाखिल हुए आतंककारियों नें बेहद सुनियोजित ढंग से मुम्बई में कहर बरपा दिया और जानी मानी होटलों में लोगों को बंधक बना लिया । हमारे लचर खुफिया तंत्र की पोल खुल गई। आतंककारी विस्फोटो और स्वचालित हथियारों से मुम्बई में फैल जाते है लेकिन किसी को इसकी भनक तक नही लगती। गृह मंत्रालय को तीन घंटे तक तो यह ही पता नही चलता कि असल में मुम्बई में हो क्या रहा है। यह हमारी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था पर तमाचा है। आतंककारियों और पाकिस्तान को कोसने से बेहतर है कि हम हमारी आंतरिक सुरक्षा की बुनियादी कमजोरियों को दूर करें। साथ ही सीमाओं पर चौकसी भी बढ़ाए। खुफिया तंत्र को मजबूत करना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। हाल ही

अमरीकी संसद में पे" ा की गई एक रिपोर्ट में आतंककारियों से निपटने में खुफिया और पुलिस तंत्र के महत्व को रेखांकित किया गया है। इसमें कहा गया है कि 1968 के बाद दुनिया के 73 प्रति" ात आतंककारी संगठनों का खात्मा खुफिया और पुलिस उपायों से हुआ है।

जब पाकिस्तान जैसा दे" ा आईएसआई जैसी खुफिया एजेंसी बना सकता है तो भारत के सामने ऐसी कौनसी मजबूरी है कि वह इससे निपटने के लिए अपने खुफिया तंत्र की अनदेखी कर रहा है। मुम्बई के हमले के बाद भारत का पहला संकल्प खुफिया तंत्र को स" ाक्त समर्थ और कारगर बनने का होना चाहिए। आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए पुलिस तंत्र का स" ाक्त होना भी आव" यक है। पुलिस बल को प्रभावी बनाने के लिए उच्चतम न्यायालय ने राज्यों को निर्दे" ा भी दिए है लेकिन पुलिस सुधारों के मामले में राज्य टालमटोल रवैया अपना रहे है। संघीय जांच एजेंसी के मामले में भी राज्यों के अपने–अपे तर्क है। आतंककारियों से एक राज्य नहीं लड़ सकता। उनसे लड़ाई के लिए तो पूरे दे" ा को एकजुट होना होगा और केन्द्र के बैनर तले सभी राज्यों को लड़ाई लड़नी होगी। केन्द्र सरकार को भी केन्द्रीय एजेंसियों का राजनीतीकरण रोकना होगा और राज्यों को वि" वास दिलाना होगा कि केन्द्रीय एजेंसियों का दुरूपयोग नही होगा।

मुम्बई में 26/11 को हुए आतंककारी हमले ने भारत पर वैसा ही असर किया, जैसा 9/11 हमले मे अमेरिका पर। लेकिन अमरीका में 2001 के बाद से कोई आतंकारी हमला नहीं हो सका। भारत में आतंककारी दिल्ली, जयपुर, बेंगलुरू और श्रीनगर में एक के बाद एक स्थान पर कई मासूम लोगों का खून बहाते रहे। हर हमले के बाद पुराना रवैया बदस्तूर जारी रहा। भारत की जनता लम्बे समय से पीड़ा झेल रही है लेकिन 26/11 के बाद वह कमजोर नेतृत्व वाली भ्रमित, उदासीन, अक्षम व संवेदनहीन सरकार से खफा आक्रो" ा त और तिरस्कारयुक्त है।

यह अब दुनिया के सामने स्पश्ट हो चुका है कि भारत जवाब देने में धीमा आर वि" लेशण में अक्षम तथा बेपरवाह भाासन वाला लोकतंत्र है। किसी भी उचित सरकार में यह सबसे जरूरी है कि उद्दे" यों, नीतियों, अग्रिम योजनाओं व कार्यक्रमों के बारे में सुस्पश्ट बयानबाजी हो। उद्दे" यों, नीतियों व कार्यक्रमों के बयान सर्वोच्च स्तर से आए। सवाल सीधा सा है कि कोई एकीकृत प्रभावी नीति है

या नहीं ? और क्या उस नीति के प्रति पूर्ण निश्ठा हे ? जो कि होनी चाहिए। एक निश्पक्ष व उद्दे" यपूर्ण वि" लेशण नि" चत ही इस नतीजे पर पहुंचेगा कि मनमोहन सिंह सरकार उपरोक्त कसौटियों पर विफल रही है। 7 रेसकोर्स रोड पर चर्चा बंद हो या होनी चाहिए लेकिन होती नहीं । सर्वोच्च ताकत तो एक दूसरे पते पर है जहां से आदे" ा होते हे। दायित्व विहीन भाक्तियों का एक द" ानीय उदाहरण। सर्वोच्च भाक्ति सनकी लोगों और अभ्यस्त अपराधियों से घिरी हुई है जिन्होने एक उच्च विकसित घातक चापलूसी तंत्र बना दिया है।

नटवर सिंह पूर्व विदे"ा मंत्री के एक लेख मे निम्नलिखित विचार प्रस्तुतार्थ–

महाराश्ट्र सरकार का रवैया स्पश्टतया लापरवाहीपूर्ण था । 26 नवम्बर को घोशणा हुई कि दे" ामुख मंत्रिमण्डल की बैठक अपराह् दो बजे होगी। लोग मारे जा रहे थे। उसी दिन यह घोशणा भी हुई कि मनमोहन सिंह मंत्रिमण्डल की बैठक सुबह 11 बजे होगी। सवेरे 6 बजे क्यों नहीं ? मैं लगभग अस्सी वर्श का हूँ। मैने 1947 से आज तक किसी भी केन्द्रीय सरकार के प्रति ऐसा घृणित और अपमानपूर्ण रवैया नहीं देखा। महाराश्ट्र के मुख्यमंत्री का इस्तीफा स्वीकार करने में इतना समय क्यों लगा ? क्यो भ्रद ि" ावराज पाटिल को पहले नहीं हटाया गया ? कांग्रेंस कार्यसमिति की बैठक में एक वरिश्ठ सदस्य ने पाटिल से कहा आपने चारों राज्यों में हमारी हार सुनि" चत कर दी है। बुद्धिमत्ता कहीं नजर नहीं आई। सिर्फ आरोप प्रत्यारोप का खेल भाुरू हो गया। मेरे मित्र राश्ट्रीय सलाहकार, जो तीनों खुफिया एजेंसियों के प्रमुख भी थे, की चारों तरफ आलोचना होने लगी। उन्होने टेलीविजन पर कूटनीति का दामन थामा। राश्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार व खुफिया एजेन्सियों के प्रमुखों को अंजाना ही रहना चाहिए। मुझे याद नहीं आता कि रॉ (रिसर्च एंड एनालिसिस बिंग) के निर्माता आर.एन. कॉ ने कभी कोई इंटरव्यू दिया हो। क्या एम. के. नारायणन को हटाया जाएगा ? मुझे तो इसमें संदेह है। इस बारे में भाायद वे ज्यादा जानते है।

अमरीका, इजरायल, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन से खुफिया और सुरक्षा टोलियां आई। उनमें से कोई भी टेलीवजिन के सामने नहीं आया और ना ही किसी ने कोई इंटरव्यू दिया। लेकिन यहां एक बड़ा सवाल भी भाामिल है। भारतीय भाशाओं का

एक भी भाब्द जाने बिना वे एक सप्ताह में भारतीय जटिलताओं से परिचित कैसे हो सकते हैं ?

और अब बात कोंडोलिजा राइस की। उन्होने क्या हासिल किया ? कुछ नहीं। उनका कार्यकाल अब कुछ ही समय का है और वे 6 सप्ताह में भी भुला दी जाएगी। पाकिस्तान में वे कूटनीतिज्ञ रहीं, पें" ावर तरीके से पाकिस्तान समर्थक। इस तरह की कूटनीतिक कवायद असम्मान का भाव जगाती है। इस्लामाद में उन्होने एक बार भी स्पश्ट तौर पर मुम्बई हमले के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार नहीं ठहराया।

पाकिस्तान के साथ समग्र वार्ता खत्म हो चुकी है। हमें पाकिस्तान के साथ सभी रेल, सड़क, हवाई और समुद्री सम्पर्क बंद कर देने चाहिए। दुर्भाग्यव" ा राश्ट्रपति जरदारी अलग–अलग बातें करते है। पाकिस्तान के साथ बेहतर रि" तों का आजीवन पैरोकार रहने के बावजूद यहीं कहूंगा कि वे ऐसी सरकार के राश्ट्रपति है जो खुद डांवाडोल है और जिसके पास जनता का लोकप्रिय समर्थन तक नहीं है। पाकिस्तान में तो वास्तविक भाक्ति अभी भी सेना के पास ही है। आतंकवाद का समर्थन करने के बाजवूद उससे स्पश्टतया मुकरने वाले दे" ा के खिलाफ हमें व्यावहारिक व कठोर कदम उठाने के लिए अंतरराश्ट्रीय समुदाय का दखल आमंत्रित करना चाहिए।

मौजूदा खतरनाक स्थिति और पाकिस्तान के अड़ियल रवैये के मद्देनजर हमें चौकन्ना रहते हुए अपनी सुरक्षा को हर पल चाक चौबंद रखना पड़ेगा। दोनो दे" ा परमाणु हथियार सम्पन्न है। जिम्मेदार परमाणु भाक्तियों को संयमित व्यवहार करना होता है। हम इस बारे में भी आ" वस्त नहीं है कि पाकिस्तान के परमाणु हथियारों के उपयोग का अधिकार किसके हाथों मे है ? हमें अति विवेक, जिम्मेदारी और परिपक्वता के साथ कदम उठाना होगा।

अभी तक भारत का दबाव उस स्तर तक नही पहुंचा कि संयुक्त राश्ट्र पाकिस्तान को आतंककारी दे" ा घोशित कर दें। अलबत्ता अभी इसकी जरूरत भी नहीं है। असली मकसद पाकिस्तान स्थित आतंकी ि" ाविरों को नश्ट करना है जिससे भविश्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो। जिस कूटनीतिक प्रयास के तहत पाकिस्तान पर अंतरराश्ट्रीय दबाव लगातार बढ़ रहा है वह भारत के लिए अहम है।

मुम्बई आतंककारी घटना के बाद भारत दुनिया को यह समझाने में कामयाब रहा है कि इस घटना के पीछे साफ तौर पर पाकिस्तान का हाथ है। भारत के साथ अच्छी बात यह हुई है कि संयुक्त राश्ट्र के साथ दुनिया के तमाम ताकतवर दे" ा मौजूदा स्थिति में भारत के साथ खड़े है। इन दिनों पाकिस्तान की हालत बेहद खस्ता है। अंतरराश्ट्रीय मुद्राकोश से हाल में लिए कर्ज के कारण वहां की अर्थव्यवस्था पटरी पर है, लेकिन अगले दो महिने में कर्ज की नौबत दुबारा आने की पूरी सम्भावना है। ऐसी सिथिति में भरत को कर्जदाता दे" ाों से पाकिस्तान पर आतंकवाद के खिलाफ ठोस कार्यवाही करने का दबाव बनाना चाहिए।

पाकिस्तान के राश्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के इस संबंध मे दिए गए बयानों को लेकर तुरन्त किसी निश्कर्श पर पहुंचना ठीक नही है। ऐसा लग रहा है कि वे ईमानदार कोि" ा" ा कर रहे है। हमें उन्हे मौका देना चाहिए, लेकिन यह भी सच है कि उनकी ताकत कम है। ऐसे मे भारतीय दृश्टिकोण से कार्यवाही किस हद तक और किस रूप में होगी, यह कहना कठिन है।

इसमें हमे कोई फायदा नहीं होने वाला। पूरी दुनिया अभी भारत के साथ खड़ी है, लेकिन हमले कें बाद सम्भव है कि अंतरराश्ट्रीय जगत दोनों दे" ाों से भाांति कायम करने का आग्रह करने मे जुट जाए, क्योंकि परमाणु भाक्ति से सम्पन्न भारत और पाकिस्तान में से किसी की और से भी परमाणु हथियारों का इस्तेमाल होता है तो पूरी दुनिया पर इसका दुश्प्रभाव होगा। तब हम दुनिया को अपने साथ बनाए रखने मे सफल होंगे, यह सम्भव नही दिखता। यही नहीं तब हमारी आतंकवाद के खिलाफ असली मुहिम और कमजोर पड़ जाएगी।

यह सच है कि समाजकंटक व अपराधिक तत्वों की कारस्तानियों का खामियाजा समाज को उठाना पड़ता है,लेकिन दे" ा के मुस्लिम समुदाय के अधिका" ा प्रतिनिधियों ने जिस तरह आतंककारी गतिविधियों के खिलाफ आवाज उठाई है उससे इस्लाम के राजनीतिक संस्करण को कोई खतरा फिलहाल नहीं दिख रहा है। भारतीय मुसलमानों का बड़ा तबका राश्ट्र के सवाल पर एकजुट रहा है।

कट्टर पंथियों से खतरा :–

किसी भी दे" ा को आतंककारी दे" ा घोशित करने का मामला संयुक्त राश्ट्र सुरक्षा परिशद के अधिकार में आता है। मुंबई आतंककारी घटना को लेकर भारत अभी पूरी दुनिया पर इस हद तक दबाव बनाने मे सफल नहीं हुआ है कि वह सुरक्षा परिशद के स्थाई सदस्यों को इस बात के लिए राजी कर ले। मेरा मानना है कि ऐसे मसले पर चीन वीटो कर देगा तो रूस इसे नहीं मानेगा। इसके अलावा सुरक्षा परिशद से जुड़े जो अरब और मुस्लिम दे" ा है, वे भी इसके लिए राजी नहीं होंगे।

पाकिस्तान इन दिनों भारी आर्थिक संकट से गुजर रहा है। पा" चात्य धनी दे" ाों से उसे लगातार आर्थिक मदद मिल रही है। अब भी पाकिस्तान पर इन दे" ाों का भारी कर्ज है। आने वाले समय में भी इन दे" ाों की सहायता के बगैर पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पटरी पर नहीं लाई जा सकती। ऐसे में भारत को इन दे" ाों के ऊपर यह दबाव बनाना चाहिए कि वे पाकिस्तान को इस बात के लिए मजबूर करें कि वह अपनी जमीन पर आतंककारी गतिविधियों के ठिकानों को नश्ट करें।

बिल्कुल नहीं। पाकिस्तान में आतंककारी के नाम पर जो कट्टरपंथ है वह काफी भीतर तक में प्रवे" ा कर चुका है। अब वहां केवल धार्मिक कट्टरपंथी ही नंही बल्कि फौज, राजनेता और समाज के दूसरे वर्गो में भी इस तरह के कट्टर लोग मौजूद है, जो अंततोगत्वा इस तरह का विशाक्त वातावरण पैदा करने मे सहयोगी बनते है और आतंकवाद फलता फूलता है।

नहीं। आतंककारी ि" ाविरों पर हमला करने का मतलब साफ है कि युद्ध के हालात पैदा करना और युद्ध से किसी का भला नही होने वाला। दे" ा का जो मौजूदा मकसद है, वह भी युद्ध की स्थिति मे अधूरा रह जाएगा। दोनो दे" ा परमाणु भाक्ति सम्पन्न है, विशम स्थिति में पूरी दुनिया को त्रासदी का ि" ाकार होना पड़ सकता है। इसके बाद आतंकवाद के खिलाफ न केवल मुहिम पर संकट आ जाएगा बल्कि अंतरराश्ट्रीय जगत से भी भारत कट जाएगा। हमला किसी समस्या का हल नही है।

यह सवाल बड़ा है कि प्रधानमंत्री ने इस संबंध में जो अनुरोध किया है वह मौजूदा है। समस्या से निपटने के लिए मुस्लिम समुदाय के धार्मिक नेता स्वयं सक्षम

है और मुम्बई आतंककारी घटना के बाद प्रगति" ाील मुस्लिम धार्मिक नेताओं ने इस घटना की भर्त्सना की। इससे यह साबित हो गया कि उत्पात मचाने वाले और कायरतापूण कार्यवाही करने वाले का किसी भी मजहब में कोई स्थान नहीं है।

काटनी होंगी आतंक की जड़ें :–

नवम्बर मे मुम्बई के विभिन्न स्थानों पर हुए हमले भारत के खिलाफ आतंककारियों के घातक हमलों की अंतिम कड़ी नहीं है। अनगिनत बाहरी व अंदरूनी गिरोहों के कारण भारत में आतंकवाद अत्यधिक जटिल मसला हो गया है। लेकिन सर्वाधिक खतरा ओसामा बिन लादेन के वै"ि वक जिहादी आतंककारियों अल कायदा और पाकिस्तान स्थित इसके सहयोगियों से है। हालांकि नवम्बर मे हुए मुम्बई हमले की जिम्मेदारी के बारे मे ठोस निश्कर्श निकालने वाले जरूरी सभी साक्ष्य जुटाने में अभी काफी जल्दबाजी होगी लेकिन सम्भावना यही है कि हमला करने वाले आतंककारी और मास्टरमाइंड पाकिस्तान स्थित जिहादी गुटों से संबंधित है।

भारत एक द" ाक से भी ज्यादा समय से अल कायदा एवं वै"ि वक जिहादी अभियान के नि" ाने पर रहा है लेकिन अमरीका के साथ हमारी रणनीतिक साझेदारी के बाद तो यह काफी बढ़ गया है। ओसामा बिन लादेन और उसके नम्बर वन सहयोगी अयमान अल जवाहिरी ने भारत को मुस्लिम समुदाय के खिलाफ ईसाई धर्मयोद्धा यहूदी हिन्दू साजि" ा का हिस्सा करार दिया था। मुम्बई मे जिन लोगों की हत्या की गई वे अमरीकी, ब्रिटि" ा, इजराइली व भारतीय थे। लक्ष्य का यह चयन अल कायदा और उसके सहयोगियों द्वारा चित्रित की गई इस्लाम विरोधी तस्वीर मे बिल्कुल सटीक बैठता है जो पूरी साजि" ा के मास्टर माईड थे।

अमरीका को राश्ट्रीय आतंकवाद विरोधी केन्द्र की घोशणा के मुताबिक वर्श 2007 में भारत आतंकवाद से हताहत लोगों की संख्या के मामले मे विभिन्न गुटों के बीच गम्भीर संघर्श में उलझे इराक के बाद दूसरे स्थान पर रहा था। अब यह लगभग तय है कि 2008 में यहां हताहतों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा रहेगी। भारत मे विभिन्न संगठन आतंक को एक उपकरण के तौर पर इस्तेमाल करते है

जिनमें उत्तर पूर्व के अलगाववादी आंदोलन, दे" ा के मध्य व उत्तर में फैले ग्रामीण माओवाद जिसे नक्सलवाद भी कहा जाता है, मुस्लिम अल्पसंख्यकों में कट्टरपंथी भाामिल है। हालांकि ये घरेलू संगठन दे" ा में छोटे स्तर के हमलों के लिए ही जिम्मेदार है।

सबसे खतरनाक आतंककारी समूह पाक–अधिकृत क" मीर का है, जिसके तार सीधे अलकायदा और ओसामा बिन लादेन से जुड़े है। मुम्बई हमले की प्रारम्भिक जांच में जिस संगठन ल" कर ए तैयबा का नाम सामने आया है उसका गठन अफगानिस्तान और पाकिस्तान में 1980 के द" ाक के अंत और 90 के द" ाक की भुरूआत में क" मीरी कार्यकर्ताओं के समूह ने पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की मदद से किया था। ओसामा बिन लादेन इस संगठन का भुरूआती समर्थक था और उसी ने भुरूआत मे धन देकर इसकी मदद भी की थी। आईएसआई ही क" मीर मे होने वाले विद्रोह की मुख्य समर्थक थी और यह क" मीर पर भारतीय नियंत्रण ढीला करने के लिए अनियोजित संग्राम और आतंकवाद का सहारा लेने के साथ ही भारत के अन्य हिस्सों मे हमले करता है।

ल" कर–ए–तैयबा को वर्श 2002 मे पाकिस्तान मे प्रतिबंधित कर दिया गया था लेकिन जमात–उद–दावा जैसे कई अन्य नामों से यह सक्रिय है। अब इसका स्वघोशित उद्दे" य सिर्फ क" मीर ही नही बल्कि समूचे मध्य व दक्षिण एि" ाया को इस्लामी दे" ा बनाना है। इसके कार्यकर्ता अल कायदा और अफगानिस्तान के तालिबान के साथ काफी मिलकर काम कर चुके है। ये अपना कोश खाड़ी के दे" ाों और दुनिया के अन्य हिस्सों के इकट्ठा करते है। आईएसआई के साथ इसकी घनिश्ठता जग जाहिर है। हालांकि पाकिस्तानी अधिकारी इससे इनकार करते है लेकिन सच्चाई यह है कि प्रतिबंध के बावजूद यह संगठन पाकिस्तान की जमीन पर फल फूल रहा है और खुलेआम काम कर रहा है। यह अभी भी पाक अधिकृत क" मीर और अफगानिस्तान पाकिस्तान सीमा से जुड़े इलाकों में अपने लड़ाकों को प्रि" ाक्षित करता है हालांकि संयुक्त राश्ट्र ने अब जमात उद दावा पर प्रतिबंध लगा दिया है।

ल" कर–ए–तैयबा ब्रिटेन मे बसे पाकिस्तानियों को भी भर्ती करता है। आठ लाख की तादाद वाले इस समूह की जड़े क" मीर और पाकिस्तानी समुदाय मे है।

यही वजह है कि यह सबसे आकर्शक लक्ष्य है क्योकि इन लोगों के पास ब्रिटि" ा पासपोर्ट है और वे आसानी से यूरोप के अन्य कई दे" ाों में यात्रा करने में सक्षम है। मार्च 2000 में अमरीकी राश्ट्रपति क्लिन्टन की भारत यात्रा के दौरान क" मीर में हुए सिक्ख नरसंहार 2005 मे हुए दिल्ली बम विस्फोट और 2006 में वाराणसी व मुम्बई बम धमाकों सहित कई आतंककारी हमलों में ल" कर ए तैयबा का भाामिल होना पाया गया है। 11 जुलाई 2006 को मुम्बई में सिलसिलेवार धमकों में दो सौ से भी ज्यादा लोग मारे गए थे। सवाल अब यह उठता है कि हम ल" कर ए तैयबा से निपटने के लिए क्या करने वाले है ?

जै" ा –ए–मोहम्मद एक अन्य संगठन है जो वै"् वक जिहादियों के साथ निकटता से काम करता हे। दिसम्बर 1999 में इसी के क" मीरी कार्यकर्ता ने एक विमान आईए 814 का काठमांडू से अपहरण कर लिया था। बाद में वे उसे अफगानिस्तान के कंधार ले गए जहां तालिबान का मुख्यालय था। नेपाल मे उनकी मदद आईएसआई एजेंटों ने की । उन्होनें फिरोती के तौर पर मौलाना मसूद अजहर को छुड़वाया, जिसे आईएसआई पाकिस्तान ले गई। वहां उसका जबर्दस्त स्वागत हुआ। उसने काफी धन एकत्र कर जै" ा–ए–मोहम्मद की स्थापना की। इसके बाद जै" ा ने ल" कर की मदद से दिसम्बर 2005 मे भारतीय संसद पर हमला किया था। इसका उद्दे" य वरिश्ठ मंत्रियों एवं सांसदों की हत्या कर भारत मे संकट उत्पन्न करना था।

मुम्बइ विस्फोटो के बाद पाकिस्तान ने अपनी सेना पूर्वी सीमा पर तैनात कर दी, जिसका उद्दे" य अफगानिस्तान से जुड़ी पि"् चमी सीमा को बिन लादेन, जवाहिरी और मुल्ला उमर समेत अल कायदा और तालिबान नेतृत्व के लिए खुला छोड़ना था। इन पर अफगानिस्तान में अमरीकी सेना का काफी दबाव था। मुम्बई के हमलों की जैसी सूक्ष्म साजि" ा की गई, उस पर वै"् वक जिहादी आतंक के चिन्ह नजर आते है। हमलावर काफी प्रि"् ाक्षित थे, जिन्होने छोटी–छोटी टोलियां बनाकर महानगर के कई ठिकानों को नि" ााना बनाया और चुन चुनकर अमरीकियों, अंग्रेजो, इजराइलियों तथा भारतीयों की हत्या की । उन्होने लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए छोटी नौकाओं का उपयोग किया। अल कायदा के लक्ष्य हमे" ाा बड़े होटल रहे जैसा कि

उसने अम्मान, इराक, काबुल और इस्लामाबाद में किया। मुम्बई हमले में गिरफ्तार आतंककारी अजमल तो कबूल कर ही चुका है कि वह ल" कर का सदस्य है।

निश्कर्श यह है कि भारत तब तक सुरक्षित नही रहेगा जब तक हमलावर गुटों का सफाया नहीं किया जाता। अगर अंतरराश्ट्रीय मदद मिलती है तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए। पर अगर नही मिलती तो भी अपने बूते पर भारतीय नागरिकों की हिफाजत करनी होगी।

खुद लड़ेंगे अपनी जंग–

भारत में आतंककारी काफी संख्या में है लेकिन सर्वाधिक खतरा पाकिस्तान के उन गुटों से है, जिन्हे पाक केन्द्रित वैि" वक जिहादी नेटवर्क से सीधा जुड़ाव व सहायता हासिल है। जिहादी संस्कृति उफ नगर भारत मे खतरनाक वृद्धि दर से फैल रही है। इसमें कोई भाक नही कि 26 नवम्बर को मुम्बई पर हुए आतंकी हमले के लिए जिहादी मास्टरमाइंड और उनके सहयेागी जिम्मेदार है जो भारत को अस्थिर बनाना चाहते है। भारत दो द" ाकों से भी ज्यादा समय से अल कायदा और वैि" वक जिहादी आंदोलन के नि" ााने पर रहा है। ओसामा बिन लादेन और उसके सहयेागी अयमान–अल–जवाहिरी ने कई बार इस्लामी जगत के खिलाफ मसीही यहूदी हिन्दू ' ाडयंत्र में भारत के भाामिल होने का उल्लेख किया है।

वर्श 2002 में अल–कायादा के साथ काम करने वाले ल" कर–ए–तैय्बा पर पाकिस्तान ने प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन जमात–उद–दावा आदि कई अन्य नामों से यह संगठन अब भी अपनी गतिविधियां संचालित कर रहा है। सिर्फ क" मीर ही नही बल्कि समूचे दक्षिण व मध्य एि" ाया को मुस्लिम राश्ट्र बनाना इसका उद्दे" य है। इसके कार्यकर्ताओं ने अलकायदा के अलावा अफगानिस्तान में तालिबान के साथ भी काफी घनिश्ठता से काम किया है। आईएसआई के साथ इसके निकट संबंधों से भी सभी वाकिफ है। 9/11 के बाद से अब तक अल कायदा के कई मुख्य संचालक पाकिस्तान में ल" कर–ए–तैय्यबा के सुरक्षित ठिकानों से पकड़े गए है। मुम्बई में हमले के बाद समूचे अंतरराश्ट्रीय समुदाय ने इन संगठनों पर प्रबतबंध लगाने के लिए पाकिस्तान पर दबाव बनाया लेकिन पाकिस्तान ने इस संबंध में कोई प्रयास नही किए। संयुक्त राश्ट्र के जमात उद दावा पर

प्रतिबंध लगाने के बावजूद पाकिस्तान में बेरोकटोक इसकी गतिविधियां जारी रही और यहां तक कि वह संयुक्त राश्ट्र के प्रतिबंध को अदालत मे चुनौती देने भी पहुंच गया। पाकिस्तान ने मुम्बई हमले में पाकिस्तानी नागरिकों के भाामिल होने के सभी सबूतों को अनदेखा कर दिया और इसमें किसी भी पाकिस्तानी नागरिक के भाामिल नहीं होने की बात कहकर और पुख्ता सबूत देने का रंग अलापता रहा। हमले में गिरफ्तार आतंककारी कसाब के पाकिस्तानी होने की बात पर भी पाकिस्तानी नेताओं ने अलग अलग भाशा बोली। एक बार उन्होनें उसे अपना नागरिक मान लिया,लेकिन अब वे कहते है कि कसाब पाकिस्तानी नागरिक नही है। इसका मतलब यह है कि पुख्ता व स्पश्ट सबूत उपलब्ध करवाने के बावजूद पाकिस्तान जिहादी आतंककारियों को समर्थन देने के लिए कृत संकल्प है और इन संगठनों के जरिये भारत पर हमले की उसकी नीति अपरिवर्तित रहेगी। नवाज भारीफ ने सेना पर आरोप लगाते हुए कहा कि कसाब पाकिस्तान के फरीदकोट का रहने वाला है लेकिन इसका भी पाकिस्तान सरकार पर कोई असर नही हआ। अब सवाल यह उठता है कि भारत को उसके खिलाफ जारी पाकिस्तानी छद्म युद्ध से बचाव के लिए क्या करना चाहिए ? भारत के सामने कई विकल्प खुले हे।

- पाकिस्तान से सारे संबंध खत्म कर दिए जाए और उसे अपना दु" मन राश्ट्र घोशित कर दिया जाए।
- अमरीका, ब्रिटेन और इजराइल आदि दे" ाों, जिनके नागरिकों को नि" ाना बनाकर मुम्बई हमले मे हत्या की गई के साथ गठजोड़ कर आतंककारी संगठनों व गुटों के खिलाफ सैन्य कदम उठाए जाएं।
- अपने स्तर पर सैन्य ठिकानों पर मिसाइलों से अथवा हवाई हमले किए जाएं।
- आतंककारी समूहो व उनके आकाओं पर हमले के लिए वि" ोश बल भेजे जाए।
- पाकिस्तान को अस्थिर व छिन्न–भिन्न करने के लिए वहां दीर्घकालिक छद्म अभियान चलाया जाए और उसकी सेना को गृह युद्ध मे उलझाए रखें।
- संयुक्त राश्ट्र के पास वापस जाकर पाकिस्तान को आतंककारी राश्ट्र घोशित करने के साथ ही उस पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाने की बात कही जाए।

– पाकिस्तान के सैन्य तंत्र के साथ ही इसकी परमाणु क्षमता और जिहादी समूहों को नश्ट करने के उद्देश्य से पाकिस्तान पर हमला कर देना चाहिए।

एकतरफा सैन्य कार्यवाही से पाकिस्तान की ओर से सम्पूर्ण युद्ध की पहल का खतरा भाामिल है क्योंकि वह जानता है कि दोनों देशों के परमाणु टकराव की आशंका से दुनिया लम्बे समय तक इसे जारी रखने की अनुमति नहीं देगी और पाकिस्तान को बचा लेगी। इस बात में भी काफी संशय है कि पाकिस्तान के खिलाफ संयुक्त कार्यवाही की योजना में अमरीका भारत का सहयोग करेगा क्योकि वह अफगानिस्तान में युद्ध के लिए उसे संभारतंत्रीय समर्थन देता रहा है। अमरीका पाकिस्तानी सेना को अल–कायदा व तालिबान से लड़ने के लिए नए हथियार उपलब्ध करवा रहा है। इन परिस्थितियों में हमे किसी भी देश से किसी भी तरह के पत्यक्ष सैन्य सहयोग की उम्मीद नहीं करते हुए अपने स्तर पर आगे बढ़ना होगा। इसके लिए धैर्य और दृढ़संकल्प की आवश्यकता है लेकिन हमें तभी हमला करना होगा जब हमारी पूरी तैयारी हो और हम जीत के प्रति आश्वस्त हो। क्रोध व जल्दबाजी में ऐसा कुछ नही करना चाहिए जिसमे पाकिस्तान को कोई नुकसान ही नही हो। चाहे जो हो निश्चय ही हम पाकिस्तान की जमीन से एक और हमला बर्दाश्त नही कर सकते और हमें तुरन्त उपयुक्त तरीके से प्रतिकार के लिए तैयार रहना चाहिए। अल–कायदा और लश्कर–ए–तैय्यबा व जैश–ए–मोहम्मद आदि इसके सहयोगी गुट भारत पाकिस्तान के बीच कभी भी तनाव कम नही होने देगें क्योकिं इससे उनके हितों को नुकसान पहुंचता है। वे भारत व पाकिस्तान के बीच टकराव चाहते है क्योकि भारत पाक युद्ध से उपजी नफरत से ही वे फलते फूलते है। उपमहाद्वीप में तनाव कम करने का कोई भी मौका बाकी नहीं छोड़न और अफगानिस्तान सीमा पर तैनात पाकिस्तानी सेना को भारतीय सीमा की ओर ले जाने के लिए उन्होने मुम्बई पर हमला किया।

हमें उनकी योजनाएं नाकाम करनी होंगी। भारत और खासकर मुम्बई की जनता ने दिखा दिया कि वे अब किसी भी अन्य भाहर या संवेदनशील इलाकों मे सम्भावित आतंककारी हमले से दबेंगे नही। मुम्बई पर हमला करने वाले आतंककारी पहले विफल रहे और एक बार फिर भाहर और देशवासियों का मनोबल गिराने मे

नाकाम रहेंगे। हमें इस जंग को जीतने के लिए एकजुट होते हुए मजहब, जाति, समुदाय या अन्य राजनीतिक विचारों को दरकिनार करना होगा।

पाक सेना पर बनाए दबाव–

भारत पर हुए अब तक के सबसे लम्बे व दुस्साहसी आतंकी हमले के बाद भारत पाकिस्तान रि" तों पर फिरसे काले बादल मंडराने लगे हे। अगर इस बात के पुख्ता सबूत मिल जाएं कि मुम्बई हमले मे पाकिस्तान की भाासकीय संस्थाओं की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भूमिका थी तो भी यूपीए सरकार को सावधनी से आगे बढ़ना चाहिए। पाकिस्तान की आंतरिक राजनीतिक पर भी गौर करना होगा। अब तक जितने भी संकेत मिले है उसके आधार पर यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि पाकिस्तान की औपचारिक सत्ता भले ही प्रधानमंत्री युसफ़ रजा गिलानी और राश्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के हाथ में हो लेकिन परवेज मु" ार्रफ की विदाई के बाद भी अहम सामरिक और विदे" ा नीति संबंधी निर्णय अ" ाफाक कियानी के नेतृत्व में सेना ने ही लिये है।

आईएसआई की बात ही करे तो कुछ महिने पहले गिलानी ने अमरीका पस्थान करने से एक दिन पहले आईएसआई को गृहमंत्रालय के अधीन लाने का फरमान जारी किया। सेना के कड़े विरोध के बाद सरकार को विव" ा होकर यूटर्न लेना पड़ा। सितम्बर में जरदारी ने यह बयान देकर एक उम्मीद जताई कि क" मीर में भारत के खिलाफ लड़ रहे लोग स्वतंत्रता सेनानी नहीं बल्कि आतंककारी है। सैन्य प्रतिश्ठान आग बबूला हो गया और गिलानी सरकार को कुछ ही घंटो में स्पश्टीकरण देना पड़ गया । कुछ दिन पहले जरदारी ने यह कहा कि पाकिस्तान परमाणु हथियार का पहले इस्तेमाल नहीं करेगा। फिर क्या था ? जरदारी पर यह आरोप गढ़ दिए गए कि उन्होने तो बिना लड़े ही भारत के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया है। आईएसआई चीफ को भारत भेजने का वादा करने के बाद पाक सरकार को कियानी के बदाव में अपने कदम पीछे खींचने पड़े है।

संसद पर हमले के बाद भारत पाक रि" तों में यह दूसरा सबसे बड़ा संकट है। 13 दिसम्बर 2001 को भारत की संसद पर हुए हमले के बाद दोनों दे" ाों के बीच तनाव इतना बढ़ गया था कि भारतीय सेना को बड़ी संख्या में पि" चमी सीमा पर तैनात किया गया था। करीब छह महीने तक युद्ध का खतरा मंडराता रहा।

भारत को उससे क्या हासिल हुआ ? इस बार दे" ा का हर नागरिक बयानबाजी नहीं बल्कि ठोस कदम की आस लगाए बैठा है। बै" ाक मनमोहन सिंह अपने कार्यकाल की सबसे बड़ी कूटनीतिक चुनौती का सामना कर रहे है। उनके मन में सवाल यह नहीं है कि भारत को कोई कदम उठाना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि वह कदम क्या हो ? भारत और पाकिस्तान के बीच जो वि" वास बहाली के प्रयास हुए है या हो रहे है, उसके लिए राश्ट्रीय सुरक्षा से ले" ाात्र समझौता नहीं किया जा सकता। फिलहाल सरकार ने पि" चमी सीमा पर सेना की संख्या में वृद्धि नहीं करने की बात कहीं है। विदे" ा मंत्री प्रणव मुखर्जी ने भारत की यात्रा पर आए पाकिस्तानी

विदे" ा मंत्री भााह महमूद कुरै" ाी से बातचीत में हमलों के लिए सीधे पाकिस्तान सरकार की बजाय पाकिस्तान के भीतर तत्वों पर आरोप लगाया हे।

लेकिन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के उस प्रयास को जायज नहीं ठहरया जा सकता जिसके तहत आईएसआई प्रमुख अहमद भाुजा पा" ा को भारत बुलाने का आग्रह किया गया था। भाुजा की भारत यात्रा से क्या उद्दे" य सिद्ध होता, यह तो भाायद वे भी नही बता पाएंगे जिन्होने प्रधानमंत्री को ऐसा करने की सलाह दी थी। मुम्बई हमलों में ल" कर–ए–तैयबा की भूमिका प्रका" ा में आई है। इसलिए आईएसआई प्रमुख का ल" कर की कारस्तानी के बारे में खुफिया जानकारी देने का उलटा असर यह पड़ेगा कि वे आगे से और चौकन्ने होकर अपने काम को अंजाम देंगे। ल" कर ए तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद ने अक्टूबर मे सार्वजनिक रूपसे कहा था कि 'भारत केवल डंडे की भाशा समझता है। जिहाद भारत को उसी तरह तोड़ सकता है जिस तरह से पूर्व सोवियत संघ को तोडा था।' जाहिर है कि गिलानी सरकार भारत विरोधी तत्वों पर ि" ांकजा कसने में नाकाम रही है।

आने वाले दिनों मे यूपीए सरकार अगर पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाती है तो उसका नि" ााना कौन होगा ? गिलानी सरकार या आर्मी। मुम्बई हमलों के बाद से ही गिलानी सरकार के तो हो" ा उड़े हुए है। गिलानी ने पाकिस्तान के सभी मित्र दे" ाों को फोन के जरिए कहा कि इस हमले में पाक कोई कोई हाथ नहीं है। यही नहीं, राश्ट्रपति जरदारी ने तो याचक बनते हुए यहां तक अनुरोध कर दिया है कि अगर भारत को जांच में यह पता भी लग जाए कि मुम्बई

हमले में पाकिस्तानी आतंकवादी गुटों का हाथ है तो भी भारत को हमें नि" ाना नही बनाना चाहिए क्योंकि ये आतंकी गुट हमारी पकड़ से बाहर है। ऐसे में पाकिस्तानी सेना पर दबाव बनाए बिना कोई हल नहीं निकलेगा।

कब लेंगे सबक–

पिछले साल नवम्बर के अंतिम सप्ताह में मुम्बई पर हुए आतंकी हमले के बाद केन्द्र और राज्यों की आंतरिक सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न संस्थाएं कुछ खास नहीं कर पाई है। उसके उलट एनवाईपीडी के नाम से विख्यात न्यूयार्क पुलिस डिपार्टमेन्ट ने इस हमल पर 5 दिसम्बर 2008 को ही प्रारम्भिक रिपोर्ट तैयार कर ली थी। एनवाईपीडी की एक तीन सदस्यीय टोली ने 2 दिसम्बर को मुम्बई पहुंचकर आतंकी हमलों के स्थानों का मौका मुआयना किया तथा पुलिस अधिकारियों व च" मदीदों से बातचीत की। साथ ही आंकड़े और फोटो इकट्ठे किए। टोली के नेता ने न्यूयार्क में बैठे पुलिस के अधिकारियों और विभिन्न संस्थानों के सुरक्षा प्रबंधकों को टेलीफोन पर और वीडियों कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से अपने प्रारम्भिक निश्कर्श बताए। मुम्बई आतंकी हमले के वि" लेशण और उस पर चर्चा के लिए पांच दिसम्बर को वि" ोश रूप से बैठक बुलाई गई, जिससे न्यूयार्क में इस तरह के किसी सम्भावित हमले से बचाव के लिए समुचित कदम उठाए जा सकें। बैठक में नक" ो और चार्ट द" ार्ा कर हमले का पूरा घटनाक्रम विस्तार से बताया गया । सुरक्षा बलों की प्रतिक्रिया और फायर ब्रिगेड व डॉक्टरी मदद जैसी सहयोगी सेवाओं पर भी चर्चा हुई। एनवाईपीडी '" ाील्ड' नाम से एक सतत कार्यक्रम चलाता है, जिससे न्यूयार्क में सम्भावित आतंकी हमले के प्रतिकार के लिए बने सुरक्षा संगठनों व कार्यालयों के लगभग तीन हजार प्रमुख भाामिल होते है। उसी दिन एनवाईपीडी ने दो कवायद को। एक तो मुम्बई जैसे हमले की स्थिति में आपात इकाई के अधिकारी प्रतिक्रिया में कितना समय लगाते है, यह देखने की रणनीतिक कवायद की और दूसरी कवायद में आंतरिक सुरक्षा से जुड़े संगठनों के प्रमुखों की बैठक कर उन्हें इसे सब की जानकारी दी गई। एनवाईपीडी का निश्कर्श था कि मुम्बई और न्यूयार्क में कई समानताएं है। दोनों ही महानगर समुद्र तट पर बसे है और दोनों ही आर्थिक व मनोरंजन केन्द्र की दृश्टि से अपने–अपने दे" ा के नम्बर एक भाहर है। इसलिए मुम्बई में आंतककारियों द्वारा अपनाए गए तौर तरीकों का विस्तृत अध्ययन

तो जरूरी है ही, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह सबक सीखना है कि कई ठिकानों पर छापामार तरीके से ऐसा ही हमला हो तो उससे निपटने का सर्वश्रेश्ठ तरीका क्या हो सकता है। हालांकि निकट भविश्य में न्यूयार्क पर ऐसे सम्भावित आतंकी हमले की कोई खुफिया सूचना नहीं है, लेकिन प्रतिबद्ध पे" ाेवरों की तरह उन्होने जिस तीव्रता से वि" लेशण और कवायद की, उससे उनकी प्रतिबद्धता और व्यावसायिकता का उच्च स्तर झलकता है।

न्यूयार्क में नैक्सस नाम से एक और कार्यक्रम चल रहा है। इसमें संदिग्ध लोगों और उनकी गतिविधियों की पुलिस को जानकारी देने के लिए व्यापारिक व व्यवसायियों का सहयोग लिया जा रहा है। पुलिस के अधिकारी नियमित रूप से व्यावसायिक प्रतिश्ठानों में जाकर काम करने वालों को बताते है कि उन्हें कैसे निगाह रखनी है और संदिग्धों के बारे में किसे इसकी सूचना देनी है। दुनिया के विभिन्न भाहरों मे ग्यारह अधिकारी नियुक्त कर विदे" ा सम्पर्क इकाई स्थापित की गई है। इस इकाई के अधिकारी और अन्य अनुभवी अधिकारियों को ऐसे बड़े आतंकी हमलों के घटनास्थलों पर भेजा जाता है, जिन्हें न्यूयार्क भाहर की सुरक्षा की दृश्टि से प्रासंगिक समझा जाता है।

अंतरराश्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुकी संस्था रैण्ड कॉर्पोरे" ान ने आतंकी हमले पर अपनी रिपोर्ट जारी की है। उसका निश्कर्श है कि वर्श 2007 के अन्त में हमले की साजि" ा रचनी भाुरू हो गई थी। उसके अनुसार पाकिस्तान के जिहादी गुट ल" कर–ए–तोयबा ने इस हमले को अंजाम दिया, जो क" मीर में और अफगानिस्तान के कुनार व मूरिस्तान प्रान्तों में सक्रिय है। मुम्बई हमले में बेहद प्रि" ाक्षित आतंककारियों ने कमांडों की तरह समन्वित तरीके से छापामार कार्यवाही की। उनके पास हथियारों और गोलाबारूद का बडा जखीरा था। वे मुम्बई के भूगोल से परिचित थे और अपने आकाओं के साथ मोबाईल सेटेलाइट और ब्लैकबेरी फोन के माध्यम से निरन्तर सम्पर्क में थे। जवाबी कार्यवाही के लिए नियंत्रण कक्ष का नही बनना और तैनात विभिन्न सैन्य बलों का एक ही कमांडर न होना बहुत बड़ी चूक रही है।

अमरीका सरकार और वहां के निजी संगठनों ने मम्बई हमले के बाद जो तत्परता दिखाई है, उससे उनकी अमरीका में आतंककारी हमले रोकने के प्रति

प्रतिबद्धता की गम्भीरता झलकती है। इसके विपरीत केन्द्रीय गृहमंत्री मुम्बई हमले की जांच की मांग यह कहते हुए ठुकरा दी कि महाराश्ट्र पुलिस इसकी जांच कर रही है। बे" ाक केन्द्र ने कुछ कदम उठाए है लेकिन यह केवल राश्ट्रीय सुरक्षा गार्ड और आईबी से सम्बन्धित है। अब तक तो सभी संबंधित विभागों को अपनी कमियों का आकलन कर उन्हें दुरूस्त कर लेना चाहिए था। भारत पाक सीमा से लगाकर पि" चमी समुद्र तट पर अनेक छोटे बड़े बंदरगाह है। उनमें से कितनो ने अपनी रक्षा व्यवस्था पुख्ता करने के लिए कमियों की ि" ानाख्त की है ? हम पिछले तीस साल से आतंकवाद से जूझ रहे है हजारों लोगों की जान गवां चुके है और अरबों खरबों रूपए की सम्पत्ति से हाथ धो चुके है। अन्य दे" ाों ने तो इस वारदातों से सबक सीखे है और हम है कि आतंकवाद का सामना करने के लिए न तो मजबूत होकर उभर पा रहे है और न उसके लिए तत्परता दिखा पा रहे है। जब तक हम भगवान भरोसे रहने का रवैया नहीं छोड़ते और घटनाओं से सबक नहीं लेते, आतंककारियों का खूनी खेल इसी तरह चलता रहेगा।

जरूरी है सुसज्जित सेना–

थल सेनाध्यक्ष जनरल दीपक कपूर ने गत दिनों सेना दिवस की परेड में और उससे एक दिन पहले आयोजित संगोश्ठी में भारत की सैन्य क्षमताओं से सम्बन्धित दो महत्वपूर्ण मूद्दे उठाए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ हमारे सभी विकल्प खुले हुए है और सेना अपने दे" ा की जनता की सुरक्षा निरापद करने के लिए पूरी तरह तैयार है। बे" ाक हमारी सेना में अपनी सीमाओं और दे" ा की अखंडता के लिए दृढ़ इच्छा" ाक्ति व दृढ़ संकल्प" ाक्ति है, किन्तु क्या दे" ा में उसे इसके लिए बेहतर उपकरण, हथियार और साधन भी उपलब्ध करा रखे है ? अधिका" ा प्रेक्षकों का मानना है कि प्राथमिकता में कमी के कारण पाकिस्तान और अपने दे" ा की सेना के बीच सैनिकों की संख्या हथियारों और गुणात्मक उत्कर्श में श्रेश्ठता का अंतर कम हो गया है। यदि यह सिलसिला जारी रहा तो पाकिस्तान के खिलाफ ऐसा त्वरित हमला करने की स्थिति में हम नही रह जाएगें, जिसकी चर्चा मुम्बई में हुए आतंककारी हमले के बाद हमारे नेता और मीडिया समय–समय पर करते रहे है। इसे अलावा चीन के किसी भी हमले का सफलतापूर्वक मुकाबला करने

के लिए भी हमें पर्याप्त संख्याबल, हथियार और उच्चस्तरीय सैन्य नेतृत्व की जरूरत है।

ऐसा लगता है कि पिछले दस सालों से हमने अपनी सुरक्षा जरूरतों की घोर उपेक्षा की है। भविश्य के किसी संभावित युद्ध के लिए हमने पिछले दस साल में सेना को नए हथियार व उपकरण उपलब्ध नही कराऐ है। कारगिल युद्ध के मद्देनजर जो अत्याव" यकता दिखाई दी थी वह बहुतजल्दी खत्म हो गई। उजागर हुए रक्षा घोटालों के कारण नए रक्षा सौदे रोक दिए गए। नतीजन हमारा तोपखाना न केवल पुराना अपितु अपने ज्ञात दु" मनों पर रणभूमि में जरूरी श्रेश्ठता की दृश्टि से बेहतद अपर्याप्त है। पाकिस्तान के खिलाफ कार्यवाही और दु" मनों के किसी भी नापाक इरादे को नाकाम करने के लिए जरूरी भास्त्रागार और तोपखाना पुराने तो पड़ ही गए है, साथ ही आधुनिक युद्ध की जरूरतों से निपटने में कम प्रभावी है। सेना की रीढ़ मानी जाने वाली हमारी पैदल सेना को आधुनिक हथियारों व बेहतर सेवा भार्तो की जरूरत है, जिससे व रणभूमि में सर्वश्रेश्ठ प्रद" र्न कर सकें। रात मे लड़ने की उनकी क्षमता को अविलम्ब बेहतर बनाने की जरूरत है, क्योंकि अब भी हमारे पास ऐसे अत्याधुनिक उपकरण नही है, जिनकी मदद से रात में भी दूर तक देखा जा सकें। पाकिस्तान की तुलना में हमारे पास एटमी हथियार ज्यादा है, लेकिन हम खुद इनका पहले उपयोग नहीं करने की घोशणा कर चुके है। इसलिए युद्ध होने पर इसका फायदा पाकिस्तान को होगा। पारम्परिक हथियारों के मामले मे बहुत ज्यादा श्रेश्ठता नहीं होने और पाकिस्तान से एटमी हमला पहले होने के डर के कारण हम पाकिस्तान को अपनी भातो पर युद्ध और भान्ति के लिए मजबूर नही कर पाएंगे। यह उपयुक्त समय है जब हम खुद पर थोपी पाबंदियों को हटाएं ताकि गुप्त और पारम्परिक युद्ध लड़ने की क्षमता में पाकिस्तान की धर को भोंथरा कर सकें।

यदि हमें अपनी जनता की सुरक्षा और दे" ा के स्वाभिमान पर आंच नहीं आने देनी है, तो हमें अपनी रक्षा जरूरतों की वास्तविकताओं के प्रति सचेत होना पड़ेगा। इस समय सबसे ज्यादा जरूरी तो सेना को पर्याप्त धन उपलब्ध कराना है, जिससे वह भावी युद्धों के लिए परिश्कृत उपकरण खरीद सकें। जीडीपी से तुलनात्मक दृश्टि से देखें तो हमारा रक्षा बजट दुनिया के ज्यादातर दे" ों की

तुलना में कम हे। हमारी बजट प्रणाली भी ऐसी है कि हरेक वित्तीय वर्श में रक्षा खरीद के लिए बजट में जो रा"ि ा आवंटित होती है, उसमें से बहुत बड़ी रकम खर्च ही नही हो पाती और लैप्स हो जाती है। हम अपनी जरूरत के हथियार खरीदने के कई मौके गंवा चुके है। हमें युद्ध के लिए कम से कम चार सौ बोफोर्स तोपे, स्वचालित तोपखाना, अत्याधुनिक बंदूके और आतंककारियों पर अंकु" ा के लिए अधिक हेलीकॉप्टरों की आव" यकता है। इनके लिए हमें पर्याप्त रकम का बंदोबस्त करना होगा।

हमारा दूसरा मोचा आतंरिक सुरक्षा का है, जहां सेना स्थाई रूप से विद्रोह और आतंकवाद के खिलाफ जूझ रही है। इस मोर्च पर भी सवाल उठता है कि क्या हथियार, उपकरण, तकनीक, परिवहन प्रणाली और संचार प्रणाली के मामले में आतंककारियों व विद्रोहियों के मुकाबले हम बेहतर स्थिति मे है और क्या हमारे जवानों व अधिकारियों के पास बुलेट प्रूफ जैकेट है, जिनसे उनकी जान बच सके तो इनका उत्तर नही में है। ऐसे हालात में सेना कब तक सफल हो पाएगी ? जब पैसे का सवाल उठता है तो हमारी प्राथमिकताओं पर प्र" नचिन्ह लगता है। अपर्याप्त रूप से सज्जित सेना बेहतर सीमा पार से प्रेरित व हथियारों से सुसज्जित विद्रोहियों और आतंककारियों को पराजित नहीं कर सकती।

आतंककारियों व उनके हिमायतियों को यह द" ार्ाने की जरूरत है कि हम उन्हें चैन नहीं लेने देंगे। यदि हम अपने दे" ा की सुरक्षा चाहते है तो देर सवेर हमें उनके ठिकानों पर हमला करना ही होगा, महज सख्त चेतावनी व बातों से तो आतंककारी और मजबूत व नि"ि चत हो जाते है कि भारत कुछ नहीं कर सकता। कुछ करने के लिए हमें प्रबल राजनीतिक इच्छा" ाक्ति की जरूरत है, जिसके बूते नतीजे की परवाह किए बिना हम हमला करने वाले आतंककारियों के ठिकानों को नेस्तनाबूद कर सकें। लेकिन इसके लिए हमें सेना को सुसज्जित करना होगा जिससे वह दु" मन को नश्ट कर धूल चटा सकें। कोरी बातें करने से कुछ नहीं होने वाला।

आतंकवाद पर कड़ा प्रहार–

आतंकवाद भारत के लिए नया नहीं है। ब्रिटेन और इजराईल की ही तरह हमने भी आतंकवाद की पीड़ा अन्य दे" ाों की तुलना में कहीं ज्यादा झेली है।

हैदराबाद स्टेट के भारत में विलय के कुछ ही समय बाद वहां कम्यूनिस्ट प्रेरित आतंकवाद सामने आया। इसी तरह की विचारधारा पर आधारित छोटे स्तर के आंदोलन का दमन पंजाब के तत्कालीन स्टेट पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट्स (पेप्सू) में भी किया गया था यह पि" चम बंगाल के नक्सलबाड़ी में हुए आंदोलन के बाद हुआ था। साठ के द" ाक में मिजोरम बुरी तरह प्रभावित था। बीस साल बाद पाक प्रोयाजित आतंकवाद पंजाब में कहर का कारण बना। वर्श 2008 भारत के कई प्रमुख भाहरों पर हुए आतंककारी हमलों में सबसे ज्यादा लोगों की जाने लेने की वजह से जाना जाता रहेगा। मुम्बई हादसे मे दे" ा की जनता को क्रोधित और व्याकुल कर दिया है। यह आ" चर्य की बात है कि दे" ा की वित्तीय राजधानी मानी जाने वाली मुम्बई को पहले भी लगातार कई हमले होने के बावजूद इस तरह असुरक्षित क्यों छोड़ दिया गया।

अमरीका पर हुए दुनिया के सर्वाधिक भीशण आतंककारी हमले के बाद उसने अपनी सुरक्षा के लिए तुरन्त व्यापक मापदंड अपनाए। अमरीका में इसके बाद कोई आतंककारी हमला नहीं होने का श्रेय इसी कदम को जाता है। अमरोकी सरकार नौ महीने के भीतर जुलाई 2002 मे राश्ट्रीय रणनीति ले आई जिसे तुरन्त लागू कर दिया गया। वहां ब्रिटेन के गृहविभाग या हमारे दे" ा के गृहमंत्रालय की तरह कोई केन्द्रीय विभाग या मंत्रालय नहीं था। होमलैंड (मातृभूमि) सुरक्षा का एक नया विभाग बनाकर उसे आतंककारी गतिविधियों की रोकथाम और उन्हे नश्ट करने का पूरा जिम्मा सौंप दिया गया। दे" ा में आतंकारियों से सम्पर्क रखने वाले संदिग्ध लोगों के प्रवे" ा तथा अमरीका में हथियारों, विस्फोटकों, गोला बारूद व अन्य सामग्री की तस्करी को रोककर इसमें सफलता भी हासिल को गई। विभाग को दे" ा में इस्लामी कट्टरता के उद्भव को रोकने का आदे" ा दिया गया, ताकि कहीं भी उन्हें रंगरूट नहीं मिलें। घरेलू उग्रवाद को नाकाम करना भी इसके उद्दे" यों में से एक है। अमरीकी जनता एवं महत्वपूर्ण बुनियादी सुविधाओं के साथ ही मुख्य संसाधनो की सुरक्षा और हमलों की निरन्तरता को कम करना भी विभाग की जिम्मेदारीयों में भाामिल है। इन लक्ष्यों को हासिल करने में सक्षम रहने के लिए विभाग ने अन्य केन्द्रीय विभागों, प्रदे" ा सरकारों व स्थानीय निकायों के साथ गैर सरकारी तथा निजी कम्पनियों के साथ समन्वय बनाया। हर समूह की भूमिका तय है और सौंपे

गए कार्य के लिए उनकी क्षमताओं व सामर्थ्य में भी निरन्तर विकास व बढ़ोतरी की गई है। कम समय में पुनप्राप्ति, प्रभावी परिवर्तन और दीर्घावधि पुननिर्माण की योजना बनाई गई है। विभाग मुस्तैद रहने की परम्परा के विकास को महत्व देते है जो दे" ा के समाज, नागरिकों, क्षेत्रों एवं वर्गों के सभी स्तरों मे जगह बना लेती है। इस बात पर जोर दिया गया कि यह साझा जिम्मेदारी है जो सभी को मिल बांट कर उठानी होगी। राश्ट्रीय व स्थानीय सरकारों के स्तर पर योजनाएं बनाने, निर्दे" ात करने, निर्णयों को निश्पादित करने तथा इनके क्रियान्वयन के आकलन व मूल्यांकन के लिए एक प्रबंधन तंत्र गठित किया गया। इसी के साथ होमलैड सुरक्षा में वि" ोशज्ञता रखने वाले व्यावसायिक लोगों का एक कैडर भी प्र" िक्षण कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों की श्रृंखला से तैयार किया गया। अमरीकी सरकार ने राजनयिक, सैन्य, आर्थिक, वित्तीय, खुफिया और कानून प्रवर्तन से जुड़े राश्ट्रीय सत्ता और प्रभाव के सभी उपकरणों का उपयोग करते हुए अपनी जमीन पर आतंकवाद की रोकथाम का संकल्प किया है। अमरीकी कांग्रेस ने तुरन्त कदम उठाते हुए आव" यक कानूनी ढांचे के लिए महत्वपूर्ण असंख्य नए कानून पारित कर दिए जो कानूनी प्रर्वतन एजेनसियों को निगरानी रखने, जांच व खोज के साथ ही टेलीफोन व संचार के अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों पर लगाम लगाने या बंद करने तक का अधिकार देते थे। इस तरह के अनगिनत कानूनों के माध्यम से एक राश्ट्रीय संकल्प का निर्माण हुआ जिससे जनता को एहसास हो गया कि आतंकवाद सभी नागरिकों को प्रभावित करता है और हर किसी को आतंकवाद से जूझने के लिए संयुक्त राश्ट्रीय प्रयासों में योगदान करना होगा। इसके बिल्कुल विपरीत भारत में इस संकट से पिछले 20 सालों से जूझने के बावजूद आतंकवाद का सामना करने की जिम्मेदारी काफी बंटी हुई है। गृह मंत्रालय एक नोडल एजेंसी है जो इंटेलिजेंस ब्यूरो अथवा किसी राज्य से मिली खुफिया रिपोटों को दूसरे राज्यों या मंत्रालयों को भेजने वाले पोस्ट ऑफिस की तरह काम करता है। मंत्रालय ने माओवादी संगठनों के खिलाफ साझा रणनीति बनाने के लिए तो प्रदे" ाों के साथ तालमेल बैठकें की, लेकिन इस्लामी आतंकवाद के खिलाफ इस तरह का कोई प्रयास नही देखा गया । भाायद समय समय पर दि" ाा निर्दे" ा और सलाहें जरूर जारी की गई है। केन्द्र मे खुफियां जानकारियों के संग्रहण की जिम्मेदारी दोनों एजेनसियों खुफिया इंटेलिजेंस ब्यूरो तथा रिसर्च एंड

एनालिसिस विंग (रॉ) पर है। ये दोनों आंतरिक व बाहरी खुफिया जानकारी के लिए जिम्मेदार है। इनसे अपेक्षाएं करते समय हमें इनकी व्यावहारिक कठिनाइयों को जेहन में रखना चाहिए। जिहादी संगठनों को पड़ोसी दे" ाों का समर्थन हासिल है। हर आतंककारी घटना के बाद हुई जांच मे सामने आया कि दे" ा के बाहर ही घटना की रूपरेखा बनाने और प्र" िक्षण का काम सम्पन्न हुआ है। इन संगठनों ने अत्यंत गोपनीयता बनाए रखने के लिए तंत्र विकसित कर लिए है और कई मामलों मे गतिविधियों को अंजाम देने वाले आतंककारी विदे" ाी थे। सिर्फ पूरी तरह से खुफिया तंत्र के भरोसे ही काम नहीं चल सकता। घुसपैठ और दे" ा में आयुध सामग्री की तस्करी की रोकथाम के लिए हमारे रक्षा तंत्र को प्रभावी बनाना होगा।

फिलहाल कार्यालय कर्मीयो से भरे पड़े गृह मंत्रालय में अधिकाधिक पुलिस अधिकारियों की नियुक्ति के लिए स्वयं प्रधानमंत्री को कहना पड़ा। आतंकवाद से निपटने के लिए आव" यक वि" ोश कानून लागू नही किए गए है। चोरों, ठगों व जेबकतरों जैसे छोटे स्तर के अपराधियों पर लागू होने वाले रिमाड व 90 दिन मे आरोप पत्र दाखिल करने जैसे प्रावधान आतंककारियों पर भी लागू होते है। पुलिस बल इसी तरह कम प्र" िाक्षित व कमजोर उपकरणों से लैस रहेगी। इन सभी कमजोरियों का फायादा आतंककारी संगठनों ने पूरी तरह से उठाया है। वास्तव में अमरीका की स्थितीयां हमारी स्थितियों से बिल्कुल भिन्न है। इसी वजह से हमें अमरीका या अन्य दे" ाों से कहीं अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। उनके सम्पूर्ण तंत्र को अपनाया नहीं जा सकता लेकिन तंत्र की कई स्थापित वि" ोशताएं अपनाई जा सकती है। इस ओर पहला कदम अलग से आंतरिक सुरक्षा मंत्रालय की स्थापना करके उठाना होगा जिसके अधीन आतंकवाद विरोध का तंत्र विकसित करना होगा।

कैसे हो आतंक का अंत–

जयपुर में हुए आतंककारी हमलों ने यह बात स्पश्ट कर दी है कि आतंकवाद से मुकाबला केवल पुलिस और सैन्य बलों के द्वारा नही किया जा सकता । यदि हम पीछे मुड़कर देखें तो पाते है कि भारत लगभग 30 वर्शो से आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। वस्तुतः आतंकवाद किसी एक राश्ट्र की समस्या न होकर समस्त वि" व के समक्ष एक गम्भीर चुनौती है। अमरीका जैसे सर्व" ाक्तिमान दे" ा

में भी 11 सितम्बर 2001 को वर्ल्ड ट्रेर्ड सेन्टर पर आत्मघाती आक्रमण हुआ । 9/11 के बाद संयुक्त राश्ट्र ने भी आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए अनेक कदम उठाए है। उसमें सुरक्षा परिशद का प्रस्ताव 1373 (2001) प्रमुख है। इस प्रस्ताव में सभी राश्ट्रों से इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए सहयोग की अपील की गई है। साथ ही एक आतंकवाद रोधी समिति (सी.टी.सी.) की स्थापना भी की है जो अंतराश्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक कार्यवाही को प्रात्साहित करने वाला संयुक्त राश्ट्र का प्रमुख निकाय है। इसके अतिरिक्त सी.टी.ई.डी. और आतंकवाद बचाव ब्रांच भी है जो प्रभावित राश्ट्रों को आतंकवाद का मुकाबला करने में तकनीकी व अन्य प्रकार की सहायता करती है। इसके अलावा सितम्बर 2006 में महासभा के सभी सदस्य राश्ट्रो द्वारा वैि" वक आतंकवाद रोधी रणनीति अंगीकृत की गई है जिसमें आतंकवाद से मुकाबले की विस्तृत कार्ययोजना बनाई गई है। इससे स्पश्ट होता है कि संयुक्त राश्ट्र ने भी आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए अनेक कदम उठाए है।

आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए दो बाते बहुत महत्वपूर्ण है। एक अन्तरराश्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राश्ट्र के सभी दे" ाों के मध्य सहयोग द्वितीय पुलिस एवं सैन्य बलों के साथ जनता की भागीदारी । अंतरराश्ट्रीय सहयोग के लिए आव" यक है कि संयुक्त राश्ट्र के चार्टर की प्रस्तावना में स" ाोधन किया जाए। इसके चार्टर की प्रस्तावना म कहा गया है कि हम संयुक्त राश्ट्र के प्रकोप से बचाने के लिए संकल्प लेते है। अब इसमें इस प्रकार स" ाोधन किया जाए– 'हम संयुक्त राश्ट्र के लोग वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को युद्ध के प्रकोप के अलावा आतंकवाद के प्रकोप से बचाने के लिए संकल्पबद्ध है। इससे सभी 192 सदस्य दे" ा आतंकवाद से मुकाबले के लिए प्रयास करेगें। इसके उल्लंघन की द" ाा में प्रतिबंध का भय रहेगा।

उपर्युक्त के अतिरिक्त यह भी आव" यक है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में जन सहभागिता को भी सुनि"ि चत किया जाए। जन सहभागिता से तात्पर्य यह है कि पुलिस एवं सैन्य बलों का इस मुहिम में जनता भी सहयोग करें। दे" ा में जितनी भी पुलिस अकादमियां है वहां जनता को भी प्रि" ाक्षण दिया जाना चाहिए। प्रथम स्तर परमास्टर ट्रेनर तैयार किए जा सकते है जो ओर जिला एवं

थाना स्तर तक श्रृंखलाबद्ध एवं विकेन्द्रित तरीके से प्रf" ाक्षण प्रदान कर सकते है। आतंकवाद को एकांगी रूप से नही देखा जाना चाहिए। आतंकवाद से मुकाबलों मे जहां सैन्य भाक्ति का प्रयोग आव" यक है वहीं अनेक पहलुओं पर भी समान्तर रूप से कार्य होना चाहिए। यथा अन्तरराश्ट्रीय, धार्मिक समन्वयवाद, मानव अधिकारों की सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, f" ाकायत निवारण तंत्र, सु" ाासन, सामूहिक सुरक्षा के प्रति जागरूकता, पुलिस पब्लिक समन्वय, खुफिया तंत्र एवं आतंकवाद रोधी नीति। आतंकवाद से मुकाबले एवं आन्तरिक सुरक्षा की व्यूह रचना में यह आव" यक है कि युवाओं को वि" ोश तौर पर जोड़ा जाए। भारत में इस समय लगभग 15–25 वर्श की आयु वर्ग के 52 करोड़ युवा है, भारत वि" व में सबसे ज्यादा युवाओं वाला दे" ा है। इन युवाओं को यदि विकास के साथ साथ आतंकवाद आंतरिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर विस्तृत नीति का निर्माण कर जोड़ा जाए तो ये भारत को स्वर्ग बना सकते है।

अध्याय–2

भारत बांग्लादे"ा सम्बंधों का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

बांग्लादे"ा का उदय–

बांग्लादे" ा का उदय वि" व परिदृ" य पर एक स्वतंत्र सम्प्रभु गणराज्य के रूप में 16 दिसम्बर 1971 को भारत के राजनीतिक और सैन्य संरक्षण के तहत हुआ और इसी से भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों की भाुरूआत हुई।[प] यह पूर्वी पाकिस्तानी प्रान्त में बंगाली असंतोश का परिणाम था। बांग्लादे" ा के उदय के जिम्मेदार कारणों को समझने के क्रम में हमे उन परिस्थितियों को भी तला" ाना होगा। जिन्होन भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन भारत व पाकिस्तान द्विराश्ट्रीय सिद्धान्तों के आधार पर किया।

पाकिस्तान का निर्णय ऐ.के फजलू हक के द्वारा प्रस्तावित किया गया और 23 मार्च 1940 को मुस्लिम लीग के लाहार अधिवे" ान में स्वीकार किया गया। लाहौर निर्णय ने दो स्वतंत्र सम्प्रभु राज्य का प्रस्ताव रखा एक उत्तरी पf" चमी और दूसरा ब्रिटी" ा भारत का पूर्वी क्षेत्र जहां मुस्लिम जनसंख्या का बाहुल्य था।[पप]

वास्तव म (तीन जून 1947) को माउण्टबेटन योजना के अनुसार पहली बार यह महसूस किया गया कि दे" ा का विभाजन साथ ही बंगाल और पंजाब का अव" यभावी था।

पाकिस्तान का राज्य अस्तित्व मे आया 1947 के भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप जहां मुस्लिम समुदाय को एक अलग भू भाग मिला इसके दो भाग थे पं" चमी और पूर्वी एक हजार मील की भारत की सीमा से अलग करके पाकिस्तान के पांच प्रान्तों मे से पूर्वी बंगाल भी एक था। पं" चमी पंजाब, सिंध,एनडब्ल्यूएफपी, ब्लूविस्तान, अगर पं" चमी भाग से तुलना की जाये तो पूर्वी बंगाल का आकार मात्र 55126 स्कावयर मील था जो पं" चमी भाग की तुलना में बहुत कम था। पूर्वी बंगाल मे पाकिस्तान की कुल जनसंख्या की 54 प्रति" ात जनसंख्या निवास करती थी। पाकिस्तान का निर्माण ने ही इसके खुद के विना" ा के बीज बो दिये। दोनों भागों के लोग दो अलग–अलग धार्मिक मतों के ये पं" चमी पाकिस्तान में पंजाबी, पठान, बलूनी और सिंधी थे जो लम्बे और गौरी चमडो वाले थे जबकि पूर्वी पाकिस्तान के बंगाली काले और कदम मे छोटे थे दोनो भागों के लोगों की संस्कृति, भाशा, परम्परा, और रीति रिवाज, अलग–अलग थे। पूर्वी भाग, भाशा, संस्कृति और आर्थिक दृश्टि से घरेलू (भारत से मिलता हुआ) था जबकि पं" चमी भाग विदे" ी था।[पपप]

विभिन्न प्रान्तों के लोग विभिन्न भाशायें बोलते थे।[पअ] पाकिस्तान में इस विपत्तो का मूल कारण अततः बांग्लादे" ा के उदय के रूप मे परिणीत हुआ तब से ही दोनों भाग एक दूसरे के विरोधी हो गये। पूरे दे" ा में पं" चमी पाकिस्तान हावी था। इसी हावी होने ने पाकिस्तान को जकड कर के रखा। दबाव मे और बाध्यताओं मे और उसने (पं" चमी भाग मे) भारत से अलग हुये भागों पर दबाव और बाध्यातायें लाद दी। जिसके परिणामस्वरूप अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजन हुआ। पाकिस्तान के दोनों भागों में भौगोलिक एकता, समान भावना, समान ऐतिहासिक परम्परा, जाति, संस्कृति और सामाजिक पहचान का अंतर था, केवल एक ही तथ्य जिसने दोनों भागों को एक किया वह था धर्म लगभग 1200 मील की भारतीय सीमा दोनों भागों की अलग करती थी, जिन्नाह चाहते थे कि दोनों भागों के बीच एक

गलियारा बने लेकिन इसे भारत ने नकार दिया। जिन्नाह के भाब्दों मे उसको भिन्न–भिन्न, सडा–गला और टुटा–फुटा कर दिया ।

पाकिस्तान के निराले होने पर जय पका"ा नारायण ने निम्न कथने कहे–

1. पूरी दुनिया में पाकिस्तान जैसा दूसरा दे" ा नही हो सकता जिसके दोनो भाग भारत की सीमा के द्वारा 1 हजार मील से भी ज्यादा दूरी से अलग किये गये है।
2. पूर्वी आर पि" चमी पाकिस्तान में धर्म के अलावा और कुछ भी समान नही था वे भाशा मे संस्कृति मे सामाजिक संरचना मे बहुत ज्यादा अलग थे।
3. पाकिस्तान की कुल जनसंख्या का 54 प्रति" ात भाग पूर्वी पाकिस्तान मे था।
4. पि" चमी पाकिस्तान के सैन्य और अधिकारी वर्ग के हाथों मे राजनैतिक और आर्थिक ताकत निहित थी। इसी के परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान मात्र एक उपनिवे" ा से अधिक कुछ नही था।

मोलाना अब्दुल कलाम आजाद ने दोनों भागों की भौगोलिक अस्पश्टता को निम्न भाब्दों मे व्यक्त किया है। जिन्नाह और उसके अनुयायियों ने यह महसूस नही किया की भूगोल उनके खिलाफ था। इन दोनों क्षेत्रों मे कोई भौतिक सम्पर्क नही था। इन दोनां क्षेत्रों के लोग पूरी तरह से एक दूसरे से अलग थे सिवाय धर्म के। यह लोगों के साथ सबसे बडा छल था कि धार्मिक एकता उन क्षेत्रों को भी एक कर सकती है जो भौगोलिक, आर्थिक, भाशायी, सांस्कृतिक दृश्टि से अलग अलग है। इतिहास ने यह सिद्ध किया है कि ईस्लाम समस्त मुस्लिम दे" ाों को एक करने मे इस वजह से सक्षम नही हुआ कि उनका आधार ईस्लाम था कोई भी यह उम्मीद नही कर सकता की पूर्वी व पि" चमी पाकिस्तान इनकी विभिन्नताओं को एक करके एक ही राश्ट्र के रूप मे निर्वाह कर सकें।

ढाका मे भरतीय उच्चायोग के पहले आयुक्त जे.एन. दीक्षित ने उन तीन महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रका" ा डाला जो पाकिस्तान की एकता के खिलाफ गये जो निम्नलिखित है।

1. भौगोलिक दूरी जो लगभग 1 हजार मील की भारतीय सीमा के द्वारा दोनों भागों को अलग करना ।
2. दोनों भागों के बीच मे सीमा का असंतुलन

3. पाकिस्तान के संस्थापकों की बंगाली मुसलमानों की संस्कृति व भाशायी पहचान के प्रति असंवेदन" ीलता ।

इस प्रकार से यह स्पश्ट ह कि पाकिस्तान का निर्माण जो द्विराश्ट्रीय सिद्धान्तों के परिणामस्वरूप हुआ वह एक ऐतिहासिक भुल थी। इस प्रकार अन्तर्निहित दोशां में जो विभाजन के समय अस्तित्व मे थे धीरे–धीरे दोनों भागों म अपराधिकरण को जन्म दिया। इसी के फलस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान का पि" चमी पाकिस्तान के विरूद्ध स्वतंत्रता आंदोलन प्रारम्भ हुआ। वे घटनाऐ जो पाकिस्तान के विभाजन के लिये जिम्मेदार थी वह थी केन्द्र सरकार की अदूरदि" ाता पूर्ण नीति जिसमे भाक्ति के हस्तान्तरण मे एक स्पश्ट रूपरेखा का अभाव था कि पूर्वी क्षेत्र मे एक बहुत बडी जनसंख्या रहती थी।

प्रारम्भ से ही बंगाली इस बात को लेकर के भांकालु थे कि पाकिस्तान के भाासक वर्ग मे वे पुरी तरह से अनुपस्थित थे उनकी अनुपस्थिति संयोगव" । नही बल्कि जानबूझकर की गयी थी यह उस ऐतिहासिक सम्बोधन से स्पश्ट था जो जिन्नाह ने पाकिस्तान मे संविधान सभा के समक्ष 1947 मे दिया जिसमे उसने बंगाली मुसलमानों का जिक्र तक नही किया ।

संक्षेप में हम कह सकते है कि पाकिस्तान के दोनों भागों में इसके जन्म से ही विभिन्नतायें और असंतोश अस्तित्व में था।

आर्थिक असंतुलन–

पूर्वी पाकिस्तान की तुलना मे पि" चमी पाकिस्तान मे विभाजन के समय कुछ लाभ प्राप्त थे। इसमें (पि" चमी पाकिस्तान) आधारभूत ढांचा श्रेश्ठ था जिसमे औद्योगिक विकास किया जा सकता था जैसे रेल, सडक, परिवहन एक बहुत अच्छा बंदरगाह और एक अन्तर्राश्ट्रीय हवाई अड्डा भामिल था।

दूसरा महत्वपूर्ण लाभ जो पि" चमी पाकिस्तान को था वह यह कि यह दे" । का सबसे ज्यादा राजनेता, नौकर" ाह और पूंजीपतियों की पूर्ति करता था जिन्होने करांची को एक नई राजधानी बनाया।

पूर्वी बंगाल कलकत्ता से अलग होने के बाद बडो औद्योगिक इकाईयों को खो चुका था जहां यह केवल एक ही फसल जूट के उपर निर्भर था।

विभाजन के समय पूर्वी बंगाल को केवल 314 औद्योगिक इकाईयां प्राप्त हुई जबकि पाकिस्तान के हिस्से 1414 इकाईयां थी इन सब ने पि”मी पाकिस्तान की आर्थिक विकास मे मदद की। पूर्वी बंगाल के लोग पि”म की पाकिस्तान की राजधानी की स्थिति से भी निरा” ा थे और पहली केबिनेट मे 1 भी बंगाली मुसलमान को भाामिल नही किया गया।

पाकिस्तान के योजना आयोग ने उनकी सार्वजनिक रिपोर्ट मे यह स्वीकारा कि 1954–60 के मध्य पि”मी पाकिस्तान की प्रति व्यक्ति आय 32 प्रति” ात ज्यादा थी पूर्वी पाकिस्तान की अपेक्षा अगले 10 वर्शो के दौरान वार्शिक विकास दर पि”मी पाकिस्तान की 62 प्रति” ात थी जबकि पूर्वी पाकिस्तान की मात्र 42 प्रति” ात थी । परिणाम स्वरूप 1969 से 1970 में पि”मी पाकिस्तान की प्रति व्यक्ति आय पूर्वी पाकिस्तान की अपेक्षा 6 प्रति” ात आय थी। 1950 से 55 के योजना काल मे पूर्वी पाकिस्तान का सार्वजनिक निवे” ा का भाग 20 प्रति” ात से भी कम था। पूर्वी पाकिस्तान का पाकिस्तान की कुल निर्यात आय का 50 से 70 प्रति” ात भाग था। जबकि इसके आयात का भाग मात्र 25 प्रति” ात था।

पूर्वी पाकिस्तान ने पि”मी चम की पाकिस्तान से लगभग 26 बिलीयन डालर 1948 से 69 के दौरान अर्जित किया। 1968 से 69 के दौरान पि”मी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान से 50 प्रति” ात ज्यादा बेचा जो उसने पूर्व से लिया था।

दोनों भागों के बीच असंतुलन इस सीमा तक बढ गया कि पि”मी पाकिस्तान की 46 प्रति” ात जनसंख्या ने 77 प्रति” ात कुल विकास का खर्च योजनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जबकि पूर्वी पाकिस्तान की 54 प्रति” ात जनसंख्या का भाग 23 प्रति” ात ही हासिल हुआ।

सारणी 1.1

पि”चमी और पूर्वी पाकिस्तान के बीच आर्थिक असंतुलन[अ]

	पि”चमी पाकिस्तान	**पूर्वी पाकिस्तान**
विभिन्न विकासात्मक ढांचे के लिये विदे” ाी आदान–प्रदान	80 प्रति” ात	20 प्रति” ात

विदे" ाी सहायता (अमेरिका को छोडकर)	96 प्रति" ात	04 प्रति" ात
यू.एस. अमेरिकी सहायता	66 प्रति" ात	34 प्रति" ात
पाकिस्तान औद्योगिक विकास समूह	58 प्रति" ात	42 प्रति" ात
औद्योगिक विकास बैंक	76 प्रति" ात	24 प्रति" ात
आवास निर्माण	88 प्रति" ात	22.3 प्रति" ात

सरकारी सेवा मं असंतुलन–

बंगाली मुस्लिम जो निर्धन किसान थे उनको नौकर" ाही मे कोई प्रतिनिधित्व प्राप्त नही हुआ ये उल्लेखनीय है कि विभाजन के समय पाकिस्तान के 133 मुस्लिम आई.सी.एस., आई.ए.एस. अधिकारियों में से मात्र 1 बंगाली मुसलमान था। 1948 से 1967 के मध्य केन्द्रीय नौकरियों मे दोनों भागों के बीच बहुत बडा अंतर था इसी प्रकार जहा तक उन व्यक्तियों की संख्या का प्र" न है जिन्होने केन्द्रीय सचिवालय में उक्त स्थान पर हासिल किया हुआ था उसमे भी पि" चमी पाकिस्तान ही पूरी तरह से हावी था जैसा कि निम्न सारणी से स्पश्ट है:–

सारणी 1.2

पद का नाम	**पि"चमी पाकिस्तान**	**पूर्वी पाकिस्तान**
सचिव	86 प्रति" ात	14 पति" ात
संयुक्त सचिव	94 प्रति" ात	6 प्रति" ात
उप सचिव	82 प्रति" ात	18 प्रति" ात
अन्य अधिकारी	80 प्रति" ात	20 प्रति" ात

नागरिक सेवाओं और सैन्य अधिकारियों से सम्बन्धित आंकडे भी इस बात की पुश्टि करते है कि दोनों भागों के बीच बहुत बडा अन्तर था।[अप]

सारणी 1.3
नागरिक सेवाओं और सैन्य अधिकारियों की सेवाओं में असंतुलन[अपप]

पद का नाम	**पि"चमी पाकिस्तान**	**पूर्वी पाकिस्तान**
केन्द्रीय सेवा	84 प्रति" ात	16 प्रति" ात

विदे" ा सेवा	85 प्रति" ात	15 प्रति" ात
राजदूत	60 प्रति" ात	09 प्रति" ात
आर्मी	95 प्रति" ात	05 प्रति" ात
आर्मी ऑफिसर्स ऑफ जनरल रेंक (संख्या)	16 प्रति" ात	01 प्रति" ात
नेवी टेकनीकल	81 प्रति" ात	19 प्रति" ात
नेवी नानटेकनीकल	91 प्रति" ात	09 प्रति" ात
वायुसेना (पायलेट)	89 प्रति" ात	11 प्रति" ात
आर्मीड फोर्स संख्या	5000	2000
पाकिस्तान एयरलाईन्स संख्या	7,000	280
पी.आई.ए. डायरेक्टर संख्या	9	1
पी.आई.ए. एरिया मैनेजर्स	5	नन
रेलवे बोर्ड डायरेक्टर्स	7	1

भौक्षणिक क्षेत्र में असन्तुलन–

f" ाक्षा के क्षेत्र मे भी पूर्वी पाकिस्तान की तुलना मे पf" चम भी पाकिस्तान ही हावी था।

सारणी 1.4
पf"चम और पूर्वी पाकिस्तान में भौक्षणिक क्षेत्र मे असन्तुलन

भौक्षणिक संस्थाऐं	पf"चमी पाकिस्तान	पूर्वी पाकिस्तान
प्राथमिक /प्राईमरी स्कूल	39418	28308
उच्च प्राथमिक	4472	3964
कालेज	271	162
प्रोफेसनल कॉलेज	17	9
वि" वविद्यालय	6	4

पूर्वी और पf" चमी पाकिस्तान के बढते हुये असंतुलन क बारे में एक विद्वान लिखता है कि–''अधिकां" ा पाकिस्तान की विकास योजनायें बाध, सिंचाई नहरे, विद्युत स्टे" ान, भूमि सुधार योजनाये, आधारभूत उद्योग धंधे और इनके स्थापत्य मे बहुत

वि" ाल मात्रा में खर्च पि" चम मे था, 10 प्रति" ात से भी कम सैन्यअधिकारी सैन्यबल के लिये पूर्व म थे।

पि" चम ने विदे" ाी सहायता का बहुत बडा भाग प्राप्त किया और पूर्वी पाकिस्तानियों ने पाया कि अधिका" ा नये उद्योग धंधे उनके ही क्षेत्रों म स्थापित किये गये जिनमें, उपभाखाए, बैंक बीमा कम्पनिया और व्यापार संघ जो उन्ही के परिश्रम से चलाये जाते थे पि" चम पूर्व से प्राप्त लाभ को अपने मुख्यालय करांची और लाहौर ले जाता था।

इस असंतुलन और भेदभाव पूर्ण व्यवहार ने बंगाली पीढो को असंत्श्ट कर दिया जिसमे भाशायी आंदोलन ने भी महत्वूपर्ण भूमिका निभायी ।

भाशायी आंदोलन–

वास्तव मे पूर्वी पाकिस्तान के लोगों मे सबसे बडा असंतोश जो प्रकट हुआ वह केन्द्र सरकार की नीति से असंतुश्ट होन से हुआ जिसमें भाशायी मुद्दा मुखरित हुआ जो आगे चलकर एक बहुत बड़ा आंदोलन बना और अंततः बांग्लादे" ा की स्वतंत्रता पर समाप्त हुआ ।

भाशायी मुद्दे के बीज जिन्नाह की मार्च 1948 की ढाका यात्रा मे खोजे जा सकते है। जहां उसने बंगालियों को बाध्य किया कि वे पाकिस्तान की एक मात्र राश्ट्रीय भाशा के रूप मे उर्दू को स्वीकार करें। ढाका यूनिवर्सिटी क 24 मार्च 1948 के समारोह में जिन्नाह ने मुख्य अतिथि के पद से घोशणा की उर्दू और उर्दू ही पाकिस्तान की राश्ट्रीय भाशा होनी चाहिए। इस घोशणा का क्रोधित विद्यार्थियों के द्वारा नारेबाजी करके विरोध किया गया।[अपपप]

इसी प्रकार पूर्वी बंगाल के मुख्यमंत्री ख्वाजा नजीमुद्दीन का यह कथन की पूर्वी बंगाल की अधिका" ा जनसंख्या यह चाहती थी कि पाकिस्तान की राश्ट्रीय भाशा उर्दू होनी चाहिए। इसमे सभी विद्यार्थीयों में राजनीतज्ञो में और ि" ाक्षा के क्षेत्र मे असंतोश को जन्म दिया। 1951 के पाकिस्तानी जनसंख्या आंकडों के अनुसार भाशा आधारित आंकडे ये उजागर करते है कि 54.5 प्रति" ात कुल जनंसख्या की बंगाली भाशा बोलने वाले थे जबकि मात्र 3.2 प्रति" ात ही उर्दू बोलते थे।

पाकिस्तान के लोगों के द्वारा दूसरी भाशायें भी बोली जाती थी जिनमे पंजाबी, पुस्थु, सिंधी और बलुनी मुख्य थी जिनका प्रति" ात क्रम" ाः 27.6, 6.6, 5.1,

1.2 प्रति" ात था। जिन्नाह ने चेतावनी दी की वे लोग जो भाशा का आंदोलन कर रहे थे वे दे" ा के दु" मन थे उसका उर्दू को एक मात्र भाशा के रूप मे थोपने का प्रयास बंगालियों ने धरा" ाही कर दिया जहां पर पूरा बंगाल बंगाली बोलता था जबकि पिं" चमी पाकिस्तान मे उर्दू पंजाबी सिंधी, पुस्थु और बलुनो भाशायें बोली जाती थी। फिर भी यह गौरतलब है कि पाकिस्तान के जन्म के पहले गैर बंगाली मुस्लिम नेता सक्रिय रूप से पाकिस्तान की राश्ट्रीय भाशा उर्दू बनाने मे लगे हुए थे, बंगालियों ने यह महसूस किया कि पिं" चमी पाकिस्तानी भाासकों का वास्तविक उद्दे" य बंगालियों की विं" ाश्ट सांस्कृतिक पहचान को नश्ट करना था।

इसी प्रकार पिं" चमी पाकिस्तान की सरकार की धमकियों के बावजूद पूर्वी पाकिस्तान के लोग वि" ोश रूप से विद्यार्थीयों ने भाशा का आंदोलन इस मांग पर कि बंगाली को पाकिस्तान की राश्ट्रीय भाशा बनाया जाये। भाशायी उपद्रव 1952 से भाुरू हो गये जिसमे 26 विद्यार्थी मारे गये और कई घायल हुए इसके बाद विद्यार्थीयों के प्रद" ान हुए।

31 दिसम्बर 1948 और जनवरी 1949 की साहित्यिक संगोश्ठीयों मे कई लोगो ने इस बात का विरोध किया कि बंगाली को अरबी लिपी मे लिखा जाये और उन्होने कहा कि हम हिन्दू या मुस्लिम है लेकिन यह भी उतना ही सच है कि हम बंगाली है। भाशायी आंदोलन और विद्यार्थीयों के आक्रो" ा नें आर्थिक स्वतंत्रता और स्वतंत्रता का आधार उपलब्ध करवाया ।

भाशायी आंदोलन का प्रभाव 1954 के आम लोगों मे भी देखा गया जिसमे पूर्वी बंगाल मे लोगो ने यूनाइटेड फ्रंट को वोट दिया। वास्तव मे उन्होने चुनाव लडा था। 21 कार्यक्रमों के आधार पर जिनमे 4 पूर्ण स्वतंत्रता की मांग से सम्बन्धित थे।

(1) पूर्वी पाकिस्तान को हर प्रकार से पूर्ण स्वतंत्रता

(2) जुट के निर्यात की स्वतंत्रता

(3) विदे" ाी मुद्रा के आदान–प्रदान के लिये केन्द्र और पूवी पाकिस्तान म सलाह म" ाविरा हो।

(4) पिं" चमी और पूर्वी पाकिस्तान के मध्य व्यापार के सभी नियंत्रणों को समाप्त करना।

इन सबकों सारगर्भित रूप मे यह कहा जा सकता है कि यह एक स्वतंत्र पूर्वी पाकिस्तान की घोशणा का एक प्रयास था। इस भाशायी मुद्दे ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को पि" चमी पाकिस्तान द्वारा किये जा रहे भेदभाव के खिलाफ एक गुट होने का अवसर उपलब्ध करवाया यह भी उल्लेखनीय है कि बंगालोयों का स्वतंत्रता संघर्श वास्तव मे बंगाली भाशा आंदोलन से ही उभरा।[पग]

पि"चमी पाकिस्तान की प्रतिक्रिया–

पूर्वी पाकिस्तान के भाशायी मुद्दे ने पि" चमी पाकिस्तान की भासन सत्ता को सचेत कर दिया और उन्होने नि" चय किया कि इन विद्रोही का जवाब दिया जाये। इसी के अनुरूप उन्होने नि" चय किया कि पि" चमी पाकिस्तान के प्रान्तों की एक इकाई के मध्य मे गठित किया जाये। गवर्नर जनरल के इसी आ" ाय के आदे" ा 27 मार्च 1955 को जारी किये गये। यह सब पूर्वी पाकिस्तान की चुनौतियों का जवाब देने के लिये जिसमे सम्पूर्ण पाकिस्तान की जनसंख्या एक इकाई के रूप मे मुखरित हुई । पहला संविधान जो 23 मार्च 1956 को अस्तित्व मे आया ने पूर्वी पाकिस्तानियों को असंतुश्ट किया क्योकि इसमे उनकी लम्बे समय से की जा रही स्वतंत्रता की मांग और राश्ट्रीय संसद मे उनकी जनंसख्या के अनुसार प्रतिनिधित्व के प्रति कोई सम्मान प्रद" ात नही किया गया । इसी दौरान पूर्वी बंगालियों का असंतोश बढ़ता गया । 2 अप्रेल 1957 को बंगाल सभा ने एक विचार किया जिसमे उन्होन पूर्वी पाकिस्तान की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की जिसमे केवल विदे" ाी मामले और मुद्रा ही केन्द्रीय सरकार के हाथो मे हो। इस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति और भी खराब हो गयी क्योकि यह नया संविधान भी पूर्वी पाकिस्तान के हितों की रक्षा नही कर सका तब भी जबकि 3 सरकारे केन्द्र मे 1956 से 1958 के बीच भासन किया और प्रत्येक सरकार का भासनकाल तीन महिने से भी कम का रहा।

अयूब का विरोध और बंगाली असंतोश–

पाकिस्तान का पहला संविधान 29 फरवरी 1956 को स्वीकार किया गया। इस संविधान के तहत सिकन्दर मिर्जा पाकिस्तान के पहले राश्ट्रपति बन। 7 अक्टूबर 1958 को मिर्जा ने संविधान का विरोध किया और तत्कालिन कमाण्डर इन चीफ अयूब खान को मुख्य सैन्य कानून प्र" ासक बनाया गया। 27 अक्टूबर 1958 को अयूब ने मिर्जा को बेदखल कर पाकिस्तान के भासनाध्यक्ष का पद प्राप्त कर

लिया। यह व्यवस्था 1969 तक चली जब उसने उसक सैनाध्यक्ष जनरल आगा मुहम्मद याह्या खान के पक्ष मे पद त्याग किया अयूब के भाासन के दौरान बंगालियों का असंतोश बढता गया अयूब ने बंगालियों के प्रति जरा सा भी सम्मान प्रदर्" ित नही किया जिन्हे वह मात्र अपने अधीन समझता था।

अयूब के अनुसार–

पूर्वी बगाली जो जनसंख्या का बहुत बडा भाग है वास्तव मे वह मूल रूप से भारतीय जातियों से सम्बन्धित है। यह कहना कोई अति" योक्ति नही होगी कि पाकिस्तान के निर्माण के बाद भी वे वास्तविक स्वतंत्रता और सम्प्रभुता के मायने नही जानते और वे हमे" ाा की तरह अब भी हिन्दू संस्कृति और भाशायी प्रवाह के प्रभाव मे है। जैसाकि ये सभी दलित जातियों की संताने है लेकिन फिर भी ये मानसिक रूप से कई स्वतंत्रता की आव" यकताओं के अनुरूप ढल नही पाये है।[ग]

अयूब के भाासन के दौरान पाकिस्तानी नौकर" ाही और सेना ने पूर्वी पाकिस्तान की इच्छाओं और भावनाओं को कोई स्थान नही दिया। एक वरिश्ठ पाकिस्तानी संवाददाता ने भारत की यात्रा के दौरान यह कहा कि पाकिस्तान म केवल दो ही राजनीतिक दल है सेना और नौकर" ाही। यह कथन अयूब के भाासन का वस्तु स्थिति को प्रकट करता है। मार्च 1962 मे एक कानून की घोशणा की गयी जो अयूब की आधारभूत लोकतंत्र की अवधारणा पर आधारित था। पूर्वी पाकिस्तानियों ने इसे पूर्णतया अलोकतांत्रिक कानून माना क्योकि यह कानून इस प्रान्त को प्र" ाासनिक मामलो मे पूरी स्वतंत्रता नही देता था।[गप]

1965 के भारत पाकिस्तान के युद्ध ने इस स्थिति को और भी बिगाड़ दिया इस युद्ध मे पूर्वी पाकिस्तान ने अपने को असुरक्षित और खतरे मे पाया क्योकि पूर्वी पाकिस्तान मे मात्र एक सैन्य टुकडी कार्यरत थी लेकिन भारत का नि" चय था कि पूवी बंगाल के ऊपर आक्रमण नही किया जाये वे पूर्वी पाकिस्तान को बचा लिया। पाकिस्तान को यह वि" वास हुआ कि भारत ने यह चीन के डर के दबाव के कारण किया। युद्ध के बाद बंगालियों को यह वि" वास हुआ कि जरूरत से ज्यादा सुरक्षा पर्" चमी भाग को दी गयी और इसी ने पूर्वी पाकिस्तान के असुरक्षा के भाव को और भी गहरा कर दिया।

मुजीब की स्वतंत्रता की मांग–

क्षेत्रोय स्वतंत्रता की मांग एक स्वतंत्रता सग्राम में बदल गयी इसको मुजीबुर्र रहमान जो आवामी लोग के अध्यक्ष थे ने अपना समर्थन दिया उनका और उनके साथियों का यह वि" वास था कि पूर्वी पाकिस्तान क अधीन कोई उम्मीद नही कर सकता। पाकिस्तान ने" ानल कांफ्रेन्स जो 12 फरवरी 1966 को लाहौर मे हुई मुजीर्बुर रहमान ने अपनो छः सूत्रीय स्वतंत्रता की मांग की घोशणा की। 23 मार्च को उन्होने हमारा जीने का अधिकार भीर्शक से एक पम्पलेट प्रकाि" ात किया जिसम भी उन्होने स्वतंत्रता कार्यक्रम के 6 बिन्दुओं को प्रकाि" ात किया जो छः बिन्दु कार्यक्रम है वह निम्न है :–

(1) सरकार का ससदात्मक रूप, वयस्क मताधिकार के आधार पर सीधा चुनाव, संगठनात्मक ढांचे मे जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व।

(2) संघीय सरकार केवल रक्षा और विदे" ाी मामलों के प्रति ही जिम्मेदार हों।

(3) दो अलग–अलग मुद्राऐ या प्रत्येक क्षेत्र मे आसनी से परिवर्तन होने वाली स्वतंत्र मुद्रा चलायी जायें।

(4) राजस्व नीति संघात्मक इकाइयों की जिम्मेदारी होगी संघात्मक सरकार को राजस्व संसाधन उपलब्ध करवाया जायेगा और बदले मे रक्षा और विदे" ाी मामले मे केन्द्र राज्यों की सहायता करेगें।

(5) विदे" ाी मुद्रा के लिये अलग–अलग खाते, हर इकाई मे हो और उनकी आव" यकताऐं कानून के प्रावधानों के अनुसार होगी।

(6) प्रान्तीय इकाइयों को स" ाक्त किया जाये जिसम वे सेना या सेना की टुकडी रख सक जिससे की राश्ट्रीय सुरक्षा का निर्माण हो सकें।

यही छः सूत्रीय घोशणा पत्र निरन्तर विद्रोह का मुख्य आधार बना। एक तरफ इसने पूरे दे" ा मे खलबली मचा दी और दूसरी तरफ इसने राश्ट्रपति और उसके निकट सहयोगियों तथा कई पि" चमी पाकिस्तानी राजनेताओं की आलोचनाओं को सहा। जिन लोगों ने इस स्वतंत्रता आंदोलन की आलोचना की उन्होने बंगाली नेताओं पर दे" ाद्रोही प्रवृतियां तथा भारतीय दलाल के रूप मे कार्य करने का आरोप लगाया तथा साथ ही कहा कि स्वतंत्रता सम्प्रभु बंगाल के निर्माण की कोि" ा" ा से ये भारत के द्वारा आसानी से मिल सके या भारत के साथ मिल सकें।

अयूब खान के नेतृत्व वाली पाकिस्तानी सरकार ने इस स्वतंत्रता आंदोलन को एक अलगाववादी आंदोलन कहा जिसका उद्दे" य पाकिस्तान को क्षति पहुंचाना तथा पि" चमी भाग के लोगों की हितों को नुकसान पहुंचाना था। अयूब को मुजीबुर्र के रूप मे एक प्रतिद्वंदी दिखाई दिया वह मुजीब और उसकी गतिविधियों का बहुत बडा आलोचक बन गया। अयूब ने मुजीब और उसके साथियों पर पूर्वी पाकिस्तान मे ' ाडयंत्र करने का आरोप लगाया जिससे कि भारतीय ' ाडयंत्रकारी सहायता कर रहे थे इसके बाद अयूब विरोधी आंदोलन हर गली नुक्कड पर पूर्वी पाकिस्तानी में फैल गया। पाकिस्तान मे भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के सत्ता म आने के साथ ही इस आंदोलन को एक नया रूप मिला। इन्होने एक नारा दिया **''इस्लाम हमारा वि"वास है लोकतंत्र हमारी राजनीति, समाजवाद हमारा अर्थ"ाास्त्र और हम लोगों की सर्वोच्चता मे वि"वास करते हैं।''** इसी दौरान पाकिस्तानी सेना ने ढाका मे एक सिपाहो आर एक वि" वविद्यालय के प्रोफेसर की फरवरी 1969 मे हत्या कर दी और इससे विद्यार्थीयों मे एक आक्रो" ा को जन्म दिया। 22 फरवरी 1969 को मुजीब को बीना भार्त रिहा किया गया और उन्ह गोलमेज संगोश्ठी मे आमंत्रित किया गया जो पूर्णतया एक व्यर्थ प्रयास साबित हुआ। 10 मार्च 1969 को अयूब खान ने घोशणा की जिसमे उसके मुख्य भागों को स्वीकारा गया।

सरकार का संसदात्मक रूप और एक व्यक्ति एक मत जो व्यस्क मताधिकार पर आधारित था। इन परिस्थितियों मे पूर्वी पाकिस्तान मे जन आक्रो" ा जारी रहा और स्थिति अयूब के नियंत्रण से बाहर हो गयी उसकी सरकार के मुखिया बने रहने को सत्ता और सैन्य कानून को पुर्नस्थापित करने को अस्वीकृत कर दिया गया तथा उसे बाध्य किया गया कि वह जनरल आगा मोहम्मद याह्या खान के पक्ष मे पद छोडे।

याह्या की कूटनीति–

जनरल याह्या खान के पाकिस्तान के राश्ट्रपति बनने के साथ ही वहां की सरकार पूरी तरह से सैन्य सरकार हो गयी। सत्ता हासिल करने के बाद जनरल याहया ने घोशणा की कि अती" ाघ्र सभवतया राश्ट्रीय चुनाव करवाये जाएगे। उसने यह स्पश्ट किया कि उसका उद्दे" य भाक्ति को लोगों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को हस्तान्तरित करन का था। पूर्वी बंगाली यह सुनकर के बहुत प्रसन्न हुए क्योकि

उनको यह लगा कि अब उन्हे भी जनसंख्या के आधार पर भाासन मे भागीदारी का अवसर प्राप्त होगा। लेकिन इसके बाद पाकिस्तान म जो राजनीतिक विकास हुए उन्होने यह सिद्ध किया कि याह्या ने पूर्वी पाकिस्तानी लोगों की भावनाओ की उपेक्षा करते हुए भाासन किया। अपने ईरादों को लागू करते हुए याह्या ने अपनी स्वयं की रणनीति अपनायी और उसने दे" ा के उन वर्गो के साथ बैठके ओयाजित की और स्पश्ट रूप से स्वीकारा कि केन्द्र सरकार मे पूर्वी पाकिस्तानी लोगों के साथ अन्याय किया ह उसने लोगों को सूचित किया कि चुनाव अक्टूबर 1990 मे होगें। उसमे राजनैतिक दलों पर लगे हुए प्रतिबंध को हटाया और पि" चमी पाकिस्तान की एक इकाई के रूप को फिर से 4 पुराने प्रान्तों मे विभाजित किया जहां राज्यपाल का भाासन रहा।

पूर्वी पाकिस्तानियों को संतुश्ट करने के लिये याह्या खां ने उनमे से कुछ लोगों को जिम्मेदारी भरे पदो पर नियुक्त किया इसके अनुसार सचिवालय में आधे से ज्यादा बंगाली चुने गये। सचिवालय मे योजना आयोग मे सरकारी संगठनों मे, सरकारी रेडियो और टी.वी. सेवा मे तथा पाकिस्तानी दुतावासो म भी बंगालियों को नियुक्ति किया।[गपप]

साथ ही उसने सैन्य बलों को मजबुत करने के कुछ ठोस कदम उठाये उसने बडी मात्रा मे विदे" ाों जैसे यू.एस.ए. और चीन की सहायता प्राप्त की। इस प्रकार उसने अपने लिये हर परिणामों का सामना करने क लये उपर्युक्त आधार तैयार किया। लगभग 11 वर्शो तक सैन्य भाासन करने के बाद राश्ट्रपति याह्या ने राश्ट्रीय सभा के चुनाव की घोशणा की।

चुनाव में आवामी लगी की भूमिका–

आवामी लीग के चुनावी घोशणा पत्र मे पार्टी के छः सूत्रीय कार्यक्रम को लागू किया गया और एक समाजवादी और आर्थिक व्यवस्था के निर्माण को प्राथमिकता दी गई। आवामी लोग के छः सूत्रीय कार्यक्रम और पूर्वी बंगाली विद्यार्थीयों के 11 सूत्रीय घोशणा पत्र जिसमे उन्होने प्रान्तीय स्वायत्ता के मुद्दे उठाये थे यही मुद्दे मुजीबुर्र रहमान ने मतदाताओं के समक्ष रखे। अपने चुनावी अभियान के दौरान मुजीबुर्र रहमान ने पि" चमी पाकिस्तान की भाोशणकारी प्रवृति जो पूर्वी पाकिस्तान के विरूद्ध थी कि कडे भाब्दों मे आलोचना की और यह स्पश्ट

किया कि पूर्वी बंगाली पर्ि चमी पाकिस्तान के भाई होना चाहते है। उनके गुलाम नही वे समान नागरिक बनना चाहते थे। पर्ि चमी पाकिस्तान के बाजार नही। इसी दौरान राश्ट्रीय आवामी पार्टी और आवामी लीग के मध्य प्रान्तीय स्वतंत्रता के प्र" न के स्थगन के निर्णय पर मतभेद हो गये। राश्ट्रीय आवामी पार्टी ने मौलाना भाशानी के नेतृत्व म यह मांग की कि राश्ट्रपति पूर्वी बंगाल को स्वतंत्रता प्रदान करे यदि ऐसा नही होता तो उसमे चुनावों के बहिश्कार की धमकी दी। जबकि मुजीब का चुनाव मे भाग लेने का ईरादा था जिसकी उन्होनें आव" यक समझा अपने छः सूत्रीय कार्यक्रम जो क्षेत्रीय स्वतंत्रता पर आधारित था।

चुनावी परिणाम सारणी 1.5

पाकिस्तान राश्ट्रीय सभा चुनाव परिणाम (दिसम्बर 1970)

पार्टी का नाम	सीटों का आवंटन	पूर्वी पाकिस्तान	पंजाब	सिन्ध	एन.डब्ल्यू. एफ.पी.	ब्लूचिस्तान	ट्राईबेल ऐरिया	अप्रत्यक्ष महिला	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
आवामी लीग	162	160	––	––	––	––	––	7	167
पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी	122	––	64	18	1	––	––	5	88
आल पाकिस्तान मुसलिम लीग (कय्यूम)	132	––	1	1	7	––	––	––	9
मुस्लिम लीग काउसिंल	119	––	7	––	––	––	––	––	7
जमयित–उल–उलेमा इस्लाम (हजारवी ग्रुप)	93	––	––	––	6	1	––	––	7
मरकाजी जमात उल उलेमा आई इस्लाम (थानवी ग्रुप)	अज्ञात	––	4	3	3	––	––	––	10
ने" ानल आवामी पार्टी (वाली खान)	61	––	––	––	3	3	––	–1	7
जमीत ए इस्लामी	200	––	1	2	1	––	––	––	4
मुस्लिम लीग कन्वें" ान	124	––	2	––	––	––	––	––	2
पाकिस्तान डेमोक्रेटिक पार्टी	108	1	––	––	––	––	––	––	1

इन्डेपेण्डेन्स	300	1	3	3	——	——	7	——	14
		162	82	24	18	4	7	13	313

आम चुनाव जो दिसम्बर 1970 मे हुए मे आवामी लीग पूर्वी पाकिस्तान की बहुमत दल के रूप मे उभर करके सामने आया ।

इस प्रकार चुनाव परिणामों के अनुसार पूरे अवसर थे कि आवामी लीग सरकार के निर्माणकारी तत्व के रूप मे अपना नियंत्रण स्थापित करले पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने चुनाओं के बाद घोशणा की कि कोई कानून नही बनेगा और न ही केन्द्र मे कोई सरकार पी.पी.पी. के सहयोग के बिना चलेगी इसने आगे कहा कि बहुमत ही राश्ट्रीय राजनीति में अकेला गिना नही जाता।[गपपप] आवामी लीग की चुनाव मे जीत निम्न का परिणाम थो।

1. पॉ" चमी पाकिस्तान की सत्ता याह्या के भाासन के दोरान चक्रवात जिसम पूर्वी पाकिस्तानी क्षेत्र मे बडो मात्रा मे क्षति पहुंचायी के प्रति संवेदनहीन रही।
2. पूर्वी बंगाल का निर्णय जिसम उन्होने चुनाव को स्वतंत्रता का मुद्दा बनाया।
3. भोश बचे हुए दल जिनको चुनाव राजनीति के योग्य ठहराया उनमे मुॉ" कल ही कोई इतना लोकप्रिय दल होगा जा आवामी लीग के समान लोकप्रिय हो। पाकिस्तानी राश्ट्रीय सभा के चुनावी परिणामों से याह्या खान भौचक्का रह गया क्योकि उसकी सैन्य सूचना आयोग ने रिपोर्ट दी थी कि मुजीब की पार्टी बीस सीटों से अधिक नही जीतेगी। याहया ने यह अनुमान लगाया था कि एक बार चुनाव हो जाये और विभिन्न पार्टिया सीटों का बंटावारा आपस मे करेगी तो दे" ा मे राजनीतिक अराजकता का माहोल हो जायेगा और वह एक बार फिर से राजनेताओं के प्रतिबंधित करके निरतर अपनो सैन्य सत्ता चला सकेगा।

याद्या का निर्णय–

पाकिस्तान की सत्ता ने अनिच्छा से आवामी लोग की वि" ाल जीत को स्वीकार किया। वे कोॉ" ा" ा कर रहे थे कि उनकी सैन्य ताकत को विदे" ाी ताकतों के सहायता से बढ़ाया जाये किन्तु आवामी लीगी की इस वि" ाल जीत ने उन्हे पाकिस्तान मे एक सरकार के निर्माण के लिये बाध्य किया। पाकिस्तानी सैन्य

भाासकों ने इसे एक गम्भीर खतरा माना यदि वे लोगों के निर्णय को जानने से इंकार कर दे। इसी दौरान याह्या ने मुजीब और भुट्टो से सम्पर्क करने का प्रयास किया जिससे की कोई समझौता हो सके तथा इस संकट का समाधान हो सकें। जनवरी 1971 में ढ़ाका मे मजीब से मुलाकात करने के बाद याह्या ने घोशणा की कि मुजीब पाकिस्तान के अगले प्रधानमंत्री होग परन्तु याह्या के इस कथन ने भुट्टो को भडका दिया जो मुजीब को अपने प्रतिद्वंदी के रूप मे देखता था । भुट्टों ने पे" ाावर मे 15 फरवरी को एक प्रेस कान्सफ्रेंस मे यह धमकी भरा वक्त्वय दिया कि वह खाईबर से कारंची तक क्रान्ति भुरू कर देगा यदि उसकी पीपुल्स पार्टी को सत्ता से वंचित किया जाता है तो भुट्टों ने यह भी सुझाव दिया कि प्रत्येक कोम का एक समान स्तर के दो प्रधानमंत्री होने चाहिए। इस पर याह्या ने घोशणा की कि 3 माच 1971 को राश्ट्रीय सभा का से" ानल सत्र होगा। भुट्टों ने 15 सत्र का बहिश्कार करेगी साथ ही चतावनी दी कि पि" चमी भाग की पार्टियों का कोई भी सदस्य इसमे भाामिल नही होगा। इसी समय 5 और दलों ने जिनकी कुल संख्या 26 सदस्य ने थी भुट्टों के आवाहन को नकार दिया और सभा म भाामिल होने की इच्छा जाहिर की। जब भट्टों को यह महसूस हुआ कि स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गयी तो उसने मांग की कि राश्ट्रीय सभा के सत्र को स्थगित किया जाये जिसस की उसकी पार्टी और आवाम की लगी के मध्य इस महत्वपूर्ण मुद्दे को लेकर बातचीत हो सके। इसी के अनुसार याह्या ने 1 मार्च 1971 को होने वाले उद्घाटन सत्र को 3 मार्च को कर दिया ताकि आवामी लीग और पी.पी.पी. के मध्य कोई समझोता हो सके याह्या ने अपने निर्णय के पीछे उस तनाव भरी स्थिति को आधार बताया जहां भारत पाक सीमा पर भारतीय विमान को हाईजैक होना था। याह्या की इस घोशणा ने राश्ट्रीय सभा को अंचम्भित कर दिया और पूरे पूर्वी पाकिस्तान में क्रोध व्याप्त हो गया। इसमे संदेह नही कि याह्या का विचार परिवर्तन भुट्टों के कठोर रवैये के कारण था। इस घोशणा ने उस वैधानिक ढांचे का उल्लंघन किया जिसमे पाकिस्तान के सवैंधानिक ढांचे की एक व्यक्ति एक मत के आधार पर घोशित किया गया था और इस प्रकार पहला खुला राजनैतिक आंदोलन पाकिस्तान के विभाजन की मांग को लेकर भुरू हुआ ।

पूर्वी पाकिस्तान में मुजीब के नेतृत्व की (आगे बढाना) बढतो भूमिका–

भोख मुजीर्बर रहमान अपनी मंत्रमुग्ध करने वाली भाशा, राजनैतिक कु" ालता और बंगाली राश्ट्रवाद को पूरी तरह समर्पण के द्वारा इस राश्ट्रीय आंदोलन को एक गति" ील नेतृत्व प्रदान किया। अपने एक साक्षात्कार जो तालुकदार मर्निरूजम्मात के साथ 23 जुलाई 1969 को हुआ उसमे मुजीब ने यह कहा कि पूर्वी बंगाल की मुक्ति भोख मुजोब के खून के बिना प्राप्त नही की जा सकती है। मुजीब ने याहया और भुट्टों के ' ाडयंत्रकारी सम्बधों का भी विरोध किया। याहया ने इस परिस्थिति से निपटने के लिए 12 राजनैतिक नेताओं को जो पूर्व व पि" चम दोनों भागों से थे को गोलमेज सगोश्ठो में 10 दिसम्बर 1971 की आमंत्रित किया। इससे पहले पूर्वी पाकिस्तान ने पुलिस गोलीबारी हुई। जिसमे सैकडों लोग मारे गये। इस पुलिस फायरिग के विरोध स्वरूप मुजीब ने याह्या के बातचीत के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। यह कहते हुय कि ला" ो अभी भी गलियों म बिखरी हुई है। ऐसी स्थिति मे बातचीत का आमंत्रण किसी क्रूर मजाक से अधिक कुछ भी नही।

इस दौरान पूर्वी पाकिस्तान मे समस्त सरकारी गतिविधिया राश्ट्रीय सभा के सत्र को स्थगित करने के लिये तथा मुजीब की प्रधानमंत्री बनाने मे देरी के रूप मे थी। मुजीबर्र रहमान ने 3 मार्च 1971 को एक अहिसांत्मक असहयोग आंदोलन भाुरू किया और सब वर्गो के लोगों ने उसके पीछे रैली के रूप मे उसके आवाह्न का प्रति उत्तर दिया। वास्तव मे वह पूर्वी पाकिस्तान का मुखिया बन गया था। अन्ततः याह्या ने राश्ट्रीय सभा के 25 मार्च को बुलाया। लेफ्टिनेट जनरल टिक्का खान को पूर्वी बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया और उसको यह निर्दे" ा दिये कि मुजीबुर्र रहमान और उसकी आवामी लगी को कुचल दिया जाये इस कार्य ने आग में घी का काम किया। मुजीबुर ने जन रैली के रूप मे आवामी लोग को भाक्ति के हस्तान्तरण की मांग करते हुए अपना आंदोलन जारी रखा उसमे 4 महत्वपूर्ण बिन्दु सरकार के सामने रखे[गपअ] :—

1. सैन्य कानून तुरन्त समाप्त हो। सैन्य टुकडिया को वापस भेजा जाये, मध्य जनवरी से 7 मार्च के दौरान हुई हत्याओं की जांच की जाये और चुने हुऐ प्रतिनिधियों को सत्ता हस्तान्तरित किया जाये। मुजीबुर्र ने कहा कि इस बार का संघर्श मुक्ति के लिये है। यह संघर्श स्वतंत्रता के लिये है उसने अपने दे" ा वाि" ायों से अपने घरों को किलो मे बदलने का आव्हान किया ता कि

इस संघर्श को विजयी निश्कर्श प्रदान किया जा सकें। इस सभाओं मे बांग्लादे" ा का झण्डा पहराया गया। मुजीबुर्र को मिले भावी समर्थन और पूर्वी पाकिस्तान की समस्त पार्टियों (पी.पी.पी. को छोडकर) मिले समर्थन के परिणाम स्वरूप याह्या ने मुजीर्बुर के साथ दूसरे दौर की बातचीत प्रारम्भ की वह 19 मार्च को ढाका पहुंचा भुट्टों ने भी इस बातचोत मे भाग लिया । इस बातचीत के दौरान याद्या और भुट्टों दोनों मुजीबुर्र पर दबाव बनाया कि वह स्वतंत्र राज्य और पाकिस्तान के नये संविधान की मांगों को छोड दे। इस दबाव मे आये बिना मुजीब ने स्पश्ट कह दिया कि भविश्य मे पाकिस्तान के संविधान की बात को राश्ट्रीय सभा मे ही रखा जायेगा। वे लोग जो मुजीबुर्र के आवाहन से प्रेरित थे अधिका" ा भिन्न क्षेत्रों के लोग थे जिनमे किसान, साथी, विद्यार्थी, ि" ाक्षक थे जो पि" चमी पाकिस्तान के 23 वर्शो के भेदभाव पूर्ण भाासन का अंत चाहते थे। इनका अंत परिणाम 25 मार्च 1971 का सेना के पतन के रूप में सामने आया।[गअ]

याह्या के द्वारा विद्रोहियो का दमन–

सैन्य भाासन की समाप्ति के द्वारा एक साहार्दपूर्ण माहौल तैयार करकें याह्या ढाका से चला गया और नवनियुक्त गर्वर जनरल टिक्का खान ने पूर्वी पाकिस्तान मे सैन्य टुकडियों को लगा दिया वह सेना जो पि" चमी पाकिस्तान से आयी थी ने पूव दमन, निर्पराध नागरिकों के ऊपर बल प्रयोग किया और ऐसा व्यवहार किया जैसे विदे" ाी सैन्य टुकडियां करती है जैसे आगजनी, रेप, लूट आदि।

याह्या ने इस सैन्य कार्यवाही के पीछे निम्न कारण बतलाये :–

1. मुजीबुर्र और उसकी पार्टी ने दे" ा की कानूनी भाक्ति को चुनौती दी और वह एक समानान्तर सरकार चलाने की कोि" ा" ा कर रहा था।
2. वे एक आंतक का साम्राज्य स्थापित कर चुके थे जिसमे मुजीब के पार्टी के लोगों ने हजारों गैर बंगालियों का कत्ल (खून) किया।
3. इन्होने पूर्वी पाकिस्तान को अधिगृहित करने की याजना बनाई जिससे पाकिस्तान की सीमा को नश्ट किया जा सकें।

4. इन्होने पार्टी के झण्डे का अपमान किया और पाकिस्तान के राश्ट्रोयता को चुनौती दी।
5. याहया ने मुजीबुर्र एक आतंकवादी कहा और उसकी पार्टी के लागों को पाकिस्तान का दु" मन कहा।[गअप]

पाकिस्तानी सेना के आक्रमण से कई लोग मारे गये और लाखो बेघर हो गये। पि" चम पाकिस्तान की सेना के इस कत्ले आम के बारे में रंगलाल सैन ने कहा कि ''पाकिस्तानी सेना ने बांग्लादे" । के मासूम लोगों जिसमे विद्यार्थी ि" ाक्षक और ढाका यूनिवर्सिटी के तथा दूसरे भौक्षिक संस्थानों के कर्मचारियो पर 25 मार्च की मध्य रात्रि को धोखे से आक्रमण किया। इस सैन्य अभियान के दौरान मुजीबुर्र रहमान को 26 मार्च 1976 को गिरफ्तार कर लिया गया। मुजीबुर्र ने अपने निकट अनुयायियों को निदे" । दिये की वे उचित कदम उठाये जिससे बांग्लादे" । एक स्वतंत्र और सम्प्रभुतत्व बन सकें।[गअपप] बांग्लादे" । का औपचारिक जन्म 17 अप्रैल 1971 को मीरपुर मे एक समारोह मे हुआ जिसमे एक सदस्ययी सरकार जिसके मुखिया मुजीर्बुर रहमान थे का गठन किया गया। इस बांग्लादे" ाी निश्कासित सरकार ने स्वतंत्रता की घोशण बंगबुध मुजीर्बुर रहमान के द्वारा 26 मार्च 1971 को की गयी। इसके विपरीत याह्या ने पूर्व पाकिस्तान सरकार के कुछ राजनेताओं की सहायता करने का प्रयास किया। 13 अप्रैल को मुस्लिम लीग और जमायते इस्लामी ने सयुक्त रूप से मुजीब और उसकी बांग्लादे" ाी सरकार के खिलाफ जुलूस निकाला तथा इस राश्ट्र विरोधी आंदोलन कहा जब याह्या ने यह महसूस किया कि बांग्लादे" । मे राश्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन ने भाक्ति प्राप्त कर ली है और वे लोग अब लम्बी लडाई लडने के लिए मानसिक रूप से तैयार थे तो उसने आवामी लोग को ही विभाजित करने का प्रयत्न किया। भाीघ्र ही बांग्लादे" । स्वतंत्रता आंदोलन एक नये दोर मे पहुंचा और नेताओं ने अंतर्राश्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया । कई दे" । बांग्लादे" । की सहायता के लिये आगे आय। 14 मई 1971 को 54 दे" ाों के प्रतिनिधि बुडापेस्ट मे वि" व" ाांति सभा मे एकत्रित हुये और उन्होने बंगलादे" । स्वतंत्रता आंदोलन को सहायता उपलब्ध करवाने की इच्छा व्यक्त की ।

राश्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन–

बांग्लादे" ा के स्वतत्रंता आंदोलन को तीन वर्गो में बांटा जा सकता है पहला चरण 25 मार्च 1971 से मध्य मई 1971 का है यह सेना की नीतियों के खिलाफ एक स्वाभाविक बंगालियों का विद्रोह था। इस चरण के दौरान इस आंदोलन का नेतृत्व आवामी लोग,पूर्वी बंगाल राइफल्स (ई.बी.आर) के सदस्या तथा पूर्वी पाकिस्तान राइफल्स (ई.पी.आर.) और नागरिक सेवाओं के अधिकारियों के हाथों में था इस स्वतंत्रता आदोलन का एक महत्वपूर्ण गुट यह था कि सेना की रणनोति में योजना का अभाव था। हथियारो की पूर्ति और कु" ाल लोगों की भागीदारी बहुत कम थी। पाकिस्तानी सेना की रणनीति ज्यादा से ज्यादा अपनी ताकत को बढ़ाए रखने की थी और धीरे–धीरे एक के बाद एक भाहरों को अधिगृहित करना था।

दुसरा चरण मध्य मई से सितम्बर 1971 से के बीच का था यह एक लम्बी योजना की अवधि थी इस चरण के दौरान नेतृत्व दो रूपों मे उभरा पहला निश्कासित सरकार से जो कलकता में थी से सम्बधित था और दुसरा मुक्ति वाहिनी सेना जिसमें ई.बी.आर., ई.पी.आर साथ ही दूसरे विद्यार्थीयों के गुरिल्ला नेता भाामिल थे। यह अभियान इस प्रकार से था कि बाहरी सम्बन्धो को निश्कासित सरकार सम्भालेगी और मुक्तिवाहिनी का मुख्य उद्दे" य वास्तविक लड़ाई था। इन दोनो नेतृत्व के बीच कोई सहयोग नही था और अभी भी नेतृत्व मध्यम वर्ग से ही था मुकिवाहिनी सेना के लिये भर्ती अभियान को तेज किया गया और सैन्य प्रि" ाक्षण कैम्प बांग्लादे" ा और भारत दोनो में स्थापित किये गये इस स्तर के दौरान इस स्वतत्रंता आंदोलन ने बहुआयामी संघर्श का रूप ले लिया । बाहरी प्रचार बांग्लादे" ा के समर्थन को प्राप्त करने के लिये सरकार द्वारा किया गया असहयोग आंदोलन भाासन के विरूद्व जारी रहा वि" ोशत्व से फेक्टरियों और भौक्षणिक सस्थानों में पा" चमो पाकिस्तानी सामानों वस्तुओं का बहिश्कार किया गया यह दौर भारी प्रतिरोध का दौर था सितम्बर तक बांग्लादे" ाी लोग दोनो ही क्षत्रो के मानसिक रूप से एक लम्बा युद्व लडने के लिए तैयार हो गये।

तीसरा चरण अक्टूबर मध्य से सितम्बर 1971 का था यह चरण गुरिल्ला गतिविधियों और एक परम्परागत युद्व साक्षी बना । इसके प्रतिरोध स्वरूप पाकिस्तानी सेना ने खोजो और नश्ट करो अभियान प्रारम्भ किया जिसकी क्रियान्वितो का मतलब बहुत से गांवों को रोजाना नश्ट करना था तब मुकिवाहिनी

की गुरिल्ला गतिविधियां बढ गयी तो भारत व पाकिस्तान के मध्य युद्ध 4 दिसम्बर 1971 को भुरू हुआ। 13 दिन के युद्ध के बाद पाकिस्तान के कमाण्डर लेफ्टनेट जनरल नियाजी ने 93 हजार सिपाहियों और अधिकारियों के साथ भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी के समक्ष भााम 4.30 बजे 16 दिसम्बर 1971 की रेसकोर्स मेदान पर बिना भार्त आत्म समर्पण किया। नियाजी के द्वारा हस्ताक्षरित समझौता पत्र भारतीय लेफ्टनेट जनरल अरोडा के द्वारा उसी दिन स्वीकार कर लिया गया और बांग्लादे" । 9 महिने लम्बे खुनी संघर्श के बाद अन्ततः एक राज्य के रूप मे जन्मा । इस प्रकार बांग्लादे" । एक वास्तविकता बढ़ा और इसमे भारत और बांग्लादे" । के मध्य नये सम्बंधों की भुरूआत की जो आपसी सम्मान सम्प्रभुता और सीमाबद्धता आंतरिक मामलो मे अहस्तक्षेप आपसी लाभ मे समानता के सिद्धान्तों पर आधारित थे। बांग्लादे" । का निर्माण भारत पाक युद्ध के दौरान 16 दिसम्बर 1971 को हुआ भारत ही पहला दे" । है जिसने 6 दिसम्बर 1971 को बांग्लादे" । को मान्यता दे दी। भारत की सेना ने बांग्लादे" । की मुकिवाहिनी से मिलकर 16 दिसम्बर 1971 को स्वतंत्र राश्ट्र बांग्लादे" । की स्थापना करवायी।[गअपपप]

बांग्लादे"।क उदय मे भारत की महती भूमिका–

वर्श 1971 के पाकिस्तान के विभाजन और अन्ततः एक नये राश्ट्र बांग्लादे" । के उदय निसंदेह इतिहास में एक महान घटना है। बांग्लादे" । के उदय मे भारत ने एक निर्णायक भूमिका निभायी। वास्तव मे भारत पूर्वी पाकिस्तान मे चल रहो गतिविधियों पर गहरी निगाह रखे हुए था। बांग्लादे" । के लिये सहानुभूति और समर्थन अधिकारिक और गैर आधिकारिक स्तर पर भारत को अभिव्यक्त किया गया। वि" व भाांति सभा के महासचिव के साथ एक साक्षात्कार मे प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा ''हमारे लोग ससद और सरकार बांग्लादे" । के लोगों के प्रति पूरी सहानुभूति और समर्थन रखते है। हमारी पि" चमी पाकिस्तान के लोगों से कोई लडाई नही है यह समस्या भारत पाक की नही है।[गपग]

इन्दिरा गांधी ने पाकिस्तानी सेना के भेदभाव भरी और हिंसापूर्ण कार्यवाही की कड भाब्दों मे निन्दा की जिसकी वजह से पूर्वी पाकिस्तानी लोगों मे असन्तोश पनपा। इन्दिरा गांधी के विचारों को भारत ने सभी राजनैतिक दलों का समर्थन मिला और भारतीय जनता की सहानुभूति व समर्थन भी प्राप्त किया। लोकसभा मे

श्रीमती गांधी ने कहा कि पूर्वीबंगाल मे कुछ नया घटित हुआ जहां पर सारे लोग एक आवाज मे लोकतांत्रिक तरीके से बोले हमने इसका स्वागत इस वजह से नही किया कि हम दूसरे दे" ाों के मामलों मे कोई हस्तक्षेप चाहते थे। इसलिए किया कि यह वे मूल्य थे जिनके लिये हम हमें" ाा से समर्थन किया । हमने उम्मीद की है कि इस कार्य से सारे पड़ोसी दे" ाों म एक नयी स्थिति पैदा होगी जिससे हम हमारे लोगों की और अधिक सेवा कर सकते है। यह मात्र एक अभियान को कुचलना ही नही है बल्कि निहत्ते लोगों से मिलना है। हम घटनाओं के निकट सम्पर्क मे है।

भारतीय संसद ने एक जुट होकर यह सलाह दी की भारत सरकार को पूर्वी पाकिस्तानी लोगों की इच्छा और मांगों की पुरा करने मे सहायता करनी चाहिये। भारतीय संसद ने 31 मार्च को एक प्रस्ताव अनुमोदित किया जिसमे पूर्वी बंगाल के लिए भारतीय सहानुभूति अभिव्यक्त की गयी। इसी दौरान बांग्लादे" ा की नई सरकार जा भारतीय सीमा मे ही स्थापित हुई इसके उपराश्ट्रपति सैयद नजरूल इस्लाम ने 10 अप्रैल को एक घोशणा पत्र जारी किया। सरकार ने अपना एक प्रतिनिधि मण्डल नई दिल्ली भेजा जिसमे भारत मे सैन्य सहायता का निवेदन किया गया था। भारत ने पूरा आ" वासन दिया की पूर्वी बंगाल के लोगों की इच्छा की पूर्ति की जायेगी। साथ ही प्रधानमंत्री ताजुद्दीन अहमद ने अंतर्राश्ट्रीय समर्थन और सेना से अपील की इसी के अनुसार श्रीमती गांधी ने यूएसए और कई यूरोपोय दे" ाों की यात्रा की और वहां के राजनयिकों और सरकार के मुखियाओं से बांग्लादे" ा के मुद्दे पर बात की और इस संकट समाधान ढूढने मे उनकी सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया किन्तु अधिका" ा दे" ाा ने इसके पक्ष में जवाब नही दिया। यूएसए ने पाकिस्तान की सैन्य सहायता का नि" चय किया। इस दौरान भारत मे भारणार्थियों जो बांग्लादे" ा से आये थे की बहुतायत हो गयी। मध्य जून तक लगभग 9 मीलियन पूर्वी बंगाली भारणार्थी पि" चम बंगाल और उत्तर पूर्वी राज्यों मे आ बसें जिसमे असम, त्रिपुरा, पि" चम बंगाल मे संसाधनों की कमी हो गयो।[गग]

पि" चमी पूंजीवादी दे" ाों से कोई समर्थन प्राप्त नही कर सकने के बाद इन्दिरा गांधी रूस की यात्रा पर गयी यह यात्रा 9 अगस्त 1971 की नई दिल्ली मे

हुई भारत रूस संधि जो भाान्ति मित्रता और सहयोग पर आधारित थी के परिणामस्वरूप थी।[गगप]

वास्तव में भारत का बांग्लादे" ा के स्वतंत्रता संघर्श को दिया गया समर्थन पूर्व नियोजित, ' ाडयंत्रकारी रणनीति का हिस्सा ना होकर एक राजनैतिक प्रतिक्रिया था जो पाकिस्तान के द्वारा भारतीय सीमा मे घुसपैठ की आ" ांका के परिणास्वरूप था। परन्तु भारत मे नीति बनाने वालों और उसे लागू करने वाली की राय जो पूर्वी पाकिस्तान की समस्या से सम्बन्धित थी मे काफी अन्तर था। स्वर्ण सिंह विदे" ा मामलो के मंत्री ने श्रीमती गांधी की राय से सहमति जताते हुए कहा कि भारत को वि" वसनीय और राजनैतिक सटिकता को भी निर्" चत करना चाहिए ताकि इसकी निश्ठा पर कोई प्र" न ना उठाये इसका आ" ाय यह था कि भारत को अन्तर्राश्ट्रीय विरोध तथा संयुक्त राश्ट्र की महान ताकतों के विरोध का सामना ना करना पड़े जो भारत की नीति की पड़ौसी दे" ाों के आंतरिक मामलों मे अहस्तक्षेप की नीति द" ार्ता है।

इस प्रकार राय मे अन्तर होने पर श्रीमती गांधी तत्कालीन रक्षामंत्री जगजीवन राम और सेना प्रमुख फील्ड मा" ार्ल माणिक भााह से सलाह म" ाविरा किया। दोनों ने ही यह कहा कि जब भारत सैन्य अभियान को ग्रीश्म मे और बरसात के महीनों म काफी समस्याओं का सामना करना पडेंगा और इससे अभियान की सफलता मे देर हो सकती है इसके साथ ही श्रीमती गांधी के सलाहकारों ने उन्हे यह भी याद दिलाया की भारत को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यदि चीन ने भी पाकिस्तान की राजनैतिक व सैन्य समर्थन प्रदान किया तो पाकिस्तान तथा यूएस की सेना लेकर और भी ताकतवर हो जायेगा।

इन परिस्थतियों में भारत ने एक नीति बनायी जिसकी मुख्य वि" ाशताये निम्न थीः–

1. पूर्वी पाकिस्तान के संकटों का समाधान केवल तबाही हो सकता ह जब पाकिस्तान आम चुनावों का सम्मान करे और संवैधानिक तथा राजनैतिक निश्ठा की पूर्ति करें।

2. इन उद्दे" यों की प्राप्ति के लिये सैन्य सरकार को तुरन्त भोख मजीबुर्र रहमान को रिहा करना होगा और उन्हे ढाका भेजकर उनके साथ राजनैतिक बातचीत करनी चाहिये।
3. पाकिस्तान को पूर्वी पाकिस्तानी भारणार्थीयों की उनकी घर वापसी की सुनि"चत करना चाहिए तथा उनकी सुरक्षा सम्मान और आर्थिक रहन–सहन की गारन्टी देनी चाहिए।
4. पाकिस्तान को तुरन्त पूर्वी पाकिस्तानी लोगों पर की जा रही सैन्य कार्यवाही को रोकना चाहिए।
5. अन्तर्राश्ट्रीय समुदाय को पाकिस्तान के ऊपर दबाव बनाना चाहिय की वह पूर्वी पाकिस्तानी संकटों का भाांतिपूर्ण तरीके से हल खोजे । पाकिस्तान पर दबाव यूएन के माध्यम से बढाना चाहिए।
6. संयुक्त राश्ट्र की ओर उसकी वि"ाश एजेन्सियों को भारत मे रह रहे लाखों पूर्वी पाकिस्तानी भारणार्थीयों को राहत और पुनर्वास की सहायता करनी चाहिए और जो लोग निराश्रित हो गये है उनके लिए पाकिस्तानी सरकार को लोकतंत्र की स्थापना करनी चाहिए।

पाकिस्तान ने भारत पर आरोप लगाया कि वह उसके आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप करक इसे तोडने का प्रयास कर रहा है। पाकिस्तान न भारत के विरूद्ध यह भी प्रचार प्रसार किया की जो भारणार्थी भारत गये वे वास्तव मे विद्रोही और दे" ाद्रोही थे तथा उनकी बहुत बडी संख्या हिन्दुओं की है।

यूयार्क टाईम्स की 12 दिसम्बर 1971 को दिये गय एक साक्षात्कार मे सरदार स्वर्ण सिंह ने कहा मै इसको पूर्वी पाकिस्तान का टुटना नही कहुंगा हमने भारत के इरादों को पहले ही स्पश्ट कर दिया है कि भारत बांग्लादे" ा की सीमा की कोई योजना नही बना रहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि भारत विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान के द्वारा सीमा सम्बन्धित विवाद से जूझता रहा है। तब से ही पाकिस्तान ने आधे पूर्वी भाग को भारत के खिलाफ उपद्रवी आंदोलन के रूप मे इस्तेमाल किया है। पूर्वी पाकिस्तान की हिन्दु जनसंख्या को भारत मे भारणार्थी के रूप मे भेजने क साथ पकिस्तान मे आर्थिक ओर सैन्य सहायता उन संगठनों की उपलब्ध करवायी थी। भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों मे अलगाव का कार्य कर रह थे। चाहे वे नागा हो

या मिर्जा चीन व पाकिस्तान के मध्य सम्भावित रणनीति जो पूर्वी पाकिस्तान के केन्द्र मे होने की वजह से थी भारत ने पूर्वी पाकिस्तान क स्वतंत्रता आंदोलन को सहयोग दिया। यह मानवीय विपत्ती जो पाकिस्तान के पूर्वी पाकिस्तान को लोकतांत्रिक अधिकार देने से मनाही के रूप मे हुआ और नृसं" ा सैन्य कार्यवाही जो निर्दोश लोगों के ऊपर की जा रही थी ने भी भारत के इस स्वतंत्रता संघश मे भाामिल होने को मजबूर किया।

बांग्लादे"ा की पहचान–

26 मार्च 1971 को मुजीबुर्र रहमान के द्वारा एक स्वतंत्रता और सम्प्रभुता बांग्लादे" ा की घोशणा के तुरन्त बाद एक ि" ाश्ट मण्डल सरकार की तरफ से नई दिल्ली और वि" व के दूसरे पूंजीपति दे" ाों तथा संयुक्त राश्ट्र मे भेजा गया ताकि बांग्लादे" ा के गणतंत्र को स्वीकार किया जाए इसम भारत से अपील की वह इसके साथ कूटनोतिक रि" ते की स्थापना कर लेकिन भारत सरकार ने इसको मंजूर नही किया। श्रीमती गांधी ने बांग्लादे" ा की तात्कालिक पहचान के सुझाव को नकार दिया उन्होने कहा कि बांग्लादे" ा की समस्या को समस्त पहलुओं मे देखा जाना चाहिए और अभी इसको पहचान देने का समय नही आया है। सरकार स्थिति पर नजर रखे हुए है और उचित समय आने पर कार्यवाही की जायेगी। श्रीमतो गांधी के सुझाव का समर्थन सरदार स्वर्ण सिंह ने भी किया। इन्होने संसद सदस्यों से निवेदन किया कि वे सरकार को इस मुद्दे पर जल्दबाजी के लिए ना कहे और साथ ही यह भी स्पश्ट किया कि बांग्लादे" ा की पहचान देने या ना देने का निर्णय अकेले भारत का नही अपितु समस्त दे" ाों का है। उन्होने संसद सदस्यों को आ" वस्त किया कि भारत सरकार बांग्लादे" ा के उपर पुनर्विचार करके अगर परिस्थितियां अनुकुल हुई तो बांग्लादे" ा की मान्यता देने में हिचकेगी नही। इस दौरान पूर्वी पाकिस्तान मे परिस्थितियां और भी विकृत हो गयी और याह्या खान ने संयक्त राश्ट्र सुरक्षा परिशद को बांग्लादे" ा के मुद्द पर सम्मिलित करने का प्रयत्न किया। उसने भारत में भी कई प्रस्ताव भेजे जिनमे कई प्रलोभन दिये गये कि यदि भारत अपनी सैन्य टुकडो को सीमा से हटाले और मुकिवाहिनी का समर्थन बंद कर दें।[गगपप]

भारत ने इस समझोता प्रस्ताव को अर्थतावादी बताते हुए निरस्त कर दिया तथा कहा कि बांग्लादे" ा के लोग पूर्ण स्वतंत्रता चाहते थे। इस प्रकार उपमहाद्वीप मे स्थितियां और बदत्तर हो गयी और भारत को तत्काल बांग्लादे" ा को पहचान देनी पड़ी। भारत ने बांग्लादे" ा को 6 दिसम्बर 1971 को एक स्वतंत्र दे" ा माना।

संदर्भः

1 ग्रोवर वीरेन्द्र, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा, बांग्लादे" ा गवर्नमेन्ट एण्ड पॉलिटिक्स, दीप एण्ड दीप पब्लिके" ान्स, न्यू देहली, 2002 पृ. 45

2 हक मोहम्मद, " ाम" ाुल, 'बांग्लादे" ा इन इन्टरने" ानल पॉलिटिक्स द डिलेमास ऑफ द वीक स्टेट, ढ़ाका यूनिवर्सिटी प्रेस लि.,1993, पृ.20

3 नायर, सुकुमारन पी., इण्डो–बांग्लादे" ा रिले" ान, ए.पी.एन.पब्लि" िंग कॉरपोरे" ान, नई दिल्ली, 2008 पृ.1

4 टिक्कु रत्ना, इण्डो–पाक रिले" ान्स, ने" ानल पब्लि" िंग हाउस, न्यू देहली,1987, पृ.104

5 नायर, सुकुमारन पी.,इण्डो–बांग्लादे" ा रिले" ान,ए.पी.एन. पब्लि" िंग कॉरपोरे" ान, नई दिल्ली,2008 पृ. 5–6

6 गुलाटी,जे.सी.,बांग्लादे" ा लिबरे" ान टु फण्डामेन्टलिजम, कॉमनवेल्थ पब्लि" ार्स, न्यू देहली, 1990, पृ. 42

7 दीक्षित,जे.एन., लिबरे" ान एण्ड बियोण्ड बांग्लादे" ा, कोनार्क पब्लि" ार्स प्राइवेट लिमिटेट न्यू देहली, 1999, पृ. 15–16

8 रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ. 107

9 हक मोहम्मद भाम" ाूल, बांग्लादे" ा इन इन्टरने" ानल पॉलिटिक्स, पृ.–17

10 खान अयूब, ए पॉलिटिकल आटोबायोग्राफी, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2004, पृ. 36

11 रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ. 121

12 चक्रवर्ती, एस.के., द इवोल्यू" ान ऑफ पॉलिटिक्स इन बांग्लादे" ा, 1947–78, ए" ाोसिएट पब्लि" िंग हाउस, न्यू देहली, 1987 पृ.174

13 रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ.–128

14 भार्मा एस.आर., बांग्लादे" ा क्राइसिस एण्ड इण्डियन फोरन पॉलिसी, यंग ए" िया पब्लिके" ान्स, न्यू देहली, 2006, पृ. 67

15 दीक्षित जे.एन., लिबरे" ान एण्ड बियोण्ड बांग्लादे" ा, पृ. 38

16 भार्मा एस.आर.,बाग्लादे" ा क्राइसिस एण्ड इण्डियन फोरेन पॉलिसी, पृ. 29

17 सेन रंगलाल, पॉलिटिकल एलीट्स इन बांग्लादे" ा, यूनिवर्सिटी प्रेस लि.,ढाका, 1986 पृ. 276–278

18 गुलाटी जे.सी., बांग्लादे" ा लिबरे" ान टु फण्डामेन्टलिज्म, पृ.–37

19 डाक्यूमेंट्स बांग्लादे" ा, वाल्यूम–द्वितीय, मिनस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, न्यू देहली, 1971, पृ.–646

20 दीक्षित जे.एन., लिबरे" ान्स एण्ड बियोण्ड बांग्लादे" ा, पृ.–49

21 सेन रंगलाल, पॉलिटिकस एलीट्स इन बांग्लादे" ा, पृ.–281

22 मेहरिश, बी.एन., रिकोगिनाइजे" ान ऑफ बांग्लादे" ा, ग्रोवर, पृ.–69

अध्याय–3

भारत व बांग्लादे"ा संबंधों में मुख्य बाधाऐं व समस्याऐं

भारत और बांग्लादे" ा अति निकटतम पडोसी है दोनो ही दे" ाों मे संस्कृति, भाशा, धर्म की कुछ समानताएं पायी जाती है। 1947 से पूर्व दोनों ही एक ही दे" ा के भाग थे और इस प्रकार इनके विवाद और सम्बन्धित मुद्दे भौगोलिक पर्यावरण और ऐतिहासिक परिस्थितियों से उपजे है भारत का विभाजन 1947 मे भारत व पाकिस्तान के रूप म और इसके बाद 1971 में बांग्लादे" ा एक स्वतंत्र सम्प्रभु राज्य के रूप मे उभरने से कुछ विवादों को जन्म दिया। यह कहा जा सकता है कि यह विवाद पाकिस्तानी दिनों से ही है और यह एक तथ्य है कि उनमे से कुछ ने बांग्लादे" ा के उदय के साथ ही नया रूप ले लिया। भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों का एक अध्ययन जो 1981 मे किया गया यह उजागर करता है कि दोनो दे" ाों के बीच आपसी मतभेद पूर्वी बंगाल के लोगों की गलतफहमी और असंतोश की वजह से है। इस अध्याय में भारत व बंगलादे" ा के मध्य उत्पन्न सबसे बडे विवाद फरक्का बांध विवाद का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसम सबसे पहले उन कारणों का वि" लेशण करने का प्रयास किया जा रहा है जिन्होने इस विवाद को जन्म दिया तथा किस प्रकार इस विवाद ने भारत व बगलादे" ा के मध्य सम्बंधों को प्रभावित किया। निम्न प्रमुख मद्दों को लेकर दोनों दे" ाों में विवाद रहा है[1]–

(1) फरक्का समस्या

बांग्लादे" ा ने गंगा के पानी के बंटवारे की समस्या (फरक्का विवाद) को अन्तर्राश्ट्रीय रूप देने का प्रयत्न किया और संयुक्त राश्ट्र संघ व अन्तर्राश्ट्रीय मंचों पर उछालने का प्रयास किया। भारत ने बांग्लादे" ा को इस जल विवाद को अन्तर्राश्ट्रीय रूप न देने के लिए सहमत कर लिया और ढ़ाका व दिल्ली में वार्ताओं के बाद दोनों दे" ाों ने 26 सितम्बर,1977 को एक समझौता किया। यही समझौता फरक्का समझौता कहलाता है। फरक्का समझौता 5 नवम्बर 1977 को लागू हुआ इसमें दो व्यवस्थाऐं की गयी–

(अ) अल्पकालीन व्यवस्था– इस व्यवस्था के अनुसार 12 अप्रैल से 30 अप्रेल तक जबकि पानी की बहुत कमी रहती है भारत को 20.800 क्यूसेक और बांग्लादे" ा को 34,700 क्यूसेक पानी मिलेगा और इसके तुरन्त बाद भारत को मिलने वाले पानी की मात्रा बढ़ती जायेगी और जल्द ही 40,000

क्यूसेक तक पहुंच जायेगी। अल्पकालीन व्यवस्था में यह बात भी रखी गयी कि अपनी आव" यकता की पूर्ति के लिए भारत फरक्का के नीचे से भी कुछ मात्रा में पानी ले सकता है। इस व्यवस्था में यह कहा गया कि यह समझौता 5 वर्श के लिए है और 3 वर्श बाद इस पर पुनर्विचार किया जायेगा।

(ब) दीर्घकालीन व्यवस्था– इसके अन्तर्गत दोनो दें" ाों ने अपने ऊपर गंगा के प्रवाह को तेज करने की जिम्मेदारी ली और 1972 में स्थापित संयुक्त आयोग इस सम्बंध में दोनों पक्षों के प्रस्तावों की जांच करके यह बतायेगा कि उनके प्रस्ताव व्यावहारिक और मितव्ययी है या नहीं और ये सिफारि" ां दोनों को लगभग पांच वर्श के भीतर विचार के लिए मिल जायेंगी।

भारत में इस समझौते पर तीखी प्रतिक्रियाएं हुई। आलोचकों के अनुसार गंगा मुख्य रूप से भारतीय नदी है क्योकिं इसकी 80 प्रति" ात धारा भारत में है। दूसरा 40,000 क्यूसेक से कम पानी मिलने पर कलकत्ता की हालत खराब होने का अंदे" ा था, जबकि फरक्का का निर्माण कलकत्ता बंदरगाह के लिए ही हुआ था। तीसरा, पानी की कमी के समय भारत को केवल 20,800 क्यूसेक पानी ही मिलेगा जो इसकी आव" यकता से लगभग 20,000 क्यूसेक कम होगा और बांग्लादे" ा को अपनी आव" यकता से 5,000 क्यूसेक अधिक पानी मिलेगा। वस्तुत बंगाल और त्रिपुरा की जनता को नाराज करके फरक्का समझौता किया गया। डॉ. वेद प्रताप वैदिक के अनुसार, फरक्का समझौते के अन्तर्गत बांग्लादे" ा को रियायतें देने के लिए जनता सरकार ने भारत द्वारा प्रस्तुत पुराने सभी तर्को को दरकिनार कर दिया। हो सकता है कि कांग्रेस सरकार कलकत्ता बंदरगाह को बचाने के नाम पर जरूरत से ज्यादा पानी मांगने की बात करती रही हो और जनता सरकार ने उदारता का परिचय दिया हो किन्तु उसका नतीजा क्या हुआ ? उदारता बांझ ही साबित हुई। फरक्का समझौता गंगा के पानी के बंटवारे की समस्या का स्थायी समाधान नहीं था। अतः इसे 1982 के समझौते (स्मरण पत्र) द्वारा रद्द कर दिया गया ।

(2) फरक्का समझौते की दीर्घकालीन व्यवस्था पर सहमति का अभाव

गंगा के पानी के बंटवारे की समस्या को हल करने के लिए भारत ने सितम्बर 1977 में अपने हितों को अनदेखा करते हुए बांग्लादे" ा के साथ इसलिए फरक्का समझौता किया था कि इससे गंगा के प्रवाह को तेज किया जा सकेगा और दोनो दे" ाों की वार्ताओं से समस्या का स्थायी समाधान हो सकेगा। लेकिन बांग्लादे" ा 1977 के अन्तरिम समझौते को अन्तिम समझौता मानता रहा और उसके द्वारा प्राप्त रियायतों को निरन्तर बनाये रखना चाहता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बांग्लादे" ा फरक्का समझौते से केवल प्रारम्भिक लाभ उठाना चाहता है, वह इसके स्थायी समाधान के प्रति बिल्कुल उत्सुक नहीं है।

(3) द्विपक्षीय समस्याओं को अन्तर्राश्ट्रीय रूप देने का प्रयत्न

बांग्लादे" ा ने गंगा जल वितरण की समस्या को, जो द्विपक्षीय समस्या है, बहुपक्षीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय दि" ाा देने का प्रयास किया। बांग्लादे" ा ने नेपाल, चीन, भूटान और वि" व बैंक को भी इस समस्या में घसीटने का प्रयास किया।

(4) अल्पसंख्यकों की समस्या

बांग्लादे" ा के हिन्दू और बिहारी मुसलमान अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं करते, परिणामस्वरूप वे अवैध रूप से भारत मे आते है जिससे भारत के सीमावर्ती प्रदे" ाों–त्रिपुरा, असम, बि" चम बंगाल, मिजोरम, आदि में स्थिति बिगड़ जाती है।

(5) मुहरी नदी सीमा–विवाद

1974 के समझौते के अनुसार मुहरी नदी के पानी की मध्य रेखा ही भारत–बांग्लादे" ा की सीमा रेखा है। बंगलादे" ा रायफल्स के अधिकारियों ने इस समझौते का उल्लंघन करके 1979 में भारतीय जमीन पर अपना दावा पे" ा किया और भारतीय किसानों पर गोलियां चलायी। यह विवाद 44–45 एकड़ (24 हेक्टेअर) जमीन के बारे में है जो त्रिपुरा राज्य के बेलोनिया कस्बे के पास मुहरी नदी के भारतीय तट पर है

(6) नवमूर द्वीप विवाद

नवमूर द्वीप बंगाल की खाड़ी में उभरा एक नया द्वीप है। इसका क्षेत्र.फल केवल 12 वर्ग कि.मी. है। बांग्लादे" ा इसे दक्षिण तलपती कहता है और भारत इसे पुरबा" ाा की संज्ञा देता है। यह द्वीप भारतीय सीमाओं में है फिर भी बंगलादे" ा इस पर अपना दावा करता है। अगस्त 1981 में बांग्लादे" ा के आठ युद्धपोतों ने इस पर कब्जा करने का विफल प्रयास किया। वर्तमान में यह द्वीप भारत के अधिकार में है। बांग्लादे" ा इस मामले को भी अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर लाना चाहता है।

(7) चकमा भारणार्थियों की समस्या

चकमा भारणार्थियों की समस्या ने भी दोनों दे" ाों में उत्तेजना पैदा की। यद्यपि बांग्लादे" ा ने चकमा भारणार्थियों को वापस लेने का वायदा किया परन्तु भय के कारण चकमा भारणार्थी बंगलादे" ा जाना नहीं चाहते।

(8) तीन बीघा पट्टी (गलियारा) समझौता

वर्ष 1992 में सम्पन्न इस समझौते के अन्तर्गत भारत ने बांग्लादे" ा के विदे" ाी अंतक्षैत्र दहग्राम के लोगों के लिए प्रतिदिन छः घंटे के लिए एक पट्टी से आवाजाही की इजाजत दे दी ताकि यह लोग बांग्लादे" ा के भू क्षेत्र मे जा सकें। अप्रैल 2001 में मेघालय के दाउकी से 4 कि.मी. दूर पिरदयाऊ गांव पर बांग्लादे" ा राइफल्स के जवानों द्वारा कब्जा और बी.एस.एफ. के 16 जवानों को मौत के घाट उतार दिया गया।

फरक्का में गंगा के पानी का विवाद

गंगा नदी भारत के सबसे बडे और सबसे महत्वपूर्ण बेसिन का निर्माण करती है। यह (गंगोत्री में 23 हजार फीट ऊपर से उद) इसका उद्गम गंगोत्री मे 23 हजार फीट ऊपर से होता है। उसके बाद हिमलाय के दक्षिण से बहते हुए नेपाल, भारत, बांग्लादे" ा की सीमाओं को पार करके अंततः बंगाल की खाड़ी मे गिरती है।[1] यह एक अनुमान है कि गंगा की कुल लम्बाई 1570 मील और कुल बेसिनों में रहने वाली जनसंख्या 250 मिलीयन है जिसमे से 30 मिलियंस बांग्लादे" ा से और 12 मिलीयन नेपाल से हो कुल अपवाह क्षेत्र 431200 वर्ग मील है जिसमे से 72,672 वर्ग मील नेपाल आर चीन मे 332.585 वर्ग मील भारत में और 26,015 वर्ग मील बांग्लादे" ा मे है यह भी गौरतलब है कि गंगा के कुल 2177 कि.मी. लम्बे मार्ग मे से 2036 कि.मी. लगभग 93.5 प्रति" ात भारत म है।[1]

भारत गंगा के ऊपरी भाग तथा पूर्वी बंगाल निचले भाग मे बसा हुआ दे" । है। गंगा नदी फरक्का पर 40 कि.मी. नीचे दो नदियों के रूप मे भागीरथी और पदमा के रूप मे बहती है। भागीरथी दक्षिण मे बहकर के हुगली मे मिल जाती है जबकि पदमा बांग्लादे" । की सीमा पर 110 कि.मी. बहते हुये दक्षिण पूर्व में मुडकर बांग्लादे" । मे प्रवे" । करती है तथा बाद में ब्राह्मपुत्र में मिल जाती है।

फरक्का बांध परियोजना 19 वीं भाताब्दी के एक लम्बे और योजनाबद्ध अध्ययन का परिणाम थी। फरक्का बांध का निर्माण कलकत्ता के बंदरगाह को बचाने और नदी के द्वारा लायी जाने वाली मिट्टो को रोककर नौ परिवहन मे सुधार करना था । भारत व बांग्लादे" । क मध्य फरक्का का जो विचार है वह सूखे मौसम मे गंगा के प्रवाह के भाग को लेकर के था और उसी के परिणामस्वरूप फरक्का का निर्माण हुआ। भारत मे फरक्का बांध का निर्माण गंगा पर फरक्का गांव के निकट राजमहल नामक स्थान पर पि" चम बंगाल मे बांग्लादे" । की पि" चमी सीमा से लगभग 11 मील दूर किया गया जिससे सूर्ख मौसम मे कलकत्ता बंदरगाह के नौकायान की सुधारने के लिये 40,000 क्यूसेक पानी दिया जाता है। यद्यपि फरक्का के विवाद का एक लम्बा इतिहास रहा है जिसमे दोनों ही प्रतिवादी अपन अपने विचार प्रस्तुत करते है। बांग्लादे" । का यह कहना है कि यह बांध उसके आर्थिक और पारस्थितिको तंत्र को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। इसलिए भारत को अपने कोटे मे कमी करनी होगी जबकि भारत का विचार है कि समस्त अध्ययनों के बाद यह निश्कर्श निकला था कि कलकत्ता की सुरक्षा को देखते हुए पानी की निकासी की जावेगी।

पूर्वी भारत की जीवन रेखा कलकत्ता भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बंदरगाह है जो हुगली नदी जिसको ऊपरी क्षेत्रों मे भागीरथी के नाम से भी जाना जाता है के किनारे स्थित है। यह एक बहुत बड भू–भाग जो भारतीय राज्यों जैसे आसाम, बिहार, मध्यप्रदे" ।, उडीसा, सिक्कीम और उत्तर प्रदे" । की आव" यकताओं की पूर्ति करता है। यह बंदरगाह हिमालय क्षेत्र भूटान और नेपाल की भी आव" यकता पूर्ति करता है। फरक्का बांध स्वीकृत होने के पहले कलकत्ता के समीप हुगली 4 मुख्य समस्याओं से जूझ रही थी जिसकी वजह से भारी रेत और कमजोर नौकायान हो रहा था जिसका मुख्य कारण सोलाद रेत के टीले 5 या 6 तीव्र घुमाव और 100

डुबे हुये जहाज और तीव्र ज्वारीय लहरे और पानी का नीचा स्तर था। फरक्का बांध के निर्माण के पहले बंगाल की खाडी की जल धाराऐं कलकत्ता बंदरगाह मे प्रतिवर्श लगभग 12 मिलीयन टन रेत लाती थी। मानसून की विदाई से 7 मिलीयन टन रेत प्रतिवर्श नदी के किनारों पर इकट्ठा हो जाया करती थी जिससे नदी धीरे धीरे अवरूद्ध हो रही थी ऐसी परिस्थति मे जहाजों के लिये हुगली से कलकत्ता बंदरगाह तक दो सौ कि.मी. की यात्रा करना बहुत मुि" कल था जैसा कि हुगली मे गंगा नदी से पानी केवल तीन महिनों मे बारिस के दौरान ही प्राप्त होता था। अतः फरक्का बांध की योजना बनायी गई जिससे पदमा नदी के पानी को मोड करके इस बंदरगाह को बनाया जा सके जिसके अस्तित्व पर 10 भारतीय राज्यों और 210 मिलियन लोगों का आर्थिक जीवन निर्भर करता है। फरक्का बांध के निर्माण का विचार कई वि" ाशज्ञों, इंजिनियरों की आपसी सहमति का परिणाम था ताकि कलकत्ता बंदरगाह को समुद्र तक जहाजों को आवाजाही सुनिि" चत की जा सकें। 1858 मे ब्रिटी" ा इंजिनियर सर आर्थर कट्टन ने गंगा नदी पर बांध बनाने की योजना दी जिससे हुगली नदी मे पानी का तकनीकी समाधान हो सके जिसस नौकायन निर्बाध रूप से संचालित हो सक उसने कहा कि यदि गंगा नदी के अतिरिक्त पानी को हुगली मे छोड दिया जावे तो सुखे के दिनों मे भी इसमें पानी प्रवाहित होगा और इसमें हुगली मे तलघट को भी रोका जा सक। भारत की फरक्का बांध की नीति विदे" ा मंत्रालय के पम्पलेट से स्पश्ट होती है।

फरक्का बांध की योजना भारत ने भागीरथी और हुगली का पानी की पूर्ति करने के लिए प्रारम्भ की गयी है। यह योजना कलकत्ता भाहर और बंदरगाह दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

फरक्का नामक जगह को इस बांध के निर्माण के लिये चुना गया क्योकि यही से गंगा नदी दो भागों मे विभक्त होकर बांग्लादे" ा मे पवे" ा करती है। इस बाध का निर्माण 1962 मे प्रारम्भ हुआ जो 1560 मिलियन रूपयों की लागत से 1971 मे पुरा हुआ यह बांध 21 अप्रैल 1975 से भाुरू हुआ और इसको ओपचारिक रूप से तत्कालीन कृशि और सिंचाई मंत्री जगजीवन राम ने 21 मई 1975 को राश्ट्र को समर्पित किया।[1]

फरक्का पर राजनीति

यह विवाद पहले भारत व पाकिस्तान क बीच था और बाद में भारत व बांग्लादे" ा के मध्य हुआ। भारत पाकिस्तान के विवाद के दिनों मे पाकिस्तान मे इस मुद्दे को बार–बार उठाया इसके बावजूद भी कि नई दिल्ली में इसको बार–बार स्पश्ट किया। भारत सरकार की फरक्का पर नीति विदे" ाी मामलों के मंत्रालय द्वारा जारी पम्पलेट में स्पश्ट को गई है जिसका जिक्र उपर्युक्त अग्रलिखित पहले कर चुके है।

इस मुद्दे को लेकर भारत व पाकिस्तान के मध्य वार्ताओं की एक श्रृंखला प्रारम्भ हुई। इसी दौरान भारत सरकार का 31 जनवरी 1961 को दिये गये वक्तव्य कि हमने फरक्का बांध का काम भाुरू कर दिया है ने पाकिस्तान को वास्तव में ही क्रोधित कर दिया और उसने इस मुद्दे को संयुक्त राश्ट्र संघ मे उठाकर इसका अन्तर्राश्ट्रीयकरण कर दिया । भारत सरकार ने इसके अन्तर्राश्ट्रीयकरण का विरोध किया बांग्लादे" ा के गठन के बाद यह फरक्का समस्या अब बांग्लादे" ा के हिस्से आयी और दोनों ही दे" ाों में यह महसूस किया कि इस पानी के विवाद को एक साहार्दपूर्ण तरीके से हल किया गया। जैसाकि भारत ने बांग्लादे" ा के स्वतंत्रता आंदोलन मे एक मानवीय भूमिका अदा की दोनों दे" ाों की सरकार के मुखियाओं की पानी की समस्या की बातचीत के दौरान इन्दिरा गांधी ने बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री को यह आ" वासन दिया कि गंगा के पानी के विभाजन का समाधान हुए बगैर फरक्का को स्वीकृत नही किया जायेगा। इस आ" वासन मे जो नई दिल्ली और ढाका के बीच 1975 मे हुआ ने एक मार्ग सुझाया जिसके तहत भारत को अनुमति दी गई की वह एक नि"ि चत मात्रा मे कुछ समय के लिये नहर के माध्यम से पानी ले सकता है। पानी का प्रतिदिन का निश्कासन अप्रेल के अन्तिम 10 दिनों मे 11 हजार क्यूसेक पानी तथा मई के अन्तिम 10 दिनों मे 16 हजार क्यूसेक पानी से ज्यादा नही होना चाहिए और बाकी को बांग्लादे" ा मे प्रवाहित करना चाहिए। इस समझौते की बांग्लादे" ा ने निन्दा की। भाीघ्र इस समझोते ने भारत व बांग्लादे" ा के रि" तों को बिगाड़ दिया क्योकिं भोख मुजीबुर्र रहमान की हत्या के बाद बांग्लादे" ा मे राजनीतिक बैचेनी व्याप्त हो गई। मुजीबुर्र के भाासन काल म भारत विराधी प्रचार के बावजूद भारत व बांग्लादे" ा के मध्य सम्बंध मधुर थे किन्तु मुजीबुर्र के बाद के भाासकों ने भारत की निन्दा करना भाुरू कर दिया जिनका

अन्तिम उद्देश्य मुजीबुर की सरकार को बदनाम करना था जिसके द्वारा उन्होने विश्व को यह सूचित किया की यह जो समझौता हुआ बांग्लादेश के हित मे नही था। इस समस्या से भारत विरोधी प्रचार अपने चरम पर था ।

फरक्का बांध के मुद्दे को अन्तर्राश्ट्रीय बनाते हुए बांग्लादेश ने इसे यू.एन. ओ., कोलम्बो गुटनिरपेक्ष संघ आंदोलन और इस्तानुबुल हुए विदेश मंत्रीयों के सम्मेलन मे उठाया भारत विरोधी प्रचार का आक्रोश इस हद तक बढ गया था कि एक 95 वशीय वृद्ध मौलाना अब्दुल हाकिम खान भाशानो ने फरक्का तक एक पद यात्रा की 1977 के चुनावों मे इन्दिरा गांधी की कांग्रेस पार्टी की पराजय हुई और पहली बार गैर कांग्रेसी जनता पार्टी की सरकार मौरार जी दैसाई के नेतत्व मे केन्द्र मे बनी। इन्होने बांग्लादेश के साथ अच्छे पडोसी के रिश्ते बनाये रखने के लिये फरक्का समस्या के समाधन का प्रयास किया। इसके अनुसार एक अल्पावधि व दीघ्विधी का एक समझौता नवम्बर 1977 मे हुआ। भारत मे जनता की राय इस समझौते के पक्ष मे नही थी और मीडीया, बुद्धिजीवीयों और पश्चिम बंगाल मे समस्त राजनीतिक दलों ने इस समझौते को निन्दा की। पश्चिम बंगाल की मुख्य शिकायत इस समझौते को लेकर यह थी कि यह बंदरगाह के लिये 40 हजार क्यूसेक से भी कम पानी दे रहा था। जो कि विशेशज्ञों के द्वारा सुझाये गये न्यूनतम भाग से भी कम था। पश्चिम बंगाल के राजनीतिक दलों को यह शिकायत थी कि राज्य सरकार से इस समझौते पर हस्ताक्षर करने से पहले सलाह नही ली गई।

बांग्लादेश ने जोर दिया कि सुखे के दिनों मे गगा के पूरे प्रवाह का हकदार था उसने यह भी दावा कि कि यदि भारत उसके पानी को रोकता है तो उसकी कृशि, उद्योग, पारिस्थिती की तंत्र आदि बुरी तरह से प्रभावित होगें।

नई दिल्ली का कहना था कि भारत यदि पानी रोक भी लेता है तब भी न तो बांग्लादेश मे बाढ़ आयेगी और न सूखा पड़ेगा। बल्कि इससे तो जूट की फसल मे पम्पर पैदावार होगी।

विश्व बैंक के अध्ययन मे स्पश्ट किया गया कि यदि एक लाख क्यूसैक पानी भी यदि भारत छोडता है तब भी बांग्लादेश पर कोई बुरा प्रभाव नही पड़ेगा। देश की मुख्य समस्या पानी की कमी नही बल्कि पानी की अत्यधिक मात्रा है।[1]

बांग्लादे" ा वास्तव म यह मांग कर रहा था कि गंगा के स्वाभाविक प्रवाह को फिर से स्थापित किया जाये।[1] चीनी वि" ोशज्ञों के एक दल ने यह विचार अभिव्यक्त किया कि फरक्का को अगर सीमित जलापूति की जाती है तो इससे बांग्लादे" ा को कोई खतरा नही है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पश्ट है कि बांग्लादे" ा के पक्ष का कोई ठोस आधार नही था।

बांग्लादे" ा और पाकिस्तान दोनों ने ही इस मुद्दे का अन्तर्राश्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया। बांग्लादे" ा ने तर्क दिया कि नेपाल को भी इस प्रयास में लिप्त हो जाना चाहिए क्योकि इसकी सीमा पर भी अवरोधक बनाये जा सकते है जिससे कलकत्ता बंदगरगाह के सूखे के दिना के प्रभाव को कम किया जा सके। साथ ही साथ बांग्लादे" ा ने यह भी सुझाया कि वि" व बैंक जैसी अन्तर्राश्ट्रीय एजेंसिया भी इन योजनाओं को लागू करने मे सम्मिलित हो सकती है।

भारत के एक अग्रणी दैनिक अखबार ने यह रिपोर्ट दी की तीसरे दल की मांग में उस समय के तत्कालीन अमेरिका के राश्ट्रपति जिम्मीकार्टर आर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जेम्सकलाहगन ने इस मुद्दे मे रूची ली ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने ढाका मे अपनी राय दी की गंगा के खतरों पर एक अन्तर्राश्ट्रीय सहमति की आव" यकता है।[1]

ब्रिटेन और अमेरिका और वि" व बैंक की योजनाये थी कि भारत नेपाल, और बांग्लादे" ा के मध्य इण्डस वाटर ट्रियेटी (सिंधु जल संधि) के आधार पर समझौता होना चाहिए। इसका अर्थ यह था कि इस समझौते के तहत न केवल तकनीकी और आर्थिक मामले बल्कि पानी का प्रति" ात और विद्युत को तीनों द" ाों के मध्य विभाजित किया जावेगा। राजनीतिक क्रियान्वयन जो गंगा के बेसिन के लिये आंग्ल–अमेरिकन और वि" व बैंक की योजनाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया वह बहुआयामी थी यह निरन्तर संघर्श का कारण रहेगा।

यह भी उल्लेखनीय है कि जैम्स कलाहेगन और जिम्मी काटर दोनो ने ही पूर्वी क्षेत्रों को पानी के लिये आर्थिक व तकनीकी सहायता मुहैया करवाने का प्रस्ताव रखा। हालांकि नई दिल्ली के द्वारा ऐसी कोई विनती नही की गयी थी। यहां पर यह उल्लेख करना आव" यक है कि नेपाल व बांग्लादे" ा ने एस्केप को सूचित किया कि वे इस योजना के लिये उनको सहायता स्वीकार करने के इच्छुक है।

भारत का पक्ष इस फरक्का मुद्दे को लेकर भुरू से ही स्पश्ट रहा और भारत सरकार ने इस द्वि राश्ट्रीय समस्या के मामले में किसी तीसरे पक्ष द्वारा कि जाने वाली मध्यस्तता का पुरजोर विरोध किया ।

भारत का यह तर्क था कि चाहे भारतीय नदी हा या कोई अन्तर्राश्ट्रीय नदी भारत बांग्लादे" ा की तुलना मे एक उन्नत भाग पर स्थित है और अन्तर्राश्ट्रीय कानून के अनुसार एक ऊपरी क्षेत्रीय राज्य की यह अधिकार है कि वह एक अन्तर्राश्ट्रीय नदी के प्रवाह को मोड सकता है और यह अन्तर्राश्ट्रीय कानून एक निचले क्षेत्र के राज्य को यह वि" ोशाधिकार नही देता की वह एक ऊपरी क्षेत्र के राज्य के मामले को हस्तक्षेप करे इस प्रकार भारत का पक्ष अन्तर्राश्ट्रीय कानून के द्वारा मजबूत हुआ।

फरक्का की राजनीति निम्न कार्यो म उजागर हुई कि अविभाजित पाकिस्तान के भाासकों ने फरक्का मुद्दे को सौदेबाजी के रूप म प्रयुक्त किया ताकि वे पि" चम में सहयोग और सहायता प्राप्त कर सके जहां तक भारत बांग्लादे" ा के सम्बंधों का प्र" न है। भारत के द्वारा लाये गये किसी भी प्रस्ताव को बांग्लादे" ा मे संदेह की नजरों से देखा जाता था, आंग्ल अमेरिकन और वि" व बैंक के द्वारा ली गयी इस मामले मे रूचि ने इस मुद्द को और अधिक जटिल बना दिया। दोनो दे" ाों के मध्य मुख्य अंतर सूखे के मौसमीय जलप्रवाह को लेकर के था। एक पि" चमी राजनैतिक के भाब्दों मे पानी के पूर्वी क्षेत्रों मे एक आद" र्ा प्रवाह को दोनों ही तरफ से आपसी सहयोग से निपटाना चाहिए।

इसमे कोई संदेह नही कि फरक्का बांध के मुद्दे ने बांग्लादे" ा मे एक गलत फहमी और असंतोश को जन्म दिया और इसी की वजह से भारत व बांग्लादे" ा सम्बंधों मे खटास उत्पन्न हुई।

भारणार्थी और अल्पसंख्यकों की समस्याऐं

मानवीय परिस्थतियों, जनित पीडाओं म से एक यह भी रही है कि लोगों को युद्ध, हिंसा, जीवन का खतरा, सम्पत्ति और पर्यावरणीय विपत्ती आदि के द्वारा अपने मूल स्थान को छोडकर किसी विदे" ाी भाग मे भारण लेनी पडती है। ये लोग किसी दूसरे दे" ा में तब आते है जब ये अत्यन्त निर्धनता का जीवन बसर कर रहे होत है। अन्तर्राश्ट्रीय सम्बंधो मे भारणार्थी आंदोलन न केवल दो राज्यों के बीच जिनकी

संस्कृति और धर्म अलग अलग है के मध्य बल्कि दो दे" ाों के मध्य भी विवाद का विशय रहे ह लोगों का अपने घर बार को छोडकर दूसरे दे" ाों मे जाना राजनैतिक दृश्टि से भार्म की बात है इसके अलावा जब बहुत बडी मात्रा में लोग किसी दूसरे दे" ा में आकर बसते है तो उस दे" ा के ऊपर अतिरिक्त आर्थिक भार पडता है तथा साथ ही उस दे" ा का आर्थिक विकास और राजनीतिक स्थिरता को भी यह प्रभावित करते है।

1947 से दक्षिणी ए" िया में बहुत बडो जनंसख्या को सीमा पार भारत, पाकिस्तान, बांग्लादे" ा, श्रीलंका और नेपाल आते जाते देखा है। मायरन विनर ने इस घटना को परत्यिक्त लोग और अनचाहे प्रवासी के रूप म वर्गीकृत किया है।[1]

पुर मानवीय इतिहास मे लोगो को उनके घरो से परिस्थितियों के द्वारा विभिन्न प्रकार से भगया गया जैसे प्राकृतिक आपदायें धार्मिक व राजनीतिक कट्टरता, हिंसा और अपन जीवन को बचाने का खतरा आदि। कुर्तवाल्दहिम के भाब्दों में–''भारणार्थी समस्त युद्धो विपत्तीयों और झगडों के परिणाम है।''[1]

हालांकि भारणार्थी आंदोलन उतना ही पुराना है जितना की इतिहास फिर भी प्रथम वि" वयुद्ध के बाद ही अन्तर्राश्ट्रीय समुदाय ने इस मुद्दे पर चिन्तन करना भारू किया । वि" व के लगभग सभी भागों से बहुत बडे समुदाय के आगमन तथा प्रत्यागमन के कारण बीसवी भाताब्दी को बेघर आदमी की भाताब्दी कहा जाता है।

पूर्वी पाकिस्तान से भारणार्थीयों का बडी मात्रा मे आगमन

भारणार्थीयों का पाकिस्तान से भारत आगमन 1947 से ही जारी था जब वहां पर बड़े पैमाने पर सामुदायिक हिंसा हुई। भारत सरकार के आंकडों के अनुसार 1947 से 1958 के मध्य 41 लाख 17 हजार भारणार्थी भारत मे आये जबकि 11 लाख 14 हजार यहां सामुदायिक परे" ाानियों की वजह से 1964 से 1970 के मध्य पलायन कर गये । भारत सरकार का अनुमान है कि लगभग 3 मिलीयन एकड़ जमीन, सात लाख ग्रामीण घर, और 287 हजार घर, दुकान और दूसरे सम्पत्तियां भाहरी क्षेत्रों मे 10 लाख 63 हजार भारणार्थीयों के मध्य वितरित किये गये जो 1947 के बाद पि" चमी पाकिस्तान से आये थे।

उपमहाद्वीप के विभाजन के बाद भारत आये हुये बंगालियों और जो बाद मे आये उनमे अंतर था। प्रारम्भिक वर्शो मे बड़ो संख्या मे भारत आये हुये भारणार्थीयों में सम्पन्न और ि" ाक्षित हिन्दू समुदाय के लोग थे जिन्होने परम्परागत रूप से बंगाल के सामाजिक ढाचें को प्रभावित किया। जबकि वे लोग 1960 के आस पास भारत आये थे उनमे ज्यादातर जमीन रहित श्रमिक छोटे दुकानदार और गरीब किसान थे। जब से पाकिस्तानी सेना ने बांग्लादे" ा के लोग को मारना भाुरू किया तबसे भारणार्थी सीमा को पार करके भारत मे आने लगे।

लंदन के अखबार द गार्जियन मे लिखा है की कोई भी राश्ट्र वास्तव मे 9 मिलियन भारणार्थीयों को भारण देने की उम्मीद भी नही कर सकता । यह भारणार्थी किसी प्राकृतिक प्रकिया के परिणाम नही अपितु राजनैतिक सैन्य कार्यवाही का प्रत्यक्ष परिणाम था। भारत के विदे" ा मंत्री ने संयुक्त राश्ट्र की छठी समिति जो अन्तर्राश्ट्रीय कानून के लिये थी मे कहा कि यह एक वि" ोश प्रकार का रक्तविहीन आक्रमण है जिससे एक बहत बडी मात्रा मे लोगों को दूसरे राज्य से भागने पर मजबूर किया जा रहा है।

पाकिस्तान के द्वारा 1971 मे पूर्वी पाकिस्तान मे किये गये व्यापक नरसहांर के परिणाम स्वरूप लगभग 10 मिलियन भारणार्थी पि" चमी बंगाल, त्रिपुरा, आसाम और मेघालय आदि राज्यों मे आ बसे।[1]

अधिकारिक सूत्रो के अनुसार 98 लाख 99000 हजार 305 भारणर्थी 26 मार्च से 15 दिसम्बर 1971 से भारत मे वि" ोश रूप से पि" चम बंगाल त्रिपुरा, मेघालय, आसाम और बिहार म भारण ले चुके है।[1]

सारणी–1.6

क्र. सं.	**राज्य का नाम**	**अप्रवासियों की संख्या**	**प्रति''ात**
1	पि" चम बंगाल	7493474	75.70 प्रति" ात
2	त्रिपुरा	1416491	14.30 प्रति" ात
3	मेघालय	667986	6.75 प्रति" ात
4	आसाम	312713	3.15 प्रति" ात

5	बिहार	8641	0.08 प्रति" ात
		6119899305	99.98 प्रति" ात

उपर्युक्त सारणी से स्पश्ट है कि यह भी गौर करना चाहिए कि बडी मात्रा में भारणार्थी जो पूर्वी बंगाल से भागकर भारत के राज्यों की सीमाओं मे मार्च से दिसम्बर 1971 के दौरान आ बसे उनकी संख्या उन कुल प्रान्तों की पूर्वी पाकिस्तान से भी अधिक है जो 1947 से 1971 के 24 वर्शो के दौरान यहां आये।

सारणी– 1.7

क्र. सं.	राज्य का नाम	1947–1971 के बीच	25 मार्च 1971 से दिसम्बर 1971
1	आसाम	701.00	316.00
2	बिहार	––	9.00
3	मेघालय	––	668.00
4	त्रिपुरा	517.00	1415.00
5	पि" चम बंगाल	4013.00	1491.00
		5231.00	98.99.00

पूर्वी बंगाल से आये हुये भारणार्थी सभी धार्मिक समुदायों के थे इस भारणार्थयों की कुल संख्या न्यूजीलेण्ड की जनसंख्या की 3 गना और डेनमार्क, स्वीडन और नार्वे की जनसंख्या के बराबर थी।

सारणी – 1.8

क्र. सं.	राज्य का नाम	अप्रवासी समूहो की संख्या	अप्रवासियों की जनसंख्या 15 दिसम्बर 1971 तक		कुल
			समूह के अंदर	समूह के बाहर	
1	पि" चम बंगाल	492	4849786	2386130	7235916
2	त्रिपुरा	276	834098	547551	1381649
3	मेघालय	17	591520	76466	667986
4	आसाम	28	255642	91913	347555

5	बिहार	8	36732	––	36732
6	मध्यप्रदे” ा	3	219298	––	219298
7	उत्तर प्रदे” ा	1	10169	––	10169
		825	6797245	3102060	9899305

सारणी 1.9

माह	आसाम	बिहार	मेघालय	त्रिपुरा	प”िचम बंगाल	कुल
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**
अप्रेल 1971 (10–30)	36.00	1.00	78.00	90.00	1016.00	1221.00
मई 1971	106.00	1.00	158.00	641.00	2252.00	3158.00
जून 1971	74.00	5.00	43.00	295.00	1639.00	2056.00
जुलाई 1971	23.00	1.50	38.00	169.00	565.00	796.50
अगस्त 1971	15.00	0.50	73.00	101.00	866.00	1055.50
सितम्बर 1971	23.00	––	214.00	54.00	513.00	804.00
अक्टूबर 1971	21.00	––	49.00	63.00	292.00	425.00
नवम्बर 1971	10.00	––	9.00	1.00	197.00	217.00
दिसम्बर 1971	8.00	––	6.00	1.00	151.00	166.00
कुल	316.00	9.00	668.00	1415.00	7491.00	9899.00

सारणी– 2

क्र.सं.	राज्य	वयस्क	वयस्क	बच्चे की	बच्चे की	कुल

		पुरूश	महिला	संख्या 5 वर्श के लगभग	संख्या 8 वर्श के लगभग	
1	आसाम	104.00	103.00	——	101.00	308.00
2	बिहार	4.00	4.00	——	1.00	9.00
3	मेघालय	288.00	250.00	1.00	123.00	662.00
4	त्रिपुरा	595.00	543.00	1.00	275.00	1414.00
5	पर्” चम बंगाल	3117.00	2401.00	3.00	1819.00	7340.00
		4108.00	3301.00	5.00	2319.00	9733.00

पूर्वी पाकिस्तान से जिन भारणार्थियों ने भारत में प्रवे” ा किया वे अधिका” ां पूर्वी बगांल और भारत के मध्य के हजारो मील की सीमा से प्रवे” ा किया कुछ लोग बेलगाड़ियो कुछ मोटर कारों कुछ नावों, रिक” ाो से भारत पहुचें किन्तु इन भारणार्थियों ने बड़ी तादाद उन लोगो की थी जो पैदल आये उनके साथ कपड भोजन बास की चटाइयॉ और बर्तन के बन्ड़ल की कुछ परिवार उनको गायों और बकरियों को भी साथ लाये ।

भारत सरकार का पक्ष

यह एक तथ्य है कि 1971 के भारणार्थियो की तादात किसी पूर्व घटना का परिणाम नही थी वि” व के कई नेताओं ने गंभोरता से इस मुद्दे पर विचार किया। सयुक्त राश्ट्रसंघ के भारणार्थीयों के कमी” नर ने 4.य.एन.ओ. की तीसरी मिटींग में कहा कि यह एक भारी समस्या है। मुझे इसमें कोई भाक नही है कि पूर्वी पाकिस्तान से भारत में पिछले 6 महिनों में कितनी बडो संख्या में भारणार्थी गये है यह वर्तमान में बेघर लोगो की समस्या वि” व की सबसे बुरी समस्या में से है।[1]

भारत सरकार ने पूर्वी बंगाल से भारत में मानवता के नाते भारणार्थियों को प्रवे” ा दिया। भारत सरकार ने विदे” ाी नागरिकों के रूप में व्यवहार किया और उन्हे 1946 के विदे” ाी नागरिक कानून के भाग तीन के अन्तर्गत रजिस्ट्रे” ान की आव” यकता थी इस मुद्दो को गम्भीरता से लेते हुऐ गृह मंत्रालय ने समस्त सीमावर्ती राज्य सरकारों को निर्दे” ा दिये की वे भारणार्थियों के साथ उचित व्यवहार कर भारत सरकार का यह मत था कि यह भारणार्थी यथा भीाघ्र जैसे ही संकट

समाप्त होता है। पूर्वी पाकिस्तान वापस लौट जायेगें। भारत के इस मत की अधिकारिक रूप से तत्कालिन राश्ट्रपति वी वी गिरी ने स्वतत्रंता दिवस की पूर्व सध्या पर राश्ट्र को दिये अपने उद्‌बोधन में स्पश्ट किया[1]–

1. ग्रीश्म काल में सीमावर्ती क्षेत्र में भारणार्थीयों और बांग्लादे" । स्वतंत्रता सेनानियों से बातचीत की और उन्होनें यह स्पश्ट कर दिया कि 1971 के भारणार्थीयों को भारत स्थायी रूप से निवास की इजाजद नही दी जायेगी हालांकि जो 1971 के पहले भारत आ चुके है उन्हे यहां की नागरिकता दी जा चुकी है ।
2. इंदिरा गांधी ने भारणार्थीयों के पुनवार्स और राहत के लिये एक वि" ाश संगठन गठित किया जिसके तहत भारणार्थीयों के लियें अस्थायी केम्पों की व्यवस्था कि गई भारत सरकार ने भारणार्थीयों के रहने की एक प्रभावी प्रक्रिया लागू की जिसमें भारत सरकार ने उन्हे प्रारम्भिक तीन महिनों के लिये निवास प्रमाण पत्र जारी किये गये और उन्हे आ" वस्त किया गया कि सम्पूर्ण राहत का खर्च केन्द्र सरकार वहन करेगी और यह भो स्पश्ट कर दिया कि उन लोगो को कोई सरकारी सहायता नही दी जायेगी जो अपने रि" तेदारो और मित्रों के साथ ठहरे हुये है भारत सरकार से राज्य सरकार को इस सम्बन्ध भी निर्दे" । दिये की अस्थायी भारण की व्यवस्था की जाये जिसका खर्च 5 रूपये वर्ग फीट से ज्यादा नही होना चाहिए प्रत्येक परिवार के लिये सौ वर्गफीट जमीन निर्धारित की गई। दो प्रकार के केम्प लगाये गये एक जो केन्द्र सरकार के द्वारा और इसके जो राज्य सरकारों के द्वारा प्रबंधित किये गये ।

दोनो ही कैपों की स्थानीय सामग्रीया से सोमित किया गया इन कैपों में भारणार्थियों की सख्या दो हजार से लेकर तीन लाख तक थी इन केपों के निर्माण में भारत सरकार ने पांच महत्वपूर्ण आव" यकताओं को गम्भीरता से लिया जैसे स्थान की आव" यकता, छायादार स्थान, चिकित्सकीय देखभाल, पानी और भोजन की आपूर्ति भारत सरकार ने प्रारम्भिक स्तर पर राहत कैपों की स्थापना की अप्रेल 1971 में 300 कैंप खुल जो संख्या जून तक 1200 हो गये। इन सब में 327 भारणार्थी केम्प 7 राज्यों में स्थापित किये गये इनमें से 17 कैम्प केन्द्र के द्वारा और

बाकी राज्यों के द्वारा संचालित थे। इन केम्पों का पुरा खर्चा भारत सरकार वहन कर रही थी। स्वयं सेवी संस्थाऐं भी अधिकारियों के साथ केम्पों के संचालन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। इन संगठनों ने चिकित्सकीय सहायता अस्पताल, दवाखाना और दूध बांटकर अपना योगदान दिया इसके अलावा समाज कल्याकारी संगठनों ने अनाथालय और प्रि" ाक्षण घर स्थापित किये। अवयस्क बालकों की समस्या पर ध्यान देने के लिये 18 अनाथालय स्थापित किये गये जहां पर निराश्रित लडके, लडकियां ि" ाक्षा प्राप्त करते थे। और वहीं पर उन्हे कुछ 9 प्रि" ाक्षण भी दिया जाता था। जिससे की वे भविश्य में अपनी आजीविका कमा सके। इन केम्पों के सर्वे मे यह पाया कि 14 प्रति" ात बच्चे कुपोशण के ि" ाकार है। इससे निजात पाने के लिये 100 पोशण केन्द्र विभिन्न राज्यों मे स्थापित किये गये। इस कार्यक्रम को आपरे" ान लाइफ लाइन नाम दिया गया जिसको दो चरणों मे विभक्त किया जा सकता है। अल्फा व बीटा अल्फा मे बच्चों की पोशण की खुराक उपलब्ध कराई जाती थी जबकि बीटा म कुपोशण जनित बिमारियों का उपचार किया जाता है। इन कारण अतिरिक्त खर्च 4 करोड रूपये हुये।

आर्थिक बाधायें–

समस्त राहत सामग्रीयों का खर्च भारत सरकार के द्वारा वहन किया गया । इस हेतु भारत सरकार ने एडवांस मे राज्य सरकारों को 36.71 करोड रूपये दिये । एक सामान्य औसत के अनुसार प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन का खर्च 3 रूपये था। प्रतिदिन का औसत खर्च 2.47 करोड रूपये था। भारत सरकार ने बजट मे 260 करोड रूपये का प्रावधान किया। विदे" ाी सरकारों, यू.एन. एजेन्सियों और स्वयं सेवी संगठनों से प्राप्त सहायता 29 फरवरी 1972 तक 1908.37 करोड रूपये की कुल खर्च अप्रेल से दिसम्बर तक प्रतिव्यक्ति 3 रूपये के हिसाब से 864 मिलियन अमेरिकी डालर हो गये।

भारणार्थीयों का अवैध प्रवास–

भारणार्थियों का भारत आगमन बांग्लादे" ा के उदय के समय से ही जारी था। भारत सरकार ने सभी भारणार्थीयों से जो बांग्लादे" ा के संकट के समय भारतीय राज्यों में आ गये थे से निवेदन किया कि वे दिसम्बर 1972 तक वापस लोट जाये। इसके अनुसार वे सभी अपने अपने स्थानों पर जैसे तैसे चले गये परन्तु

फिर भी यह भारणार्थियों का आगमन सीमावर्ती राज्यों, वि" ोश रूप से पि" चम बंगाल, आसाम, त्रिपुरा और मेधालय मे जारी था सितम्बर 1974 से फिर से भारणार्थियों का आगमन भ्रारू हुआ और कई कारण इसके लिये जिम्मेदार थे।

हालांकि बांग्लाद" ा को मिटट्ी उपजाऊ है किन्तु यहां बाढ़, चक्रवात, तुफान और जल प्लावन की समस्या है। जनसंख्या और भूखमरी ने इन भारणार्थियों को किसी सुरक्षित स्थानों पर जाने पर मजबूर किया आगे बांग्लादे" ा मे जुलाई 1973 से स्थिती और भी बुरी हो गई क्योकि भोजन की कमी और आव" यक जरूरतों के अभाव ने वहां अकाल जैसी स्थिति पैदा कर दी इसी वजह से बांग्लादे" ा नागरिको का एक छोटा समूह भारत आ गया। दूसरा कारण ढाका मे सरकार के द्वारा राजनैतिक ि" ाकार होना भी है। मुजोबर्र रहमान के भ्राासन के दौरान मुजीबुर्र विरोधी ताकत यह चाहती थी कि ज्यादा से ज्यादा नागरिक यहां से चले जाये।

जियाउर रहमान के भ्राासन के दौरान बांग्लादे" ा की एक इस्लामिक राज्य घोशित करने की घोशणा भी इस अवैध प्रवास का कारण रही। वास्तव में भारणार्थियों ने आवामी लीग की सरकार के पतन और दे" ा के ईस्लामीकरण के बाद से पलायन भ्रारू कर दिया। अखबारों की रिपोर्ट इस बात को उजागर करती है कि बांग्लादे" ा मे 15 मिलीयन अल्पसंख्यक समुदाय के लोग फरीदपुर, खुलना, जैसूर, बेरिसाल और कोमिला जिलो को पार करके भारत आ गये। क्योकि उनके कश्ट पाकिस्तानी भ्राासक से भी ज्यादा बुरे थे। पूर्व मे जिन लोगों ने भारत मे भारण ली उन लोगों का अनुभव भी बांग्लादे" ा से भारणार्थियों के पलायन मे एक प्रेरक तत्व साबित हुआ क्योकि 10 मिलीयन भारणार्थी भारत की भूमि पर 9 महिनों तक बिना किसी परे" ाानी के रहे थे। बांग्लादे" ा की मुद्रा का 50 प्रति" ात गिरना और बाढ की समस्या ने भी इस स्थिति को और भी बुरा कर दिया।

संक्षेप मे प्राकृतिक विपत्ती, गरीबी, कमाई के अवसरों की कमी, जीवनयापन और असुरक्षा की भावना और बांग्लादे" ा मे अत्याचारों की कहानियां आदि कुछ महत्वपूर्ण कारण थे जिनसे भारत मे भारणार्थियों का आगमन हुआ।

1947 मे लगभग 50 हजार लोगों ने अवैध रूप से सीमा पार कर भारत मे प्रवे" ा किया अधिका" ा लोगों ने सरकारी चैक पोस्ट से बचते हुये दुसरे स्थानों से भारतीय सीमा मे प्रवे" ा किया। भारणार्थियों ने भारत मे प्रवे" ा उस धारणा के

आधार पर किया कि उनकी खुलना के विदे" ाी पंजीयन विभाग ने निश्कासन प्रमाण पत्र दिया है। बी.एस.एफ. के अनुसार यह प्रमाण पत्र सितम्बर 1972 के बाद वैध नही थे। यह वे वीजा थे जो भारत व बांग्लादे" ा के बीच यात्रा करने के लिये जारी हुये इस प्रकार भारत में प्रवे" ा करक बांग्लादे" ा राइफल्स मे बांग्लादे" ा मे या भारणार्थियों के पुर्नप्रवे" ा को रोक दिया जैसा कि उनके अनुसार उनके पास निश्कासन प्रमाण पत्र थे और इस प्रकार वे भारत के नागरिक थे जिनके लिये बांग्लादे" ा मे कोई स्थान नही।

इस प्रकार बांग्लादे" ा राइफल्स के द्वारा त्यागे जाने पर यह लोग राज्य विहीन हो गये जिन्होने बांग्लादे" ा मे दर–दर की ठोकरे खायी। भाायद उनके ऊपर इसी का प्रभाव पड़ा कि परिस्थिती बांग्लादे" ा के मुकाबले भारत में बेहतर थी। बांग्लादे" ा के संकट के दौरान हुए भारणार्थियों के प्रवे" ा की तरह ही 1974 के प्रवे" ा ने भी सीमावर्ती राज्यों पि" चम बांगल, आसाम को बुरी तरह प्रभावित किया। पि" चम बंगाल मे कम से कम 60 हजार भारणार्थियों ने नाडीयां जिले म प्रवे" ा किया जिनमे अधिका" ा लोग कुलना, फरीदपुर, बैरल, कोमिला और जैसुर जिलों से ओय थे। अधिका" ा भारणार्थी हिन्द् थे। जिसका मुख्य कारण दे" ा के ईस्लामीकरण की वजह से हिन्दुओं मे असुरक्षा की भावना का होना भी है। बी.एस. एफ. ने लगभग 6 हजार भारणार्थियों को 24 परगना नाडिया जिला पुंछ बिहार पि" चमी दिनाजपुर आदि की चैक पोपोस्टों से वापस भेज दिया । इसमे से एक हजार क लगभग भारणार्थियों को आर.पी.एफ. मे रेलवे स्टे" ानों से पकडा और वापिस भेजा ।

बांग्लादे" ा राइफलन ने उनको वापस लेने से मना कर दिया और इसी से भारत व बांग्लादे" ा के मध्य समस्या प्रारम्भ हुई क्योकि दोनों ही इनकी राश्ट्रीयता को लेकर संदेह में थे। भारत बांग्लादे" ा सीमा पि" चम बंगाल म 2216 कि.मी. लम्बी है और ये 9 जिलो मे फैली हुई है। इस परगना जिले की 63 कि.मी. लम्बी सीमा पुरी तरह से नदी की सीमा है। जब नदी गर्मियों मे सुख जाती है तो सीमा पार करना और भी आसान हो जाता था। इस प्रकार यह बहुत मु" कल है कि पि" चम बंगाल मे भारणार्थियों की वास्तविक संख्या कितनी है।

इस अवैध प्रवे" ा को लेकर पि" चम बंगाल सरकार का दृश्टिकोण स्पश्ट रूप से मुख्य मंत्री ज्योतिबसु के द्वारा अभिव्यक्त किया गया जिन्होन केन्द्र सरकार से अनुरोध किया कि वे बांग्लादे" ा सरकार से इस मुद्दे पर बात करे कि वह अल्पसख्यक समुदायों मे सुरक्षा और आत्मवि" वास का भाव पैदा करे जिससे यह बहाव रोका जा सके। प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई ने यह स्पश्ट किया कि कोई भी इन्हे उनकी इच्छा के विरूद्ध बांग्लादे" ा जाने को बाध्य नही करेगा और तत्कालीन विदे" ा मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि जो लोग यहां भारण लेने आये है उन्हे भारण दी जायेगी। यह एक अनुमान है कि एक लाख से भी अधिक बांग्लादे" ा के लोगों ने अकेले 1974 के दौरान आसाम मे प्रवे" ा किया । 1975 मे रेल्वे पुलिस ने एक आकलन बताया कि प्रतिदिन रेल के माध्यम से दौ सो लोग आसाम मे प्रवे" ा कर रहे थे। जैसा कि दोनों ही तरफ के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोग भाशा, रंग, रूप और धर्म मे समान थे इसलिए बडो मु" कल से ही इनका पता लगाया जा सकता है। इसके अलावा सीमा क्षेत्र के लोगो ंने इन लोगों को भारण दी इससे भी इनका पता लगा पाना कठिन हो जाता है। त्रिपुरा मे भी लगभग प्रतिदिन 2000 लोग अवैध प्रवे" ा करते है।

चकमा भारणार्थी–

चकमा चिटगांव पहाडी क्षेत्रों के जनजातिय समुदाय है। यह इस जिले के 13 पहाडो जनजातियों मे सबसे बडो है और बंगालियों से तीन भागों मे अलग है। यह साइनी तिब्बत के व" ा क है, इनकी भाशा उत्तरी पूर्वी भारत और वर्मा के लोगों के समान है। बंगालियों के नहो और ये बौद्ध है। ब्रिटि" ा सरकार के अन्तर्गत चिटगांव पहाडो क्षेत्र एक अलग क्षेत्र था और यह क्षेत्र वहां कि जनजातियों को दिया गया है गैर जनजातिय लोगों को इस जिले मे स्थापित होने से रोका गया । 1971 के गृह युद्ध मे पाकिस्तानी सेना द्वारा कुछ चकमाओं की भर्ती की गयी जब बांग्लादे" ा एक स्वतंत्र राज्य बना तो इस क्षेत्र को बहुत कम धनरा" ाी स्वीकृत की गयी चकमाओं ने क्षेत्रीय स्वतंत्रता का मांग की क्योकि इन्हे डर था कि अगर इसी तरह से प्रवास होता रहा तो ये अपनी ही जमीन पर अल्पसंख्यक हो जायेगें। बांग्लादे" ा ने उनकी इस मांग को ठुकरा दिया और चकमाओं ने विद्रोह कर दिया । बांग्लादे" ा की सेना ने निहत्थे चकमा ग्रामीणों पर आक्रमण कर दिया। इसी

कारण अनेक चकमा सीमा पार कर भारतीय राज्यों त्रिपुरा और मिजोरम आ गये। 1981 मे भारत ने रिपोर्ट दी की भारतीय सीमा क्षेत्र मे 40000 भारणार्थी जो चिट गांव पहाडो के है रह रहे है।

भारणार्थियों के आगमन का भारत पर प्रभाव–

भारणार्थी कोई निश्क्रिय द" ाकि नही बल्कि इन्होने इनके मेजबान दे" ा को सरकार को प्रभावित किया। बांग्लादे" ा की विपत्ती के दौरान आये हुये भारणार्थीयों ने भारत सरकार और भारत लोगो वि" ोशतयाः पि" चम बंगाल आसाम, त्रिपुरा और मेघालय के समक्ष गम्भीर संकट पैदा कर दिया। 1971 के बंगलादे" ा युद्ध के दौरान लगभग 10 मिलीयन भारणार्थी भारत आये और भारत सरकार ने मानवता के नाते करोडों रूपये खर्च कर उन्हे मृत्यु, असम्मान और पूरी तरह से नश्ट होने से बचाया, भारत सरकार ने भारत के लोगों पर नये कर लगाये ताकि इस वि" ाल अभियान के लिए धनरा" ि जुटाई जा सकें। इस भारणार्थी समस्या मे भारत पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डाला। अपनी, भारणार्थी समस्याओं से जुडी हुई रिपोर्ट मे एडवंर्ड एन. कैनेडी ने कहा कि लगभग नौ लाख भारणार्थीयों का एक वर्श तक खर्च चलाना लगभग 8 सौ मिलियन अमेरिकन डालर था। बडो मात्रा मे सरकारी कर्मचारियों की भारणार्थी राहत व कार्यो मे लगाया गया साथ ही भारणार्थीयों के आगमन से भारत का विकास और अर्थ व्यवस्था भी प्रभावित हुई जिन क्षेत्रों मे भारणार्थियों का आगमन हुआ वहां बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हुई। इन भारणार्थियों ने कोई अतिरिक्त हथियार क्षमता उपलब्ध नही करवायी बल्कि भारत मे उपलब्ध सुविधाओं का उपभोग किया। इन परिस्थितियों मे भारणार्थियों ने एक विकास" ील क्षेत्र पर बीच का काम किया।

लगभग इन भारणार्थी केम्पों म भारत की अर्थव्यवस्था का 1/6 भाग खर्च हुआ जो भारत के विकास कार्यक्रमों मे वार्शिक खर्च होता है। यह खर्च लगभग दे" ा के कुल आयातीत मूल्यों का एक तिहाई था इस प्रकार भारणार्थियों को एक साल तक भारत मे रखने का खर्च 500 मिलीयन से भी ज्यादा था। इसी के अनुसार जुलाई और अगस्त माह मे आव" यक वस्तुओं की कीमतों मे बढोत्तरी हुई।

सारणी– 2.1

उत्पाद	जुलाई	अगस्त
भाक्कर (2 किलो)	0.2	0.4
चांवल (1 किलो)	1.05	1.25
केला प्रति	0.05	0.15
तेल	––	दो गुने दाम
परमल (1 किलो)	0.39	1.25

भारणार्थियों ने पडोसी भारतीय राज्यों मे गम्भीर सामाजिक और प्र" ाासनिक समस्याये खडो कर दी क्योकि भारणार्थी बिना काम किये नही रह सकत थे। इसलिए अनेक भारणार्थियों ने रोजगार खोजने का प्रयास किया या छोटे व्यवसाय जैसे दुकाने खोलना और कृशि श्रम, करके पैसा कमानो का प्रयास किया इसम स्थानीय जनसंख्या में आक्रो" ा को जन्म दिया। प्रारम्भ मे यह समस्या राजनीतिक थी लेकिन वर्तमान समय मे इस समस्या ने इतना गम्भीर रूप धारण कर लिया है कि सरकार के द्वारा भी नियंत्रण पाना मु" कल कार्य हो रहा है। यह समस्या सरकार के सम्मुख एक मु" कल चैनाती के समान है।

जिहादी आतंकवाद–

अंतरराश्ट्रीय आतंकवाद की रूपरेखा तेजी से बदल रही है। भारत को आतंक की चुनौती का मुकाबला करने के लिए नई सामरिक दृश्टि की जरूरत है। जिहादी आतंककारी गुट ऐसी नई रणनीतियां अपना रहे है, जिनसे बाहरी और आंतरिक हमलों में अंतर कर पाना मु" कल होता जा रहा है। मुम्बई पर पिछली 26 नवम्बर को हुआ हमला महज एक आतंककारी वारदात नही एक छोटा आक्रमण था। इसके अलावा पाकिस्तान से कार्यवाही कर रहे आतंककारी गुटों ने अपना ध्यान कुछ वि" ाश्ठ लक्ष्यों पर विध्वसंक हमलो पर केन्द्रित किया है, जिससें हमारे दे" ा की औद्योगिक, आर्थिक ओर सैन्य भाक्ति का दर्जा घटाया जा सके। अपने प्रतिनिधियों के जरिए काम करने वाले जिहादी आतंककारी गुटों से दक्षिण ए" िाया के कई दे" ाों को गम्भीर खतरा है। बे" ाक उनका मुख्य नि" ाना भारत ही है। आतंककारियों के हमले के तरीके का पता लगाना या आतंककारियों की f" ानाख्त

का काम आसान नही है, क्योंकि वे विभिन्न रूप और आकार में आते है, इसलिए उनके नापाक इरादों को तोड़ पाना टेढ़ी खीर साबित होता है। भारत के खिलाफ आतंकवाद अब वि" ाश्ट और बेहद संगठित राजनीति सैन्य गतिविधि बन गया है, जो अपने राजनीतिक लक्ष्य व उद्दे" यों को ध्यान में रखकर हिंसक कार्यवाहीयों को अंजाम देता है। जिहादी आतंकवाद दुनिया के कई दे" ाों में पैर पसार रहा है। उसका पहले से तय मकसद पा" ाविक सेना तैयार कर भाांतिप्रिय और आम नागरिकों पर हमले कर उन्हे आतंकित करना है। ऐसी वारदातें करना जिनसें विभिन्न सम्प्रदायों में टकराव पैदा हो या आर्थिक सामाजिक असंतोश को हवा मिले, उनके एजेंडे में है।[1]

भारत में आतंकवाद विरोधी बुनियादी ढांचे का पुनगर्ठन और आतंकवाद का मुकाबला करने के तरीकों का पुनर्निधारण बहुत जल्द करने की जरूरत है,क्योकिं पाकिस्तान म बैठे आतंककारी गुटों की गतिविधियां बहुत बढ़ गई है। राज सत्ता के विभिन्न संस्थानों के संयुक्त प्रयासों के साथ ही अंतरराश्ट्रीय समर्थन भी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को परास्त करने और आतंककारियों के खात्में के हमारे लक्ष्य को पाने के लिए जरूरी है। जिहादी आतंककारी गुटों द्वारा रासायनिक, जैविक, रेडियोलॉजिकल और परमाणु हथियार हासिल कर लेने की सम्भावनाऐं बढ़ रही है और यह हमारे समूचे दे" ा के लिए सबसे गम्भीर चुनौती होगी। पाकिस्तान के परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर खान की हाल ही हुई रिहाई से परमाणु आतंकवाद का खतरा मंडराने लगा है। कादिर खान भारत विरोधी तो है ही, उन्हे भारत के भाहरों की खासी जानकारी है, क्योकि भारत विभाजन के दौरान वे भोपाल में पाकिस्तान जाकर वहां बस गए थे।

जिहादी आतंककारी गुटों द्वारा प्रेरित संघर्शो सहित भारत में आतंककारी गतिविधियों का मूल स्वरूप और आकार इस बात पर निर्भर करेगा कि हम भविश्य में पाकिस्तान आधारित आतंककारी संगठनों से केसे निपटते है। दे" ा में अस्थिरता पैदा करने के उनके मन्सूबों का विफल करने के लिए वे सामान्य पारम्परिक तरीके पर्याप्त नही है,जिन्हे हम अब तक आजमाते रहे है। पारम्परिक तरीकों से आतंकवाद को जनता से मिल रहे समर्थन पर अंकु" ा नही लगाया जा सकता। आंतरिक और बाहरी आतंकवाद के खतरे को खत्म करने के लिए एकदम नए राजनीतिक सामरिक

तौर तरोके अपनाने होंगे। अपने एकदम पड़ौस में स्थित पाकिस्तान और बांग्लादे" । में स्थापित आतंककारी ठिकानों से निपटने की भारत ने अब तक कोई ठोस रणनीति तैयार नहीं की है। इन ठिकानों से आकर आतंकारी भारत में अपनी कार्यवाही को अंजाम देते है। सीमा पार के आतंकवाद के खिलाफ अपनी ही जमीन तक ही कार्यवाही सीमित रखने से नतीजे भी सीमित रहते है। इसलिए यह बेअसर साबित हो रही है। हमारे पड़ोस में सक्रिय अंतरराश्ट्रीय आतंककारी गुटों ने अपना काम करने का तरीका, रणनीति और संगठन में आमूचचूल परिवर्तन कर लिया है। उसके बाद अफगानिस्तान पाकिस्तान क्षेत्र में अलकायदा और उसके सहयोगी आतंककारी संगठनों के खिलाफ अमरीका सैन्य कार्यवाही कर रहा है। तेजी से बदल रहे हालात, नई रणनीतियों, हथियार प्रणालियों और सीमा पार से सक्रिय विभिन्न आतंककारी संगठनों के वित्तीय स्रोतों का नए सिरे से आकलन उनके मंसूबों को तोड़ने के लिए जरूरी है। जम्मू क" मीर में पाकिस्तान से हथयारबंद आतंकारी गुटों की घुसपैठ निर्बाध जारी है। सुरक्षा बलों के अलावा नवनिर्वाचित जन प्रतिनिधि, सरकार के उच्च अधिकारी और आतंककारियों को सहयेाग न देने वाले आम नागरिक मुख्य रूप से उनके नि" ाने पर रहेंगे।

पाकिस्तान दोगली नीति अपना रहा है। एक तरफ तो भारत के साथ भाांति की इच्छा जताता है व बातचीत करता है औरदूसरी और भारत मे आतंककारी वारदातो को अंजाम देने वाले कट्टरपंथी गुटों को समर्थन भी दे रहा है। पाकिस्तान में कट्टरपंथी गुटों को लगता है कि भारत से क" मीर को छीनने के लिए जिहाद जरूरी है। इसीलिए वे क" मीर समस्या के भाांतिपूर्ण समाधान के पक्ष में नही है। हालांकि भारत और पाकिस्तान दोनों पर अंतरराश्ट्रीय दबाव है कि वे इस समस्या का मान्य हल ढूंढ़े, लेकिन निकट भविश्य में हालात बदलते नही दिखते। इसका कारण यह है कि पाकिस्तान में कट्टरपंथी ताकतों का असर बढ़ रहा है और उनकी भारत पाक युद्ध छेड़ने की क्षमता भी। भारत पाक युद्ध परमाणु युद्ध का रूप ले सकता है, इस पहले की पाक सरकार के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाते समय उपेक्षा नही की जा सकती।

संबधों में मजबूत पक्ष–

भारत और बांग्लादे" ा के बीच रि" तों में उतार–चढाव आता रहा है। कभी ये पूर्णतः अवि" वास से परिपूर्ण रहे, तो कभी सद्भावना के कुछ कदमों तक सीमित। इसकी वजह यह रही कि उसने पूर्वोत्तर के अलगाववादी आतंककारियों को भारण दी और ऐसे कट्टरपंथी तथा आतंककारी समूहों को फलने फूलने दिया, जो भारत मे आतककारी हमलों मे लिप्त रहे। इन गुटों पर अंकु" ा लगाने से भी बांग्लादे" ा निरन्तर इनकार करता रहा। यहीं नहीं, भारत की योजना बांग्लादे" ा होकर म्यांमार तक सड़क निर्माण की थी। ऐसा हो जाता तो तीनों दे" ाों के बीच व्यापार एवं व्यवसाय में काफी सुधार होता तथा पर्वोत्तर का सफर भी कुछ कम और आसान हो जाता पर बांग्लादे" ा ने इसे भी नही माना। अब कोलकाता और ढाका के बीच 'मैत्री एक्सप्रेस' ट्रेन चलने से दोनों दे" ाों के आपसी रि" तों में कुछ सुधार के संकेत है। इससे उनके बीच सद्भावना और वि" वास तो पनपेंगे ही।

बंगाली नववर्श 'पहला वै" ााख' पर 14 अप्रेल को दोनों तरफ से यात्री ट्रेन चल पड़ी, लेकिन इसके पहले विघ्न भी आए। पि" चम बंगाल सरकार ने पिछले पखवाड़े कहा कि राज्य में पंचायत चुनावों के मद्देनजर यह कार्यक्रम मई के अंतिम सप्ताह तक टाल दिया जाए। उसे इससे चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन की आ" ांका थी, पर केन्द्र सरकार ने इसे अमान्य कर कार्यक्रम यथावत रखा। जैसे ही भारतीय उच्चायोग ने यह सूचना दी, बांग्लादे" ा के संचार सचिव महबूबुर्रहमान ने कार्यक्रम की घोशणा कर दी। मैत्री एक्सप्रेस द" ाना सीमा से होकर ढाका छावनी से चितपुर (कोलकाता) के बीच सप्ताह में एक बार चलेगी। इसमें 370 यात्री सफर कर सकेंगे। ढ़ाका और कोलकाता ये यह रेलगाडी भानिवार को रवाना होगी तथा रविवार को वापस लौटेगी। इसका सफर भारत में 120 तथा बांग्लादे" ा में 418 कुल 538 कि.मी. रहेगा, जिसके किराए 319 से 797 रूपए के बीच हागें। भारत ने गेडे रेलवे स्टे" ान पर प्रतीक्षा कक्ष, सीमा भाुल्क व अप्रवासन एवं अन्य सम्बन्धित सुविधाएं काफी पहले तैयार कर दी थी। फिर रविवार की सुबह पांच नए रंगे डिब्बों को लेकर एक डीजल इंजल परीक्षण यात्रा पर रवाना हुआ, जो तय समय 16.30 बजे से दो घंटे विलम्ब से ढाका पहुंचा।

यह अवसर बांग्लादे" ा के लिए काफी खु" ायां लाया। उन्हें 42 वर्श से सीधी रेल सेवा का इंतजार था। अब तक वे मीलों लम्बे सफर में कई मुसीबतें

झेलकर भारत पहुंचते थे। 1990 के द" ाक में ढाका और कोलकाता के बीच पहली बार सीधी बस सेवा भुरू हुई थी, लेकिन रेल सेवा की भुरूआत अत्यधिक सांकेतिक महत्व की होने के साथ ही सद्भावना की प्रतीक भी है। यकीनन मैत्री एक्सप्रेस की लोकप्रियता निरन्तर बढेगी। बांग्लादे" ा से हजारों लोग इलाज के लिए भारत आते है क्योकि वहां चिकित्सा की इतनी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। भारत मे उनके परिजन और रि" तेदार भी है, जिनसें मिलने की उनकी इच्छा रहती है। ट्रेन से सफर का अवसर और आसान वीजा सुविधा के कारण अवैध अप्रवासन की समस्या भी कुछ तो कम होगी। इसके बावजूद अपराधियों को इस सुविधा का लाभ उठाने से रोकने पर खास ध्यान देना होगा।

पाकिस्तान के साथ भाांति वार्ता के बाद भी दोनों ने रेल और सड़क सम्पर्क जोड़े थे। भुरूआत अमृतसर और लाहौर के बीच सप्ताह में दो बार चलने वाली समझौता एक्सप्रेस से हुई जिसका लाभ वर्तमान में हर हफ्ते तकरीबन दो हजार यात्री उठा रहे है। ट्रेन के ड्राइवर अल्लाह दितों का कथन है–'ए मोहम्मद दी गड्ड़ी है, इस नू बंद न होने देना।' दोनों दे" ाों के व्यापारी भी अपने अधिकतर दे" ावासियों की इस भावना से सहमत है और द्विपक्षीय व्यापारिक सम्बंध बढाने के हिमायती है। उनका इस बात पर जोर है कि कैसी भी भड़काने वाली कार्यवाही हो, रेल सम्पर्क टूटना नही चाहिए। इसके बाद दूसरा रेल सम्पर्क फरवरी 06 मे थार एक्सप्रेस के रूप में मुनाबाव व खोकरापार के बीच 41 वर्श के अंतराल के बाद भुरू हुआ। पहली परीक्षण यात्रा पर जब लाल, हरे और पीले तीन रंगों की ट्रेन झण्डियों से सजी–धजी पाकिस्तानी ध्वज लेकर मुनाबाव पहुंची, तो रेलमंत्री लालू प्रसाद यादव उसकी अगवानी के लिए मौजूद थे। ट्रेन में मौजूद 350 यात्रियों मे से 150 तो पाकिस्तानी पत्रकार ही थे। स्टे" ान पर पहुंचे हजारों लोगो ने पाकिस्तानियों का स्वागत किया। सेना के बैण्ड़ ने पधारो म्हारे दे" ा जैसे स्वागत गीतों की धुनें बजाई। कुछ ही घंटे बाद यही ट्रेन 260 भारतीय यात्रियों को पाकिस्तान के सफर पर लेकर निकल पड़ी। पाकिस्तान के साथ रेल सम्पर्क से लोगों की आवाजाही के अलावा दिन–ब–दिन व्यापार भी बढ़ा है। यही आ" ाा मैत्री एक्सप्रेस से भी है। हमारा अंतिम लक्ष्य तो भारत से दक्षिण एि" ाया के सभी दे" ाों को ज्यादा से ज्यादा रेलगाड़ियां चलाना होना चाहिए।

घुसपैठ या हमला–

उच्चतम न्यायालय के तीन साल पहले असम में लागू आईएमडीटी कानून रद्द करते हुए बांग्लादे" ा सीमा से होने वाली घुसपैठ का हमला करार दिया था और सरकार से जरूरी कदम उठाने को कहा था। लेकिन न सरकार तब चेती और न ही अब। यही वजह है कि पि" चम बंगाल और असम जैसे राज्यों में बांग्लादे"ियों की आबादी लगभग 50 लाख तक जा पहुंची है। अब वे स्थानीय राजनीति की द" ाा और दि" ाा तय करनें लगे है। वे मर्जी के जनप्रतिनिधि चुनते है और उन्हे अपनी सुरक्षा और संरक्षण के लिए मजबूर करते है। पिछले दो द" ाक में वे पूर्वोत्तर के अलावा दूसरे राज्यों में भी पैठ बढ़ा रहे है। दे" ा के दीगर इलाकें में वे आतंकियों की मदद करते हुए भी पाए जा रहे है।

दो–ढाई करोड़ आबादी–

सरकार की मानें तो दे" ा में इस वक्त दो ढाई करोड़ से ज्यादा बांग्लादे" ाी है। नवम्बर 2003 में दिल्ली में पुलिस महानिदे" ाकों के 38 वें सम्मेलन में इण्टेलीजेंस ब्यूरा की रिपोर्ट में बताया गया था कि दे" ा में करीब 2 करोड बंगलादे" ाी है। वर्श 2003 में ही तत्कालीन रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडीज ने भी बांग्लादे"ियों की इतनी आबादी का दे" ा में होना स्वीकार किया। इससे पहले 1997 में तत्कालीन गृहमंत्री इन्द्रजीत गुप्त ने संसद में माना था कि दे" ा में करीब एक करोड़ बांग्लादे" ाी घुसपैठिए है। वैसे बॉर्डर मैनेजमेन्ट टास्क फोर्स की वर्श 2000 की रिपोर्ट कहती है कि दे" ा में हर माह करीब तीन लाख बांग्लादे" ाी घुस आते है।

दलाली का दलदल–

केन्द्रीय खुफिया एजेंसियों के मुताबिक भारत बांग्लादे" ा सीमा पर बड़ी संख्या में दलाल सक्रिय हैं जो दो से पांच हजार रूपए में बांग्लादे"ियों को भारत पहुंचाने का ठेका लेते है। कोलकाता के मालदा, बनगांव, हावड़ा, राजाबाजार, कूचबिहार, व" ारहाट और जलपाईगुड़ी में ऐसे दलालों का बड़ा नेटवर्क है। सीमावर्ती इलाकों मे रहने वालों के अनुसार बीएसफ व बीडीआर (बांग्लादे" ा राइफल्स) के कई जवान भी घुसपैठ में मदद करते है। घुसपैठियों को दलाल एक

कोड देते हे। दलालों से मिले हुए जवानों को घुसपैठिए जब वह कोड़ बताते है तो वे उन्हें छोड़ देते है।

एनक्लेव भी सहायक–

भारत–बांग्लादे" ा सीमा पर मौजूद एनक्लेव (अंत क्षेत्र) भी घुसपैठ में सहायक है। भारत की सीमा के भीतर बांग्लादे" ा के अधिकार वाले और बांग्लादे" ा की सीमा में भारत के अधिकार वाले कुछ छोटे क्षेत्र आज तक मौजूद है जो इनक्लेव कहलाते है। पि" चम बंगाल में 2262 एकड़ क्षेत्र पर 92 बांग्लादे" ाि एनक्लेव हैं। जबकि बांग्लादे" ा की सरहद में 2892 एकड़ क्षेत्र में 131 भारतीय एनक्लेव हैं। बांग्लादे" ा की आजादी के वक्त दोनों दे" ाों ने अपने अपने एनक्लेव की अदला बदली करने की घोशणा की थी, लेकिन यह काम अब तक नहीं हुआ, जो अब 2015 मे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बांग्लादे" ा यात्रा के दौरान सम्भव हो पायेंगा।

ढोले–ढ़ाले तार–

अस्सी के द" ाक में सरकार को प्रमाण मिलने लगे कि दे" ा में होने वाली आतंकी घटनाओं के पीछे बांग्लादे" ा से होने वाली घुसपैठ भी जुडी है। इसके बाद केन्द्र ने 1985 में बांग्लादे" ा सीमा पर बाड़ लगाने का फैसला किया। लेकिन 4096 कि.मी. लम्बी इस सीमा पर बाड़ का काम अब तक पूरा नहीं हो सका। सुदरवन क्षेत्र के लिए तो तारबंदी का नक" ाा ही नहीं बना है। बीएसएफ के आईजी सीबी मुरलीधर के अनुसार तारबंदी का काम अपेक्षित तेजी से नहीं हो पा रहा है। उनके मुताबिक जीरों लाइन पर तारबंदी एक मु" किल काम है क्योकि यहां काफी गांव बसे है।[1]

घुसपैठिए किंगमेकर–

तत्कालीन रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नाण्डीस के मुताबिक वर्श 2003 तक भारत में अवैध रूप से रहे रहें बांग्लादे" ियों की तादाद करीब 2 करोड़ थी। वर्श 2004ह में तत्कालीन गृहराज्यमंत्री ने संसद को जानकारी दी थी कि यह आंकड़ा 1 करोड 20 लाख 53 हजार 590 है। संयुक्त राश्ट्र के मुताबिक बांग्लादे" ा की वर्श 2008 में अनुमानित जनसंख्या करीब 1.5 करोड़ 80 लाख थी। इसलिए वर्तमान में यदि भारत में रह रहे अवैध बांग्लादे" ाि घुसपैठियों की संख्या करीब 2 करोड 50 लाख हो,

(जिसे वास्तविक आंकड़ा माना जा सकता है) तो स्पश्ट है कि बांग्लादे" ा की कुल जनसंख्या की 15 फीसदी भारत में रहता है।

बांग्लादे" ा में 1991 की जनगणना से पर्याप्त सबूत मिलते है कि भारत के राज्यों पि" चम बंगाल और असम से लगते हुए कुछ बांग्लादे" ाी जिलों में जनसंख्या घटी है। इसके विपरीत भारतीय जिलों में जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई है, जिनका औसत दे" ा के अन्य हिस्सों मे ही नहीं, उन्ही राज्यों की अंतर्राश्ट्रीय सीमा से दूर स्थित अन्य जिलों की जनसंख्या वृद्धि दर से कहीं ज्यादा है। यह तथ्य बड़ी तादाद में घुसपैठ को उजागर करता है। केन्द्र और राज्य सरकारें वोट बैंक की राजनीति के चलते दे" ा में इस अवैध मानवीय घुसपैठ को जड़ से खत्म करने के लिए जरूरी कदम उठाने में नाकाम साबित हुई है। केन्द्र सरकार ने तो तमाम सीमाऐं पार कर एक कानून भी लागू करने की कोि" ा" ा की, जिसका न केवल उच्चतम न्यायालय की तीन सदस्यीय पीठ ने संज्ञान लिया बल्कि उसे असंवैधानिक भी करार दिया क्योकि यह कानून अवैध घुसपैठियों को पहचानने और उन्हें दे" ा से निकालने के कार्य में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है।[1]

घुसपैठ के खतरे–

बांग्लादे" ा के अवैध घुसपैठियों की समस्या से प्रभावी तरीके से निपटने में विफलता के लिए उच्चतम न्यायालय की तीन सदस्यीय खंडपीठ ने सरकार की जमकर खिंचाई की है। अदालत ने कहा है कि यह दे" ा की सुरक्षा से जुड़ा गम्भीर मामला है, इसलिए सरकार को प्रभावी कदम उठाने चाहिए। अदालत ने सरकार से कहा है कि घुसपैठियों को वापस भेजने के बारे में वह वस्तुस्थिति पे" ा करे। इस मुद्दे पर अदालत का यह पहला आदे" ा नहीं है। वर्श 2005 में अदालत ने अवैध प्रवासी निर्धारण ट्रिब्यूनल कानून (आईएमडीटी) को असंवैधानिक घोशित कर रद्द कर दिया था। अदालत ने तब कहा था कि असम अवैध प्रवासियों के कारण बाहरी हमले जैसी स्थिति झेल रहा है और इसके चलते राज्य में आंतरिक अ" ाांति पैदा हो रही है। 2006 में जब मौजूदा सरकार ने एक अध्यादे" ा जारी कर आईएमडीटी के कुछ प्रावधानों को फिर लागू किया तो उच्चतम न्यायालय ने उन्हें भी रद्द कर दिया । साथ ही अदालत ने सरकार से कहा कि वह राश्ट्रीय पहचान पत्र जारी करने और राश्ट्रीय पहचान रजिस्टर बनाने के बारे में प्रगति की जानकारी भी उसे

उपलब्ध कराए। नए केन्द्रीय गृहमंत्री ने भी इसे गम्भीर मामला बताया, जो सरकार की नीति में स्वागत योग्य बदलाव का घोतक है। चिदंबरम ने इस मामले को साम्प्रदायिक रंग देने वालों के प्रयासों पर पानी फेरने की कोशि" ा" ा यह कहकर की कि बांग्लादे" ा से आने वाले लोग किस मजहब से जुड़े है, उससे इस मुद्दे का कोई लेना–देना नहीं है। मुददा तो यह है कि वे विदे" ाी नागरिक है, जो भारत में अनुमति लिए बिना गैर कानूनी तरीके से रह रहे है। गृहमंत्री ने इस बात पर भी गहरी चिंता जताई कि वैध वीसा लेकर आने वाले अनेक बंगलादे" ाी नागरिक वीजा का नवीनीकरण कराए बिना दे" ा में रह रहे है। एक अन्य मौके पर चिदम्बरम ने कहा कि नागरिकों का राश्ट्रीय रजिस्टर बनाने का काम तेजी से चल रहा है। यह काम 2011–2012 तक पूरा हो जाएगा। ऐसा लगता है कि गृहमंत्री ने उन समस्याओं और मामलों की सूची बना ली है, जिनका दे" ा की आंतरिक सुरक्षा पर असर पड़ता है। साथ ही उनसे निपटना भी भाुरू कर दिया है। अभी यह देखना बाकी है कि उन्हें इसमें प्रधानमंत्री, मंत्रीमंडलीय सहयोगियों और कांग्रेस पार्टी का कितना समर्थन मिलता है क्योंकि घुसपठियों और अवैध प्रवासियों की समस्या से निपटने के लिए राश्ट्रहित मे कई बड़े कदम उठाने होगें। जल्दी ही आम चुनाव होने वाले है, इसलिए उच्चतम न्यायालय के आदे" ा के बावजूद कांग्रेस की निश्क्रियता नीति में बदलाव के आसार बहुत कम है।[1]

मई 1977 में तत्कालीन गृहमंत्री इन्द्रजीत गुप्त ने संसद को सूचित किया था कि दे" ा में अवैध रूप से रहे बांग्लादेशि" ायों की संख्या लगभग एक करोड़ है। अनुमान है कि अब यह संख्या दो करोड़ से भी ज्यादा हो गई है। ज्यादातर बांग्लादे" ाी असम, पश्ि" चम बंगाल, बिहार और त्रिपुरा में रह रहे है। दे" ा के लगभग सभी भागों मे वे पहुंच गए है। अकेले दिल्ली में ही इनकी संख्या चार लाख से अधिक है। नागालैण्ड, मणिपुर और राजस्थान में भी वे अच्छी खासी तादाद में है। मोटे अनुमान के अनुसार असम की कुल 2 करोड 60 लाख आबादी मे उनकी संख्या लगभग 60 लाख है। राज्य के पांच विधानसभा क्षेत्रों में तो वे बहुमत में है और राज्य के कुल 126 क्षेत्रों में से पचास से ज्यादा में वे निर्णायक भूमिका निभाने की स्थिति मे आ गए है। पश्ि" चम बंगाल मे भी हालात ऐसे ही होते जा रहे है। वहां उनकी गिनती 80 लाख से ऊपर हो गई है। मालदा, दक्षिणी दिनाजपुर और

जलपाईगुडी जिलों मे उनकी संख्या अच्छी खासी है। जलपाईगुड़ी सामरिक दृश्टि से दे" ा का बेहद महत्वपूर्ण इलाका है। इसकी संकरी सी पट्टी दे" ा को उत्तरपूर्वी सात राज्यों और सिक्किम से जोड़ने का एकमात्र जरिया है। बांग्लादे" ायों की आमद इसी तरह जारी रही तो वह हमारी सुरक्षा के लिए कितनी खतरनाक साबित होगी, इसे समझना मु" कल नहीं है। बिहार के पूर्णिमा, कटिहार, कि" ानगंज और साहिबगंज जिलो में भी जनसांख्यिकीय बदलाव साफ नजर आने लगा है। न केवल बांग्लादे" ा के लोग, अपितु म्यांमार के चीन और कुक्की जनजातियों के लोग भी भारत मे घुस रहे है।

भारत की 4 हजार 96 कि.मी. लम्बी सीमा में से अधिका" ा पर कंटीली बाड़ लग गई है, लेकिन सीमा पर दोनों और स्थित नए पुराने गांव एक दूसरे में मिले हुए है। नदी नालों से बनी सीमा रेखा पर ग" त में मु" कल होती है। माफिया जैसे गिरोह एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित कर लेते है। प" ुओं, मिट्टी के तेल, दवाइयों, चीनी जैसी खाद्य वस्तुओं, मोटर पार्ट्स और फुटकर चीजों की भारत से बांग्लादे" ा को तस्करी आम बात है। ये गिरोह सीमा के दोनों और के नेताओं और अफसरों से मधुर सम्बंध बना लेते है। जब तक बढ़े भ्रश्टाचार पर अंकु" ा नहीं लगेगा, विदे" ी नागरिकों का भारत आना निर्बाध जारी रहेगा। इस बारे में अभी तक न तो ज्यादा कुछ कहा गया है और न ही कुछ किया गया है। सीमा सुरक्षा बल के अलावा दे" ा की आंतरिक सुरक्षा से जुड़े विभिन्न संस्थानों की इसमें बहुत कम भूमिका है। सीमा से प्रवे" ा के बाद घुसपैठिया दे" ा के विभिन्न भागों में ट्रेन या बस से जाते है। बस स्टेण्ड और रेलवे स्टे" ानों पर आम तौर पर भी स्थानीय पुलिस ही तैनात रहनी चाहिए। इन स्टे" ानों पर सभी की ज्यादा तला" ी तो हो नही सकती, किन्तु नए चेहरों को पहचानना आसान होता है। उनका पहनावा, उनका सामान, उनकी बोली और बोलने के लहजे से प्र" िक्षित स्थानीय पुलिसकर्मी उन्हें आसानी से पहचान सकते है। ज्यादातर लम्बा सफर ट्रेन से ही तय होता है। इसलिए राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी), रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और रेलकर्मी भी इसमें अहम भूमिका निभा सकते है। स्थानीय पुलिस यदि सही तरीके से काम करे तो वह गिरोह के मुखिया, उसके सदस्यों, दलालों और गुप्त गतिविधियां चलाने के लिए मदद करने वाले लोगों की ि" ानाख्त कर सकती है। इसके लिए

अवैध प्रवासियों को मदद देने वाले, भारण देने वाले और रोजगार देने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी प्रावधानों की जरूरत है। बांग्लादे" ा मे नई बनी भोख हसीना की सरकार का रवैया सकारात्मक है, लेकिन घरेलू राजनीतिक मजबूरियों के चलते उनसे ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती। यदि सझौता नहीं भी हो तो दोनों दे" ाों को स्वीकार्य भार्तों पर समझ विकसित कर नागरिकता की पहचान का फार्मूला तय किया जा सकता है। इसे ज्यादा प्रचारित करना तो नुकसानदेह हो सकता है, इसलिए उनके बिना सरकार को इस दि" ाा में प्रयास करना चाहिए। जब तक समझ नहीं बने तब तक हम सर्वप्रभुतासम्पन्न दे" ा होने के कारण अवैध प्रवासियों और घुसपैठियों को उनके दे" ा वापस भेजने के लिए अन्य वैकल्पिक कदम तो उठा ही सकते है।

क्या लड़ाई ही आखिरी रास्ता ?

आतंकवाद से निपटने के लिए भारत की ओर से वर्तमान में जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे सही दि" ाा में है। इन्हें और धारदार बनाने की जरूरत है। राजनयिक स्तर पर भारत अपेक्षित प्रयास कर रहा है। इसी का नतीजा है कि दुनिया के अधिकां" ा मुल्क आज भारत के समर्थन में खड़े हो रहे है। यह सच है कि लगातार दबाव के बावजूद पाकिस्तान की ओर से इस तरह की कार्यवाही लम्बे समय से जारी है। इसके लिए आज तक उसकी ओर से कोई ठोस कदम भी नहीं उठाए गए है। ऐसे में पूरे दे" ा में पाकिस्तान के प्रति रोश है। दे" ा की आवाम को लगता है कि अब बहुत हो गया और अब सरकार को कार्यवाही के लिए तैयार हो जाना चाहिए। पिछला अनुभव बताता है कि जिस किसी ने लड़ाई की पहल की, उसे इसका नुकसान उठाना पड़ा। पाकिस्तान का उदाहरण सामने है। वर्श 1965 से लेकर कारगिल संघर्श पाकिस्तानी पहल का ही नतीजा था। हर बार पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी । अब भी पाकिस्तान जिस छद्म युद्ध के सहारे भारत को अस्थिर करने की कोि" ा" ा में लगा है, पूरी दुनिया इस बहुत बारीकी से देख रही है। हर किसी को लग रहा है कि माहौल खराब करने में पाकिस्तान अव्वल दे" ा बनने की और अग्रसर है।[1]

वैि"वक आतंकवाद—

आतंकवाद वैि"क है और यह आज के वि" व की सबसे बड़ी समस्या है, इसमें कोई संदेह नही है। दुनिया समतल हो रही है, पर यहो समतलता आतंकवाद की परोक्ष रूप से सहायता कर रही है। आतंककारियों का सबसे बड़ा समूह कुछ मानते है कि यह केवल इस्लाम के ही नही, वि" व प्रगति और मानवता के विरूद्ध भी एक ' ाडयंत्र है। बिन लादेन सऊदी अरब से सारे विदे"ियों और विदे" ाी प्रभाव को मुक्त कराना चाहता है। मुस्लिम समाज मे व्याप्त कोई भिन्नता उसे स्वीकार नही है क्योकि निरक्षरता, गरीबी और कबीलावाद ही वह भास्त्र है जिनके आधार पर अलकायदा खड़ा है और जिन पर उसका भरोसा है। मुल्लाओं का प्रभुत्व, फौज की प्रमुखता और अतिवाद उसकी स्वाभाविक पसंद है। जहां खुलापन हो वहां आतंकवाद पनपना मु"िकल होता है। जहां भी खुलेपन, खुले समाज की सम्भावना होती है, आतंककारी उन दे" ाों को अपना नि" ाना बनाना अपना कर्तव्य समझते है।

अफगानिस्तान के कबायली इलाके अलकायदा के लिए बड़ी अच्छी ि" ाकारगाह है। प" तूनी कबायलियों के बीच उन्होने पैठ कायम कर ली है। प" तून कभी गांधीवादी अब्दुल गफ्फार खां के अनुयायी थे, आज अधिका" ा जनता मन से या दबाव से, अलकायदा के साथ है। आतंकवाद की दृश्टि से पाकिस्तान दुनिया का सबसे खतरनाक दे" ा है। तारिक अली ने लिखा है कि जिस दे" ा पर मुल्लाओं और अंधवि" वासों का भ्ाासन हो, वह मेरा दे" ा होते हुए भी मेरी पसंद नही है। पाकिस्तान की आईएसआई आतंकवाद की सबसे बडी मददगार रही है। ओबामा के अनुसार अलकायदा के खिलाफ कोई जंग बिना पाकिस्तान की सहायता के नही जीती जा सकती। मु" र्रिफ के जाने के बाद उस पर पाकिस्तानी भ्ाासन की पकड़ भी ढ़ीली हो गई है। उसके लिए पहला दु" मन भारत है। भारत की तबाही उसका चिरपरिचित लक्ष्य रहा है।

भारत एक सोफ्ट स्टेट है। भारत में वोट बैंक की दृश्टि से हर समस्या को देखने की आदत पड़ गई है। इससे सारी साम्प्रदायिक ताकतों को बल मिलता है। धार्मिक कट्टरता और जातीय कट्टरता आतंकवाद की सबसे प्रमुख जड़ है। मुम्बई के बम धमाके इस बात को प्रमाणित करते है कि हम आतंकवाद से लड़ने के लिए तैयार नही है। हमारी समुद्री सीमा पूरी तरह असुरक्षित है।[1]

इस घटना ने हर भारतीय को झकझोर दिया है, वि" वास को कुछ डिगा दिया है। यह राजनेताओं की दी गई चेतावनी है। अमरीका मे सब राजनीतिज्ञ ऐसी घड़ी मे एक हो जाते है। दे" ा प्रेम से सारा अमरीका ओतप्रोत है। भारत के एक होने का समय आ गया है। अभी नही तो कभी नही जैसी स्थिति पैदा हो गई है। प्रधानमंत्री इस घटना मे विदे" ाी हाथ बताते है। फ्रांस के विदे" ा मंत्री ने अलकायदा का हाथ होना बताया है। रूस ने भी कुछ ऐसी ही भांकाएं दिखाई है। पाकिस्तान की सरकार तो हमसे भी अधिक असमर्थ है। उसमे आतंकवाद से लड़ने की इच्छा" ाक्ति ही नही है। आतंकवाद के खिलाफ युद्ध मे वह यदि चाहे तो भी अमरीका या भारत का साथ नही दे सकता। लेकिन केवल बाहरी तत्वों पर सारा दोश डालना गलत होगा। दे" ा मे भी दु" मन छिपे है। उनको पकड़ना और सजा देना पहला कदम होना चाहिए। इसके लिए गुप्चर विभाग और पुलिस विभाग को अधिक सजग और क्रिया" ाील बनाना होगा। पुलिस और फौज दोनो की संख्या भी बढ़ानी होगी और उनकी कार्यक्षमता भी। राज्यों और केन्द्र के बीच तालमेल अधिक संवेदन" ाील और तत्पर बनाना होगा। आतंकवाद के लिए भारत अब एक उर्वरक भूमि नही बनने दी जा सकती। आतंकवाद पर राजनीति तुरन्त खत्म होनी चाहिए। वै" वक आतंकवाद अब भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। हिंसा, कट्टरता, घृणा और भय को दफानाने से ही वै" वक आतंकवाद का सैद्धान्तिक मुकाबला करना सम्भव होगा।

आतंक के घने बादल

दक्षिण ए" िया में समय–समय पर धार्मिक व जनसांख्यिकी कारणों से आबादी के पलायन तथा झरझरी सीमाओं के कारण अंतरराश्ट्रीय सीमाओं के पार जातीय व धार्मिक समूहों का आवागमन बेरोकटोक जारी है। ऐसे माहौल व भौगोलिक व्यवस्थाओं की वजह से ये समूह आतंककारियों व आपराधिक गिरोहों को सीमा पार कराने में सुरक्षित निकासी एवं आश्रय प्रदान करते है। पूर्वोत्तर भारत में नदियों व पहाड़ी इलाकों तथा नदी व समुद्री मार्ग उपलब्ध होने से स्थिति काफी खराब है। इससे अंतर्राश्ट्रीय सीमाओं के पार अवांछित आबादी के प्रवाह और हथियारों की तस्करी को रोकना और भी कठिन हो जाता है। प" चम में भी मरूस्थलीय व विस्तृत तटवर्ती क्षेत्र होने के कारण स्थिति बेहतर नही है।

भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादे" ा और श्रीलंका की जनता के बीच धार्मिक व जातीय सम्बंध भारण पाने के साथ ही सीमा पार आतंकवाद और घुसपैठ की सुविधा भी प्रदान करते है। भारत में सक्रिय आतंककारी एवं विद्रोही गुटों को भारत के खिलाफ विद्वेश एवं धार्मिक संबंधों के कारण पाकिस्तान से समर्थन मिलता है। बढ़ते जातीय, धार्मिक व सामाजिक आर्थिक टकरावों तथा अ" ाति के कारण भारत स्वयं भी आतंकवाद के लिए और अधिक सुभेद्य हो गया है। अधिक मारक क्षमता रखने वाले अत्याधुनिक हथयारों की उपलब्धता के कारण अंतरराश्ट्रीय सम्बद्धताओं वाले आतंककारी अधिक नुकसान पहुंचाने में सक्षम है। अंतरराश्ट्रीय सीमा पार से होने वाला आतंकवाद पहले ही भारत के लिए सबसे गम्भीर खतरा बने हुए है लेकिन अब स्थानोय हिंसक गुट और भाड़े के लड़ाके भी अवाम में सरकार की सुरक्षा देने की क्षमता के प्रति अवि" वास पैदा करने और अव्यवस्थाएं फैलाने में भी भागिल है। विभिन्न समुदायों के सांकेतिक मूल्यों के उद्दे" यों को नि" ाना बनाया जा रहा है और यह राश्ट्रीय सम्बद्धता को प्रभावित करते हुए विभिन्न समुदायों व धार्मिक समूहों के बीच संदेह पैदा कर रहा है। दे" ा को लगातार जारी आतंतरिक संघर्श में उलझाए रखना भी ऐसे कुछ मामलों का उद्दे" य होता है।

राजनीति प्रेरित आतंकवाद का उद्दे" य निर्वाचित सरकारों को हटाना या अस्थिर करना, उनको नैतिक व भौतिक समर्थक आधारों से अलग थलग करना और भौतिक संसाधनों व सुरक्षा सम्बंधी बुनियादी सुविधाओं को नश्ट करना है। अपने अपने आधारों से संचालित विभिन्न इस्लामिक कट्टरपंथी समूहों ने बहुत हद तक बाहरी व अंदरूनी तौर पर इस रणनीति को अपना लिया। इसका नतीजा बहुसंख्यक समुदाय के कुछ कट्टरपंथी गुटों द्वारा बदला लेने की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया है। आतंकवाद को स" ास्त्र विद्रोह और विध्वसं के साथ जोड़कर व्यवस्थित तरीके से धर्मनिरपेक्ष व लोकतांत्रिक परम्पराओं के नश्ट करने के लिए नियोजित किया जा रहा है। राजनीतिक गुटों के ध्रुवीकरण और सामाजिक आर्थिक संतुलन के विघटन से भारत और दक्षिण ए" िया के कुछ दे" ों की क्षेत्रीय अखंडता और आर्थिक व्यवहारिका के लिए भी खतरा पैदा हो गया है।

9/11 की घटना के बाद आतंकवाद के वित्त पोशण तंत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। आतंककारियों को वित्तीय सहायता देने वाले वै" वक वित्तीय

नेटवर्क और बड़े दानदाताओं का स्थान अब छोटे मोटे आपराधिक गिरोहों और दानदाताओं के माध्यम से संचालित स्थानीय अनुबंध रखने वाले खंडित समूहों ने ले लिया है। यह परिवर्तन सिर्फ आतंककारियों के बड़े वित्त स्रोतों को अवरूद्ध करने के अंतरराश्ट्रीय अभियान के दम पर नही हुए है। वरन आतंककारियों के संग्रह, प्रवाह, भंडारण और निधियों के उपयोग के नए तरीकों की वजह से ये बदलाव हुए है। विकेन्द्रीकरण ने फंड के स्रोत का पता लगाने की सम्भावनाओं को कम कर दिया है। आतंककारी अभियानों के तौर तरीकों में भी बदलाव हुए है। इससे गतिविधियों के संचालन और उसकी योजना बनाने के लिए बड़े वित्तीय स्रोतों पर निर्भरता कम हुई है।

इस बात में थोड़ा स" ाय है कि अंतरराश्ट्रीय समुदाय के लिए आतंकवाद के फैलाव पर ध्यान केन्द्रीत करने की जरूरत है। हालांकि ऐसा लगता है कि फिलहाल तो आतंकवाद के खिलाफ समूची जंग वि" व के कुछ ही दे" ाों और आतंककारी समूहों पर लक्षित है। वै" वक आतंकवाद के खिलाफ तथाकथित जंग प" चमी दे" ाों मे अपने रणनीतिक एजेंडे से भटक गइ है। इसलिए दक्षिण ए" ाया में आतंकवाद में संघर्श के लिए एक पुरजोर क्षेत्रीय प्रयास की आव" यकता है। उनके सभी प्रद" ानों में कट्टरवाद और आतंकवाद से मुकाबला जरूरी है, इस पैने और चयनात्मक दृश्टिकोण की सफलता की थोडी बहुत सम्भावना है। क्षेत्रीय आतंकवाद से निपटने और दक्षिण ए" ाया में आतंककारी समूहों पर लगाम लगाने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर निम्न बातों को फिर से आंकने की जरूरत है[1]–

– राजनीतिक पहुंच और विभिन्न दे" ाों के आंतककारी समूहों को नि" ाना बनाना।
– आपूर्ति मार्गो और अत्याधुनिक हथियारों की उपलब्धता, वित्तीय सहयोग, संगठन और विभिन्न आतंककारी गुट।
– प्रायोजित दे" ाों या संगठनों की वर्तमान स्थिति।
– स्थानीय सहयोग, आधार और संस्थाऐं।

हमारे दे" ा में आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए बनाई गई प्रमुख व पर्याप्त आतंकवाद निरोधी संस्थाओं व नीतिया का समय–समय पर पुर्नमूल्यांकन करना जरूरी होगा। नए आतंककारी खतरों से निपटने के लिए आव" यक संसाधनों

व प्रतिक्रियाओं की भी पुर्नपरिभाशित करने की आव" यकता है। अंतर्राश्ट्रीय व घरेलू आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए राश्ट्रीय व क्षेत्रीय अनुकूलता पर आधारित दीर्घगामी नीतियां बनाई जानी चाहिए। कट्टरवाद और सभी तरह के आतंकवाद से निपटने के लिए दीर्घकालिक रणनीतियां निर्मित करने हेतु अगर राश्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठन बनाए जाएं तो आतंकवाद से अधिक प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है। सम्पूर्ण क्षेत्रीय आतंककारी ढांचे को कमजोर करने के लिए जरूरी संगठनात्मक दक्षता उपलब्ध कराने हेतु एक बहुआयामी ढांचे की जरूरत होगी ।

आतंकवाद से निपटने के लिए राज्य के तीन प्रमुख घटकों को मजबूत करना जरूरी है, एक धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक तंत्र, वित्तीय क्षमता और एक मजबूत सुरक्षा व कानूनी तंत्र जो आतंककारी संगठनों व उनके प्रायोजकों के खिलाफ अंदरूनी व बाहरी दोनों तरफ से बल प्रयोग के लिए तैयार हो सकें। आतंकवाद पर रोक लगाने का सबसे भाक्ति" ाली उपकरण, विदे" ाी कोश और आधारों तक उनकी पहुंच को अवरूद्ध करना होगा और यही आसान व सबसे नजदीकी तरीका होगा। आतंकवाद को हराने के लिए अभिनव राजनीतिक व सैन्य पहल भी आव" यक होगी।

चुनौतियों भरा पड़ौस–

हम अपने मित्र को तो आसानी से बदल सकते है लेकिन अपने पड़ोसी को नहीं। यह उक्ति भारत से बेहतर कोई नही जान सकता क्योंकि वह चारों तरफ से ऐसे पड़ोसी दे" ाों से घिरा है जिनका चेहरा विरोधाभासी और चरित्र जटिल है। गुजरे साल पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, मालदीप और बांग्लादे" ा में लोकतंत्र की वापसी हुई। यह देखकर ऐसा आभास होना स्वाभाविक है कि 2008 दक्षिण ए" िया मे लोकतंत्र की सौगात लेकर आया परन्तु इन घटनाओं की इतनी सीधी और सपाट व्याख्या करना जोखिम भरा है। भारतीय उपमहाद्वीप में हो रही सियासी और सामरिक उठापटक के दौर में हम कोरी उम्मीदों की नींव पर अपनी दीर्घकालीन राश्ट्रीय सुरक्षा का ढांचा नही खड़ा कर सकते। पड़ोसी दे" ाों के साथ रि" तों का गणित बीते साल की तरह ही अगले साल भी हमारे विदे" ा नीति निर्धारकों के राजनीतिक सूझबूझ और कूटनीतिक चातुर्य की कड़ी परीक्षा लेगा।

भाुरूआत चीन से करते है जिससे रि" ते सुधारने का 2008 में वि" ोश प्रयास किया गया। लेकिन चीने के कई कदम भारत के प्रति द्वेशपूर्ण नीति को जारी रखने का प्रयास ही साबित हुए। परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में चीन ने भारत अमेरीका एटमी डील पारित होने में बाधा उत्पन्न की। मुम्बई हमलों के बाद ल" कर–ए–तैयबा के मुखौटा संगठन जमात–उद–दावा पर संयुक्त राश्ट्र सुरक्षा परिशद द्वारा प्रतिबंध लगाने के प्रस्ताव पर चीने ने पहले दो बार आनाकानी करने के बाद सहमति जतायी। दोनों दे" ाों के मध्य सीमा विवाद सुलझाने के मुद्दे पर भी चीन का रवैया अड़ियल होने के कारण बातचीत में जो अवरोध उत्पन्न हो गया है उसे खत्म करना बड़ी चुनौती साबित होगा। जहां तक म्यांमार से रि" तों की बात है तो भारत जमीनी हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ है। सैनिक गुटो को चीन का समर्थन जारी रहेगा क्योकि चीन स्थायित्व चाहता है न कि लोकतंत्र। इसलिये अगले साल भी भारत की म्यांमार नीति में कोई बड़ा बदलाव होने की गुंजाइ" ा नही है। भारत की परम्परागत मित्र भोख हसीना की बांग्लादे" ा की सत्ता मे धमाकेदार वापसी भारत के लिए भाुभ संकेत है।[1]

राज" ाही की समाप्ति के बाद इस साल नेपाल में माओवादियों की सरकार बनी है। प्रधानमंत्री बनने के बाद प्रचण्ड ने पहले भारत की बजाय चीन की यात्रा कर यह जाहिर कर दिया था कि माओवादियों का भारत के प्रति नजरिया खास सकारात्मक नही है। यदि नेपाल मे कोई आतंरिक सत्ता संघर्श होता है तो भारत की क्या भूमिका होगी, इस बारे में अभी से ही कोई रणनीति बना ली जाए तो बेहतर होगा। नेपाल में हमे चीन के हर कदम को गौर से देखना होगा। मालदीप में अब्दुल गय्यूब के तीन द" ाक के अधिनायकवादी भाासक का खात्मा कर मोहम्मद न" ाद राश्ट्रपति बने है। वैसे मालदीप और भारत के परम्परागत रूप से अच्छे सम्बंध रहे है। दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में न" ाद की भारत यात्रा के दौरान उन्होने हिन्द महासागर में समुद्री डकैती की बढ़ती घटनाओं को रोकने में भारत को मदद की जो पे" ाक" ा की है वो दोनो दे" ाों के रि" तों मे नया आयाम ला सकती है।

तमिलनाडु की आंतरिक राजनीति मे श्रीलंका के तमिलों का मुद्दा हावी रहने के कारण भारतीय विदे" ा नीति पर कई बार इसका विपरीत असर पड़ा है। 2009

में इस संदर्भ में और सजग रहने की जरूरत है। तमिलनाडु में लिट्टे से हमदर्दी रखने वाले कुछ दल केन्द्र पर यह दबाव बना रहे है कि श्रीलंका सरकार पर लिट्टे के खिलाफ अभियान को धीमा करने के लिए दबाव बनाया जाए। अमरीका की यही कोर्ि" ा" ा रहेगी कि वह भारत को अफगानिस्तान युद्ध के और निकट ले जाये लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि अति सक्रियता दिखाने से वहां तालिबान, अल कायदा और आईएसआई की दलदल में फसंने का खतरा है। अफगानिस्तान में अपने हित संरक्षण के लिए भारत को नए सिरे से विचार करना होगा। इस संदर्भ मे हमें रूस और ईरान से बातचीत आरम्भ करनी चाहिए जो कि तालिबान के खिलाफ हमारे पुराने सहयोगी है।

पाकिस्तान का उल्लेख सबसे आखिर में करने का यही तात्पर्य निकालना चाहिए कि पाक प्रायोजित आतंकवाद और पाक सेना की भारत विरोधी मानसिकता का स्थायी समाधान निकालने में हमारे विदे" ा नीति निर्धारकों को सबसे ज्यादा माथापच्ची करनी पड़ेगी। नए राश्ट्रपति आसिफ जरदारी ने दोस्ताना बयानबाजी में तो सभी पूर्व भाासकों को पीछे छोड़कर भारत पाक रि" तों के नए सुनहरे युग का संकेत दिया। लेकिन साल के अंत में मुम्बई का हमला फिर से चेता गया कि पाकिस्तान का निजाम भले ही बदल गया हो लेकिन नीयत नहीं बदली।

भारत गत वर्श वि" व के सर्वाधिक आतंकग्रस्त राश्ट्रों में रहा है। जम्मू क" मीर तथा पूर्वोत्तर ही नहीं अन्यत्र भी कई जगहों पर नक्सली व आतंककारी हमले हुए । अमरीकी विदे" ा विभाग की रिपोर्ट के अनुसार सन् 2007 में आतंककारी हमलों में 2300 लोगों की जाने ली। जम्मू क" मीर में नियंत्रण रेखा के आसपास आतंककारियों की गतिविधियां घटी है,लेकिन ल" कर ए तैय्यबा जैसे पाकिस्तान स्थित आतंककारी संगठन क" मीर घाटी में हमलों की योजना बनाते रहे है।

रिपोर्ट के मुताबिक सन् 2007 में क" मीर केन्द्रीत आतंककारी गुटों ने अफगानिस्तान में हमलों का समर्थन तो किया ही, उनके प्रि" ाक्षित आतंककारी अलकायदा के अंतरराश्ट्रीय हमलों की योजना में भी भाामिल रहे। ऐसे में अवधिपार एवं काम के बोझ तले दबी भारतीय कानून प्रवर्तन एवं न्याय प्रणालियों के कारण उसके आतंक विरोधी प्रयास भी बेअसर रहे। भारतीय न्यायालयों मे काम की गति

धीमी, मेहनत ज्यादा और भ्रश्टाचार की गुंजाइ" ा काफी है। आतंक से जुड़े मुकदमों की सुनवाई मे भी वर्शो लग सकते है। यही हाल पुलिस का है। कई स्थानीय पुलिस संगठनों के पास स्टॉफ की कमी है, जो है उन्हें वांछित प्रि" ाक्षण नहीं मिलता तथा आतंकवाद का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए उन्हें अत्याधुनिक हथियार भी उपलब्ध नहीं है। अमरीकी रिपोर्ट के इन दृढ़ कथनों मे काफी सच्चाई है, लेकिन हम अपनी कानून प्रवर्तन एवं विधिक प्रणाली की खामियां दूर करने के लिए ज्यादा कुछ करते प्रतीत नहीं होते। हकीकत यह भी है कि इसे आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए डीजाइन किया ही नहीं गया था। अब तत्काल इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

फरवरी 2007 के समझौता एक्सप्रेस पर हमले के बारे मे रिपोर्ट का यह आकलन सही है कि उसका उद्दे" य हिन्दुओं और मुसलमानों का गुस्सा भड़काना है। इस हमले में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही मारे गए। भारतीय अधिकारियों को भी इसमें कोई भाक नही था कि यह दुश्कृत्य करने वाले लोग पाकिस्तान और बांग्लादे" ा में स्थित जिहादी गुटों वि" ाेशकर ल" कर–ए–तैय्यबा, जै" ा–ए–मोहम्मद, हरकत–उल–जिहाद इस्लामी व कुछ अन्य से जुड़े है।

रिपोर्ट में आतंकवाद पर भारत–अमरीका संयुक्त कार्यदल का भी जिक्र है, इसका गठन सन् 2000 में हुआ और अब तक इसकी नौ बैठकें हो चुकी है। भारत ने 15 अन्य दे" ाों के साथ संयुक्त कार्यवाही क लिए तंत्र विकसित किए है। इनके अलावा यूरोपीय संघ के साथ भी बहुपक्षीय संयुक्त दल है। नेपाल, भुटान, थाईलेण्ड, श्रीलंका, म्यांमार, भारत और बांग्लादे" ा के बीच तकनीकी और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए बंगाल की खाड़ी पहल भी की गई है। इसके बावजूद इस क्षेत्र में ज्यादा कुछ हासिल नहीं हुआ है।

भले ही जम्मू क" मीर में आतंककारी गुटों की गतिविधियों में हाल ही कुछ कमी आई हो, पर प्राप्त रपटों के अनुसार अब भी राज्य में 1200 आतंककारी सक्रिय है तथा गर्मियों मे सक्रिय होने के लिए लगभग 2000 आतंककारी पाक अधिकृत क" मीर स्थित ि" ाविरों मे एकत्र है। इस वर्श किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक दे" ा भर में आतंककारी गतिविधियां बढ़ी है। पूर्वोतर के माओवादी एवं आतंककारी गुट हाल ही गत अप्रेल तक ज्यादा सक्रिय हुए है, जबकि जम्मू क" मीर में आतंककारी

कम सक्रियता के बावजूद पुनसंगठित होकर नए हमलों के लए तैयार बैठे है। सबसे बड़ा खतरा माओवादियों की तरफ से है, जो हाल ही बढ़ा है। सेना और असम पुलिस की संयुक्त टोली ने गत् 30 अप्रेल को ढुबरी जिले के बंग" ीझोरा पहाड़ी में यूनाइटेड लिबरे" ान फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) के एक अस्थाई f" ाविर पर धावा मारा। वरिश्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक इस f" ाविर का उपयोग उल्फा ही नही ने" ानल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैण्ड (एनडीएफबी) तथा कामतापुर लिबरे" ान ऑर्गनाइजे" ान (केएलओ) के उग्रवादी भी कर रहे थे, क्योंकि कुछ क्षेत्रों में ये तीनों ही गुट सक्रिय है। ये संगठन इस f" ाविर में पनाह लेने के साथ ही हथियार एवं गोला बारूद भी रखते थे। f" ाविर से ग्लोबल पोजी" ानिंग सिस्टम का एक उपकरण, 500 ग्राम विस्फोटक, एक बारूदी सुरंग, तार, एलएमजी को 7.62 एम.एम. मैगजीन तथा एके–56 के एक रोटेटिंग ब्लॉक सहित काफी हथियार मिले। इन घटनाक्रमों को देखते हुए आतंकवाद से निपटने के लिए संघीय एजेंसी का गठन जरूरी है, क्यों अब यह किसी राज्य की सीमा तक सीमित नही है। हाल ही, गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति की बैठक में केन्द्रीय कानून प्रर्वन एजेन्सी संघीय जांच एजेन्सी विशयक चर्चा हुई जिसकी अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री ने इस मसले पर विचार आमंत्रित किए। कुछ सदस्यों ने सुझाव दिया कि आतंककारी वारदातों और उससे जुड़े ऐसे मसलों की जांच के लिए केन्द्रीय एजेन्सी बनाई जाए। जिनके अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राश्ट्रीय संबंध है। इस पर कोई निर्णय नही हुआ सिर्फ राज्य सरकारों को वि" वास में लेने की जरूरत पर जोर दिया गया। यह भी कहा गया कि उसके बाद ही कोई निर्णय सम्भावित केन्द्रीय एजेन्सी के स्वरूप और कामकाज पर किया जाए।[1]

यह बात पहले भी कई बार दोहराई गई लेकिन नतीजा भून्य। राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ भी इस मसले पर कई बैठके हुई लेकिन कोई प्रगति नही। जैसा कि अब तक होता रहा फिर आतंकवाद, जासूसी, नक्सीली हमलों आदि अपराधों से निपटने के लिए राज्यों के मौजूदा पुलिस एवं गुप्तचर तंत्र को मजबूत बनाने की सलाह ही सदस्यों ने दी। गृहमंत्री का मानना था कि जब कभी किसी भी राज्य में कोई घटना होती है तो केन्द्र सरकार से कार्यवाही की अपेक्षा की जाती है, लेकिन संविधान के तहत पुलिस एवं लोक व्यवस्था राज्यों के विशय होने के कारण

केन्द्र की अपनी सीमाएं है। इसलिए इस तरह के अपराधों और आतंकवाद से निपटने के लिए केन्द्रीय एजेंसी के गठन पर राज्यों से राज्य म" ाविरा जरूरी है। गृहमंत्री ने यह भी कहा कि केन्द्र अर्द्धसैन्य बलों की तैनातगी के साथ ही पुलिस आधुनिकीकरण के लिए धनरा" ा मुहैया कराकर राज्यों की मदद करेगा। उन्होनें राज्यों से भी उम्मीद जताई कि वे पुलिस बलों की क्षमता बढ़ाने के लिए समयबद्ध कदम उठाएंगे।

प्रमुख आतंककारी संगठनों की सक्रियता–

बांग्लादे" ा सरकार ने संकेत दिया है कि उसके दे" ा में 33 से अधिक आतंककारी संगठन सक्रिय है और इनमें सिर्फ चार प्रतिबंधित है।[1] गृह मंत्रालय आतंककारी संगठनों के संबंध में एक ताजा रिपोर्ट तैयार कर रहा है क्योकिं प्रधानमंत्री भोख हसीना ने हाल के हफ्तों में उसकी रिपोर्ट को दो बार खारिज कर दिया था और आतंकवाद से लड़ने के लिए जरूरी कदमों के अध्ययन के लिए 17 सदस्यी कार्य बल का गठन किया था। गौरतलब है कि बांग्लादे" ा में जिन चार संगठनों को प्रतिबंधित किया गया है उसमें जमातुल मुजाहिदीन बांग्लादे" ा (जेएमबी), हरकम उल जिहाद अल इस्लामी (हूजी), जाग्रत मुस्लिम जनता बांग्लादे" ा (जेएमजेबी) और भाहादत–ए–अल–हिक्मा भाामिल है। समाचार पत्र **'द डेली स्टार'** के मुताबिक 16 मार्च को गृह मंत्रालय ने अपनी एक रिपोर्ट में बांग्लादे" ा में ऐसे संगठनों की संख्या 12 बताई थी लेकिन यह संख्या इससे ज्यादा हो सकती है।

अनसुलझे प्रश्न–

दे" ा भर मे आतंककारियों के हाथों मारे गए भारतीयों की लम्बी और निरन्तर बढ़ती सूची में 13 मई 2008 को 67 नाम और जुड़ गए। उस दिन आतंककारियों ने भााम को दुकाने बंद होने से कुछ देर पूर्व ही जयपुर के व्यस्ततम बजारों में सिलसिलेवार बम विस्फोट किया। मंगलवार का दिन होने के कारण मंदिरों में भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचने थे, अतः 5 बम तो ऐसे ही स्थानों में साइकिलों पर लगाए गए। उसी भााम दो निजी टीवी चैनलों को भेजे गए लम्बे ईमेल में हमलावरों ने बताया कि उनका उद्दे" य भारत को अमरीका तथा इजराइल का समर्थन करने से बाज आने का संदे" ा देना था। अक्सर हिन्दुओं और

मुसलमानों के धार्मिक महत्व क दिनों मे विस्फोटो से आतंककारियों ने असली इरादे का पता चल जाता है,जो साम्प्रदायिक सौहार्द को तोड़ना है। इस पर जयपुरवासियों की प्रतिक्रिया भी एक सुर में स्पश्ट रही। पूर्व में मुम्बई, वाराणसी, हैदराबाद और मालेगांव की ही तरह इस बार भी जयपुर के लोग मिलकर हताहतों को अस्पताल पहुंचाने में जुट गए। स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता मरीजों को दवाएं और अन्य जरूरी चीजें पहुंचाने लगे, तो रक्तदान करने वालों की कतारे लग गई। इससे कई प्राण बचाए जा सके। इन भाहरों के लोगों की प्रतिक्रिया में वही आत्मवि" वास और परिपक्वता नजर आई, जिससें उच्च आर्थिक विकास और सामाजिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर भारतीय ऐसी आपदाओं का मुकाबला करने लगे है। गुलाबी नगर के वा" ांदों को हम सबका सलाम! मगर इन विस्फोटो ने एक बार फिर यह द" ाी दिया कि दे" ा का आंतरिक सुरक्षा तंत्र आतंकवाद का मुकाबला करने में सक्षम नहीं है।[1]

जयपुर पुलिस का निश्कर्श है कि इस वारदात में 18–20 लोग लिप्त रहे, जिन्होने 3–4 माह की अवधि में बहुत ही सावधानी से यह साजि" ा रची। सिलसिलेवार बम विस्फोटो की कार्यप्रणाली से तो दे" ा भर के पुलस बल वाकिफ होने ही चाहिए। ऐसे में सवाल उठते है कि क्या रेलवे स्टे" ानों, बस स्टेण्डों और मंदिर मस्जिदों के आसपास प्र" ाक्षित भेदिये तैनात किए गए। इस नई चमकदार साइकिलों पर नए थैलों में तकरीबन एक घंटे या इससे भी ज्यादा समय तक बम पड़े रहे, लेकिन उधर से गुजरते हजारों नही तो सैकडों लोगों में से किसी का ध्यान उन पर नही गया। इससे पता चलता है कि जनसाधारण को यंत्र–तंत्र लम्बे समय से खड़े वाहनों और उन लावारि" ा सामान से सचेत नही किया गया। यही नही सिर्फ दो कि.मी. के दायरे में 9 बम फटे इस क्षेत्र में एक दो पुलिस अधिकारी तथा 3 से 4 सिपाही भी अव" य ड्यूटी पर रहे होगें। क्या उन्हे ऐसी आ" ांका कभी बताई गई ? यदि हां तो फिर वे सवाल कहां है जो उनसे पूछे जाने चाहिए ? एक भी साइकिल अगर कोई सतर्क पुलिसकर्मी समय रहते पकड़ लेता तो त्रासदी भले ही टलती नही, उसका असर काफी कम रहता ।

यह भी सोचने की बात है कि आतंककारियों ने बमों का निर्माण किसी सुरक्षित एवं आच्छादित जगह पर ही किया होगा, खुले आसमान के नीचे नही। फिर

18 से 20 लोग एक ही जगह तो रूके नही होगें। कुछ होटलों या धर्म" ाालाओं, तो कुछ मकानों और फ्लैटों मे ठहरे होगें। साइकिले भी खरीदने के बाद उन्होने भूतल पर ही रखी होगी। ये स्थान भी लक्षित जगहों से ज्यादा दूरी पर नही होगें। ज्यादा से ज्यादा दूरी साइकिल से आधे घंटे में वहां पहुंचने की रही होगी।

क्या पुलिस के पास नए किरायेदारों के सत्यापन की योजना है। यदि है तो क्या मौके पर जाकर उनका सत्यापन किया जाता है ? स्थानीय पुलिस और जागरूक नागरिक आतंककारी बस विस्फोटों को रोकने के लिए काफी कुछ कर सकते है। इन उपायों में से ज्यादातर तो सुविधा और खुली सूचनाओं के दायरे में होते है, सिर्फ थोड़े से पूर्व चिंतन,उचित योजना तथा ईमानदारीपूर्ण समर्पित क्रियान्वयन की जरूरत है।

आंतरिक सुरक्षा के अवयवों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान आम सूचना का है। हमारी गुप्तचर एजेंसियां अतीत में अपना लोहा मनवा चुकी है तथा उनके पास अनुभवी अधिकारियों और वि" ोशज्ञों की भी कमी नहीं है। इसके बावजूद सीमा पार के राज्य प्रायोजित आतंकवाद से हमारा पाला पड़ा है जिससें इन एजेंसियों की सफलता दर अच्छी नही है। केन्द्रीय स्तर पर साठ के द" ाक की भाुरूआत से ही गुप्त सूचनाओं की जिम्मेदारियां रिसर्च एण्ड एनालिसिस विंग (रॉ) तथा इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) में बंटी है। रॉ के पास विदे" ा मामलात है तथा आईबी आंतरिक मसलों को देखती है। पाकिस्तान स्थित आतंकवाद भारत में अपने तार जोड़ रहा है। जयपुर के विस्फोटों ने जतला दिया कि सम्पर्क अब कितने पुख्ता हो गए है। एजेंट तो सीमा पार से आते होंगे, पर ऐसे कुकृत्यों व अन्य उद्दे" यों में स्थानीय लोग ही उनकी मदद करते है। लिहाजा यह सोचने का अब वक्त आ गया है कि जिम्मेदारियों के इस बंटवारे से कही गुप्त सुचनाएं एकत्र करने का काम बाधित तो नही हो रहा है। मेरे हिसाब से आतंकवाद के मौजूदा चरित्र को देखते हुए कुछ लचीलेपन की जरूरत है। इसकी भाुरूआत रॉ के साथ ही आईबी को भी सीमा पार आम सूचनाऐं जुटाने का काम सौंपने से की जा सकती है। दोनो के अपने ढांचे और साधन है, जिससे तत्काल उनका बल द्विगुणित हो जाएगा। ऐसा करके भारत के साथ भू भाग से जुड़े दे" ाों तक उनका कवरेज गुणवत्ता के साथ बढगा। ये ही

वे मुल्क है, जिनका आतंककारी घुसपैठ, हथियार व रकम भेजने तथा आतंक का प्रि" ाक्षण देने मे उपयोग कर रहे है।

हमारी सीमाएं भी कसी हुई नही है लिहाजा जिस आसानी से घुसपैठ व सामग्री की आपूर्ति हो रही है, वह बहुत बड़ी कमजोरी है। कई दे" ाों में जो आतंकवाद से ग्रस्त भी नहीं है, होटलों में ठहरने तथा रेल, बस या विमान का टिकट खरीदेन के लिए भी पहचान पत्र दिखाना होता है। हमारे यहां ऐसा नही है सिर्फ पुलिस पर ही ऐसे लोगों की ि" ानाख्त का दायित्व है। इसीलिए वारदात कर आतंककारी इस तरह गायब हो जाते ह जैसे हवा में फना हो गए हो । हम अब भी राश्ट्रीय पहचान पत्र जारी करने की प्रणाली विकसित होने का इंतजार कर रहे है। संयुक्त राश्ट्र ने सभी दे" ाों से आतंकवाद केन्द्रित कानून बनाने की सिफारि" ा की थी, पर हमारे कानून निर्माता उसमें भी टालमटोल कर रहे है। जब तक ऐसा कानून नही बनता मासूम लोगों की जानें जाती रहेंगी और आतंककारियों के लिए हमारा दे" ा सबसे आसान और मेहमान नवाज ि" ाकारगाह बना रहेगा।

चिलमन में दह"ातगर्द–

जयपुर में पांच दर्जन से ज्यादा लोगों को मौत के मुंह में धकेलने तथा डेढ़ सौ को घायल करने वाले सिलसिलेवार विस्फोटों की जिम्मेदारी लेने के लिए सामने आया भी तो कौन इण्डियन मुजाहिदीन ! इससे सिद्ध होता है कि कहीं न कहीं इस कुकृत्य के पीछे पड़ोसी दे" ाों का ही हाथ है और वि" वभर में आतंक को भाह देने वलों के रूप मे उनका चेहरा सामने आने के बाद व भारत को भी बदनामी के इस कीचड़ में घसीटना चाहते है।

भारत ने आतंकवाद के हर रूप का हमे" ाा विरोध किया है। अमरीका में 9/11 तथा ब्रिटेन में 7/7 के बाद हमारे पड़ोसी दे" ाों का असली चेहरा सामने आ गया । अमरीका उससे पहले इन्हे आतंककारी मुल्क नही मानता था पर हालात ने उसे भी कुछ सोचेन को मजबूर कर दिया। रणनीतिक तौर पर आज भी वह भले ही उन्हे आतंक के खिलाफ युद्ध में अपना घनिश्ट सहयोगी कह रहा हो, पर असलियत उसका दिल ही जानता है।

यह सही है कि इंडियन मुजाहिदीन ने साहिबाबाद से जो ई–मेल, टी.वी. चैनलों का भेजा उसमें वर्णित साइकिल का फ्रेम नम्बर 129489 सही निकला। इसके

विपरीत यह तथ्य भी नही भुलाया जा सकता कि कि" ानपोल से साइकिले खरीदने वाले की पहचान दुकानदार ने बांग्लादे" ाी बताई है। यही नही उसके साथ गई महिला भी बांग्लाभाशी ही थी। लम्बे अर्से से बांग्लादे" ाी आतंकारी संगठन हरकत उल जिहाद अल इस्लामी (हुजी) भारत में सक्रिय है।[1] यही संगठन सन् 2007 में उत्तर प्रदे" ा के विस्फोटों में भी सक्रिय पाया गया । तब जो ईमेल टीवी चैनलों को भेजा गया था, उस पर मोहम्मद भामीम का नाम था। भामीम हुजी का कार्यकर्ता था। इतने सारे साक्ष्यों के बावजूद विस्फोट करने वाले इंडियन कैसे हुए ? भारतवासी तो हमे" ाा से भाांतिप्रिय रहे है। हमने हमे" ाा अन्याय का विरोध किया, लिहाजा सही अर्थो में मुजाहिदीन भी रहे है, पर आज दह" ातगर्दो ने तो इस पावन भाब्द को भी बदनाम कर दिया है।

जयपुर के विस्फाटों पर खबर का जो भीर्शक अल कायदा के वीडियों जारी करने वाले चैनल अल जजीरा ने दिया वह भी भारत के खिलाफ साजि" ा का ही हिस्सा है। भीर्शक है। इंडियन ग्रुप क्लेम्स जयपुर ब्लास्ट्स यानी जयपुर के विस्फोटो की जिम्मेदारी भारतीय गुट ने ली । स्पश्ट ही उद्दे" य वि" व भर मे यही संदे" ा फैलाने का है कि भारत मे मुसलमानों के साथ सही बर्ताव नहीं हों रहा है, अतः उन्होने इंडियन मुजाहिदीन बना लिया हे। इस संगठन के बारे मे अब तक जो जानकारी सामने आई है उसके अनुसार इसकी तीन ब्रिगेड है–भाहाबुद्दीन गौरी, महमूद गजनवी तथा भाहीद अल जरकावी। क्या यह संयोग ही है कि पड़ोसी दे" ा के प्रक्षेपास्त्रों के नाम भी ऐसे ही है।

राजस्थान पुलिस की टोलियां अभी साहिबाबाद, इन्दौर, कोलकाता, लखनऊ और हैदराबाद गई है। उम्मीद है कि वे खाली हाथ नहीं लौटेंगी। केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री प्रका" ा जायसवाल ने जयपुर के विस्फोटो को पड़ोसी दे" ा की सुनियोजित गहरा ' ाडयंत्र कहा था। अब केन्द्रीय गृहमंत्री ि" ावराज पाटील ने भी अपराधियों को भीघ्र ही पकड़ कर जेल का दरवाजा दिखाने का आ" वासन दिया है। अतः आ" ाा है कि कामयाबी मिलेगी।

एक अन्य चर्चा है कि सरबजीत सिंह की रिहाई के बदले में पड़ौसी दे" ा कुछ अन्य लोगों की रिहाई चाहता है। भारतीय संसद पर हमले के ' ाडयंत्रकारी अफजल गुरू भी जेल में है। वहीं जयपुर मे किए गए विस्फोटों के पीछे उद्दे" य

उसकी रिहाई के लिए दबाव डालना तो नही है ? अब तक जम्मू क" मीर के मुख्यमंत्री गुलाम नबो आजाद समेत कई राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता प्रफुल्ल बिदवई और साहित्यकार अरूंधती राय उसकी पैरवी कर चुके है। विस्फोट के ईमल पते मे वर्णित 'गुरू अल हिन्दी' कहीं इसी ओर तो इ" ाारा नहीं कर रहा है ?

आतंकियों का भय–

गुवाहाटी दे" ा में मणिपुर ऐसा राज्य है, जहां सबसे अधिक आतंककारी संगठन है। राज्य में कांग्रेस नेतृत्व वाली सेक्यूलर प्रोगेसिव फ्रंट की सरकार है। राज्य व केन्द्र दोनों ही जगह कांग्रेस नेतृत्व वाली सरकार है। फिर भी स्थिति बेहतर करने की कोि" ा" ा नही हो रही है। थौबाल जिले के हेरोक गांव के लोगों की सुरक्षा के लिए वि" ोश पुलिस अधिकारियों की भर्ती की थी, लेकिन आतंकारी संगठनों के विरोध के बाद सरकार इस पूरी योजना को ठंडे बस्ते मे डाल चुकी थी। आंदोलन के बाद सरकार को झुकना पड़ा। हेरोक गांव मे आतंककारी संगठन पीपुल्स रिवल्यू" ानरी पार्टी ऑफ कांगलेईपाक ने दो लड़कियों और एक युवक की हत्या गत मार्च में कर दी थी। इसके बाद गांव वालों ने अपनी सुरक्षा की मांग की। तभी सरकार ने एसपीओ की भर्ती का फैसला लिया। भर्ती के बाद इनका प्रि" ाक्षण 23 जून से भुारू हुआ। भुारूआत में इनसे कहा गया था कि प्रि" ाक्षण एक महिने का होगा। लेकिन बाद में इसे बढ़ाकर तीन महिने कर दिया गया, लेकिन छह माह बाद भी प्रि" ाक्षण पूरा नहीं हुआ।

सरकार ने इसके लिए कोई तिथि मुकरर्र नहीं की साथ ही हेरोक गांव में इनके लिए बैरक का निर्माण भुारू करने के लिए भी कोई कदम नहीं उठाया गया। अपने भविश्य को लेकर आ" ाकिंत एसपीओ ने 21 दिसम्बर से आंदोलन भुारू कर दिया। राज्य के इम्फाल पूर्व जिले मे स्थित मणीपुर पुलिस प्रि" ाक्षण स्कूल में इन लोगों ने पहले प्रि" ाक्षण लेना बंद किया। बाद में भूख हड़ताल भुारू कर दी। हालत बिगड़ने के बाद सरकार की ओर से इन्हे हेरोक ले जाया गया। सरकार की ओर से इन्हें आ" वासन दिया गया है कि फिलहाल उन्हें अस्थाई बैरेक मे रखा जाएगा। जल्द ही स्थाई बैंरग का निर्माण किया जाएगा। राज्य में करीब चालीस आतंकी संगठन सक्रिय है। लेकिन गृह मंत्रालय के अनुसार मुख्य आतंकी संगठनों मे पीपुल्स लिबरे" ान आर्मी, यूनाईटेड ने" ानल लिबरे" ान फ्रंट, पीपुल्स

रिवल्यू" ानरी पार्टी ऑफ कांगलेईपाक, कांगलेईपाक कम्प्यूनिश्ट पार्टी, कांगलेई याओल कानबा लूप, मणिपुर पीपुल्स लिबरे" ान फ्रंट और रिवल्यू" ानरी पीपुल्स फ्रंट भाामिल है। राज्य सरकार राज्य में आतंकवाद पर काबू नहीं पा रही है।

संदर्भः–

1 फडिया बी.एल., अंतर्राश्ट्रीय राजनीति : सिद्धान्त एवं समकालीन मुद्दे, साहित्य भवन पब्लिके" ान,आगरा, 2004,पृ. 603

2 नायर सुकुमारन,पी., इण्डो बांग्लादे" ा रिले" ानस,ए.पी.एच. पब्लि" िंग कारपोरे" ान, नई दिल्ली 2008 पृ. 132

3 बेगम खु" ीद, टे" ान ऑवर फरक्का बैराज : ए–टेक्नो पॉलिटिकल ऐंगल इन साउथ ए" िया, ढ़ाका, 1987,पृ. 1

4 बेक ग्राउण्ड इण्डिया– VOL-II No.07 55 May 16 (1977) वाल्यूम II No. 7 (55) May 16 (1977) पृ. 622

5 नायर सुकुमारन पी, इण्डो बांग्लादे" ा रिले" ान्स टु इकानोमिक ,टाइम्स 27, अगस्त, 1976

6 बनर्जी सुब्रता, बीग भोयर ऑफ बंगला वाटर्स फार बांग्ला, इकानोमिक राइटस, 30 अगस्त, 1978, इन नायर पी सुकुमारन, पृ. 161

7 पाण्डे केदारनाथ, पालिटिक्स एण्ड भोयरिंग वाटर, डेकन क्रानिकल, हैदराबाद, 20, मार्च, 1980, इन नायर पी सुकुमारन, पृ. 161

8 विनर मायरन, रिजेक्टेड पीपुल्स एण्ड अनवान्टेड माइग्रेन्टस इन साउथ ए" िया, इकानोमिक एण्ड पालिटिकल एण्ड विकली,अगस्त 21 पृ. 1737, इन नायर पी सुकुमारन इण्डो–बंगला रिले" ान्स पृ. 169

9 वाल्दकुतीहिम, हाऊग्रीन वाज माइवैली, द इलूस्ट्रेट विकली ऑफ इण्डिया, मार्च 23, 1986 पृ. 32

10 लुथरा पी.एन., प्राब्लमस ऑफ रिफ्यूजीज फ्राम इस्ट बंग्ला, इकानोमिक एण्ड पालिटिक विकली, दिसम्बर 11, 1971 पृ. 2426

11 डाक्यूमेन्टस बांग्लादे" ा, वाल्यूम –11 मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, न्यू देहली 1971 पृ. 81

12 रिकार्ड फोरेम अफेयर्स, रिकार्ड वाल्यूम–11XVII No.11 नवम्बर 18, 1971 पृ. 277

13 बांग्लादे" ा ब्लीडिंग,क्राइम अगेनस्ट हुयमेनिटी, एडीटोरियल, सागर पब्लिके" ानस न्यू देहली 1971 पृ. 74

14 राजस्थान पत्रिका, जिहादी आतंकवाद, अफसर करीम, 13 फरवरी, 2009

15 वही–घुसपैठ या हमला 26 मई 2008, साउथ ए" िया एनालेसिस ग्रुप एवं भारतीय खुफिया एजेंसियों के अध्ययन पर आधारित आंकडे 2003

16 वही–घुसपैठिये किंगमेकर अरूण भगत 11 अप्रेल 2009

17 वही–घुसपैठ के खतरे अरूण भगत 21 जनवरी 2009

18 वही–क्या लडाई ही आखरी रास्ता, जनरल वी.पी. मलिक, 25 दिसम्बर 2008 पूर्व थल सेना अध्यक्ष

19 वही– वै" िवक आतंक उपध्यान चन्द्र कोचर 1 दिसम्बर 2008

20 वही–आतंक के घने बादल अफसर करीम 26 नवम्बर 2008

21 वही–चुनौती भरा पड़ौस, विनय कोडा 31 दिसम्बर 2008

1 वही–संघीय एजेंसी बनने मे झिझक क्यों अफसर करीम 7 मई 2008

23 वही–आतंकवाद संगठन सक्रिय 25 अप्रेल 2008

24 वही–अंगारे बने कई संवाल 20 मई 2008, अरूण भगत

25 वही–अंगारे बने कई संवाल 20 मई 2008, अरूण भगत

अध्याय–4

भारत बांग्लादे”ा संबंधों का सकारात्मक पक्ष

बांग्लादे” ा के उद्भव के समय अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति में विकसित 'अमरीकी–चीन' दितान्त ने भारत के समक्ष बड़ी समस्या उत्पन्न कर दी थी। एक और पाकिस्तान, चीन और अमरीका की सांठ–गांठ से दक्षिण ए”िया में भाक्ति सन्तुलन अस्त–व्यस्त हो रहा था, तो दूसरी और पाकिस्तान के दो सम्भागों के बीच झगड़े का सीधा प्रभाव भारत पर आ पड़ा था। पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान की सैनिक कार्यवाही के परिणामस्वरूप लाखों लोगों को अपना वतन छोड़कर भारत में आना पड़ा। धीरे–धीरे भारणार्थियों की संख्या बढ़कर एक करोड़ हो गयी।[1] संसार में इतनी बड़ी जनसंख्या का दूसरे दे” ा में आगमन पहली घटना थी। इस वि” ाल

जनसमुदाय के खान–पान, रहन–सहन और स्वास्थ्य सम्बंधी देखभाल का भार भारत पर था। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात भारत की सुरक्षा, अखण्डता और सार्वभौमिकता को अक्षुण बनाये रखने की थी। वि" व के अधिका" ा दे" ा इस प्रसंग पर तटस्थ थे क्योंकि वे इस आग की लपट से बहुत दूर थे। किन्तु पूर्वी बंगाल में जो कुछ भी घटित हो रहा था, उसे देखते हुए भारत न तो तटस्थ दृश्टा रह सकता था और न विरक्त ही। दे" ा की संसद, अखबार, राजनीतिक दल और प्रबुद्ध जन, सभी बांग्लादे" ा की जनता और उसके नेताओं को समर्थन देने की मांग कर रहे थे। भूतपूर्व विदे" ा मंत्री एम.सी. छागला का कहना था राजनीतिक, वैधानिक और नैतिकता की दृश्टि से बांग्लादे" ा का उद्भव हमारे अच्छे पड़ोसी की दृश्टि से स्वागत योग्य है। इसके साथ हमारे सांस्कृतिक, राजनीतिक और व्यापारिक सम्बंध होंगे। यह पड़ोसी पाकिस्तान से भिन्न होगा। क्या हम अपने पूर्वी भाग में मित्र पड़ोसी नहीं चाहते। प्रसिद्ध पत्रकार अजित भट्टाचार्य का अभिमत था कि 'भूगोल, इतिहास, संस्कृति और आर्थिक हितों की दृश्टि से इस संघर्श की परिणीती भारत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।[1] भारणार्थियों के आगमन से स्थिति और भी गम्भोर हो गयी है। इन सब बातों को देखते हुए भारत के लिए यह आव" यक है कि इस लड़ाई का अन्त बांग्लादे" ा के पक्ष में हो। सन् 1962 और 1965 में जितनी जौखिम थी उतनी ही इसमें विद्यमान है। इससे हमें नि" चय ही लाभ होंगे। वे इस प्रकार है :–

- हमारी सीमाओं के दोना ओर एक स" ाक्त दु" मन की जगह एक मित्र और दूसरा कमजोर दु" मन ही रह जायेंगा
- क" मीर की समस्या का समाधान भी सरल हो जायेगा
- धर्मनिरपेक्ष राज्य की महत्ता बढ़ेगी और धर्मतन्त्रीय राश्ट्रवाद की मिथ उजागर हो जायेगी।

पाकिस्तान ने धीरे–धीरे पूर्वी बंगाल में अपनी स्थिति और भी सुदृढ़ कर लिया। पि" चमी सीमान्त पर पाकिस्तानी सेना के जमाव ने स्थिति को और भी विस्फोटक बना दिया। युद्ध भारत के दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। निक्सन माओ से मिलने जा रहे थे और भारत यह समझने लगा कि दो भाक्तियों का यह मिलन

भारत के लिए खतरनाक हो सकता है। जब 3 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तान ने पठानकोट, अमृतसर, जोधपुर, आगरा और श्रीनगर पर बमबारी कर इस उपमहाद्वीप में युद्ध छेड़ दिया तो दो सप्ताह की घमासान लड़ाई के बाद बांग्लादे" । की मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेना के समक्ष पाकिस्तान को भास्त्र डालने पड़े । बांग्लादे" । आजाद हुआ और भोख मुजीबुर्र रहमान रिहा कर दिये गये। अपनी रिहाई के बाद ढाका जाते समय वे भारत रूके। उनके स्वागत समारोह में भारत की भूमिका को दोहराते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जो कहा वह उल्लेखनीय हैः— मैनें कहा था कि ये भारणाथी अपने घर पुनः लौटेंगे। हम मुक्तिवाहिनी और बांग्लादे" । की हर तरह से सहायता करेंगे। हमने भोख साहब को मुक्त कराने का भी व्रत लिया था ये तीनों ही वायदे पूरे कर दिये गये है।

संक्षेप में, बांग्लादे" । के निर्माण में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बांग्लादे" । का निर्माण भारत पाक युद्ध के दौरान 16 दिसम्बर, 1971 को हुआ। भारत ही सबसे पहला दे" । है जिसनें 6 दिसम्बर, 1971 को बांग्लादे" । को मान्यता दे दी। भारत की सेनाओं ने बांग्लादे" । की मुक्तिवाहिनी से मिलकर 16 दिसम्बर, 1971 को स्वतंत्र बांग्लादे" । की स्थापना करायी।

भारत–बांग्लादे"।ा संबंध (1971 से 1975)–

भारत ने 6 दिसम्बर 1971 को बांग्लादे" । को मान्यता दे दी। 10 दिसम्बर 1971 को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और बांग्लादे" । के तत्कालीन कार्यवाहक राश्ट्रपति नजरूल इस्लाम के मध्य एक सन्धि हुई जिसके अनुसार भारतीय सेनापति की अध्यक्षता में एक संयुक्त कमान का निर्माण किया गया । जब 16 दिसम्बर 1971 को बांग्लादे" । में पाकिस्तानी सेना के कमाण्डर जनरल नियाजी ने हथियार डाल दिये तो स्वतंत्र बांग्लादे" । का निर्माण हो गया। भारत के प्रयासों से 9 जनवरी 1972 को भोख मुजीब को पाकिस्तानी जेल से रिहा कर दिया गया और 10 जनवरी 1972 को भारत पहुंचने पर भोख ने भारत के प्रति अपने आभार को व्यक्त किया।

भोख मुजीब ने कहा भारत बांग्लादे" । एक असीम भाईचारे मे बंध गये है, उनका कृतज्ञ राश्ट्र भारत की सहायता भुला नहीं सकेगा।

स्वतंत्र बांग्लादे" । के निर्माण के समय से लेकर 1975 तक भारत बांग्लादे" । सम्बंध घनिश्ठ मित्रता के रहे। अन्तर्राश्ट्रीय समस्याओं के प्रति दोनों दे" ाों के दृश्टिकोणों और विचारों में काफी समानता रही। दोनों ही दे" । धर्मनिरपेक्षता, पंच" ाील और गुटनिरपेक्षता की नीति में वि" वास करत रहे। दोनों हिन्द महासागर को भाान्ति का क्षेत्र बनाये रखना चाहते थे। बांग्लादे" । को मान्यता दिलाने में भारत की कूटनीति अत्यधिक सक्रिय रही। भोख मुजीब के कार्यकाल में भारत और बांग्लादे" । के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बंधों को सुदृढ़ करने के लिए निम्नलिखित सन्धिया और समझौते किये गये–

(1) 19 मार्च 1972 को मैत्री सन्धि– फरवरी 1972 में भोख मुजीब भारत की यात्रा पर आये और मार्च 1972 में श्रीमती गांधी बांग्लादे" । गयीं।

19 मार्च, 1972 को भारत और बांग्लादे" । के बीच एक मैत्री सन्धि हुई जिसकी अवधि 25 वर्श की थी। इस सन्धि के द्वारा दोनों दे" ाों ने एक दूसरे के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप न करने, एक दूसरे की सीमाओं का आदर करने, एक दूसरे के विरूद्ध किसी अन्य दे" । की सहायता नहीं करने, वि" व भाान्ति और सुरक्षा को दृढ़ बनाने, आदि का संकल्प किया। सन्धि में यह व्यवस्था भी की गयी कि यदि दोनो दे" ाों में कोई मतभेद हो जायेगा तो उसे आपसी बातचीत द्वारा हल करने की कोि" ।" । करेंगे।

(2) व्यापार समझौता– भारत बांग्लादे" । के बीच 25 मार्च, 1972 को एक व्यापार समझौता हुआ जिसके अनुसार सीमाओं के दोनों तरफ सोलह सोलह कि.मी. तक स्वतंत्र व्यापार की व्यवस्था थी। इसमें आयात–निर्यात और विनिमय सम्बंधी कोई नियंत्रण नहीं था।

(3) आर्थिक सहायता–बांग्लादे" । के आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए भारत ने 25 करोड रूपये मूल्य का माल और सेवाएं प्रदान करने का वचन दिया। भारत ने बांग्लादे" । को 50 लाख पौण्ड की विदे" ाी मुद्रा का ऋण देने का भी नि" चय किया।

(4) सांस्कृतिक समझौता–30 सितम्बर 1972 को दोनों दे" ाों के बीच एक सांस्कृतिक समझौता हुआ जिसने दोनों के सम्बंधों को और भी मजबूत किया। पाकिस्तान के साथ 3 जुलाई 1972 को ि" ामला समझौता और 18 अगस्त को यद्धबंदी समझौता करते समय भी भारत ने बांग्लादे" ा से पराम" र्ा किया। अप्रैल 1974 में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादे" ा के मध्य एक त्रिपक्षीय समझौता हुआ जिसके अनुसार सभी पाकिस्तानी युद्धबंदी मुक्त कर दिये गये। मई 1974 में बांग्लादे" ा और भारत के बीच सीमांकन सम्बंधी समझौता हुआ जिसके अनुसार भारत ने दहग्राम और अमरकोट का क्षेत्र बांग्लादे" ा को दे दिया और बांग्लादे" ा ने बेरूबाड़ी पर भारतीय अधिकार स्वीकार कर लिया । मई 1974 में भारत ने बांग्लादे" ा को 40 करोड़ रूपये का ऋण देना भी स्वीकार किया। इस ऋण का उपयोग बांग्लादे" ा रेल के डिब्बे और अन्य उपकरण, सीमेन्ट, म" ाीनें तथा कृशि उपकरण खरीदने के लिए करेगा। संक्षेप में, भोख मुजीब के कार्यकाल में भारत बांग्लादे" ा सम्बंध मधुर रहे।

भोख मुजीब के बाद भारत–बांग्लादे"ा सम्बंध (1975–1982)–

भारत बांग्लादे" ा सम्बंध (1975–1982)–15 अगस्त 1975 को भोख मुजीब की हत्या कर दी गयी। पहले खोदकर मु" ताक अहमद और फिर 6 नवम्बर 1976 को जस्टिस आबू सादात सयाम राश्ट्रपति बने। 30 जनवरी 1977 को मेजर जनरल जिया–उर–रहमान ने मुख्य मा" ार्ल लॉ प्र" ाासक बनकर सत्ता पर अधिकार कर लिया। मई 1981 में जिया–उर–रहमान की हत्या कर दी गयी। 24 मार्च 1982 को राश्ट्रपति अब्दुल सत्तार के असैनिक भाासन का तख्ता पलट कर लेफ्टीनेन्ट जनरल एच.एम.इर" ााद मुख्य मा" ार्ल लॉ प्र" ाासक बन गये।

भोख मुजीब की हत्या के बाद बांग्लादे" ा के भाासकों ने भारत विरोधी और पाक समर्थक नीति अपनायी। यद्यपि इर" ााद के काल (1982 से) मे भारत विरोधी स्वर कुछ हल्का पड़ा परन्तु फिर भी भारत बांग्लादे" ा में उतने मधुर सम्बंध नहीं कहे जा सकते जितने भोख मुजीब के युग में थे। वस्तुतः भोख मुजीब की हत्या के बाद बांग्लादे" ा में जो नयी सरकारें बनी उनका भारत के प्रति कठोर रूख था।

भारत बांग्लादे"ा सम्बंध (1982–2003)–

अप्रैल 1982 मे जनरल इर" ाद के सत्तारूढ़ होने के बाद भारत–बांग्लादे" । सम्बंधों में कुछ सुधार हुआ है। भारत बांग्लादे" । सम्बंधों की दृश्टि से निम्नलिखित बिन्दु उल्लेखनीय है।

बांग्लादे" । के राश्ट्रपति जनरल इर" ाद ने अक्टूबर 1982 में भारत की यात्रा की ओर एक स्मरण पत्र पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार 1977 के फरक्का समझौते को रद्द कर दिया और संयुक्त नदी आयोग को अगले 18 महिने में गंगा जल के बहाव पर अध्ययन करने को कहा गया। दोनो दे" ाों के बीच एक अन्य समझौते के अन्तर्गत भारत ने बांग्लादे" । को भारत के कूच बिहार में स्थित दहग्राम और आंगरापोटा के दो अन्तःक्षेत्रों को बांग्लादे" । की मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए स्थायी पट्टे पर एक तीन बीघा गलियारा प्रदान कर दिया। यह गलियारा 178X85 मीटर है। इस गलियारे पर भारतीय सम्प्रभुता रहगी परन्तु भारत बांग्लादे" । से जो एक टका किराये के रूप में लेता था उसे समाप्त कर दिया। दोनों दे" ाों में आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए एक संयुक्त आर्थिक आयोग की स्थापना की गयी।

30 जुलाई, 1983 को दोनो दे" ाों में तीस्ता जल समझाता हुआ। इस समझौते के अनुसार भारत और बांग्लादे" । सूखे मौसम के दौरान तीस्ता नदी के पानी के तदर्थ आधर पर बंटवारे पर सहमत हो गये। इस समझौते के अंतर्गत भारत को 39 प्रति" ात पानी मिलेगा और बंगलादे" । को 36 प्रति" ात पानी उपलब्ध होगा, भोश 25 प्रति" ात पानी किसी को आवंटित नही किया जायेगा। फरक्का में गंगा नदी के जल के बंटवारे पर भारत व बांग्लादे" । के बीच सहमति के समझौते पर 22 नवम्बर, 1985 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर हुए। जुलाई 1986 में जनरल इर" ाद ने तीन दिवसीय भारत की सद्भाव यात्राव की और भारतीय नेताओं के साथ द्विपक्षीय प्र" नों पर बातचीत की।

भारत बांग्लादे" । सम्बंधों में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है। मई 1991 में बांग्लादे" । के विदे" । मंत्री की भारत यात्रा से दोनों दे" ाों के सम्बंधों में तेजी से सुधार हुआ। सात साल बाद मई 1991 में नई दिल्ली में भारत बांग्लादे" । संयुक्त

आर्थिक आयोग की बैठक हुई। भारत सरकार से सरकार के स्तर पर बांग्लादे" ा के लिए 30 करोड़ रूपये के ऋण की घोशणा की। संयुक्त नदी आयोग की बैठके फिर की गयीं और दोनों दे" ाों में बहने वाली नदियों के जल के बंटवारे की समस्या का व्यापक दीर्घकालीन हल ढूंढने के लिए विस्तृत विचार–विम" ार् किये गये।

बांग्लादे" ा में संसदीय प्रणाली की पुर्नस्थापना (सितम्बर 1991) तथा बंगम खालिदा जिया के प्रधानमंत्री बनने से भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों में मधुरता आने के अवसर बढ़ गये। बांग्लादे" ा के विदे" ा मंत्री भारत के विदे" ा मंत्री के आमंत्रण पर अगस्त 1991 में सरकारी यात्रा पर आये और एक ऋण करार व दोहरे कराधान के परिहार सम्बंधी करार पर हस्ताक्षर किये गये। नदी जल के बंटवारे पर अक्टूबर 1991 में नई दिल्ली में और फरवरी 1992 में ढाका में सचिव स्तर पर बातचीत की गयी। अक्टूबर 1991 में राश्ट्रमण्डल भाासनाध्यक्षों की बैठक के दौरान हरारे में भारत के प्रधानमंत्री की बंगलादे" ा की प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया से हुई भेंट से भारत के बांग्लादे" ा के साथ सम्बंध और प्रगाढ़ हुए। मई 1992 में प्रधानमंत्री खालिदा जिया ने भारत की यात्रा की और त्रिपुरा से 50 हजार चकमा भारणार्थियों की वापसी तथा दोनों दे" ाों के बीच अनाधिकृत आवागमन की समस्या से निपटने के लिए भारत और बांग्लादे" ा एक विदे" ा सचिव स्तरीय संयुक्त कार्यदल बनाने पर सहमत हो गये। खालिदा जिया की इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित तीन करार भी सम्पन्न हुएः (क) चांसरी और आवासी भवनों के निर्माण के लिए भूखण्डों के आदान–प्रदान का समझौता ज्ञापन (ख) सांस्कृतिक और भौक्षिक आदान–प्रदान 26 जून 1992 को भारत ने तीन बीघा क्षेत्र बांग्लादे" ा को हस्तान्तरित कर दिया। 178 मीटर लम्बा तथा 85 मीटर चौड़ा तीन बीघा गलियारा एक ऐसा क्षेत्र है जो भारतीय क्षेत्र 'कुचलिबाड़ी' को भोश भारत से जोड़ता है क्योंकि इसके तीन तरफ बांग्लादे" ा का राज्य क्षेंत्र है। भारत में कुचलिबाड़ी क्षेत्र के निवासी तीन बीघा से होकर भारत के मूल भाग में आते थे तथा बांग्लादे" ा के दहग्राम तथा आंगरापोटा के लोग घूमकर काफी दूरी तय करके बंगलादे" ा के मूल भाग में जाते थे, जिससे उन्हें परे" ाानी उठानी पड़ती थी तथा समय अधिक लगता था। तीन बीघा क्षेत्र को पट्टे पर देने का भारत के कई राजनीतिक दलों ने विरोध किया किन्तु बांग्लादे" ा

के साथ मैत्री को अधिक मजबूत बनाने की म" ाा से भारत सरकार ने यह निर्णय किया।

गंगाजल बंटवारा– ऐतिहासिक सन्धि (1996)–

बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री श्रीमती भोख हसीना 10 से 12 दिसम्बर 1996 तक भारत की सरकारी यात्रा पर आयी। इस यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री और बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री ने फरक्का में गंगाजल बंटवारे से सम्बंद्ध ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि की अवधि 30 वर्श रखी गई है तथा पांच वर्श की अवधि के प" चात् अथवा दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष के अनुरोध पर दो वर्श के प" चात् इसकी समीक्षा की जा सकती है। संधि के तहत यदि नदी में जल की मात्रा 70 हजार क्यूसेक या इससे कम रहती है तो दोनों दे" ा जल का आधा–आधा बंटवारा करेंगे। यदि यह मात्रा 70 से 75 हजार क्यूसेक के बीच है तो बांग्लादे" ा को इसमें 35 हजार क्यूसेक हिस्सा मिलेगा और भोश भारत का होगा। यदि जल की मात्रा 75 हजार क्यूसेक से ऊपर है तो 40 हजार क्यूसेक पानी भारत का और भोश पर बंगलादे" ा का अधिकार होगा। दानों दे" ाों ने इस संधि को लागू करने के लिए संयुक्त समिति गठित करने का निर्णय लिया। किसी विवाद या मतभेद का हल संयुक्त समिति में नहीं होने की स्थिति में इसे भारत बांग्लादे" ा नदी जल आयोग के पास भेजा जाएगा।

त्रिपुरा में लगभग 11 वर्शो से रह रहे 50 हजार से अधिक चकमा भारणार्थियों की बांग्लादे" ा वापसी के लिए भारत व बांग्लादे" ा के मध्य 9 मार्च, 1997 को अगरतला में एक समझौता सम्पन्न हुआ। जून 1999 में भारत की पहल पर कोलकाता–ढाका बस सेवा प्रारम्भ की गई। कोलकाता से ढ़ाका पहुंचने वाली पहली बस के स्वागत के लिए स्वयं प्रधानमंत्री वाजपेयी ढ़ाका पहुंचे।

मतभेद के मुद्दे–

इन समझौतों के बावजूद भी कतपय मुद्दों को लेकर दोनों दे" ाों में मतभेद बने हुए हैं। गंगा–ब्रह्मपुत्र नहर बनाने के प्र" न पर दोनों दे" ाों में मतभेद बने हुए है। जहां बांग्लादे" ा इसके लिए नेपाल में बड़–बड़े जला" ाय के निर्माण पर बल

देकर नेपाल को इस समस्या के साथ जोड़ना चाहता है वहां भारत इसका विरोध करता है। कांटेदार बाड़ का मुद्दा भी दोनों दे" ाों में विवाद का एक कारण है। भारत बांग्लादे" ा सीमा 3200 कि.मी. लम्बी है। इस सीमा से बांग्लादे" ा से आने वाले भारणार्थी भारत में गैर कानूनी तौर पर प्रवे" ा करते है और भारत के असम आंदोलन के मूल में इन विदे" ाी आगन्तुकों की समस्या है। अतः असम समस्या के समाधान और विदे" ायों के भारत में गैर कानूनी तौर पर प्रवे" ा को रोकन के लिए भारत ने सीमाओं पर कांटदार तार लगाने का निर्णय लिया। बांग्लादे" ा ने भारत के इस निर्णय का विरोध किया और इसे घेराबंदी की संज्ञा दी। भारत द्वारा पूर्वी सीमा पर बाड़ लगाने का मसला इतना उग्र हो गया कि बांग्लादे" ा जैसे छोटे से दे" ा ने अप्रैल 1984 में भारत की सीमा में गोलाबारी तय कर दी। अप्रैल 1986 में भारत बांग्लादे" ा सीमा पर मुहरी नदी पर तटबंध बनाने के भारत के कार्य को लेकर दोनो दे" ाों मे तनाव पैदा हो गया। बांग्लादे" ा ने अपने अर्द्धसैनिक बल की सहायता के लिए कई सैनिक यूनिटों को तैनात कर दिया और दोनों दे" ाों के अर्द्धसैनिकों के बीच कई बार मुठभेड़ हुई। बांग्लादे" ा ने भारत द्वारा 1.2 कि.मी. लम्बे तटबांध के निर्माण पर विरोध प्रकट किया। चकमा आदिवासियों की वापसी के प्र" न को लेकर भी दोनों दे" ाों में मतभेद लम्बे समय तक बने रहे। भारत में चकमा आदिवासियों की बाढ़ सी आ गयी आर बांग्लादे" ा उन्हें लेने मे आनाकानी करता रहा।

बांग्लादे"ा की सेना का भारतीय गांव पर कब्जा और भारतीय जवानों के साथ क्रूर बर्ताव (अप्रैल 2001)–

अप्रैल 2001 मे बांग्लादे" ा की सेना भारतीय क्षेत्र में लगभग डेढ किलोमीटर भीतर तक घुस आई और उसने मेघालय में दावकी से चार कि.मी. दूर पिरदयाऊ गांव पर कब्जा कर लिया। बांग्लादे" ाी सैनिकों ने सिर्फ गांव पर कब्जा ही नहीं किया बल्कि बी.एस.एफ. के कतिपय जवानों को बंदी बना लिया। बांग्लादे" ा

राईफल्स द्वारा 16 भारतीय जवानों को अमानवीय यातना देकर मारने की घटना ने पूरे राश्ट्र को क्षुब्ध कर दिया।

भारत बांग्लादे" ा के मध्य सम्बंधों में सुधार की प्रक्रिया में बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री बेगम खालिदा जिया की मार्च, 2006 में भारत की यात्रा वि" ोश महत्व रखती है। दिल्ली स्थित हैदराबाद हाउस में 21 मार्च को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और प्रधानमंत्री बेगम जिया के बीच समान हित के अनेक द्विपक्षीय मुद्दों पर खुलकर विचार–विम" ा हुआ है। उनकी उपस्थिति में दो समझौतों पर हस्ताक्षर हुए–

(1) स" ोधित व्यापार समझौता ।

(2) न" ीली दवाओं के अवैध व्यापार को रोकने सम्बंधी समझौता।

स" ोधित व्यापार के समझौते का उद्दे" य दोनों दे" ों के बीच व्यापार एवं आर्थिक सम्बंधों का विस्तार करना है। बेगम जिया ने प्रधानमंत्री सिंह से बांग्लादे" ा को अधिक निर्यात को प्रोत्साहन देने सम्बंधी कदम उठाने की अपील की जिसमें बांग्लादे" ा के कुछ निः" ुल्क वस्तुएं भी सम्मिलित है। प्रधानमंत्री जिया का तर्क था कि इससे दोनों दे" ों के बीच बढ़ते हुए व्यापार असंतुलन को दूर किया जा सकें। भारत सरकार ने इस सम्बंध में कहा कि टाटा समूह द्वारा 2.5 बिलियन का बंगलादे" ा में प्रस्तावित निवे" ा प्रोजेक्ट से व्यापार असंतुलन को पाटने में मदद मिलेगी।

वाणिज्य मंत्री कमलनाथ ने बांग्लादे" ा के साथ एक पृथक मुक्त व्यापार समझौते का प्रस्ताव रखा जिस तरह की व्यवस्था भारत व श्रीलंका के बीच 1998 से समझौते के अन्तर्गत चली आ रही है। प्रधानमंत्री बेगम जिया के समक्ष भारत ने एक रोडमेप तैयार करने का प्रस्ताव रखा जिससे दोनों दे" ों के बीच व्यापार को बढ़ाया जा सकें। इसके लिए श्रीलंका के साथ हुए व्यापार समझौते का हवाला देते हुए वाणिज्य मंत्री नाथ ने कहा कि 2001 में श्रीलंका का भारत को किया जाने वाला व्यापार मात्र 45 मिलियन था जो 2004 तक 200 मिलियन पहुंच गया । इससे श्रीलंका को भारत के साथ व्यापार संतुलन में वि" ोश लाभ हुआ।

1. प्रधानमंत्री सिंह व प्रधानमंत्री बेगम जिया ने आतंकवाद से लड़ने के लिए दृढ़ संकल्प की आव" यकता पर बल दिया।

2. दोनों दे" ाों के बीच कोलकाता से बांग्लादे" ा के जायदेवपुर के बीच पेंसेंजर ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया जो लागू हो गया है।

परन्तु भारत बांग्लादे" ा के बीच में तनाव के मुख्य स्रोतों में बांग्लादे" ा की धरती पर भारत के खिलाफ चलाये जा रहे आतंकवादी ि" ाविर है जिसमें तालिबान व अलकायदा की भारत विरोधी बढ़ती हुई गतिविधियां है। यद्यपि जिया सरकार ने इससे इंकार किया किन्तु उनकी मजबूरी यह थी कि उनकी सरकार को राजनीतिक समर्थन देने वाले चरमपंथी दल थे।

बांग्लादे" ा भारत से पारगमन की सुविधा की मांग कर रहा है ताकि बांग्लादे" ा का व्यापार नेपाल व भूटान के साथ बढ़ सके एवं राजनीतिक सम्बंधों को भी गहरा किया जा सकें। भारत इन पर तभी विचार करेगा जब बांग्लादे" ा भारत को प्राकृतिक गैर की सप्लाई करने सम्बंधी ठोस समझौते पर हस्ताक्षर करें। बांग्लादे" ा के पास प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक गैस भण्डार है। और भारत को अपनी ऊर्जा आपूर्ति के लिए उसकी सख्त जरूरत है। परन्तु बांगलादे" ा इस मुद्दे पर आनाकानी करता आ रहा है। अतः यह उचित होगा कि वे एक दूसरे के राश्ट्रीय हितों के लिए सहयोग कर द्विपक्षीय समस्याओं का भाान्तिमय ढंग से समाधान करें। भारत सरकार बांग्लादे" ा की सरकार से बार–बार कहती आ रही है कि अवैध बांग्लादे" ाी नागरिकों की बढ़ती संख्या भारत की आन्तरिक सुरक्षा व आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है।

भारत में अवैध बांग्लादे" ायों की गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार संख्या लगभग डेढ़ करोड़ बताई जा रही है। ये भारत के विभिन्न भागा में रह रहे है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण बांग्लादे" ा में भीशण गरीबी व बेरोजगारी है परन्तु भारत सरकार अवैध बांग्लादे" ायों के भारत में प्रवे" ा पर रोक लगाने की दि" ाा में कोई गम्भीर उपाय नहीं कर रही है। भविश्य में इस मुद्दे को लेकर दोनों दे" ाों के बीच बनाव बढ़ने की सम्भावना है।

सहयोग का एक नया आयाम–

भारत और बांग्लादे" । दोनो ही दक्षिण एि" ायाई उपमहाद्वीप के हिस्से है और दोनो ही एक समान सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास रखते हे। दोनो दे" ाों की संस्कृति आपस मे जुड़ी हुई प्रतीत होती है वि" ोश रूप से भाशायी आधार पर बांग्लादे" । और भारतोय राज्यों जैसे पि" चम बंगाल और त्रिपुरा मे बंगाली बोली जाती है। फिर भी 1947 के विभाजन के समय बांगलादे" । (पूर्व पूर्वी बंगाल) पाकिस्तान का एक प्रान्त (सूबा) बढ़ गया। 1971 के युद्ध के दौरान बांग्लादे" । ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की तथा भारत के साथ अपने सम्बंधों को स्थापित किया।

भारत व बांग्लादे" । के राजनीतिक सम्बंध हमे" ाा से मुधर सहज नहीं रहे है। आवामी लीग की सरकार की स्थापना के साथ बांग्लादे" । और भारत मे सम्बंध और अधिक मधुर बन गये है। वर्तमान समय मे आवामी लीग के 2008 में सत्ता में आने के बाद दोनों दे" ाों के बीच मधुर सम्बंधों की भुरूआत एक बार फिर से भुरू हो गई। बांग्लादे" । की प्रधानमंत्री भोख हसीना की जनवरी 2010 की भारत यात्रा ने द्विपक्षीय सहयोग का एक नया अध्याय खोला है। योजना की भुरूआत की है। यह तीन हिस्सों मे विभाजित है। पहले भाग मे द्विपक्षीय सम्बंधों की प्रकृति पर दूसरे भाग मे आवामी लीग के सहयोग की सहायता के साथ सम्बंधों के ऐतिहासिक विकास पर तीसरे भाग में दोनों दे" ाों के बीच संघर्श के मुद्दों सम्बंधों के आधुनिक विकास, आवामी लीग की सरकार, महत्वपूर्ण मुद्दे की समझ के आधार पर प्रका" । डाला गया है।

सम्बंधों की प्रकृति–

द्वितीय वि" वयुद्ध की समाप्ति के बाद से अन्तर्राश्ट्रीय सम्बंधों को समझने के लिये वास्तविकता एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त बन गया है। राज्यों के पारस्परिक सम्बंधों के आधार के रूप मे राश्ट्रहित को महत्वपूर्ण भूमिका के रूप मे माना जाने लगा है। यही राश्ट्रीय हित राज्यों के सम्बंधों की प्रकृति का निर्धारण करता है।जहां

अंतर्राश्ट्रीय व्यवस्था मे सम्बंधों को चार प्रकार से विभाजन किया गया है। स्वीकार किया जा सकता है–

1. राजनीति और कूटनीति पर आधारित सम्बंध।
2. आर्थिक निर्भरता के आधार पर सम्बंध।
3. सुरक्षात्मक विचार विम" र्ा के आधार पर सम्बंध।
4. बाध्यता/ अनिवार्यता के आधार पर सम्बंध।

उदाहरण के तौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा पाकिस्तान और सउदी अबर, भारत और ईजरायल आदि राजनीतिक और कूटनीतिक सम्बंध रखते है। सदस्य राश्ट्रों की आर्थिक निर्भरता के कारण ही यूरोपियन दे" ा सत्ता में आये।[1] चीन और अमेरिका भी आर्थिक निर्भरता के आधार पर सम्बन्धित है। पाकिस्तान और भारत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान चीन और भारत सुरक्षात्मक विचार विम" र्ा से जुड़े सम्बंधों पर आधारित है।

उदाहरण के लिये द्वितीय वि" व युद्ध के समय पाकिस्तान ने अमेरिका के साथ अपेन सम्बंधों का विकास भारत से सुरक्षा के बदले मे किया। जब एक भाक्ति" ाली राज्य कमजोर या छोटे राज्य पर बलपूर्वक कूटनीति को अपनाता है तब बाध्यकारी सम्बंधों की भ्रारूआत होती है। इसलिए सम्बंधों के निर्धारण भावि" ाली राश्ट्रो हितों को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह आव" यक नही है कि छोटा या कमजोर राज्य अपनी सम्प्रभुता के आधार पर बाध्यकारी सम्बंधों का निर्धारण करे यह इसकी परिधी नहीं है। लेकिन भाक्ति" ाली राश्ट्र अपने उददे" यों को प्राप्त करने के लिये कमजोर राश्ट्रो पर खर्च या लागत करते है। इस तरह के सम्बंधों को अनदेखा नही किया जा सकता है। भाक्ति" ाली पड़ौसी दे" ा के लिऐ कमजोर राश्ट्र की राजनीतिक कमजोरी और भौगोलिक भेदता के उजागर भी इसका कारण है जो कुछ भी हो राजनीतिक कमजोरी का सम्बंध बाध्यकारी सम्बंधों से जुड़ा होता है। इस तरह के सम्बंधों के प्रसिद्ध उदाहरण के रूप में अमेरिका और पाकिस्तान के सम्बंध, अमेरिका और सउदीअरब के सम्बंधों को लिया जा सकता है।

इस तरह के सम्बंधों मे भारत और बांग्लादे" ा दोहरा आयाम रखते है। दोनो के सुरक्षात्मक विचार विम" र्ा वैसे ही भौगोलिक निर्भरता की बाध्यता। बांग्लादे" ा के जन्म को सुरक्षात्मक द्वन्द्व के कारण बिगाड़ा गया। बांग्लादे" ा ने अपनी स्वतंत्रता

को कैसे प्राप्त किया इस बात को जानने से पहले यह जानना आव" यक है कि किस तरह से बांग्लादे" । भारत की सहायता से सत्ता मे आया।

पूर्वी पाकिस्तान की अव्यवस्था के कारण भारत ने अवसर का लाभ उठाते हुये बांग्लादे" । के जन्म मे मध्यस्थ की भूमिका अदा की। यह सहायता भारत ने सहानुभूति पूर्वक नही की बल्कि पूर्वी भाग जो कि पाकिस्तान का भाग है जो कि भारत विरोधी संघर्शात्मक विचाराधारा के कारण की। इस कारण से भारत व बांग्लादे" । में प्राकृतिक सम्बंधों का जन्म हुआ। दूसरा बांग्लादे" । तीन तरफ से भारत से घीरा हुआ है जो कि बांग्लादे" । से सैकड़ों बार बड़ा है।

बांग्लादे" । में पहली लोकतांत्रिक सरकार भोख मुजीबुर्र रहमान के आवामी लीग द्वारा बनी मुजीब ही वह व्यक्ति थे जो अपनी भाक्ति के साथ बांग्लादे" । की स्वतंत्रता के लिये लड़े और स्वतंत्रता प्राप्त की तथा बंगबंधु (बांग्लादे" । के जनक) बने।

सितम्बर 2011 मे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी की यात्रा ने भारत बांग्लादे" । सम्बंधों मे एक नये चरण की भाुरूआत की। यह चरण जनवरी 2010 में बांग्लादे" । की प्रधानमंत्री भोखहसीना जी की नई दिल्ली की यात्रा से ज्यादा मान्यता रखता है। दोनो दे" ाों के प्रधानमंत्रीयों ने एक नये युग मे प्रवे" । करने के लिये बातचीत की तथा इसमे एक व्यवहारिक दृश्टिकोण के साथ द्विपक्षीय सम्बंधों के नये चरण तथा सम्प्रभुता, समानता, दोस्ती, वि" वास और समझ के आधार पर अपने लोगों के आपसी और इस क्षेत्र की सामूहिक समृद्धि पर जोर दिया। प्रधानमंत्री भोख हसीना की ऐतिहासिक यात्रा को याद करते हुए संयुक्त बयान है कि इस यात्रा के दौरान दोनों पक्षो द्वारा एक समझोते पर पहुंच गया जिसमे पूवीवर्ती 20 माह के दौरो और चर्चाओं को सम्मिलित किया गया तथा दोनो प्रधानमंत्रियों ने संतोश के साथ उच्च स्तर के आदान–प्रदान का उल्लेख किया इसमे दो समझौतो पर बल दिया गया–

1. एक फ्रेम वर्क समझौते पर ऐतिहासिक रूप से कहा कि विकास के लिए सहयोग और सम्बन्धि प्रोटोकाल तैयार किया गया ।
2. दूसरा भारत व बांग्लादे" । के बीच भूमि सीमा के सीमाकंन सम्बन्धित मामलों पर निश्कर्श निकाला गया तथा समझ के आठ अन्य ज्ञापन भी हस्ताक्षर किये

गये। 65 पैरा बयान में रोड़ में मेप्स और बकाया मुद्दों से निपटने के लिये विचार किया गया।

जनवरी 2010 से 2011 के बीच बीस महिने के अवधि मे सभी विशयों पर कई स्तरों से गहन विचार विम" ा किया गया। आव" यक बातचीत की गयी तथा प्रत्येक बकाया मुद्दों से निपटने के लिए बातचीत की तथा द्विपक्षीय सम्बंधों में जल सम्बन्धित मुद्दों पर बल दिया गया। भारत व बांग्लादे" ा के मध्य जल बंटवारे, अवैध प्रवास आदि मुद्दों ने माहौल बिगाड़ रखा है। 2009 में भोख हसीना की सरकार स्पश्ट जनादे" ा के साथ सत्ता में आयी। बांग्लादे" ा के लिए एक दृश्टि से उनकी पार्टी द्वारा तथा विजन 2021 का निरूपण किया गया जिसके अंतर्गत दोनो दे" ाों से सम्बन्धित विवादास्पद मुद्दों पर दोनों पक्षों द्वारा गम्भीर प्रयास करने के लिये जोर ड़ाला गया। पारद" ार्ी मुक्त व्यापार समझौते के माध्यम से सांझा समृद्धि को प्राप्त करने के लिए प्रयास किये जाये कांटेदार सीमा प्रबंधन के मुद्दे पर तथा पानी के मुद्दों को एक भाांत तरीके से समाधान करने की कोि" ा" ा की जाये इसी पृश्ठ भूमि मे प्रधानमंत्री भोख हसीना जी ने भारत का दौरा किया।

जनवरी 2010 से सितम्बर 2011 के बीच बीस महीने की अवधि में सभी विशयों पर कई स्तरों से गहन विचार विम" ा किया गया। 2011 की श्री मनमोहन सिंह जी की यात्रा के लिये 2010 की श्रीमती हसीना जी की भारत यात्रा ने तैयार किया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों पर समझौता किया गया।[1] बांग्लादे" ा के मार्गो को खोलने के लिये आतंकवाद से लड़ने के लिये नेपाल, भूटान, भारत से बिजली की आपूर्ति के लिये आदि। गौरतलब है कि दोनों प्रधानमंत्रीयों ने सहमति के बीच विकास के लिए सहयोग के लिये व्यापार की रूपरेखा तैयार कि। दोनो दे" ाों के भविश्य के लिए उनका परस्पर सांझा दृश्टिकोण, जल संसाधन के क्षेत्र में सहयोग तथा बिजली, परिवहन, कनेक्टिवीटी, पर्यटन और ि" ाक्षा को सम्मिलित किया गया ।

भूमि सोमा के सीमाकंन के सम्बंध में प्रोटोकाल बांग्लादे" ा के लिये प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की यात्रा एक प्रमुख परिधान है। इस प्रोटोकाल के तहत भारत जल्द ही संसदीय प्रणाली भाुरू करने का प्रयास करेगा तथा इन्दिरा व मुजीब 1974 सीमा करार की पुश्टि का प्रयत्न करेगा।[1]

वर्तमान के संदर्भ में द्विपक्षीय सम्बंधों में राश्ट्रीय चिन्ता और भावी हितों को ध्यान में रखा गया है। भारत की सुरक्षा प्रधानमंत्री का उत्तरदायित्व है और इस सुरक्षा की चिन्ता के विशय को चार खण्डों मे विभाजित किया जा सकता है[1]–

(1) डेल्टा व नदी की सीमाओं के साथ तथा सीमावर्ती क्षेत्रों से भारत की आतंरिक सुरक्षा को खतरा।

(2) दूसरा चिंता का विशय है ईस्लामिक का आगमन तथा बांग्लादे" ा में कट्टरपंथी भाासन।

(3) भारत का चौथा सुरक्षा चिंता का विशय है। बड़े पैमाने पर अवैध बांग्लादे" ाी आव्रजन बांग्लादे" ा को आर्थिक रूप से समृद्ध रहने के लिये भरत के हित में रहना होगा।

दोनों दे" ाों के संबंध मधुर बने इसके लिये दोनों दे" ाों के प्रख्यात नागरिकों द्वारा विचार विम" र्ा किया गया है। इस विचार विम" र्ा में निम्नलिखित मुद्दों पर बल दिया गया है। समझौता किया गया है। दोनों दे" ाों के बीच सहयोग के राजनीतिक ईच्छा भाक्ति और राजनीतिक स्तर पर बातचीत आव" यक है–

(1) आतंकवाद सभी के लिए खतरा बन गया है। यह आपसी वि" वास पैदा करने के लिऐ आव" यक है वास्तविक क्षेत्र मे आदान प्रदान करने के लिए एक तंत्र होना जरूरी है।

(2) आतंकवादी/उग्रवादी गतिविधियों के बारे मे जानकारी होनी चाहिए।

(3) नागरिक अधिकारियों के बीच संस्थागत आदान–प्रदान करने की जरूरत है। दोनो दे" ाों के पड़ौसी जिलो में आम समस्याओं पर चर्चा व समाधान के प्रयास।

(4) निवे" ा के मुद्दों पर द्विपक्षीय ध्यान केन्द्रीत किया जाना चाहिए।

(5) बीएफटीए भारत को अपने बाजार खोलने के लिए जरूरत के तहत अधिक से अधिक गति पर बल ।

(6) बीएफटीए का प्रमुख उद्दे" य अंतर क्षेत्रीय निवे" ा उत्तेजक किया जायेगा।

भारतीय विदे" ा मंत्री एस.एम. कृश्णा की बांग्लादे" ा यात्रा पर कई मुद्दों पर सहमति बन सकी। इनकी यात्रा में उम्मीद जाहिर की है कि बांग्लादे" ा हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की टिप्पणी का प्रतिकूल अर्थ नहीं निकालेगा। ढाका एयरपोर्ट पर पहुंचते ही उन्होनें मौजूदा समय को दोनों दे" ाों के बीच संबंधों का स्वर्णिम दौर बताया।भारतीय प्रधानमंत्री के बयान के बाद डैमेज

कंट्रोल करने बांग्लादे” ा पहुंचे विदे” ा मंत्री का स्वागत बांग्लादे” ा की विदे” ामंत्री दीपू मोनी ने किया। यहां कृश्णा ने पत्रकारों से कहा, उन्हे उम्मीद है कि बांग्लादे” ा सरकार भारतीय प्रधानमंत्री की टिप्पणी का कोई प्रतिकूल अर्थ नही निकालेगी। उनसें पत्रकारों ने पूछा था कि क्या प्रधानमंत्री के 25 फीसदी बंगलादे” ायों को भारत विरोध बताने पर दोनों दे” ाों के संबंधों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। प्रधानमंत्री ने यह बयान आन द रिकॉर्ड दिया था लेकिन यह सार्वजनिक हो गया था। हालांकि इसे बाद में हटा दिया गया था।

विदे” ा मंत्री ने इसे एक विवाद मानने से इंकार कर दिया। उनका कहना था कि मनमोहन सिंह ने बांग्लादे” ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना से बात करके यह संदे” ा दे दिया है कि वह दोनो दे” ाों के बीच मजबूत संबंधों के समर्थक है। कृश्णा ने कहा कि विदे” ा मंत्रालय ने स्पश्टीकरण भी दे दिया है कि बांग्लादे” ा के साथ संबंध प्रधानमंत्री के दिल के बहुत करीब है। उन्होने दोनों दे” ाों को स्वाभाविक सहयोगी बताया।

उल्फा नेताओं के भारत प्रत्यर्पण पर विदे” ा मंत्री ने कहा कि बांग्लादे” ा ने भरोसा दिलाया है कि उनकी जमीन का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नही होने दिया जाएगा। साथ ही उन्होने तीस्ता नदी विवाद सुलझने की भी उम्मीद जाहिर की। उन्होने कहा कि भोख हसीना के भारत दौरे के बाद से दोनो दे” ाों के बीच तीस्ता जल विवाद, ऊर्जा क्षेत्र, व्यापार और सुरक्षा मामलों में प्रगति हुई है। कृश्णा ने कहा है कि संबधों में दूरद” ार्ी, प्रगति” ाील और व्यावहारिक समझ से ही दोनो दे” ाों का भविश्य उज्जवल रहेगा। तीन दिवसीय दौरे पर कृश्णा बांग्लादे” ा के भीर्श नेताओं से मुलाकात की गयी। मुख्य चर्चा के मुद्दों में नदी जल की हिस्सेदारी से लेकर बंगाल की खाड़ी मे जल सीमा के निर्धारण भी भाामिल है,। एसएम कृश्णा बांग्लादे” ा की विदे” ा मंत्री दीपू मोनी के अलावा प्रधानमंत्री भोख हसीना, राश्ट्रपति जिल्लूर रहमान, वित्त मंत्री एम.ए. मुहित और विपक्ष की नेता खालिदा जिया से भी मुलाकात की थी। बांग्लादे” ा में भारत की पूर्व उच्चायुक्त बीना सीकरी का कहना है कि एसएम कृश्णा के इस दौरे में चार पांच बहुत महत्वपूर्ण फैसले की उम्मीद है, उन्होनें बताया, ‘‘कोर्” ा” ा होगी कि तीस्ता नदी के पानी की भागीदारी पर अंतरिम

सझौता हो, सीमा से जुड़े कुछ मुद्दों पर फैसला हो, व्यापार से जुड़े कई फैसले की उम्मीद है।

दोनों दे" ाों ने अपने संबंधों में मजबूती की बात कही है, माना जा रहा है कि भारत और बांग्लादे" ा में नदी जल की हिस्सेदारी, सीमा प्रबंधन और व्यापार घाटे पर कोई सहमति बन सकती है लेकिन इन समझौतों पर आखिरी फैसला इस साल सितम्बर में मनमोहन सिंह की बांग्लाद" ा यात्रा के दौरान होने की उम्मीद है।

मनमोहन सिंह की यात्रा–

बांग्लादे" ा पर अपनी टिप्पणी से आलोचनाओं का सामना कर रहे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना से फोन पर बातचीत की और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सितम्बर, 2013 में बांग्लादे" ा दौरे की तारीख की भी घोशणा कर दी गई है।

जानकारों का मानना है कि अपनी टिप्पणी के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह रि" तों मे आई कुछ खटास को कम करने की पहल कर रहे है। मनमोहन सिंह ने भोख हसीना से बातचीत में ये कहा कि भारत अपने पड़ोसी बांग्लादे" ा के साथ रि" तों को काफी अहमियत देता है। उन्होने ये भी कहा कि वे बांग्लादे" ा दौरे को लेकर उत्सुक है। दूसरी ओर बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना की ओर से भी इस बातचीत के बारे मे एक अधिकारिक बयान जारी किया गया है। इस बयान के मुताबिक भोख हसीना ने कहा–वे और बांग्लादे" ा की जनता प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के दौरे का इंतजार कर रही है। इस दौरे से काफी उम्मीद है और मुझे भरोसा है कि ये ऐतिहासिक दौरा होगा।

विवादास्पद मुद्दे–

ब्रह्मपुत्र मामले को अंतरराश्ट्रीय मंच पर ले जाए भारत

सुरक्षा मामलों के जानकारों का कहना है कि भारत और बांग्लादे" ा को ब्रह्मपुत्र नदी के मामले को अंतरराश्ट्रीय मंच पर ले जाना चाहिए। उन्होने यह

सलाह चीन की ओर से ब्रह्मपुत्र पर बांध बनाने के लिए नदी के प्रवाह में बदलाव करने के मद्देनजर दिया है। हालांकि, चीन ने ब्रह्मपुत्र की धारा मोड़ने की खबरों का खंडन किया है। उसका कहना है कि नदी पर छोटी पनबिजली परियोजना बनाई जा रही है। भारत सरकार ने इस पर चीन स्थित दूतावास से रिपोर्ट मांगी है।

इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस रिसर्च एंड एनालिसिस (आईडीएसए) की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, उत्तरी चीन का मैदानी इलाका कई वर्शो से सूखे की चपेट में है। दक्षिण उत्तर चीन की जीवन रेखा माने जाने वाले यांग्जी नदी में बेहद कम पानी है। इससे चीन के बड़े क्षेत्र को पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। आईडीएसए की रिपोर्ट में कहा गया है कि इन्हीं समस्याओं के कारण चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी (सांगपो) की धारा को तिब्बत के गांसू से मोड़ने की योजना तैयार की थी। रिपोर्ट के अनुसार, इस विशय में चीन की ओर ये यह तर्क दिया गया कि अगर राश्ट्रहित में इस नदी के प्रवाह में परिवर्तन की मांग हुई और समुद्र से पानी लाने की तुलना में इसमें लागत कम आई, तब चीन ऐसी परियोजना को आगे बढ़ाएगा।

सुरक्षा मामलों के वि" ोशज्ञ एमके धर ने कहा कि चीन पूर्वी तिब्बत के पठार के नाम्चा बारवा में वि" व का सबसे बडा बांध बना रहा है। इसका मकसद गोबी क्षेत्र और इससे लगे इलाके में मरूस्थल के विस्तार को रोकने के लिए सिंचाई एवं पानी का प्रबंध करना है। उन्होने कहा कि 2,906 कि.मी. लम्बे ब्रह्मपुत्र नदी का विस्तार तिब्बत में 1625 कि.मी. भारत में 918 कि.मी. और बांग्लादे" ा में 363 कि.मी. है। तिब्बत से नीचे की ओर प्रवाह होने से बांध बनने या प्रवाह में परिवर्तन से भारत और बांग्लादे" ा दोनों को विकट समस्या का सामना करना पड़ेगा। इससे न केवल सिंचाई और पेयजल की समस्या, बल्कि उत्तर पूर्व में विभिन्न पनबिजली परियोजना पर भी संकट उत्पन्न होगा।

बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना की यह भारत यात्रा ऐतिहासिक होगीं इसमें जरा भी भाक नही है। यह भारत बांग्लादे" ा स्वर्ण युग का प्रारम्भ है। बांग्लादे" ा का जन्म 1971 में हुआ लेकिन पिछले 39 सालों मे ये 30 से भी ज्यादा साल तक ढाका में ऐसी सरकारें बनी, जिनका एक ही मूल मंत्र रहा, भारत विरोधी

भारत विरोधी के नाम पर या तो वे चुनाव जीतती थी या फौजी तखता पलट के बाद वे भारत विरोध के दम पर थी। उन सरकारों ने भारत के साथ सहज संबंध बनाने की बजाय ऐसे कदम उठाए, जिससे भारत का नुकसान हुआ, भारत की छवि बिगड़ी, भारत के दु" मनों को मदद मिली और बांग्लादे" ा को कोई फायादा नहीं हुआ। कुछ बांग्लादे" ाी सरकारों ने ऐसे राश्ट्रों के साथ भी अपनी सांठ–गांठ बढ़ा ली, जो भारत को तबाह करने पर तुले हुए थे।

भोख हसीना और उनके पिता भोख मुजीब तो भारत के अभिन्न मित्र रहे है लेकिन भोख हसीना के पिछले भाासनकाल के दौरान भी अनेक अड़चनें बनी रही । फरक्का जल विवाद जरूर सुलझा लेकिन हसीना सरकार तब इतनी मजबूत नहीं थी कि वह कोई जबर्दस्त कदम उठा पाती और इधर भारत में उस समय कई अल्पकालिक सरकारें बनी, जिनका ध्यान आंतरिक उठा पटक पर अधिक केन्द्रीत रहा। इस बार भोख हसीना प्रचंड एवं अपूर्व बहुमत से जीती है और यह संयोग है कि समस्त भारत विरोधी ताकतों की पोल खुल चुकी है। भारत विरोधी ताकतें आजकल इतनी पस्त है कि भोख हसीना की इस भारत यात्रा का उन्हें स्वागत करना पड़ा है। भोख हसीना की इसी यात्रा के दौरान भारत और बांग्लादे" ा के बीच जो समझौते हुए है वे सिर्फ इन दो दे" ाों के ही नही बल्कि नेपाल, भूटान और म्यांमार पर भी गहरा असर डालेंगे।

भारत ने बांग्लादे" ा को एक बिलियन डॉलर याने लगभग 4500 करोड रूपये का अनुदान दिया है। किसी भी विकासमान राश्ट्र के लिए यह बहुत बडी रा" ा है। इतनी बडी रा" ा भारत ने अब से पहले किसी भी राश्ट्र को एक मु" त नहीं दी है। भारत ने अफगानिस्तान को लगभग सवा बिलियन डॉलर दिए है लेकिन वे उसे पिछले 7–8 वर्शो में मिले है। इस घोशणा से दो बातें सिद्ध होती है एक तो यह पता चलता है कि भारत स्वयं समर्थ राश्ट्र है और दूसरा यह कि वह अपने पड़ोसी राश्ट्रों के प्रति उदार है। भारत की इस घोशणा का सीधा लाभ भोख हसीना को मिलेगा। बांग्लादे" ा में कहा जाएगा कि भोख हसीना की जगह यदि बेगम खालिदा जिया या इर" ााद होते तो क्या भारत इतनी बड़ी रा" ा दे देता ? अब हसीना के विरोधियों की बोलती बंद हो जायेगी।

भारत की इस उदारता का असर अन्य पड़ौसी राश्ट्रों पर भी पडेगा। भारत की इस उदारता का मार्ग हसीना ने पहले ही प्र" ास्त कर दिया था। असम के आतंकवादी नेता राजखोवा को भारत के हवाले करके ढाका सरकार ने यह स्पश्ट संकेत दे दिया था कि अपनीजमीन पर वह कोई भी भारत विरोधी गतिविधि बर्दा" त नहीं करेगी। सच्चाई तो यह है कि ढाका की पिछली कुछ सरकारों ने न केवल भारत विरोधी आतंकवादियों को प्रश्रय दिया बल्कि उन्हें पाकिस्तान के भीर्श नेताओं से भी मिलवाया था। अब जो तीन सुरक्षा समझौते हुए है, उनके तहत दोनों दे" ा आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता करेंगे, सजायाफ्ता लोगों को लौटाएंगे, आतंकवादियों, गिराहों और तस्करों के खिलाफ संयुक्त कार्यवाही करेंगे। इन समझौतों के कारण भारत को समस्त पूर्वांचल में भाांति स्थापित करने मे सुविधा होगी। उन समाज विरोधी तत्वों को भी वह अपनी गिरफ्त में ले सकेगी, जो बांग्लादे" ा मे छुपकर पाकिस्तानी, श्रीलंकाई और गर्मी आतंकवादियों से सांठ–गांठ करते रहते है। भारत ने बांग्लादे" ा को नेपाल और भूटान तक आने जाने के लिए रेल और सड़क की सुविधा देने की भी घोशणा की है। बांग्लादे" ा ने अंखौरा अगरतला रेल लिंक बनाने पर सहमति दी है। यह भाुरूआत है और बहुत अच्छी है। यदि भारत और बांग्लादे" ा अपनी सीमा में से दोनों के माल और लोगों के लिए रास्ता खेल दे तो यह सम्पूर्ण पूर्वाचंल के लिए युगांतरकारी कदम होगा। यदि कलकत्ता और अगरतला के बीच बांग्लादे" ा होकर रेल और सड़के दौड़ने लगे तो 1700 कि.मी. का फासला सिर्फ 500 कि.मी. रह जाएगा। बांग्लादे" ा रास्तों के खुल जाने से भारत,नेपाल, बांग्लादे" ा और म्यांमार का आपसी व्यापार कई गुना बढ जाएगा। बांग्लादे" ा के फायादों को देखकर कोई आ" चर्य नही कि किसी दिन पाकिस्तान भी अपने थल मार्ग भारत के लिए खोल देगा। उस दिन सम्पूर्ण मध्य ए" ाया और दक्षिण ए" ाया के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सरकार के नए युग का सूत्रपात होगा। पड़ोसी दे" ाों का भय और स" ाय दूर करने के लिए भारत को एकतरफा उदारता भी दिखानी पड़े तो दिखानी चाहिए। यह उदारता मनमोहन सिंह सरकार प्रचुर मात्रा में दिखा रही है। बांग्लादे" ा के साथ भारत का व्यापार बढे और भारत मे बंग्ला माल ज्यादा खपे, इस दृश्टि से कई रियायतें दी जा रही है।

अभी बांग्लादे" ा भारत से लगभग 2500 मिलियन डॉलर का आयात करता है लेकिन भारत को उसका निर्यात 500 मिलियन डॉलर भी नही है।

भारत ने बंग्ला वस्तुओं पर तटकर घटाया है और 700 वस्तुओं की निशेध सूची को घटाकर 400 वस्तुओं की कर दिया है। यदि पड़ोसी दे" ाों के माल को कर मुक्त कर दिया जाए तो आखिर भारत का कितना नुकसान हो जाएगा ? भारत थोडी पहल करे तो अगले पांच वर्शो में ही दक्षिण एि" ाया मे मुक्त बाजार की स्थापना हो सकती है। भारत ने बांग्लादे" ा को 250 मेगावाट बिजली देने का वायदा भी किया है। दोनों दे" ाों का जल आयोग भी अब अधिक सक्रिय किया जाएगा ताकि बांग्लादे" ा को बाढ़ से बचाया जा सके और दोनों दे" ाों के जल स्रोतों का बहुविध उपयोग किया जा सके। इसके अलावा बांग्लादे" ा के आ" ागंज और भारत के सिलीघाट बंदरगाहों को भी एक दूसरे के लिए खोला जाएगा। अब चिटगांव और मंगला के बार में भी थोडी उदारता बरती जाएगी। 300 बांग्ला युवकों को भारत छात्रवृति देगा और अगले साल दोनों दे" ा मिलकर रवीन्द्र डेढ भातक भी मनाएंगे। पिछले 39 साल में कुल मिलाकर जितनी गहरी समझ दोनों दे" ाों मे पैदा नही हुई, उससे कहीं ज्यादा इस यात्रा के दौरान दिखाई पड रही है। सोनिया गांधी और प्रतिभा पाटील के साथ छपे हसीना के आत्मीय चित्र अपनी कहानी खुद कहते है। इसमें संदेह नही कि **''भारत पलट हसीना'',** अब दूसरी हसीना होंगी। बांग्लादे" ा में अब उनका जलवा कुछ और ही होगा। भारत से जुड़ा उनका तार अब उन्हें अधिक विद्युतमय बना देगा। उनकी यह यात्रा उन्हें भोख मुजीब के सपनों का बांग्लादे" ा बनाने में काफी मदद करेगी। प्रधानमंत्री के तौर पर भोख हसीना कई अन्य दे" ाों का सफर करेंगी लेकिन क्या इस सफर से ज्यादा हसीन कोई अन्य सफर होगा?

नरेन्द्र मोदी ने बांग्लादे"ा समकक्ष को भारत आने का न्योता भेजा–

ढ़ाका भारतीय विदे" ा मंत्री सुशमा स्वराज ने गुरूवार को बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना को ढाका में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पत्र सौंपा, जिसमें उन्होने हसीना को भारत आने का निमंत्रण दिया है। सूत्रों के अनुसार, सुशमा ने हसीना के साथ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय मसलों पर चर्चा की। दोनों के बीच व्यापार व निवे" ा, सुरक्षा, सम्पर्क और सीमा प्रबंधन सहित अन्य मुद्दों पर चर्चा हुई। दोनों के

बीच यह वार्ता करीब एक घंटे तक चली। इससे पहले सुशमा ने बांग्लादे" ाी समकक्ष अबुल हसन महमूद अली से मुलाकात कर द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की थी।

भारतीय विदे" ा मंत्रालय के प्रवक्ता सैयद अकबरूद्दीन ने ट्विटर के जरिये इसकी जानकारी दी। उन्होने लिखा भारत, बांग्लादे" ा ने द्विपक्षीय संबंधों के सभी मुद्दों पर वार्ता भ्ाुरू की। विदेश मंत्री श्रीमती सुशमा बांग्लादे" ा की तीन दिवसीय अधिकारिक यात्रा के लिए सम्पन्न की है। यह विदे" ा मंत्री के रूप में उनकी पहली अधिकारिक विदे" ाी दौरा है।

सरहद बदलेगी, संबंध सुधरेंगे–

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 06 जुन 2015 की बांग्लादे" ा यात्रा पर दोनों दे" ाों के बीच भूमि सीमा समझौते पर ऐतिहासिक करार हुआ है। इस समझौते के साथ ही दोनों दे" ाों के बीच पिछले 41 वर्शो से चले आ रह सीमा विवाद का समाधान हो गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना की मौजूदगी में भानिवार को भूमि समझौते के दस्तावेजों का आदान–प्रदान किया गया। इस मौके पर पं" चम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी मौजूद थी। इसे पिछले महीने भारत की संसद ने सर्वसम्मति से पारित किया था। इस समझौते के लागू होने के बाद दोनों दे" ाों की सीमा में बदलाव होगा। इससे पहले, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने दो दिवसीय दौरे पर बांग्लादे" ा पहुंचे। ढाका एयरपोर्ट पर उनका स्वागत बांग्लाद" ा की पीएम भोख हसीना ने किया। दोनों दे" ाों के बीच द्विपक्षीय व्यापार दस्तावेज सहित 19 समझौते भी हुए।

कोलकाता, ढाका व अगरतला के साथ ढ़ाका, ं" ालांग व गुवाहाटी के बीच बस सेवा भ्ाुरू की गई है। मोदी, भाख हसीना और ममता बनर्जी ने बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कोलकाता–ढाका–अगरतला सेवा भ्ाुरू होने से पं" चम बांग्ला और त्रिपुरा के बीच की दूरी 560 कि.मी. कम हो जाएगी।

भूमि अदला बदली सम्बन्धित समझौते के तहत दोनों दे" ाों के बीच 162 बिस्तयों का आदान–प्रदान होगा। बांग्लादे" ा को 111 बस्तियां मिलेगी, जबकि 51 भारत का हिस्सा बनेंगे। समझौते मे भारत को 7110 एकड़ भूमि प्राप्त होगी जबकि बांग्लादे" ा को 17160 हजार एकड़ जमीन मिलेगी इसके अलावा 6.1 कि.मी.

अनिि" चत सीमा का भी सीमांकन किया जाएगा। 51 हजार लोगों की नागरिकता का सवाल भी सुलझ जाएगा। भारत मे जिन 4 राज्यों की भूमि अदला–बदली होगी, उनमें असम, मेघालय, त्रिपुरा और पि" चमबंगाल भाामिल है। बांग्लादे" ा में 111 भारतीय बस्तियों मे कुरीग्राम जिले में 12, नीलफामरी में 59 और पनहागर में 36 भाामिल है। भारतीय बस्तियों मे करीब 37 हजार लोग रहते है, वहीं बांग्लादे" ाी बस्तियों में 14 हजार लोग रहते है। लोगों को नागरिकता चुनने का विकल्प होगा। वे चाहें तो दोनों मे से किसी एक की नागरिकता ले सकेंगे। भारत और बांग्लादे" ा के बीच 4096 कि.मी. लम्बी सीमा लगती है।

जल संसाधन, व्यापार तथा रक्षा क्षेत्रों में उच्च स्तर की अन्योन्यक्रियाएं हुई । जल संसाधन मंत्री श्री अर्जुन चरन सेठी ने 12–13 जनवरी 2001 को ढाका में 34वीं संयुक्त नदी आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए बांग्लादे" ा सहयोग का पुनरीक्षण किया। विचार–विम" ा में " ाामिल विशयों में इसके साथ तीस्ता जल का बंटवारा, फरक्का (1996) का गंगा जल के बंटवारे से सम्बद्ध संधि का क्रियान्वयन, बाढ़ की पूर्व सूचना तथा चेतावनी में मौजूदा सहयोग को मजबूत करना तथा एक समान/सीमा नदियों से सम्बद्ध मसले " ाामिल थे। भारत ने बांग्लादे" ा में प्रस्तावित गंगा बैराज परियोजना की व्यवहार्यता और व्यापक इंजीनियरिंग कार्य के लिए वित्तीय एवं तकनीकी सहायता के संबंध में बांग्लादे" ा के अनुरोध को स्वीकार कर लिया। दोनों पक्ष भू–जल में संखिया मिलावट वाला पानी मिलने की समस्या का सामना करने में सहमत हुए।

बांग्लादे" ा को सितम्बर–अक्टूबर 2000 में दक्षिणी पि" चमी क्षेत्र में प्रचण्ड बाढ का सामना करना पड़ा। सहानुभूमि तथा सहयोग के रूप में भारत सरकार ने बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री राहत कोश के लिए पांच करोड़ रूपयें का दान दिया।

बांग्लादे" ा के विदे" ा सचिव श्री सी.एम. " ाफी सामाो बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री के वि" ोश दूत के रूप में 6–8 अगस्त 2000 तक नई दिल्ली आए और प्रधानमंत्री " ोख हसीना को एक पत्र दिया । उन्होनें विदे" ा मंत्री से भी मुलाकात की तथा विदे" ा सचिव के साथ विचार विम" ा किया ।

बांग्लादे" ा के विदे" ा सचिव श्री सी.एम. समी विदे" ा कार्यालय पराम" ा के सिलसिले में 13–14 दिसम्बर, 2000 को नई दिल्ली की यात्रा पर आए। उनकी इस

बातचीत में भारत और बांग्लादे" ा के बीच बहु–आयामी सबंधो के समस्त क्षेत्र " ाामिल थे। दोनों विदे" ा सचिवों ने दोनों दे" ाों के बीच बहु–रूपात्मक संचार सम्पर्को को बहाल करने के उपायों की समीक्षा की, कलकत्ता–ढाका के बीच बस सेवा " ाीघ्र " ाुरू करने पर सहमत हुए। दोनो पक्षो ने परस्पर लाभकारी व्यापार तथा आर्थिक सहयाग संविर्धत करने के तौर–तरीको, जल संसाधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रो में सहयोग बढ़ाने वीजा प्रबंधो का उदार बनाने, सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा इस क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों की वृद्धि के बारे में साझी चिन्ता की समीक्षा की। भारत और बांग्लादे" ा के बीच भू–सीमा के सीमाकंन से संबंधित करार तथा उससे संबंधित बकायामालों पर विस्तृत चर्चा हुई। दोना विदे" ा सचिवों ने दो संयुक्त कार्य दलों की स्थापना का निर्णय लिया जो इन मसलों का सुव्यवस्थित रूप से हल निकालेगें।

वाणिज्य सचिव स्तर की व्यापार समीक्षा बातचीत मई, 2000 में नई दिल्ली में हुई जिसमें द्विपक्षीय व्यापार एवं आर्थिक संबंधो की समीक्षा की गई और इन्हें अधिक सुदृढ़ बनाने के तौर–तरीकों पर चर्चा हुई। दोनो दे" ाों के बीच अवसंरचनात्मक सम्पर्को में सुधार और उनके उन्नयन के लिए चल रहे प्रयास जारी रहे। कलकत्ता ढाका बस सेवा सफलतापूर्वक चलती रहे। अगरतला–ढाका बस सेवा के लिए तौर–तरीके तैयार करने के लिए आरम्भिक चर्चा हुई। पेत्रापोल (भारत) और बेनापोल (बांग्लादे" ा) के बीच माल की आवाजाही के लिए तीसरी बड़ी लाईन रेल सम्पर्क को बहाल करने के लिए जुलाई, 2000 में ढाका में भारतीय रेलवे और बांग्लादे" ा रेलवे के बीच एक कार्यकारी करार सम्पन्न हुआ। इस माल–भाड़े सेवा का उद्घाटन रेल मंत्री सुश्री ममता बनर्जी और बांग्लादे" ा के संचार मंत्री श्री अनवर हुसैन मंजुर ने 21 जनवरी, 2001 को संयुक्त रूप से किया।

सीमा प्रबंधन से सम्बद्ध मुख्य मसलों और सुरक्षा से सम्बद्ध मामलों पर संस्थागत वार्ता में अप्रैल, 2000 में गृह सचिव स्तर की बातचीत, नई दिल्ली और ढाका में क्रम" ा अप्रैल,2000 तथा अक्टूबर 2000 में सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ.) और बांग्लादे" ा राईफल्स (बी.डी.आर) के बीच महा निदे" ाक स्तर की बातचीत तथा 15–17 फरवरी, 2001 तक नई दिल्ली में संबंधित गृह मंत्रालयों के संयुक्त

कार्यदल की बैठक भाामिल है। सीमा सुरक्षा बल और बांग्लादे" ा राईफल्स के बीच महानिदे" ाक स्तर की अगली बैठक माच, 2001 में हुई ।

भारत और बांग्लादे" ा की स" ास्त्र सेनाओं के बीच नियमित कार्यकलाप के एक अंग के रूप में थल सेनाध्यक्ष जनरल वी.पी. मलिक मई, 2000 को बांग्लादे" ा पर अप्रैल, 2000 में हुआ। की सरकारी यात्रा पर गए। पहला भारत–बांग्लादे" ा सेना संयुक्त बड़ा अभियान तीस्ता और ब्रह्मपुत्र (बांग्लादे" ा में जमुना) पर अप्रैल, 2000 में हुआ।

f" ाक्षा और तकनीकी प्र" ाक्षण के क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग जारी रहा। बांग्लादे" ा के कई हजार छात्र भारत में अध्ययन कर रहे हैं उनमें से कई भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिशद की छात्रवृतियों का उपयोग कर रहे हैं । सांस्कृतिक आदान–प्रदानों और मोडिया कार्यकलाप को गहन किया गया। ढाका स्थित भारत के हाई कमी" ान ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का आयोजन किया जिसमें संगीत गोश्ठियॉ, नृत्य कलाएं, फिल्म " ाो और कला प्रद" ार्नियॉ आदि " ाामिल हैं, इनमें व्यापक जनसमूह ने भाग लिया। बांग्लादे" ा स्थित भारतीय मि" ानों ने वर्श 2000 म बांग्लादे" ाी राश्टोयों को 3,63,204 वीजा जारी किए।[1]

द्विपक्षीय संबंधो के विविध क्षेत्रों में सहयोग के लिए मौजूदा संस्थागत तंत्रो को पुनः सक्रिय बनाने के लिए दोनो पक्षों द्वारा किए गए प्रयासों के माध्यम से बांग्लादे" ा के साथ संबंधो को मजबूत किया गया। दोनो विदे" ा मंत्रियों की अध्यक्षता में संयुक्त आयोग की बैठक छह वर्श बाद 14–15 जुलाई 2003 को ढाका में सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्थिक मसलों के समग्र पहलू की व्यापक समीक्षा करते हुए आर्थिक संबंधो को उच्चस्तरीय बल देने का अवसर मिला हैं। बांग्लादे" ा के वित्त मंत्री श्री सैफुर रहमान की 19–22 मई 2003 की भारत की यात्रा के दौरान चर्चाएं हुई। तीन वर्शो से अधिक के अन्तराल के बाद 29–30 मार्च 2003 की विदे" ा कार्यालय पराम" ार्ा हुए। लगभग तीन वर्श के अन्तराल के बाद 28–29 सितम्बर 2003 को मंत्रिस्तरीय संयुक्त नदी आयोग की बैठक हुई।

संयुक्त आर्थिक आयोग की छठी बैठक के दौरान नए सम्भव ऋण जो अमरीकी डालर में हो सकता है, पर चर्चा हुई। यह उस 200 करोड़ रूपए के मौजूदा ऋण का स्थान लेगा जो लगभग पूरा हो रहा हैं। रेलवे द्विपक्षीय सहयोग

का एक उभरता हुआ क्षेत्र है और जिन प्रस्तावों को तैयार किया जा रहा है उनमें रेल द्वारा केन्टेनरीकृत सेवाएं तथा स्यालदाह–जोदेवपुर यात्री रेल सम्पर्क " ारू करना " ामिल है। दोनो पक्षो के बीच विज्ञान और प्रोद्योगिको, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कृशि जैसे नए क्षेत्रो म सहयोग पर भी चर्चा चल रही है। भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी में स्कूली अध्यापकों को प्र" ाक्षण देने की परियोजना और बंगाल की खाड़ी में विपदा चेतावनी से सम्बद्ध परियोजना के लिए सहायता की पे" ाक" ा की है।

छठे संयुक्त आर्थिक आयोग की बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुसार तथा दोनों दे" ाों के बीच लोगों से लोगों के साथ और अधिक सम्पर्क साधने की दि" ाा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम के बतौर 19 सितम्बर 2003 को अगरतला तथा ढाका के बीच एक बस सेवा का उद्घाटन किया गया। सड़क परिवहन और राश्ट्रीय राजमार्ग मंत्री मेजर जनरल बो.सी. खण्डुरी, बांग्लादे" ा के संचार मंत्री श्री नजमुल हुड्डा एवं त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री मानिक सरकार ने अगरतला और ढाका दोनो जगह संयुक्त रूप से बस सेवा का उद्घाटन किया।

कोलकत्ता और ढाका के बीच मौजूदा बस सेवा के बाद अगरतला–ढाका सम्पर्क सबसे सफल सम्पर्क है। उम्मोद है कि नई बस सेवा वि" ाशकर दोनों पक्षों के बीच वीजा तथा यात्रा कर लागू करने से सम्बद्ध कतिपय समस्याओं के समाधान के बाद अधिक लोकप्रिय हो जाएगी।

द्विपक्षीय संबंधों में अन्य महत्वपूर्ण घटना द्विपक्षीय मुक्त व्यापार करार पर हस्ताक्षर करने के संबंध में वार्ता " ारू करना था। ये वार्ताएं दोनो दे" ाों के वाणिज्य मंत्रालयों के बोच 20 से 22 अक्टूबर 2003 तक हुई। दोनों पक्षों ने भारत–श्रीलंका मुक्त व्यापार करार की सफल प्रगति की समीक्षा की जो आर्थिक आकार तथा मजबूती में विशमता के बावजूद व्यापार उदारीकरण में सफल सहयोग का द्योतक हैं। बांग्लादे" ा के न्यूनतम विकसित दे" ा के दर्जे को देखते हुए मुक्त व्यापार करार की " ार्तो को और अधिक उदार बनाए जाने की उम्मीद हैं। गैर सीमा" ाुल्क अवरोधों के मसलें पर ढांचागत वार्ता का एक तंत्र सृजित किया गया और दो दे" ाों के बीच इसकी पहली बैठक हुई जिसमें बांग्लादे" ा के निर्यातकों तथा बांग्लादे" ा से भारत को निर्यात का सुविधाजनक बनाने पर चर्चा हुई। बदले में

भारतीय निर्यातकों द्वारा उठायी गयी ि" ाकायतों को भी इस मंच मे अधिकारिक तौर पर उठाया जाएगा।

संयुक्त नदी आयाग की बैठक ने पानी के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा के लिए दोनों पक्षों के लिए एक अवसर प्रदान किया। हाल के वर्शो में हुई महत्वपूर्ण घटना इस क्षेत्र में सहयोग का विस्तार होना रहा है जिसमें पानी बंटवारे के क्षेत्र के साथ–साथ बाढ़ भविश्यवाणी, साखिया (संखिया) अप" ामन और विपदा चेतावनी जैसे क्षेत्रों को " ाामिल करना हैं। गंगा जल संधि, 1996 के क्रियान्वयन के कार्य की भी समीक्षा की गई। बांग्लादे" ा पक्ष ने भारत में प्रस्तावित नदी मिलान परियोजना पर चिन्ता व्यक्त की। तथापि, यह बताया गया कि यह परियोजना केवल संकल्पना स्तर पर हैं।

सीमा सुरक्षा बल और बांग्लादे" ा राइफल्स के बीच महानिदे" ाक स्तर की द्विवार्शिक बैठक के जरिए सीमा प्रबंधन से सम्बद्ध प्रमुख मसलों पर ढांचागत वार्ता जारी रही, इसकी बैठक अप्रैल, 2003 में सम्पन्न हुई ।[1] सीमा पर चल रहे अपराधों का संयुक्त रूप से हल निकालने के प्रयास के रूप में दोना पक्षों के साथ–साथ समन्वित ग" त करने पर चर्चा हुई। दोनो बलों के बीच समझ बूझ बढ़ाने के लिए भारतीय संस्थानों में प्र" िक्षण की पे" ाक" ा करने और खेल कूद के आदान प्रदान जैसे वि" वासोत्पादक उपायों पर भी दोनो बल चर्चा कर रहे हैं।

दोनो दे" ाों के बीच सांस्कृतिक तथा " ौक्षिक आदान–प्रदानों में बढ़ोतरी होती रही तथा भारत में अपनी उच्चतर ि" ाक्षा के लिए बांग्लादे" ा से और अधिक संख्या म छात्रों को चुना जाता रहा हैं।

बांग्लादे" ा के साथ भारत के बहुत ही घनिश्ठ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा समाजिक संबंध है। हमारे द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं को प्र" ासित करने वाले सांस्थानिक तंत्रों में हाल के वर्शो में विविधता लाई गई है।

यह वर्श बांग्लादे" ा से उच्च स्तरीय यात्राओं का द्योतक है। बांग्लादे" ा के विदे" ा मंत्री श्री एम मोर" ाद खान बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री के वि" ोश दूत के रूप में भारत की नयी सरकार द्वारा कार्यभार संभालने पर बधाई देने के सिलसिलें में 31 मई से 4 जून 2004 तक भारत की यात्रा पर आए। इस यात्रा से सुरक्षा तथा द्विपक्षीय हित–चिन्ता के अन्य मसलों पर चर्चा करने का अवसर मिला। बांग्लादे" ा

के विदे" ामंत्री बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री के वि" ोश दूत के रूप में जनवरी 2004 में ढाका में सम्पन्न होने वाले दक्षिण ए" ियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ की 13वें ि" ाखर सम्मेलन के सिलसिलें में हमारे प्रधानमंत्री को आमंत्रित करने के लिए भी भारत की यात्रा पर आए। दोनों पक्षों ने हाल के वर्शो में " ुरू किए गए सहयोगी द्विपक्षीय संबंधों को बढाने और उन्हें गति प्रदान करने की अपनी–अपनी वचनबद्वता को दोहराया।

बांग्लादे" ा के वाणिज्य मंत्री एअर वाइस मा" ल अल्ताफ हुसैन चौधरी भारत के वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री के आमंत्रण पर 16–18 नवम्बर 2004 तक भारत की यात्रा पर आए। इस यात्रा के दौरान उन्होनें विदे" ामंत्री तथा भारतीय उद्योग परिसंघ और फिक्की के साथ मुलाकात की। उन्होने फिक्की द्वारा आयोजित सेमिनार में वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री के साथ संयुक्त रूप से भाशण दिया। इस यात्रा से दोनों द" ाों के बीच कई आर्थिक मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिला बांग्लादे" ा के वित मंत्री सैफुअर रहमान दिसम्बर 2004 में भारतीय उद्योग परिसंघ के आर्थिक ि" ाखर–सम्मेलन के सिलसिलें में भारत में थे। उन्होने प्रधांनमत्री से भेंट की और अपने समकक्ष वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम से बातचीत की।

लगभग चार वर्शो के अंतराल के बाद ढाका में गृह सचिव स्तर की बातचीत हुई। इस बातचीत से भूमी सुरक्षा, सीमा प्रबंधन तथा कोसल एवं वीजा से संबंधित अन्य मुद्दो के सभी पहलुओं पर चर्चा करने का अवसर मिला। बातचीत के दौरान बांग्लादे" ा किसी भो अन्तर्राश्ट्रीय हवाई अड्डें और अथवा बन्दरगाह से गुजरने वाले भारतीय नागरिकों को दोहरे प्रवे" ा तथा निकासी वीजा देने पर सहमत हुआ।

दोनो दे" ाा के जल संसाधन सचिवों की सह–अध्यक्षता में भारत–बांग्लादे" ा वि" ाशज्ञ संयुक्त समिति की सातवीं बैठक सितम्बर 2004 को ढाका में सम्पन्न हुई। इस बैठक में तिस्ता नदी के जल के बंटवारे के लिए तकनीकी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए गठित संयुक्त तकनीकी दल की रिपोर्ट पर विचार किया गया।

सीमा प्रबंधन से सम्बद्व मुख्य मसलों पर संस्थागत वार्ता सीमा सुरक्षा बल और बांग्लादे" ा राइफल्स के बीच द्विवार्शिक तौर पर महानिदे" ाक स्तर पर जारी रही। सहयोग संधर्बित करने तथा वि" वासोत्पादक उपायों को बढ़ाने के लिए कई प्रचालनात्मक और फील्ड स्तर के मुदों पर चर्चा हुई। सीमा पार से अपराधो को

रोकने के लिए समन्वित ग" त लगाने तथा " ाान्तिपूर्ण सीमा प्रबंधन जैसे अन्य मसलों पर भी चर्चा हुइ।

जुलाई 2003 में सम्पन्न छठी संयुक्त आर्थिक आयोग की बैठक के दौरान जिस प्रस्ताव की पे" ाक" ा की गई थी, उसके अनुसरण में भारत सरकार ने बांग्लादे" ा को सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत नई दिल्ली में कम्प्यूटर प्र" िक्षण के सिलसिलें में 250 बांग्लादे" ाी अध्यापकों को प्रायोजित किया गया और इसमें बांग्लादे" ा सरकार द्वारा चुने गए उम्मीदवारों के लिए 6 सप्ताह का प्र" िक्षण " ाामिल था।

संयुक्त आर्थिक आयोग की छठी बैठक के दौरान बांग्लादे" ा को नए संभव ऋण देने पर भी चर्चा हुई। इस समय रेल और सड़क के क्षेत्रों में अवसरंचना से संबंधित परियोजनाओं की वित्त–व्यवस्था के लिए बांग्लादे" ा को 150 मिलियन अमरीकी डालर के प्रस्तावित एक्जिम बैंक के ऋण की " ार्तो एवं निबंधनों तथा तौर तरीकों पर चर्चा करने के लिए बातचीत चल रही है।

इस वर्श बांग्लादे" ा में भंयकर बाढ़ आने के बाद भारत सरकार ने बांग्लादे" ा को 100 करोड़ रूपये की बाढ़ राहत सहायता की मंजूरी दी । इस रा" ि का उपयोग बांग्लादे" ा की सरकार द्वारा भारत से खाद्य अनाज,चिकित्सा आपूर्तियों एवं भवन निर्माण सामग्रियों की खरीद पर किया जा सकता है । इस रा" ि का उपयोग करने के तौर–तरीकों का उल्लेख करते हुये दोनों दे" ाो के बीच एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया जाना है।

बांग्लादे" ा के साथ भारत के संबंधो की वि" ोशता उनके घनिश्ठ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधो से बताई जाती है। विस्तृत दौर की चर्चा और सार्क ि" खर सम्मेलन के मौकें पर सर्वोच्च राजनैतिक स्तर के दौरों सहित राजनैतिक और सरकारी स्तर के दौरों के जरिए बांग्लादे" ा के साथ संबंध और सुदृढ़ हुए । हाल ही के वर्शो में,अनेक ऐसी पहल कदमियां रही है जिसने द्विपक्षीय संबंधो को सुदृढ़ किया है ,हांलाकि सुरक्षा संबंधी मुद्दा द्विपक्षीय संबंधो को बेहतर बनाने में हमे" ाा से ही अड़चन रही है । ये मुद्दे बांग्लादे" ा की भूमि पर भारत के पूर्वोतर से भारतीय विद्रोही समूहों और उनके नेताओं की मौजूदगी और

क्रियाकलापों,अतिवादी इस्लामिक राजनैतिक पार्टियों और संगठनों तथा गैर–कानूनी घुसपैठियों सहित रूढ़िवादी उन्नमुखीकरण के बढ़ते हुए प्रभाव से संबंधित है।

प्रधानमंत्री ने ढाका में 13वें सार्क ि" ाखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए बांग्लादे" ा का दौरा किया जंहा उन्होने ि" ाखर सम्मेलन की उपजीविका के संबंध में बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री से मुलाकात की। बैठक में भारतीय विद्रोही समूहों, पारगमन,ऊर्जा और जल संसांधनों के बंटवारे पर चर्चा हुई थी।

बांग्लादे" ा ने बांग्लादे" ाी के प्रधानमंत्री खालिदा जिया के भारत दौरे के लिए मार्च 2006 के उत्तरार्द्व की तारीख का पस्ताव किया है।

विदे" ा मंत्री ने 6–8 अगस्त, 2005 को बांग्लादे" ा का दौरा किया । यह संप्रग सरकार के किसी मंत्री के लिए बांग्लादे" ा का पहला दौरा था और बांग्लादे" ा में उनका भव्य स्वागत हुआ। दौर के दौरान सुरक्षा,गैर–कानूनी अप्रवास, सीमा पर बाड़ लगाने, व्यापार और वाणिज्य, निवे" ा, दोनो दे" ाों के बीच संपर्क को बेहतर बनाने,जल संसाधनों के वहन, म्यांनमार बांग्लादे" ा –भारत गैस पाइप लाईन ओर सयुक्त राश्ट्र सुधार से संबंधित मुद्दो पर चर्चा हुई थी। ईएएम ने बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री को भारत दौरे के लिए आमंत्रित किया गया था। अपने दौरे के दौरान ईएएम ने बांग्लादे" ा के लिए 100 अतिरिक्त आईटीईसी स्लॉट, सूचना प्रौद्योगिकी में 600 बांग्लादे" ाी छात्रों के लिए छात्रवृति की घोशणा की ।

दो वर्श के अंतराल क बाद ढाका में 18–21 सितम्बर, 2005 को भारत–बांग्लादे" ा ज्वायंट रिवर्स कमी" ान की 36 वीं बैठक हुई। भारतीय ि" ाश्टमंडल का नेतृत्व श्री पी.आर.दासमु" ाी,जल ससांधन मंत्री ने किया था। ज्वाईंट रिवर्स कमी" ान की इस बैठक ने दोनों पक्षों को दोनों दे" ाो के बीच जल संसाधन के बंटवारे से संबंधित मुद्दे पर द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा करने का अवसर प्रदान किया। बाढ़ की भविश्यवाणी, आर्सेनिक को दूर करने ,भारत के नदियों को आपस में जोड़ने की परियोजना और तिपाईमुख बांध से संबंधित मुद्दों पर चर्चा हुई थी। इसी वर्ष पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री ने म्यांनमार– बांग्लादे" ा भारत त्रिपा" ार्वक गैस पाईप लाईन के संबंध में 4–6 सितम्बर को ढाका का दौरा किया ।

बांग्लादे" ा की ओर से मंत्री मु" ार्रफ हुसैन, बांग्लादे" ा के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने भारत सरकार द्वारा वि" व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से

7–9 अप्रैल, 2005 को आयोजित मातृत्व, जन्मजात और बाल स्वास्थ्य पर हुई एक बैठक में अपने ि" ाश्टमंडल के नेता के रूप में भारत का दौरा किया। लगभग 4 वर्शो के बाद 20–23 जून, 2005 को नई दिल्ली में विदे" ा अधिकारियों के साथ चर्चा हुई थी। दो विदे" ा सचिवों ने सुरक्षा, सीमाओं की " ाांतिपूर्ण देख–रेख लोगों का एक दूसरे के दे" ाों में गैर–कानूनी घुसपैठ, जल संसाधन में सहयोग, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग, निवे" ा को बढ़ावा देने विज्ञान–प्रौद्योगिकी और कृशि में सहयोग, रक्षा आदान–प्रदान और सांस्कृतिक संबंध से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। आम हित के मामले पर एक दोस्ताना और सौहार्दपूर्ण माहौल में मुक्त और स्पश्ट चर्चा हुई थी जो द्विपक्षीय संबंधों को द" ार्ाता है।

भारत और बांग्लादे" ा के बीच गृह सचिव स्तर के छठे दौर की बातचीत नई दिल्ली में 27–28 अक्टूबर 2005 को हुई। वार्ता के दौरान, सुरक्षा, सीमा प्रबंधन, गैर कानूनी अप्रवास, सयुक्त सीमा, लंबित पड़े समझौते और कान सुगर मिलों पर चर्चा हुई थी।[1]

नौ–सेना के प्रमुख एडमिरल अरूण प्रका" ा ने 17–20 दिसम्बर 2005 को बांग्लादे" ा का दौरा किया। उन्होनें बांग्लादे" ा के राश्ट्रपति से भी मुलाकात की थी। महानिदे" ाक के स्तर पर सीमा सुरक्षा बल (बीडीआर) जैसे रक्षा बलों की सीमा पर तैनाती से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर संस्थागत चर्चा भी हुई। 12–17 अप्रेल 2005 और 26 सितम्बर 1 अक्टूबर 2005 को दो बैठकें हुई थी। इनमें सीमा प्रबंधन मुद्दों पर भी चर्चा हुई थी। दोनों बलों ने अपनी आपसी सूझ–बूझ बढ़ाने के उपायों पर भी चर्चा की ताकि उनका वि" वास एक दूसरे पर बना रहे। व्यापार संबंधी संयुक्त कार्य समूह की तीसरी बैठक ढाका में 1–2 अगस्त 2005 को हुई। टैरिफ बैरियर्स,द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता और द्विपक्षीय व्यापर समझौतें में सं" ाोधन से संबधित मुद्दों पर चर्चा हुई थी। संयुक्त सीमा कार्य दल की ढाका में फरवरी 2006 में होने वाली बैठक के बाद पुनः अपना कार्य प्रारंभ करने की आ" ाा है। आधारभूत सुविधा क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए बांग्लादे" ा को 150 मिलियन डालर का ऋण देने के लिए वार्ता का दूसरा दौर नई दिल्ली में 22–23 अगस्त, 2005 को संपन्न हुआ। ऋण और भातो के दायरे में वित्त घोशणा के लिए " ाामिल की जाने वाली परियोजनाओं की सूची पर आगे भी चर्चा होने की संभावना है । सांस्कृतिक और

" ाक्षिक आदान–प्रदान बढ़ते रहे है। दोनों दे" ाों के बीच अगस्त 2005 में 2005–08 के लिए सांस्कृतिक विनियम कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए थे।

भारत ने अस्थायी सरकार द्वारा घोशित चुनाव रोडमैप, जिसमें बांग्लादे" ा के लोगों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधियों को भाग लेने के सभी वैध अवसर प्रदान किए गए हैं, के अनुरूप " ाांतिपूर्ण वि" वसनीय, मुक्त एवं स्वच्छ चुनावों के जरिए लोकतत्र की पूर्ण बहाली की आव" यकता पर बल देते हुए इस वर्श बांग्लादे" ा की अस्थायी सरकार के साथ अपना क्रियाकलाप जारी रखा। भारत ने बुनयादी मौलिक अधिकारों के संरक्षण और बांग्लादे" ा में आपातकालोन " ाासन के अंतर्गत कानून की विधिवत प्रक्रिया की आव" यकता को दोहराया।

राजनीतिक स्तर पर बांग्लादे" ा के मुख्य सलाहकार डा. फखरूद्धीन अहमद ने 2–4 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 14 वें ि" ाखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। सार्क से सबंधित बैठकों के संदर्भ में बांग्लादे" ा की अनेक मंत्री स्तरीय यात्राएॅ भी हुई। भारत से वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमे" ा ने आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्धो पर चर्चा करने और भारत पाकिस्तान वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ का उद्घाटन करने हेतु 21–22 जुलाई 2007 तक ढाका का दौरा किया। विदे" ा मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने 15 दिसम्बर 2007 को आये भयानक चक्रवात के प" चात 1 दिसम्बर 2007 को बांग्लादे" ा का दौरा किया। इस यात्रा का उद्धे" य बांग्लादे" ा के लोगों और वहां की सरकार के साथ एकजुटता व्यक्त करना और चक्रवात से प्रभावित क्षेत्रो में राहत और पुनर्वास कार्यो में सहायता को हमारी तत्परता को दोहराना था।

विभिन्न संस्थागत द्विपक्षीय तंत्रों के अंतर्गत अधिकारी स्तरीय नियमित बैठकें जारी रहीं। विदे" ा कार्यलय पराम" ा का आयोजन 25–26 जून 2007 को ढाका में किया गया। सुरक्षा और सीमा प्रबंधन से जुड़े मुद्दो पर 8 वीं गृह सचिव स्तरीय वार्ता 2–3 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में हुई। द्विवाशिक सीमा समन्वय बैठक का आयोजन 24–29 अक्टूबर 2007 तक ढाका में आयोजित तीसरी संयुक्त सीमा कार्यदल बैठक में लिए गए निर्णयों के अनरूप पहली बार दोनो दे" ाो के ि" ाष्टमंडलो ने 29–30 मार्च 2007 तक एक दूसरे दे" ा में अवस्थित कुछ इंक्लेवों और प्रतिकूल कब्जे वाले स्थानों को देखा जिससे कि भूसी का करार 1974 से

संबंधित अनसुलझे मुद्दों पर और चर्चा करने के लिए जमीनी हकीकतों का आकलन किया जा सके। जल संसाधन के मुद्दे पर दोनों दे" ाों के जल संसाधन सचिवों ने 7–8 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में चर्चा की। भारत बांग्लादे" ा संयुक्त नदी आयोग के सदस्यों के नेतृत्व में अलग से एक तकनीकी स्तरीय बैठक 25–27 सितंबर 2007 तक ढाका में आयोजित की गई जिसमें तीस्ता नदी के जल के बंटवारे से संबंधित तौर–तरीकों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही गंगा जल के बंटवारे पर संयुक्त समोति की 36वीं बैठक 26–29 मई 2007 तक ढ़ाका में हुई।

आर्थिक और व्यावसायिक पक्ष में प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित 14 वें ि" ाखर सम्मेलन में 1 जनवरी 2008 से बांग्लादे" ा सहित सार्क क्षेत्र के अल्प विकसित दे" ाों से होने वाले निर्यातो को बिना " ाुल्क प्रवे" ा देने और इन दे" ाों के सबंबध में भारत की संवेदन" ाील सूची में मद्दा की संख्या को कम करने के भारत के निर्णय की घोशणा की। अतिरिक्त सद्भावना प्रद" ान के रूप में भारत ने बांग्लादे" ा से भारत में 8 मिलियन सिले–सिलाए वस्त्रों का कर मुक्त आयात किए जाने के लिए 16 सिंतबर 2007 तक एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया। 30 अप्रैल –1 मई 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित बेठक में अंतर्राश्ट्रोय जल पारगमन व्यापार से संबद्ध द्विपक्षीय प्रोटोकॉल को लगभग 2 वर्श के लिए नवीनीकृत कर दिया गया। भारतीय मानक ब्यूरो तथा बांग्लादे" ा मानक एवं परीक्षण संस्थान के बीच ढाका में आयोजित एफओसी की बेठक के दौरान 26 जून 2007 को एक द्विपक्षीय सहयोग समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।[1] भारत ने बांग्लादे" ा के नागरिकों अथवा इकाइयों द्वारा भारत में निवे" ा पर लगाये गये प्रतिबंध को हटा लिया है ब" ार्ते कि भारत सराकर के एफ.आई.पी.बी. से पूर्व अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए। सीमा " ाुल्क से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक 25–26 जुलाई 2007 तक नई दिल्ली में हुई और व्यापार से संबद्ध कार्यकारी दल की बैठक 5–6 नवंबर 2007 तक ढाका में हुई।

सार्क क्षेत्र में सम्पर्को में सुधार लाने की भारत की नीति के अनुरूप भारत ने दोनो द" ाों के बीच परिवहन और व्यापार अवसंरचना तथा संपर्क को सुदृढ़ बनाने की आव" यकता पर निरंतर बल देना जारी रखा। ढाका और कोलकाता के बीच नियमित ट्रेन सेवा की तैयारी से जुलाई 2007 में दोनो " ाहरों के बीच परीक्षण के

तार पर सवारी गाड़ियॉ चलाई गई। भारत ने बांग्लादे" ा में भारतीय उग्रवादी गुटों की गतिविधियों पर अपनी गम्भोर चिंता को दोहराना जारी रखा। 2–3 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 5 वीं गृह सचिव स्तरीय वार्ता में भारत ने अपने यहॉ होने वाली आतंकवादी घटनाओं और बांग्लादे" ा आधारित हूजी तथा जेएमबी के साथ इसके संबंधो का उल्लेख किया। भारत में सीमा पार आतंकवाद में लिप्त तत्वों के विरूद्ध बांग्लादे" ा द्वारा सतत कार्यवाही किए जाने की आव" यकता पर भी बल दिया। इसके साथ ही दोनो दे" ा आपसी सुरक्षा चिंताओ के क्षेत्र में सही समय पर और कार्रवाई किए जाने योग्य जानकारी का नियमित रूप से आदान–प्रदान करने के लिए नोडल बिन्दु नामित करने पर सहमति व्यक्त की।

बांग्लादे" ा के मैत्रीपूण लोगों के साथ भारत के घनिश्ट सबंधो और सहानुभूति के मद्देनजर भारत ने जून 2007 में हुई भुस्खलन त्रासदी, सितम्बर 2007 में आयी बाढ़ तथा नवंबर 2007 में आये चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान की भरपाई के लिए बांग्लादे" ा को द्विपक्षीय सहायता दी। भारत द्वारा दी गयी सहायता में " ाामिल है, जून 2007 में हुई भूस्खलन त्रासदी के लिए 10 अमरीकी डालर और बाढ़ तथा हाल में आये चक्रवात के लिए लगभग 100 कराड़ मूल्य की अनिवार्य खाद्य सहायता। हाल में नवम्बर में आये चक्रवात, जिससे बांग्लादे" ा के तटवर्ती क्षेत्रों में जान–माल का भारी नुकसान हुआ, के प" चात भारत ने भारतीय वायु सेना के विमान द्वारा 1.5 अमरीकी डालर का एक आपातकालीन राहत पैकेज भेजा जिसमें दवाएं, तम्बू, कंबल, खाने योग्य मांस तथा पेयजल यंत्र " ाामिल थे। इसके अतिरिक्त 1 दिसम्बर 2007 को विदे" ा मंत्री की बांग्लादे" ा यात्रा के दौरान घोशणा की गयी कि भारत बांग्लादे" ा पर लगाये गये चावल निर्यात के प्रतिबंध को 5 लाख टन अतिरिक्त चावल के निर्यात के लिए उठा लिया जाएगा और यह व्यापक पुनर्वास के लिए बुरी तरह से प्रभावित 10 गांवो को गोद लेगा (2.5 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से)

भारत बांग्लादे" ा में लोकतंत्र को पूरी तरह बहाल किए जाने के लिए स्वतंत्र, निश्पक्ष ओर भरोसेमंद चुनाव की अपनी आ" ाा को दोहराते हुए बांग्लादे" ा की कामचलाऊ सरकार के साथ द्विपक्षीय मुद्धो को व्यापक दायरे में सार्थक ढंग से उठाता रहा। एक यादगार अवसर पर दोनों दे" ाों ने 43 वर्शो बाद कोलकाता और

ढ़ाका के बीच 14 अप्रैल 2008 को यात्री रेल सेवा मेत्री की पुनः " ुरूआत की। बांग्लादे" ा के विदे" ा सचिव ने 17 जुलाई 2008 को वार्शिक विदे" ा कार्यालय पराम" र्ा के लिए भारत की यात्रा की जिसमें विदे" ा सुरक्षा, व्यापार, पारगमन और सम्पर्क बहाल करने से जुड़े मसलों सहित द्विपक्षीय संबंधो के सभी पहलुओं पर व्यापक चर्चा हुई।

भारत खास तौर पर भारतीय उपद्रवी ग्रुपों द्वारा तथा दूसरे राश्ट्रों के आतंकियों द्वारा बांग्लादे" ाो भूक्षेत्र के प्रयोग किए जाने संबंधो अपनी सुरक्षा चिंताओं को बांग्लादे" ा क साथ जोरदार ढग से उठाता रहा। दोनो पक्षों ने सुरक्षा से जुड़े कार्यात्मक मसलों पर चर्चा के लिए संयुक्त कार्य दल को पुनर्जीवित किया और नई दिल्ली में 29–30 मई 2008 को इसकी एक बैठक आयोजित की गई। इसके बाद 29 से 31 अगस्त, 2008 को ढ़ाका में गृह सचिव स्तर की द्विपक्षीय वार्ता की गई।

दोनो दे" ाों ने अपने–अपने सीमा सुरक्षा दलो के द्विवार्शिक डी.जी. स्तरीय सीमा समन्वयन सम्मेलनों के माध्यम से सीमा प्रबंधन से जुड़ कार्यात्मक मसलों पर चर्चा को जारी रखा। ये सम्मेलन क्रम" ाः नई दिल्ली 11–12 अप्रैल, 2008 और ढ़ाका में 20–25 अगस्त, 2008 को आयोजित किये गए। सीमा/व्यापार अवसंरचना पर द्विपक्षीय उपसमूह की पहली बैठक ढाका में 6–7 अगस्त, 2008 को आयोजित की गई।[1]

वर्श के दौरान दोनों पक्षों के बीच 15–27 सितंबर,2008 को 25 वर्शो से अधिक के अंतराल के बाद समुद्री सीमा संबंधी तकनीकी स्तर की बैठक भी आयाजित की गई। सेना प्रमुख जनरल दीपक कपूर 28 जुलाई से 1 अगस्त, 2008 तक बांग्लादे" ा का दौरा किया। इस दौरे के दौरान दोनों दे" ाों के बीच रक्षा सहयोग को सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा की गई।

नई दिल्ली में 14वें सार्क ि" ाखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा की गई घोशणा के परिणामस्वरूप भारत ने 1 जनवरी 2008 से बांग्लादे" ा सहित सार्क क्षेत्र में न्यूनतम विकसित दे" ाों से भारत में होने वाले निर्यात पर से " ुल्क हटा लिया जिसमें भारत की संवेदी सूची में " ाामिल कुछ मदों को नहीं रखा गया हैं। बांग्लादे" ा के साथ हुआ 2007 द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन जिसके अंतर्गत एक कैलेंडर वर्श के दौरान बांग्लादे" ा से भारत को 8 मिलियन तक

सजावटी सामानों के आयात को सीमा " ाुल्क से मुक्त किया गया था, भी अप्रैल 2008 में प्रभावी हो गया।

वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री श्री जयराम रमे" ा ने ढाका चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के स्वर्ण जयंती समारोह में " ाामिल होने के लिए 31 अक्टूबर से 2 नवंबर 2008 तक ढाका की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान उन्होनें अपने समकक्षो के साथ विभिन्न द्विपक्षीय आर्थिक और व्यापार संबंधी मुद्धो पर चर्चा की।

दोनो पक्षों ने 11–13 फरवरी 2008 को नई दिल्ली में द्विपक्षीय वायु सेवा करार की समीक्षा की और दोनों दे" ाों के नियत कैरियरों द्वारा चुनिंदा गंतव्यों की उड़ानों की संख्या को बढ़ाकर सप्ताह में 61 किया गया।

द्विपक्षीय व्यापार और लोगों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए सार्क क्षेत्र में संपर्क को बढ़ावा देने की भारत की नीति की तर्ज पर भारत दोनो दे" ाों के बीच परिवहन और व्यापार संबंधी अवसरंचना को सुदृढ़ बनाने के प्रस्तावों की वकालत करता रहा। अंर्तदे" ाीय जल परिवहन और व्यापार पर द्विपक्षीय प्रोटोकाल के अंतर्गत स्थायी समिति की 10 वीं बैठक ढांका में 26–27 मई 2008 को आयोजित की गई।

बांग्लादे" ा के साथ भारत के घनिश्ट और मैत्रीपूर्ण संबंधो को ध्यान में रखते हुए भारत ने बांग्लादे" ा को प्राकृतिक आपदाओ से हुए नुकसान से उबरने में मदद के लिए द्विपक्षीय सहायता और सहयोग प्रदान किया। भारत को सहायता में 1000 मैट्रिक टन स्किम युक्त दूध का पाउडर और 40000 मीट्रिक टन चावल की आपूर्ति " ाामिल था। भारत ने बांग्लादे" ा में 11 चक्रवात प्रभावित गांवो के पुनर्वास हेतु 2800 रिहाय" ाी मकानों, प्रसाधन और 22 ट्यूबवेलों क निर्माण की परियोजना भी " ाुरू की है और साथ ही ढाका वि" वविद्यालय के रंगमंच और संगीत विभाग के लिए एक कला भवन के निर्माण की परियोजना भी " ाुरू की गई है।

विदे" ा मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने 9 फरवरी 2009 को ढाका का दौरा किया। बांग्लादे" ा में 29 दिसम्बर 2008 को हुए आम चुनावों के बाद महामहिम " ोख हसीना के अधीन बनी नई सरकार द्वारा कार्यभार ग्रहण करने के बाद यह भारत की ओर से पहली उच्च स्तरीय यात्रा थी। अपनी यात्रा के दौरान विद" ा मंत्री नव निर्वाचित सरकार के कई नेताओं से मिले जिनमें प्रधानमंत्री, विदे" ा मंत्री, गृहमंत्री,

वाणिज्य मंत्री और उद्योग मंत्री " ाामिल थे और कई द्विपक्षीय मुद्दा पर चर्चा की गई जिनमें सुरक्षा कनेक्टिविटी, व्यापार और निवे" ा और आम जनो के बीच सम्पर्क जैसे मुद्दे भाामिल थे। दो करारों अर्थात् (1) व्यापार करार और 82) द्विपक्षीय निवे" ा संवर्धन एवं संरक्षण करार (बीआईपीपीए) पर हस्ताक्षर हुए। विदे" ा मंत्री ने भारत द्वारा चक्रवात सिद्र से प्रभावित 11 बांग्लादे" ाो गांवो में बनाए जाने वाले 2800 कोर रिहाय" ाी मकानों के मॉडल का अनावरण किया और ढाका वि" वविद्यालय में कला भवन के निर्माण हेतु एक फलक का भी अनावरण किया।

लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने 21–23 फरवरी 2009 को ढाका की यात्रा की। लोकसभा अध्यक्ष ने नवीं जातीय संसद हेतु संसदीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में बांग्लादे" ा संसद के सदस्यों को संबोधित किया और बांग्लादे" ा के कई नेताओं से मुलाकात की।

दोनो दे" ाों के बीच विभिन्न स्तरों पर नियमित रूप से बातचीत हुई है। प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने 29 अप्रेल 2010 को थिम्पु में 16 वें सार्क सम्मेलन के दौरान बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री भाख हसीना के साथ द्विपक्षीय बैठक की। उन्होनें संयुक्त विज्ञप्ति के क्रियान्वयन सहित दोनों पक्षों के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दो पर चर्चा की। न्यूयार्क में यू.एन.जी.ए. सम्मेलन के अतिरिक्त समय में विदे" ा मंत्री ने 23 सितम्बर 2010 को बांग्लादे" ा के अपने समकक्ष डा. दिपु मोनी से मुलाकात की और द्विपक्षीय संबंधो की स्थिति की समीक्षा की।

वित्तमंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 1 बिलियन के लाइन ऑफ क्रेडिट करार पर हस्ताक्षर करने के लिए 7 अगस्त 2010 को ढ़ाका की सरकारी यात्रा की। उन्होनें प्रधानमंत्री " ोख हसीना, वित्त मंत्री दिप् मोनी से मुलाकात की। चर्चा के दौरान संयुक्त विज्ञप्ति के क्रियान्वयन सहित व्यापक द्विपक्षीय मुद्धो पर विचार–विम" ा किया गया।

बांग्लादे" ा के वाणिज्य मंत्री कर्नल (सेवानिवृत) फारूक खान ने 21–23 अक्टूबर 2010 को भारत की यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होनें नई दिल्ली में फिक्की द्वारा आयोजित व्यवसाय बैठक में भाग लेने के अतिरिक्त वित्त मंत्री, वाणिज्य और उद्योग मंत्री से मुलाकात की। बांग्लादे" ा के साथ लगती मेघालय की सीमा पर दो सीमा हट स्थापित करने के लिए एक करार और एक दूसरे के क्षेत्र में

200 मीटर तक ट्रकों की आवाजाही के लिए मानक प्रचालन प्रक्रिया संबंधी करार पर हस्ताक्षर किये गए। बांग्लादे" ा में मीनि ट्रक्स को ऐबल एवं विनिर्माण करने और बांग्लादे" ा में स्पेयर पार्टस बनाने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए टाटा मोटर्स, इंडिया और बांग्लादे" ा के उत्तरा मोटर्स के बीच एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किये गये।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक सरकार के निमंत्रण पर बांग्लादे" ा के विदे" ा मंत्री डा. दिपु मोनी ने 10–11 नवम्बर 2010 को त्रिपुरा की यात्रा की । इस अवसर पर त्रिपुरा मे छोटा खोला में एक भारत–बांग्लादे" ा मैत्री उद्यान का उद्घाटन किया गया। बांग्लादे" ा क प्रधानमंत्री के आर्थिक, अंतर्राश्ट्रीय और ऊर्जा कार्य संबंधी सलाहकार ने भारत की यात्रा की और द्विपक्षीय मुद्दो पर भारतीय अधिकारियो के साथ चर्चा की।

बांग्लादे" ा के पधानमंत्री के सलाहकार डा. मु" ाउर रहमान और डा. गौहर रिजवी ने द्विपक्षीय मसलों पर चर्चा करने के लिए 22–25 दिसम्बर 2010 के दौरान भारत की यात्रा की और जनवरी 2010 में प्रधानमंत्री " ोख हसीना की भारत यात्रा के दौरान जारी संयुक्त विज्ञप्ति में लिये गए निर्णयों के कार्यान्वयन पर अनुवर्ती कार्रवाई की गई।

तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त श्री नवीन बी. चावला ने दक्षिण ए" िया क्षेत्र के चुनाव आयुक्तो के बीच सहयाग विशय पर बैठक में भाग लेने के लिए 28–31 मई 2010 को ढ़ाका की यात्रा की और महालेखा नियंत्रक ने ए" िया के एकाउंटिंग एसोसिए" न के सदस्यो के क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 28–29 मई, 2010 को ढाका की यात्रा की।[1] सचिव, जल संसाधन मंत्रालय के निमंत्रण पर श्री " ोख मुहम्मद वहीद उज जमां, सचिव बांग्लादे" ा जल संसाधन मंत्रालय के नेतृत्व वाले ि" ाश्टमंडल के जल संसाधन क्षेत्र में प्र" िक्षण प्रदान करने वाले भारतीय संस्थानों और इच्छामती नदी पर तलकर्शण स्थान का दौरा करने के लिए 2–9 जून 2010 को भारत की यात्रा की। श्री जवाहर सरकार, सचिव संस्कृति मंत्रालय ने 19–22 दिसम्बर 2010 के दौरान रविन्द्रनाथ टेगौर के 150 वें वर्शगांठ के संयुक्त समारोह के लिए व्यवस्थाओं पर चर्चा करने के लिए एक आठ सदस्यीय ि" ाश्टमंडल का नेतृत्व किया ।

मानव तस्करी संबंधी कार्यलय की पहली बैठक 18–19 अक्टूबर 2010 का नई दिल्ली में आयोजित की गई। महिलाओं और बच्चों के अवैध व्यापार से सबंधित विभिन्न मुद्धो पर चर्चा करने के अतिरिक्त कार्यबल ने इस संकट के विरूद्ध सम्बन्धित कार्रवाई करने के लिए अपनी सहमति जताई । बी.एस.एफ और बांग्लादे" ा राइफल्स (बी.डी.आर.) के बीच 32 वां डी.जी. स्तरीय सीमा समन्वय सम्मेलन 22–27 सितम्बर 2010 को ढ़ाका में आयोजित किया गया। दोनो पक्षों ने सीमा प्रबंधन से जुड़े मुद्दो पर चर्चा की और सीमा पर अपराध रोकने के सुंयक्त प्रयासों को सुदृढ़ करने पर सहमति जताई। चौथे संयुक्त सीमा कार्यकारी समूह (जे. बी.डब्लू.जी) की 10–11 नवम्बर 2010 की नई दिल्ली में बैठक हुई और इसने व्यापक स्तर पर समाधान करने की दृश्टि से सभी बकाया भूमि मुद्दों पर चर्चा की। दोनो पक्षों ने सभी विदे" ाी अन्तःक्षेत्रो में ज्वाईन्ट हेड काउन्टर प्रारंभ करने और भारत बांग्लादे" ा सीमा से लगे विपरीत कब्जे वाले क्षेत्रों का संयुक्त सर्वेक्षण करने के लिए सहमति जताई।

आर्थिक और वाणिज्यिक क्षेत्र में ठोस परिणाम हासिल करने के लिए बातचीत की गई है। सी.आई.आई. व्यवसाय ि" ाश्टमंडल ने 10–13 अप्रैल, 2010 को बांग्लादे" ा की यात्रा की। बांग्लादे" ा में भारतीय निवे" ाों, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त उद्यमों के अवसरों की पहचान करने के लिए दोनो दे" ाों के व्यवसाय संघो के बीच एक संयुक्त घोशणा पर हस्ताक्षर किये गए। फेडरे" ान ऑफ इंडियन एक्सपोर्टस आर्गेनाइजे" ान (एफ.आई.ई.ओ.) कोलकाता के एक 32 सदस्यीय ि" ाश्टमंडल ने 22–24 जून 2010 को ढ़ाका की यात्रा की और एक मल्टी–प्रोडक्ट बायर–सेलर मिटिंग (बी.एस.एम.)में भाग लिया। बांग्लादे" ा में विद्युत, मुर्गी पालन, तकनीकी ि" ाक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, संचार अवसंरचना विकास, मर्विक ि" ाल्प, औशधि, प्लास्टिक और वस्त्र जैसे क्षेत्रों में निवे" ा करने के अवसरो का पता लगाने के लिए बंगाल ने" ानल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री (बी.एन.सी.सी.आई.) के एक 14 सदस्यीय व्यवसाय ि" ाश्टमंडल ने जून में ढाका की यात्रा की। श्री मणि" ांकर अय्यर संसद सदस्य (राज्यसभा)के नेतृत्व में मर्चेन्ट चैम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री के एक 30 सदस्यीय व्यवसाय ि" ाश्टमंडल ने 10–14 जुलाई 2010 को बांग्लादे" ा की यात्रा की एम.सी.सी.आई. और भारत बांग्लादे" ा चैम्बर ऑफ

कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज (आई.बी.सी.सी.आई.) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किये गए जिसमें दोनों दे" ाों के बीच व्यापार के विकास, निवे" ा, अवसंरचना और सामान्य आर्थिक सहयोग के प्रति उनकी परस्पर वचनबद्धता की घोशणा की गई है।

बांग्लादे" ा के वाणिज्य मंत्री ले. कर्नल (सेवानिवृत) मुहम्मद फारूक खान ने कोलकाता में 24–27 दिसम्बर 2010 के दौरान आयोजित 24 वें औद्योगिक व्यापार मेले में भाग लेने के लिए एक 12 सदस्यीय व्यवसाय ि" ाश्टमंडल के नेतृत्व किया।

व्यापार संबंधी भारत–बांग्लादे" ा संयुक्त कार्यकारी समूह की सातवीं बैठक और विद्युत क्षेत्र में सहयोग संबंधी संयुक्त कार्यकारी समूह की दूसरी बैठक क्रम" ाः ढाका (मई) और नई दिल्ली (जून) में आयोजित की गई । पावर ग्रिड कारपोरे" ान ऑफ इंडिया लिमिटेड (पी.जी.सी.आई.एल.) और बांग्लादे" ा पावर डिवलपमेंट बोर्ड (बी.पी.डी.बी.) ने 26 जुलाई 2010 को ढाका में एक 35 वर्शीय पावर सम्प्रेशण करार पर हस्ताक्षर किये। इग्लैंड वाटर ट्रांजिट एण्ड ट्रेड संबंधी प्रोटोकाल के तहत स्थाई समिति की 12 वीं बैठक अगस्त में ढाका में आयोजित की गई। ने" ानल थर्मल पावर कारपारे" ान (एन.टी.पी.सी.) और बांग्लादे" ा पावर डिवलपमेंट (बी.पी.डी.बी.) ने 30 अगस्त को संयुक्त उद्यम के तहत चिटगांव और खुकना में 1,320 मेगावाट के दो कोल फायर्ड पावर प्लांट स्थापित करने हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षकर किये। भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.) के दल ने बांग्लादे" ा मानक जांच संस्थान (बी.एस.टी.टी.) के खाद्य जांच प्रयोग" ाालाओं और सीमेंट जांच प्रयोग" ाालाओं के उनयन के संबंध में अगस्त में ढ़ाका की यात्रा की। 30 नवम्बर, 2010 को बांग्लादे" ा सरकार ने त्रिपुरा में पलटाक पावर प्रोजेक्ट के लिए आ" ाुगंज के माध्यम से आवेर डाइमे" ानल कंसाइनमेंट्स की ट्रांस–ि" ापमेंट की अनुमति के लिए ओ.एन.जी.सी. के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

11 मार्च, 2010 को ढाका में इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र (आई.जी.सी.सी.) की स्थापना के प" चात दोनों दे" ाों के बीच सांस्कृतिक कार्यकलापों में ओर तेजी आई है। कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं जिसमें पुस्तक विमोचन, चित्रकला प्रतियोगिता, नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम विशे" ा रूप से भारतीय फिल्में दिखाना और कला प्रद" ानी और व्याख्यान सहित सभी प्रकार के सांस्कृतिक

कार्यकलाप " ाामिल किये गए हैं। सांस्कृतिक केन्द्र में भारत के ि" ाक्षक योग, नृत्य और " ाास्त्रीय संगीत में कार्य" ाालाएं और प्रि" ाक्षण कार्यक्रम आयोजित करते रहे हैं। वर्श 2010 में गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की 150 वीं वर्शगांठ को संयुक्त रूप से मनाने की तैयारी जारी है। बांग्लादे" ा के कई सहभागियों ने आई.टी.ई.सी. कार्यक्रम और कोलंबो योजना की तकनीकी सहयोग स्कीम के तहत प्रि" ाक्षण पाठ्यक्रमो का लाभ उठाया हैं। मि" ान ने 18 जुलाई को सभी दे" ाों के राश्ट्रकों को ऑन लाईन वीजा आवेदन प्रस्तुत करने की " ाुरूआत की है। बांग्लादे" ा में 26 नवम्बर 3 दिसम्बर 2010 के बीच आंनद जाग्या " ाीर्शक पर भारत महोत्सव का आयोजन किया गया। डा. मु" ाउर रहमान और डा. गोहर रिजवी, बांग्लादे" ा के प्रधानमंत्री के सलाहकारों ने द्विपक्षीय मुद्धो पर चर्चा करने के लिए 22–25 दिसम्बर 2010 को भारत की यात्रा की और जनवरी 2010 में प्रधानमंत्री " ोख हसीना की भारत यात्रा के दौरान जारी संयुक्त विज्ञप्ति में लिये गए निर्णयों के कार्यान्वयन पर अनुवर्ता कार्रवाई की गई।

10 जनवरी 2011 को ढाका में जल संसाधन सचिव स्तरीय बैठक आयोजित की गई। श्री ध्रुव विजय सिंह, सचिव (जल संसाधन) ने दोनो दे" ाो के बीच जल से संबंधित मुद्दो पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लेने के लिए भारतीय ि" ाश्टमंडल का नेतृत्व किया।

वर्श के दौरान भारत और बांग्लादे" ा के बीच सहयोग संवर्धन से संबंधों में प्रगाढता आई तथा सितम्बर 2011 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की बांग्लादे" ा यात्रा के दौरान लिये गए निर्णयों को कार्यान्वित किया गया। श्री प्रणब मुखर्जी तत्कालीन वित मंत्री ने रविन्द्रनाथ टैगोर के 150 वें जन्म दिवस पर वर्श भर चलने वाले संयुक्त समारोहों के समापन समारोह तथा संयुक्त परामर्" ादात्री समिति की बैठक में भाग लेने के लिए 5–6 मई, 2012 को ढाका की यात्रा की। पूर्व विधि एवं न्याय तथा अल्पंसख्यक मामले मंत्री श्री सलमान खु" ार्ीद की अगुवाई में एक ि" ाश्टमंडल ने काजी नजरूल इस्लाम द्वारा विद्रोही के प्रका" ान की 90 वीं वर्शगांठ के संयुक्त समारोह मे भाग लेने के लिए 24–27 मई 2012 को बांग्लादे" ा की यात्रा की।

ग्रामीण विकास तथा पेयजल एवं सफाई मंत्री श्री जयराम रमे" ा ने लोगों के स" ाक्तिकरण एवं विकास पर अंतर्राश्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 4–6 अगस्त 2012 को बांग्लादे" ा की यात्रा की। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने जनसंख्या विकास में सहभागी की 17 वीं वार्शिक बैठक एवं 21 वीं कार्यकारी समीति की बैठक में भाग लेने के लिए 10–12 नवम्बर 2012 को ढाका की यात्रा की। गृहमंत्री श्री सु" ाील कुमार ि" ांदे ने गृह मंत्रियों की चौथी बैठक में भाग लेने के लिए 28–29 जनवरी 2013 को ढाका की यात्रा की और रक्षा राज्य मंत्री श्री एम.एस. पल्लमराजू ने भारतीय स" ास्त्र सेना की ओर से फ्रेन्ड्स ऑफ लिबरे" ान वार एवार्ड प्राप्त करने के वास्ते 25–26 मार्च 2012 को बांग्लादे" ा की यात्रा की।

बांग्लादे" ा से विदे" ा मंत्री डॉ. दीप् मोनी ने रविन्द्रनाथ टैगोर की 150 वीं वर्शगांठ के समापन समारोह और संयुक्त पराम" ार्दात्री आयोग बैठक मे भाग लेने के लिए 4–8 मई 2012 को भारत की यात्रा की। सूचना एवं संस्कृति मंत्री श्री अब्दुल कलाम आजाद ने द्विपक्षीय पराम" ार् तथा क्रम" ाः वि" व भारती वि" वविद्यालय और रविन्द्र भारती वि" वविद्यालय को पदमा और छपोला नौकाएं प्रस्तुत करने के लिए 10–13 सितम्बर 2012 को भारत की यात्रा की। स्थानीय सरकार और ग्रामीण विकास मंत्री श्री सैयद अ" ारफुल इस्लाम ने ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमे" ा के साथ द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा करने हेतु 8–10 नवम्बर 2012 को भारत की यात्रा की और गृहमंत्री डॉ. मुहीउद्दीन खान आलमगीर ने गृह मंत्रीयों की तीसरी बैठक में भाग लेने के लिए 4–9 दिसम्बर 2012 को भारत की यात्रा की।

बांग्लादे" ा में लोकतांत्रिक एवं बहुदलीय राज्य व्यवस्था से जुड़े भारत की जारी क्रियाकलाप के भाग के रूप मे विपक्ष की नेता, बेगम खादिला जिया और जातीय पार्टी अध्यक्ष जनरल एच एम ई" ार्द ने क्रम" ाः 28 अक्टूबर, 3 नवम्बर 2012 तथा 13–18 अगस्त 2012 को भारत की यात्रा की।

भारत–बांग्लादे" ा संयुक्त पराम" ार्दात्री आयोग (जेसीसी) की प्रथम बैठक 7 मई 2012 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। पूर्व विदे" ा मंत्री श्री एस.एम. कृश्णा और बांग्लादे" ा की विदे" ा मंत्री डा. दीपू मोनी ने अपने संबंधित

ि" ाश्ठमंडल का नेतृत्व किया। जेसीसी ने 2011 संयुक्त वक्तव्य और 2010 संयुक्त विज्ञप्ति के क्रियान्वयन में प्रगति की समीक्षा की। जुलाई 2012 में नई दिल्ली मे दिल्ली मे विदे" ा सचिवों के स्तर पर विदे" ा मामलों पर पराम" र्ा किये गए। जेसीसी की दूसरी बैठक 16–17 फरवरी, 2013 को ढाका में आयोजित किये जाने का कार्यक्रम है। जेसीसी की बैठक से पहले 9–11 फरवरी 2013 को विदे" ा सचिव श्री रंजन मथाई ढाका की यात्रा करेंगे। राश्ट्रपति प्रणब मुखर्जी 2–4 मार्च 2013 को बांग्लादे" ा की यात्रा करने वाले है। यह भारत के किसी राश्ट्रपति की अब तक पहली बांग्लादे" ा यात्रा होगी।

गृहमंत्री स्तर पर (फरवरी 2012, दिसम्बर 2012 और जनवरी 2013 पर प्रारम्भिक वार्ता के दौरान गृह सचिव स्तरीय वार्ता (अक्टूबर 2012) में तथा महानिदे" ाक, सीमा सुरक्षा बल और बोर्डर गार्ड आदि बांग्लादे" ा स्तरीय वार्ता (मार्च 2012 और सितम्बर 2012) मे सुरक्षा एवं सीमा प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की गई। भारत और बांग्लादे" ा की स्वापक नियंत्रण एजेंसियों के बीच महानिदे" ाक स्तरीय वार्ता तथा मानव तस्करी पर कार्य बल की दूसरी और तीसरी बैठकें भी आयोजित की गई। जनवरी 2013 में गृहमंत्री श्री सु" ाील कुमार ि" ांदे की बांग्लादे" ा यात्रा के दौरान भारत और बांग्लादे" ा ने प्रत्यर्पण संधि तथा सं" ाोधित यात्रा करार पर हस्ताक्षर किये।

दोनो पक्षों ने फरवरी 2012 आर अक्टूबर 2012 में गंगा जल की मॉनीटरिंग संबंधी संयुक्त समीति की तकनीकी स्तरीय बैठकों के जरिए जल के बंटवारे तथा संबंधित मुद्दों के क्षेत्र मे सहयोग पर चर्चा की। संयुक्त नदी आयोग के तत्वावधान में अगस्त 2012 और फरवरी 2013 में तिपाइमुख जल विद्युत परियोजना पर उप समूह की बैठके आयोजित की गई।

मार्च 2012 और दिसम्बर 2012 मे वाणिज्य सचिव स्तरीय वार्ता जुलाई 2012 में पोत परिवहन सचिव स्तरीय वार्ता, फरवरी 2012 और जनवरी 2013 में विद्युत सचिव स्तरीय वार्ता, अगस्त 2012 मे नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग संबंधी संयुक्त कार्यकारी दल की पहली बैठक और जून 2012 मे सुन्दर बन के रॉयल बंगाल टाइगर के लिए संयुक्त संरक्षण प्रयासों पर वार्ता के माध्यम से व्यापार, वाणिज्य,

सम्पर्क, विद्युत, नवीकरणीय ऊर्जा और रॉयल बंगाल टाईगर के संरक्षण के क्षेत्रों मे सहयोग जारी रहा।[1]

अंतर्दे" ाीय जल परिवहन और व्यापार पर प्रोटोकॉल तथा व्यापार पर द्विपक्षीय करार को क्रम" ाः तीन और दो वर्शो के लिए नवीकृत किया गया। भारत सरकार की 1 बिलियन अमरीकी डॉलर की ऋण श्रृंखला के कार्यान्वयन मे प्रगति हुई। भारत सरकार ने 1 बिलियन अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला को 200 मिलियन अमरीकी डॉलर की अनुदान सहायता मे परिवर्तित करने की घोशणा की।

रक्षा क्षेत्र में निरन्तर आदान–प्रदान के भाग के रूप में वायु सेना अध्यक्ष सर मा" ाल एन.ए.के. ब्राउन और थल सेना अध्यक्ष जनरल विक्रम सिंह ने क्रम" ाः मार्च 2012 और अक्टूबर 2012 मे बांग्लादे" ा की यात्रा की। बांग्लादे" ा के नासेना प्रमुख वाइस एडमिरल जहीरूद्दीन अहमद ने 9–13 जुलाई 2012 को भारत की यात्रा की। भारतीय नौसेनिक जहाज, आईएनएस सुजाता और आईएनएस वरूण ने बांग्लादे" ा की सद्भावना यात्रा की।

बांग्लादे" ा नेतृत्व के साथ विभिन्न स्तरों पर हमारे सतत् एवं पारस्परिक लाभप्रद संवाद और व्यापक भिन्न–भिन्न वर्ग के क्षेत्रों से बातचीत ने बांग्लादे" ा के साथ हमारे संबंधों को मजबूती प्रदान की है। वर्श 2013–14 में द्विपक्षीय सहयोग का मुख्य बिन्दु भारत और बांग्लादे" ा के साथ हस्ताक्षरित करारों, प्रोटोकॉलों और समझौता ज्ञापनों के साथ साथ 2010 की संयुक्त विज्ञप्ति एवं 2011 के संयुक्त वक्तव्य में सहमत पहलों का कार्यान्वयन रहा। इस वर्श के दौरान महत्वपूर्ण कार्यो में अन्य बातों के साथ साथ भारत से बांग्लादे" ा की ओर विद्युत प्रवाह को सुचारू बनाने हेतु ग्रिड इंटरकनेक" ान की स्थापना, अगरतला में इंटीग्रेटेड चैकपोस्ट का उद्घाटन तथा प्रत्यर्पण संधि का अनुसमर्थन भाामिल था।

दोनों दे" ाों के बीच द्विपक्षीय संबंधों की वि" ोशता दोनों ओर से की गई उच्च स्तरीय यात्राएं है। वर्श के दौरान महत्वपूर्ण घटनाक्रमों में दिसम्बर 2014 मे बांग्लादे" ा के राश्ट्रपति की भारत यात्रा, विदे" ा मंत्री की जून 2014 मे सर्वप्रथम विदे" ा यात्रा के रूप मे की गई ढाका यात्रा और अगरतला स्थित बांग्लादे" ा वीजा कार्यालय को सहायक उच्चायुक्त कार्यालय के रूप मे स्तरोन्नत किया जाना भाामिल है।[1] भारत बांग्लादे" ा संबंध सही मायने मे बहुआयामी हो गया है जिसके

तहत व्यापक विशय क्षेत्र भाामिल है जेसे द्वि व्यापार तथा निवे" ा, सुरक्षा, कनेक्टिविटी, सीमा प्रबंधन, जल, विद्युत, पोत–परिवहन, नवीकरणीय ऊर्जा, विकास सहयोग, कला एवं संस्कृति लोगों के बीच आपसी बातचीत, मानव संसाधन विकास आदि भाामिल है। संयुक्त पराम" ादात्री आयोग (जेसीसी) को तीसरी बैठक 20 सितम्बर 2014 को नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमे दोनों दे" ाों के बीच द्विपक्षीय संबंधों से जुडे सभी मुद्दो की पुनरीक्षा की गई। संयुक्त पराम" ादात्री आयोग के दौरान बांग्लादे" ा ने नालंदा वि" वविद्यालय के संबंध में भारत के साथ सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

संदर्भ

1 जैन बी.एम., अन्तर्राश्ट्रीय सम्बंध, राजस्थान हिन्दी ग्रुन्थ अकादमी, जयपुर वर्श 2009 पृ.426

2 फाड़िया बी.एल., अंतर्राश्ट्रीय राजनीति सिद्धान्त एवं समकालीन मुद्दें, साहित्य भवन पब्लिके" ानस (आगरा 2004) पृ. 602

3 रा" ाद हारून, न्यू फेज ऑफ इण्डो–बांग्ला रिले" ान्स, जनवरी, 2010

4 इण्डियन फोरेन अफेयर्स, इण्डिया एण्ड बांग्लादे" ा– ए न्यू फेज इन बाईलेटरल रिले" ान, जून, 2010 वोल्युम 6 नं. 4

5 पियाली दत्ता, इण्डो बांग्लादे" ा रिले" ान्स, इ" यूंज, प्राब्लमस एण्ड रिसेन्ट डवलपमेन्ट सितम्बर, 2010

6 भट्टाचार्य ज्योत्सना जी., इण्डिया बांग्लादे" ा रिले" ान्स फाइडिंग ए वे फारवर्ड, सितम्बर 2012

6 भारत और पडौसी दे" ा – एन्यूअल रिपोर्ट मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स ऑफ एम.ई.ए. 2000/2001

8 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ मिनस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेंयर्स (एम.ई.ए.) 2003

9 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2004

10 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2005/2006

11 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2007/2008

12 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2010/2011

13 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2012/2013

14 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम.ई.ए. 2013/2014

अध्याय–5

भारत–बांग्लादे"ा संबंधों में मुख्य चुनौतियॉ

भारतीय उपमहाद्वीप के लिये वर्श 1947 महान काल विभाजक वर्श साबित हुआ हैं। इस वर्श में भारतीय उपमहाद्वीप में औपनिवे" ाक भाासन की समाप्ति के साथ ही विभाजन और बंटवार की नयी गाथायें लिखी गयी हैं। इसके परिणामस्वरूप यहां वि" व इतिहास में सबसे अधिक " ारणार्थी एवं प्रवास की गतिविधियॉ दर्ज हुई हैं। इस वि" वव्यापी समस्या में दक्षिण ए" ाया के सभी दे" ा जिस प्रकार से उलझे हुये है, वह अव" य एक चिंतनीय पहलू हैं।

राश्ट्रो के समुदाय में बांग्लादे" ा एक नया राज्य है। बांग्लादे" ा के अभ्युदय में भारत की महत्वपर्ण भूमिका रही हैं। बांग्लादे" ा अतीत में भारतीय भू–भाग का ही एक क्षेत्र रहा हैं किन्तु भारत विभाजन की कार्ययोजना के तहत इस क्षेत्र को पाकिस्तान के पूर्वी भाग के रूप में अलग कर दिया गया। बांग्लादे" ा वस्तुतः मोहम्मद अली जिन्ना के द्वि–राश्ट्र सिद्धांत, जिसके तहत भारत से पाकिस्तान अलग राश्ट्र बन सका, का सबसे बड़ा खण्ड़न हैं।

वह इसलिये कि समान धर्म के होते हुये भी बांग्लादे" ा कभी भी पाकिस्तान की संस्कृति, भाशा, खान–पान, रहन–सहन आदि की दृश्टि से करीब नहीं रहा हैं। इस सांस्कृतिक दूरी ने पाकिस्तान के इस भाग के निवासियों की भौगोलिक दूरी को और अधिक बढ़ाया है। सन् 1971 में इस दूरी ने अपना प्रभाव दिखाया और बांग्लादे" ा का पाकिस्तान से स्वतंत्र दे" ा के रूप में अभ्युदय हुआ।[1] बांग्लादे" ा के इस अभ्युदय में भारत का सक्रिय योगदान रहा हैं परन्तु कालांतर में बांग्लादे" ा के " ाासकों द्वारा अपनायी गई नीतियों के चलते दोनो दे" ाों के सम्बन्धो का सामान्य विकास नहीं पाया हैं।

भारत और बंगलादे" ा के मध्य भी स्वतंत्रतापूर्वक खुली सीमाओं के चलते हजारों–लाखों लोगों का आवगन होता रहा हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के कृत्रिम विभाजन की त्रासदी मानवीय प्रवास के रूप में सामने आयी। एक बड़ी संख्या में लोगों ने अपने परम्परागत आश्रय स्थल को छोड़ नये परिवे" ा व क्षेत्र में " ारण लेने हेतु प्रयास करना पड़ा हैं। 1947 के विभाजन के दौरान लगभग 80 लाख हिन्दु ओर सिखों ने पुनः भारत में स्थापित होने के लिये पाकिस्तान से प्रवास किया, इसी प्रकार 60–70 लाख मुसलमानों ने नये–नये पाकिस्तान में स्थापित होने के लिए प्रवास किया हैं।[1] अत्यधिक कश्टकारक मानवीय त्रासदी के जख्मों के बावजूद भी क्षेत्रिय सरकारों और स्थानीय लोगो ने बड़ी ही उदारता से इन प्रवासियों को सहारा दिया हैं। यद्यपि उस समय इन दे" ाों को कोई भी बाह्य सहायता नहीं मिल पायी थी। तब से लेकर आज तक लगभग 350 लाख से 400 लाख तक लोग भारत, पाकिस्तान, बांग्लादे" ा, श्रीलंका, नेपाल तथा भूटान की राश्ट्रीय सीमा रेखा पार कर चुके हैं। भारत द्वारा बांग्लादे" ा के प्रवासियों के रूप में मिला। भारत में ज्ञात एवं अज्ञात रूप से बांग्लादे" ाया का अनवरत आज भी आना जारी है।

बांग्लादे" ा की आजादी की पूर्व संध्या को एक करोड़ से अधिक बांग्लादे" ाी प्रवासी पूर्वी व उत्तर पूर्वी भारत में प्रविश्ट कर गये।[1] इन प्रवासियों के प्रबन्धन का कार्य करना एक विकट समस्या हो गयी। यह प्रबन्धन यद्यपि आज भी जारी हैं। एक से डेढ़ करोड़ लोगो का प्रबन्धन एवं राहत कार्य करना कठिन कार्य हैं। किन्तु " ाीघ्र ही इनमें से अधिका" ातः प्रवासी पुनः एक वर्श के भीतर ही वापिस बांग्लादे" ा चले गय। जनवरी व फरवरी, 1972 के दौरान प्रवासियों के स्वदे" ागमन के प्रयासों पर भारत–बांग्लादे" ा की सरकारों ने काफी बल दिया। उस समय भारत के पूर्वी तथा उत्तर पूर्वी भाग से " ारणार्थियो की स्वदे" ागन हेतु बैलगाड़ी, पैदल, साइकिल, रिक" ाा व ट्रकों में सवार होनें की अनत कतारे देखी जा सकती थी। इन प्रवासियों के मस्तिश्क में सिर्फ एक ही बात थी कि जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी स्वदे" ा पूर्वी बंगाल पहुॅचा जाये। इस दौरान भारत से बांग्लादे" ा जाने वालों का प्रतिदिन का औसत 2,10,000 लोगों का था।[1]

यद्यपि इन बांग्लादे" ा प्रवासियों की संख्या में 1948 से 1960 तक के बारी–बारी से आये, उन लोगों की संख्या सम्मिलित नहीं हैं जो भारत विभाजन के

तुरन्त बाद के पूर्वी पाकिस्तान से भारत आये थे। ऐसे बांग्लादेशियों (पूवी पाकिस्तानी क्षेत्र के निवासियों) को आज भी भारत या बांग्लादेश की नागरिकता प्राप्त नहीं है।[1] यह संख्या लगभग दो लाख के करीब है। यद्यपि लम्बे समय तक इन लोगों के भारत में रहने के कारण इनके नाम मतदाता सूचियों एवं राशन कार्ड आदि में दर्ज हो चुके है, परन्तु वे आज भी भारतीय नागरिक नहीं हैं। इन बांग्लाभाशी शरणार्थियो की आबादी बिहार के चंपारण, भागलपुर, देवधर, साहेबगंज, हजारीबांग, दरभंगा, समस्तीपुर, गोपालगंज, किशनगंज,रांची, सहरसा, कटिहार, सीतामढ़ी और मुजफ्रपुर में फैलाव हैं। इन्हें आज भी राज्यविहोन लोगों की श्रैणी में माना जाता हैं।[1]

दक्षिण एशियाई क्षेत्र जो कि शरणार्थी उत्पादक के रूप में जाना हैं, में सभी देशों में धर्म, जाति, राजनीतिक आधिपत्य व मनोवैज्ञानिक रूप से अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यकों के विचित्र सामुदायिक आकड़े सामने आते हैं। इस आकड़ो के खेल का सबसे अच्छा उदाहरण बांग्लादेश के स्वतंत्रता युद्ध के बाद शासन वर्ग की नीतियों में मिल सकता हैं। प्रशासनिक स्वायत्तता के नाम पर चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तनो को बढ़ावा दिया गया। इसका स्थानीय लोगों ने विरोध किया तो बांग्लादेश सरकार ने बलपूर्वक इन्हें दबान का प्रयास किया। परिणामतः सुरक्षित भारतीय सीमा में चकमा लोगों का पलायन होने लगा। 1947 में चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र से भारत में पलायान करने वलों का प्रतिशत 11.6 था। जो कि 1991 में 48.5 हो गया। वर्तमान बांग्लादेश के चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र के चकमा बौद्ध अनुसूचित जातियों ब्रिटिश काल से ही स्वायत्ता एवं विकास के लिये संघर्श करती रही हैं। इनका असंतोश बांग्लादेश सरकार की कॉप्ते बौद्ध परियोजना के समय (1952–62) और अधिक बढ़ गया। पूर्वी पाकिस्तान की सरकार द्वारा लगभग 1,00,000 चकमाओं की जमीनों को अधिगृहीत कर लिया गया, जिसमें 54,000 एकड़ कृशि भूमि थी। इस समय 40,000 से अधिक चकमा भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में भागकर चले आये।

1964 में एक विशेश आदेश द्वारा इस पहाड़ी क्षेत्र में प्रशासन का विस्तार किया गया। ब्रिटिश शासन काल के समान ही पूर्वी पाकिस्तान के प्रशासन ने आदिवासी पहाड़ियों को भगाने का ही कार्य किया। 1972 में बांग्लादेश के अभ्युदय के बाद प्रधानमंत्री बने शेख मुजीबुर रहमान ने इस क्षेत्र की बढ़ती स्वायत्ता की

मांग को समाप्त करने के उद्धे" य से इन अनुसुचित बौद्ध जनजातियों को बंगाली घोशित कर दिया। इससे इनकी पृथक पहचान का एक गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया। इनके बौद्ध धर्मावलम्बी होनें के नाते यह भय सताने लगा कि इनका मुसलमानीकरण किया जा सकता हैं। यद्यपि इसके प" चात्वर्ती विकास में बांग्लादे" ा सरकार द्वारा इन चकमा अल्पसंख्यकों चिटगॉव पहाड़ी क्षेत्र के कोमिल्ला, नोखाली, रिसाल और पतौरवाली क्षेत्रों में जिला मुख्यालय स्थापित करने के कार्य भी किये। इसके अलावा इन्हें जमीने भी पुनः वितरित की गयी और इस हेत् सेना को भी स्थापित किया गया।

किन्तु इन सबके परिणामस्वरूप चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र की जातीय गणित म बड़ा और तीक्षण परिवर्तन आया। 1971 में चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र में पहाड़ी लोगों का प्रति" ात 90 ही रह गया।[1] जबकि यहॉ 1872 में इनका 98.26 प्रति" ात भाग था। यह गणित कालांतर में भंयकर रूप से बदलकर 1971 में मात्र 51.5 प्रति" ात ही रह गया और इस क्षेत्र में 48 प्रति" ात बंगालियों का अधिपत्य हो गया। इससे चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र की भूमि पर दबाव बढ़ा तथा यहॉ के मौलिक निवासियों के म्लभूत अधिकारो का हनन बढ़ गया। इस क्षेत्र के निवासियों को आय के परम्परागत स्त्रोतों से वंचित होना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप चकमाओं की भाांति वाहिनी और सरकारी सेनाओं के बीच भयकंर संघर्श छिड़ गया। 1980 में करवैली, 1986 में दिवान बाजार तथा 1992 में लोगो में भीशण नरसंहार हुये। बांग्लादे" ा में सैनिक ताना" ाही के 1980 में उदय के परिणामस्वरूप जनरल इर" ााद ने इन समस्या का सैन्य हल ढूंढने का प्रयास किया जिसके चलते चकमाओं का भारी संख्या में भारत के त्रिपुरा राज्य में पलायन होने लगा। यद्यपि 12–13 वर्श बाद इस समस्या का समाधान हो पाया हैं किन्तु भारत को अनाव" यक ही लगभग 60,000 चकमाओं का बोझ एक द" ाक से अधिक समय तक उठाना पड़ा हैं।

भारत में बांग्लादे" ा नागरिकों के पलायन की यह तो एक घटना वि" ाश हैं। इसक अलावा भारत में बांग्लादे" ा के लाखों अवैध प्रवासियों की ज्ञात एवं अज्ञात रूप में रह रही ह। भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृश्ण आडवाणी के अनुसार भारत में इस समय 1.5 करोड़ बांग्लादे" ाी रह रहे ह। यद्यपि दुनिया में करीब 50 दे" ा ऐसे जिनकी कुल आबादी 1.5 करोड़ से ही कम हैं। भारत में अवैध

रूप से बांग्लादे" ा के लोगों का आना 1971 से ही लगातार जारी है। एक बार कोई यहॉ आ जाता हैं तो उसकी पहचान करना बहुत मु" कल कार्य हैं। बांग्लादे" ाी भी भारतीयों की तरह देखने में, भाशा बोलने में और रहन–सहन की दृश्टि से एक जैसे लगते हैं यहॉ आने के बाद यहीं इधर–उधर राज्यों में प्रवास कर जन–जीवन में सरलता से घुल–मिल जाते हैं। इसके अलावा वे यहॉ आसानी से रा" ान कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और पासपोर्ट तक हासिल कर लेते हैं। ऐसे अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासी दे" ा के कई हिस्सों में बसे हैं। इनके प्रवास के मुख्य केन्द्र प्रायः दे" ा के महानगर होते हैं।

इस प्रकार भारत और बांग्लादे" ा के मध्य वैध एवं अवैध प्रवासियों का मुद्धा एक अहम समस्या हैं। उधर बांग्लादे" ा की सरकार भारत में बांग्लादे" ा के प्रवासियों की घटना को सही नहीं मानती हैं। उनके अनुसार भारत में बांग्लादे" ा का एक भी प्रवासी अवैध रूप से नहीं रह रहा हैं। बल्कि भारत में यह आरोप लगाया जाता रहा है कि भारत बांग्लाभाशी मुसलमानों को बांग्लादे" ा में बसाने का ' ाड़यंत्र कर रहा हैं। उनके अनुसार यह सम्भव नहीं है कि दो करोड़ बांग्लादे" ाी भारत में घुसपैठ कर जायें और भारतीय सुरक्षा तंत्र चुपचाप बैठा रहें।

इस प्रकार भारत में वैध और अवैध रूप से प्रवासियों का लगातार आना–जाना रहा हैं। बांग्लादे" ा के साथ प्रवासियों की समस्या वि" ोश कर चकमा " ारणार्थी समस्या के वि" लेशण क लिये उसके इतिहास पर दृश्टिपात करना समीचीन होगा।

चकमा समस्याः ऐतिहासिक पृश्ठभूमि–

बांग्लादे" ा के दक्षिण पूर्वी भाग में भारत और म्यामार की सीमाओं से जुड़ा हुआ चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र 13,295 वर्ग किलोमीटर तक फैला हैं। यह क्षेत्र साइनों–तिब्बत मूल को 14 जनजातियों का गृह क्षेत्र हैं। पूर्वी बंगाल की चटगांव पहाड़ियों के मूल निवासी चकमा प्रजाति के लोग स्वयं को जम्मा कहलाना अधिक पंसद करते हैं। चकमा मूलतः बौद्ध आदिवासी जनजाति हैं। यह दस गोत्र समूहों में विभक्त ह। यह जुम्मा जनजातीय समूह बांग्लादे" ा की बहुसंख्यक मुस्लिम जनता से अपनी भाशा, धर्म, प्रजाती, सामाजिक संरचना और आर्थिक संव्यवहारों की दृश्टि से पूर्णतया पृथक है। इस क्षेत्र मे 1951 की जनगणना के अनुसार बांगलियों का मात्र

9 प्रति" ात भाग ही रहता था जो कि 1991 में बढ़कर 49 प्रति" ात हो गया। यही नहीं इस दौरान इस पहाड़ी क्षेत्र के मूल निवासियों का मुस्लिम जनसंख्या के बसावट, भूमि से बेदखली, सांस्कृतिक भाोशण एवं प्रजातीय भेदभाव झेलना पड़ा हैं। बांग्लादे" ा की सरकार से इस क्षेत्र के लोग अपनी स्वायत्ता और पृथक पहचान के लिये दो द" ाक से अधिक समय से संघर्श कर रहे हैं।

बांग्लादे" ा के निर्माण से पूर्व चिटगांव पहाड़ियों के क्षेत्र को ब्रिटि" ा " ाासन द्वारा बनाये गये चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र अधिनियम, 1900 का वैधानिक संरक्षण मिला हुआ था। इस अधिनियम में मैदानी लोगों को चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र में प्रवे" ा करने तथा वहां निवास करने पर रोक लगायी गयी थी।

यद्यपि इस ब्रिटि" ा अधिनियम को पूर्वी पाकिस्तान की सरकार भी मान्यता प्रदान करती रही किन्तु इस क्षेत्र में पन बिजली के कई महत्वपूर्ण स्त्रोत होने के कारण कालंतर में पूर्वी पाकिस्तान की सरकार ने यहॉ पर बसने सम्बन्धी रोक को हटा लिया। इस क्षेत्र म काप्टाई बांध के निर्माण के समय 1962 में जुम्मा लोगो की 54,000 वर्ग किमी भूमि का अधिगृहित कर लिया गया। इससे लगभग 1,00,000 लोग विस्थापित हो गये और लगभग 64,000 लोग भागकर भारत के अरूणाचल प्रदे" ा राज्य में आ गये। यद्यपि ब्रिटि" ा " ाासन काल में, एक आर जहॉ, चिटगांव क्षेत्र में गैर जनजातीय लोगों का निवास वर्जित थ, वहीं दूसरी और, मोंग, बोमोंग और चकमा इन तीन क्षेत्रों में विभाजित चिटगांव जिले के विभिन्न जन जातीय समूहों को स्वायत्तत्ता भी प्राप्त थी। द" ा के विभाजन के समय 6 लाख बौद्ध चकमाओं ने भारत संघ में " ाामिल होने की इच्छा भी व्यक्त की और भारतीय नेताओं ने उनकी सुरक्षा का वायदा भी किया था। लेकिन भारत अपनी पि" चमी सीमा के सामरिक महत्व के क्षेत्रों फिरोजपुर और अबोहर–फाजिल्का को भो छोड़ना नहीं चाहता था। चकमाओं से सीमा निर्धारण पर रेडक्लिफ आयोग के निर्णय का इन्तजार करने के लिए कहा गया। लार्ड माउंटबेटन, मुख्य अधिकारी लार्ड रेमसे व सीमा आयुक्त रेडक्लिफ ने चकमाओं के साथ छल करते हुए फिरोजपुर और अबोहर फाजिल्का भारत को दे दिये तथा चिटगांव पवर्ततीय क्षेत्र को पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादे" ा) को दे दिया। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस सम्पूर्ण कार्यवाही में चकमा आदिवासियों को भारत या पाकिस्तान में मिलने के प्र" न पर

आत्मनिणय की कोई स्वतंत्रता नहीं दी गयी। इस प्रकार, यहीं से दो दे" ाों के सामरिक और भौगोलिक हितों की बलि चढ़ाए गए चकमाओं के भाौशण, उत्पीड़न, बलात्कार व हत्याओं का सिलसिला आरम्भ हो गया।

वर्श 1964 से 1971 के बीच पूर्वी पाकिस्तान की सरकार ने ब्रिटि" ा अधिनियम में पहला स" ाोधन किया कि अब चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र मेंग गैर पहाड़ियों को भी बसाया जा सकता हैं। बांग्लादे" ा के अभ्युदय ने इस समस्या को और अधिक बढ़ा दिया। कारण यह कि बांग्लादे" ा का अभ्युदय बंगाली राश्ट्रवाद की जिस चेतना के फलस्वरूप हुआ, उसकी अभिव्यक्ति वहॉ के संविधान में भी हुई। बांग्लादे" ा के संविधान के अनुसार बंगाली ही बांग्लाद" ा के नागरिकता का प्रमाण होगा। इससे चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र के लोगों की पहचान का ही संकट खड़ा हो गया। बांग्लादे" ा में अपनी पहचान को प्रकट करने के लिये संघर्श का रास्ता अपनाया। इस रास्ते पर चलने वाले संगठन बने पर्वतीय जन सम्भाती समिति (पी. सी.जे.एस.एस.) चिटगांव हिल ट्रेक्ट सोलिडेरिटी ए" ाोसिये" ान तथा इनका स" ास्त्र संगठन " ांति वाहिनी को 1972 में गठित किया गया।

प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण इस दुर्गम चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र की स्वायत्तत्ता बांग्लादे" ाो " ाासकों को रास नहीं आई और सरकार ने लगभग 4,00,000 बंगालियों को इस क्षेत्र में बसाने की योजना को कार्यरूप देना " ुरू कर दिया । इसकी देखरेख के लिये बांग्लादे" ा की सरकार ने अपनी आधे से अधिक सेना को भी चटगांव पहाड़ी क्षेत्र में भेज दिया। जनसंख्या परिवर्तन सम्बन्धी (गैर–जनजातीय लोगों का आगमन) आंकड़े भी इस स्थिति को स्पश्ट करने में सक्षम हैं। चिटगाव वि" वविद्यालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार 1951 में चिटगांव क्षेत्र की आदिवासी जनसंख्या 90 प्रति" ात से घट कर 58 प्रति" ात रह गयी। एक और जहॉ, 1957 में चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र में गैर–मुस्लिमों की जनसंख्या 98 प्रति" ात थी, वहीं दूसरी ओर वर्तमान में यह लगभग 50 प्रति" ात हो गयी हैं। बांग्लादे" ा के जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़े भी मुस्लिमों द्वारा चकमाओं की विस्थापन प्रक्रिया की पुश्टि करते हैं। चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र जुम्मा " ारणार्थी कल्याण संघ द्वारा प्रस्तुत आंकड़ो के अनुसार 1954 में चकमाओं की जनसंख्या 2,39,783 (चकमा पर्वतीय क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 97 प्रति" ात) थी, जो कि 1991 में बढ़कर सिर्फ 5,50,500 (चकमा

पर्वतीय क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 54.50 प्रति" ात) हो गयी। जबकि, मुस्लिम जनसंख्या 1941 में 4,51,500 (चकमा पर्वतीय क्षेत्र की कुल जनंसख्या का 2.9 प्रति" ात) से बढ़कर 1991 में 4,51,500 (चकमा पर्वतीय क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 45 प्रति" ात) हो गयी। इस प्रकार 1964 में बांग्लादे" ा " ाासकों ने इस क्षेत्र की स्वायत्ता समाप्त करके, यहां गैर–आदिवासी लोगों को बसाने व आदिवासिया को हटाने की नीतियॉ अपनाई। 1975 में " ोख मुजीबुर्रहमान के निधन के बाद की बांग्लादे" ा सरकारो ने चकमा आदिवासियों के प्रति अत्यंत अमानवीय तरीकों को प्रयोग किया। बांग्लादे" ाो सेना ने दमन–चक्र चलाकर बड़े पैमाने पर जंगलो और पारंपरिक निवासों से चकमाओं को भारत के पूर्वोतर राज्यों की ओर पलायन करने पर मजबूर कर दिया। इसके साथ ही इस मामले के राजनोतिक हल का भी दिखावा किया गया। 1987 में जनरल इर" ाद ने पहली बार बातचीत द्वारा मामले के हल निकालने का प्रयास किय। यद्यपि इन बातचीत के छः दौर से भी काई निश्कर्श नहीं निकल सका। बांग्लादे" ा सरकार चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र को सीमित स्वायत्ता देने को ही राजी हुइ, जो कि चकमा लोगों को स्वीकार्य नहीं था। इस प्रकार पुनः इस क्षेत्र में संघश की स्थिति बनी रही।

चकमाओ का भारत की ओर पलायन–

इस प्रकार आजादी के बाद चकमाओं को एक सुनियोजित नीति के अन्तर्गत बांग्लादे" ाो " ाासकों ने विस्थापित किया है। पाकिस्तान की तत्कालीन पूर्वी बंगाल सरकार द्वारा 1963 तक चिटगांव पहाड़ियों का वि" ाश दर्जा समाप्त कर देने के बाद गैर–मुस्लिमों द्वारा चकमाओं पर बर्बर जुल्म ढाये गये। इस्लामी कट्टरपन के ि" ाकार ये चकमा " ारणार्थी बनकर 1963 में पहली खेप के रूप में भारत आए । 1975 में " ोख मुजीब की हत्या के बाद यातनाओं, बलात्कारों व आगजनियों के ि" ाकार चकमा " ारणार्थियों का प्रवाह त्रिपुरा की ओर हो गया। 1978 में हजारो की संख्या में " ारणार्थी त्रिपुरा पहुंचे, जिन्हें अरूणाचल प्रदे" ा के तिराप जिले के मिमाओं नामक स्थान तथा मिजोरम के कुछ स्थानो पर ि" ाविरों मे ठहराया गया।[1] 1985 में बांग्लादे" ा सरकार के साथ एक समझौतें के अनुसार, कुछ चकमा " ारणार्थी अपने गृह क्षेत्र चिटगांव पहाड़ियों में वापस चले गए, लेकिन उनकी पु" तैनी जमीनों पर बांग्लादे" ाी मुसलमानों का कब्जा हो गया था। बांग्लादे" ा

सरकार ने अपने आ" वासनों से मुॅह फेर लिया।[1] तत्कालीन जनरल इर" ाद सरकार के बढ़ते आत्याचारों से विव" ा हो 1986 में निःसहायक " ारणार्थी पुनः त्रिपुरा के " ारणार्थी ि" ाविरों में आ गए। उस वक्त उन्हें त्रिपुरा के " ारणाथी ि" ाविरो तकुम्बारी, काथलचारी,पंचाराम, पांडा, काबुक, सिलाचारी व लेवचारा में रखा गया। ये " ारणार्थी तब से ही वहीं टिके हुए हैं। यहॉ इनकी सख्या लगभग 56 हजार से अधिक थी।[1]

चकमाओं की मांगे–

एक ओर जहां, भारत व बांग्लादे" ा की सरकारें अपने आधे–अधुरे प्रयासों के चलते चकमा समस्या के समाधान का ढ़िढोरा पीटने लगी, तो दूसरी ओर 8 जून 1993 को दक्षिण त्रिपुरा में रह रहे चकमा " ारणार्थियों के नेताओं ने सिर्फ मौखिक आ" वासनों पर वापस लौटने से इनकार कर दिया। चकमा " ारणार्थियों के नेता बांग्लादे" ा के पूर्व सांसद उपेन्द्रलाल चकमा के अनुसार 1981 और 1984 में चकमाओं की वापसी पर किए गये नरसंहार के कारण चकमा अपनी सुरक्षा के प्रति आ" ाकित हैं। पिछले एक द" ाक में बांग्लादे" ा की सेना ने लगभग तीन हजार चकमाओं का संहार किया हैं तथा चिटगांव पहाड़ियों के पचास गांवो के एक लाख भूमिहीन आदिवासियों को उनके लोकतांत्रिक व संवैधानिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा हैं।

मई 1993 को बांग्लादे" ा के संचार मंत्री अली अहमद को " ारणार्थीयो ने 13 सूत्री मांग पत्र दिया। ज्ञातव्य हैं कि इन मांगो को चकमा " ारणार्थी अपने विस्थापन के समय से ही उठाते आए हैं। पर्वतीय चिटगांव जन संघर्श समिति और उसके स" ास्त्र गुट " ांति वाहिनी ने इस मांग पत्र को तैयार किया हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि चकमाओं की " ांति वाहिनी पिछले 19 वर्श से बांग्लादे" ा सेना से स" ास्त्र संघर्श में लगी हैं। 13 सूत्री मांगो में मुख्यतः निम्न हैंः–

- चटगांव से सेना व अर्द्ध सैनिक बलों की वापसी होनी चाहिये।
- चटगांव पहाड़ी क्षेत्रों में बसाये गैर–चकमाओं को वापस भेजना।
- चटगांव पहाड़ियों की स्वायत्ता को पुनः बहाल करना।
- चकमाआ की पैतृक संपत्ति वापस लौटाना।

- बंगलादे" ा लौटने पर चकमा " ारणार्थियों की सरक्षा व पुनर्वास की व्यवस्था करना।
- इस क्षेत्र के प्राकृतिक सं" ाधनो पर चकमाओं का स्वामित्व हो तथा उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक प्रयोग करने दिया जाये।
- तथा जो भी समझौता हो, उसमें बांग्लादे" ा, संयुक्त राश्ट्रसंघ व चकमा जन समितियॉ " ामिल हों आदि।

चकमाओ ने भारत, संयुक्त राश्ट्र संघ व अन्य अर्न्तराश्ट्रीय संगठनों से भी अपील की है कि वे बांग्लादे" ा सरकार पर उनकी तेरह सूत्रीय मांगो को मानने के लिए दबाव डालें।[1]

भारत–बांग्लादे"ा प्रयास–

भारत में इस समस्या की ओर सर्व प्रथम 1978 में त्रिपुरा सरकार द्वारा केन्द्र का ध्यान आकृश्ट किया गया। बाद में पं" चम बंगाल सरकार द्वारा भी 1979 में केन्द्र द्वारा चकमा प्रवासियों की घर वापसी के लिये बांग्लादे" ा सरकार से बातचीत करने का आग्रह किया गया। भारत सरकार के प्रयासों एवं दबावों के चलते बांग्लादे" ा सरकार 1981 में समझौते पर राजी हुई। इस समझौते के अनुसार बांग्लादे" ा भारत में रह रहे 17 हजार चकमाओं को वापिस अपने यहॉ लेगा परन्तु इस समझोते में चकमाओं की पुनः स्वदे" ागमन पर कोई विस्तृत सहमति नहीं होनें एवं वर्श 1981 से 1984 के बीच बांग्लादे" ा में चकमाओं पर फिर से अत्याचार की खबरों से भारत में रह रहे चकमा प्रवासियों ने स्वदे" ा गमन से इन्कार कर दिया।

भारत सरकार ने इन प्रवासियों की बांग्लादे" ा वापसो के लिये अपने प्रयास जारी रखें। जनवरी, 1987 में दक्षे" ा बैठक के दौरान तत्कालीन विदे" ा मंत्री नारायण दत्त तिवारी ने बांग्लादे" ा के प्राधिकारियो से बातचीत इस समस्या पर बातचीत की। इस बातचीत के उपरांत बांग्लादे" ा सरकार कुल 29 हजार चकमाओं में से 24 हजार को वापिस लेने को तैयार हो गयी। लेकिन इन प्रवासियों की वास्तविक संख्या पर दोनों दे" ाों के बीच कोई सहमति नहीं हो पाने के कारण इनकी वापसी नहीं हो सकी। इस दौरान भारत में चकमा प्रवासियों की संख्या बढ़कर अप्रेल 1987 में 48000 के लगभग हो गई।

त्रिपुरा में वर्श 1986 से आए हुए चकमा भारणार्थियों की वापसी को लेकर भारत और बांग्लादे" ा के बीच कुल ग्यारह दौर की बातचीत हो चुकी है। बांग्लादे" ा में 1991 में बेगम खालिदा जिया के सत्तारूढ़ होने के प" चात संयुक्त राश्ट्र व अन्तर्राश्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के दबाव के कारण अंततः बांग्लादे" ा चकमाओं को सिद्धान्तः वापस लेने पर सहमत हुआ। मई 1992 में बेगम खालिदा जिया की भारत यात्रा के दौरान दोनो दे" ाों के बीच हुई सहमति ने चकमा " ारणार्थीयो की घर वापसी की उम्मीद जगाई। बातचीत के दौरान हुई सहमति के अनुसार बांग्लादे" ा ने उपलब्ध अभिलेखों व ग्राम प्रधान द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर सभी चकमा " ारणार्थियो को वापस लेने पर सहमति जतायी। इसके अलावा " ारणार्थियों को उनकी गृहभूमि चटगांव पर्वतीय क्षेत्र में वापस दिलाने के लिए हर संभव कदम उठाने का भरोसा देने, वापसी पर रा" ान व घर बनाने के लिए नकद रा" ि ा तथा पुनर्वास के लिए अन्य सामान देने पर भी बांग्लादे" ा द्वारा सहमति व्यक्त की गयो।

बांग्लादे" ा के संचार मंत्री कर्नल अली अहमद ने 8 मई 1993 का 21 सदस्यीय दल के साथ भारत यात्रा के दौरान चकमा समस्या पर विदे" ा राज्य मंत्री सलमान खु" र्ीद के नेतृत्व वाले 11 सदस्यीय भारतीय दल से वार्तायें एवं बैठक आयोजित की। बातचीत के बाद संयुक्त वक्तव्य में दोनो दे" ाो ने 10 मई 1993 से तीस दिन के अन्दर चकमा " ारणार्थिया की वापसी की बात कही थी। 12 मई 1993 को लोकसभा में विदे" ा राज्यमंत्री सलमाद खु" र्ीद ने इस बारे में सूचना भी दी थी।

भारत और बांग्लादे" ा के अधिकारियों के बीच 2 जून 1993 को अगरतल्ला और खगराचारी (चिटगांव) में हुई बातचीत में " ारणार्थियों की वापसी का पहला चरण 8 जून 1993 से " ाुरू करने पर सहमति हुई। सहमति के अनुसार 200 " ारणार्थियो के पहले दल के वापस जाने के प" चात् इतनी ही संख्या में " ारणार्थियों के जत्थे हर दूसरे दिन दोनो दे" ाो के अधिकारियों की निगरानी में कठालचारी ओर सिलाचारी से सीमा पर जायेंगे। 8 जून 1993 को बांग्लादे" ा सरकार ने प्रत्येक " ारणार्थी परिवार को छह महीने तक मुफ्त रा" ान व चिकित्सा सुविधा, जेब खर्च हेतु 5 हजार टका (बांग्लादे" ाो मुद्रा) तथा मकान निर्माण हेतु चार

हजार टका देने की घोशणा की। साथ ही ” ारणार्थियो के स्थायी पुनर्वास से पहले उनके रहने के लिए माटीरंग, ढींगीनाला, तबालचारी, कोठालचारी, रामगढ़ व चिटगांव पर्वतीय क्षेत्रों में कुछ अन्य स्थानों पर अस्थायी ि” ाविरों की स्थापना किये जाने के अलावा पहचान पत्र भी जारी करने की घोशणा की। लेकिन चकमा ” ारणार्थियों की स्वायत्ता बहाल करने के प्र” न पर किसी प्रकार के संकेत नहीं दिये गये।

भारत ने अब तक बांग्लादे” ा से आए 53,405 ” ारणार्थियो की सूची बांग्लादे” ा को सौंप दी है, जिसमें से अभी तक उसने सिर्फ 20 हजार नामों को ही स्वीकार किया हैं। बांग्लादे” ा के अधिकारी 8 जून 1993 को दिन भर फैनी नदी के पास चटगांव की पर्वतीय पट्टी खगराचारो जिले के रामगढ़ में भारत से चकमाओ के प्रथम दल की वापसी की प्रतीक्षा करते रह, लेकिन एक भी ” ारणार्थी वहां नहीं पहुंचा । प्रथम दल के सभी ” ारणार्थी कोठोलचारी ि” ाविर के थे।

इसी प्रकार 10 जून 1993 को दक्षिण त्रिपुरा के ि” ालापछारी ि” ाविर के 200 ” ारणार्थियों के दूसरे दल ने भी वापस चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र लौटने से स्पश्ट इनकार कर दिया। चकमा ” ारणार्थियो की वापसी प्रक्रिया में आए गतिरोध को दूर करने के लिए भारत के विदे” ा मंत्री दिने” ा सिंह और बांग्लादे” ा के विद” ामंत्री मुस्तफीजुर रहमान ने 12 जून 1993 को नई दिल्ली में बातचीत की। बातचीत में हुई सहमति के अनुसार, ” ारणार्थियो का छह सदस्यीय ि” ाश्टमंडल ” ाीघ्र ही चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र का दौरा करके पुनर्वास प्रबंधो से यदि उक्त ि” ाश्टमंडल संतुश्ट हो गया तो चकमाओं को वापसी प्रक्रिया आरम्भ हो जाएगी।

चकमा ” ारणार्थियों की स्वदे” ा वापसी योजना के असफल हो जाते है एक ओर जहॉ चकमाओं का भविश्य अनिि” चत्ता व आ” ांकाओं के मकड़जाल में उलझ कर रह गया हैं, वहीं दूसरी ओर, इन घटनाओं ने समस्या के प्रति भारत व बांग्लादे” ा सरकारों के आधे–अधूरे मन से किए गये प्रयासों को उजागर कर दिया हैं। वास्तव में देखा जाए तो, चकमा ” ारणार्थी यदि अपनी 13 सूत्री मांगो को मानने के लिए बांग्लादे” ा से लिखित आ” वासन चाहते हैं, ता इसमें कुछ भी अनुचित नहीं हैं। यहॉ उल्लेखनीय है कि चिटगांव पहाड़ियो में चकमा आदिवासियों की जमीन–जायदाद पर अधिकार जमाए बैठे गैर चकमा मैदानी लोगों व मुस्लिमों को

अभी तक न तो हटाया गया है और न ही बांग्लादे" । सरकार ने सैनिक व अर्द्धसैनिक बलो को ही वापस बुलाया हैं। आर्थिक रूप से निर्धनता के दुश्चक्र में फंसे बांग्लादे" । द्वारा आर्थिक सहायता की घोशणा पर चकमाओं द्वारा वि" वास न कर पाना स्वाभाविक है, क्योंकि 1984 में वापस अपने घरों को लौटने का हश्र वे भोग चुके हैं। चकमाओं के पलायन के कारण पूरे चटगांव क्षेत्र में मैदानी गैर जनजातीय मुसलमानों को बसन के लिए प्रोत्साहित किया गया है। चकमा भारणार्थियों की वापसी पर दिखावे के लिए सहमति व्यक्त कर चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र में चकमाओं के पलायन की परिस्थितियों को पूर्ववत बनाए रखना बांग्लादे" । के नेक इरादों के प्रति संदेह उत्पन्न करता है।

चकमा " ारणार्थियों के कारण भारत पर आर्थिक बोझ पड़ने के साथ ही त्रिपुरा में अनेक सामाजिक समस्याएं भी उत्पन्न हो गयी हैं। एक अनुमान के अनुसार पिछले सात वर्शो के दौरान चकमा " ारणार्थियों पर प्रतिवर्श 5 करोड़ 75 लाख रूपये खर्च किए जाते रहे हैं। इन परिस्थितियों में भारत सरकार के लिए आव" यक हो जाता है कि वह दृढ़तापूर्वक बांग्लादे" । सरकार से चकमाओं की वापसी हेतु चिटगांव पर्वतीय क्षेत्र में आस्था, वि" वास व सद्भाव पैदा करने वाली परिस्थितियां बनाने के प्रयास किये जाने की आव" यकता पर बल दे। आव" यकता इस बात की है कि अन्यायग्रस्त चकमाओ को न्याय दिलाया जाये। जब तक चकमा " ारणार्थीयो की 13 सूत्री मांगो को अनदेखा किया जाता रहेगा, तब तक उनको न्याय मिलने की कोई संभावना नहीं है। चिटगांव पहाड़ियों में गैर चकमाओं की उपस्थिति में इन " ारणार्थियों को वहां वापस भेजा जाना घोर अनैतिक व अमानवीय कृत्य होगा।

चिटगांव पहाड़ियों में जारी मानवाधिकारा के हनन को देखते हुए अन्तर्राश्ट्रीय एमनेस्टी (मानवाधिकार) जैसी संस्थाओं को आगे आना चाहिए। क" मीर में मानवाधिकारों के हनन की बात प्रचारित करने वाली अन्तर्राश्ट्रीय संस्थाओं को इन आदिवासियों की सर्वाधिक दुर्गति का दिखाई न देना आ" चर्यजनक लगता है। स्पश्ट रूप में देखा जाए तो बांग्लादे" ाी मुसलमानों के अवैधानिक भारत प्रवे" । व गैर–मुस्लिम चकमाओं की " ारणार्थी द" ाा को एक समान मानना किसी भी दृश्टि से उचित नहीं होगा। हाल के घटनाक्रम से इस बात में तो ले" ामात्र भी सं" ाय

नहीं रहा है कि चकमा ” ारणार्थी पूर्णतः आ” वस्त होने के बाद ही अपने घरो को लौटने के प्रति दृढ़ ह। संयुक्त राश्ट्र महासचिव बुरतस घाली से इस वापसी प्रक्रिया में हस्तक्षेप कर उस पर रोक लगाने की ” ारणार्थियो की मांग भी इसी तथ्य को उजागर करती है।

भारत सरकार तथा बांग्लादे” ा सरकार के बीच मार्च 09, 1997 को त्रिपुरा में एक समझौता हुआ जिसमें यह सहमति बनी कि भारत के त्रिपुरा राज्य में रह रहें 50,000 चकमा प्रवासियों को बांग्लादे” ा वापस लेगा। इसी तरह का भारत के लगातार दबाव के चलते बांग्लादे” ा सरकार ने संसद के सभी दलों वि” ाशकर बी. एन.पी. और आवामी लीग तथा पी.सी.जे.एस.एस. के मध्य लगातार वर्ताओ के कई दौर चले। इन सबका परिणाम दिसम्बर 02,1997 को सामने आया जब बांग्लादे” ा की प्रधानमंत्री ” ाख हसीना और वार्ताओ को राश्ट्रीय समिति तथा पी.सी.जे.एस.एस. के बीच महत्वपूर्ण ” ाांति समझौता सम्पन्न हुआ। यद्यपि इन वार्ताओ से बी.एन.पी. अचानक ही बीच में बाहर हो गयी थी।

चकमा ”ाान्ति समझौता–

चकमाओं के साथ हुये ” ाान्ति पहल और समझौतें का वैसे तो सभी ने स्वागत किया हैं सिवाय बांग्लादे” ा ने” ालिस्ट पार्टी जो कि संसद में पमुख विपक्षी दल है जिसकी नेत्री बेगम खालिदा जिया के जिन्होने इस समझौते का विरोध किया है। यद्यपि बांग्लादे” ा ने” ालिस्ट पार्टी स्वयं इन वार्ताओं के 13 महत्वपूर्ण दौर में सहभागी रही हैं। बाद में इस समझौतें को कम्प्रोमाइज कहते हुये विरोध स्वरूप इससे अपने को अलग कर लिया है। इसी प्रकार ढाका में भी कुछ नवयुवक एवं नवयुवतीयों को इसका विरोध करते देखा गया। इस समझौते को अपर्याप्त बताकर इसका विरोध किया गया। इस समझौते का विरोध करने वालों में पहाड़ी गांव परिशद पहाड़ी छात्र परिशद,और हिल वूमेन फेडरे” ान भी ” ाामिल है। इनके अनुसार इस ” ान्ति समझौते द्वारा असफल बताया गया क्योंकि इस समझौतें में चिटगांव पहाडी क्षेत्र की मूलभूत आ” ाओं को पूरा नही किया गया। समझौतें में चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र के जुम्मा लोगों को संवैधानिक दर्जे और दे” ा के जातीय अल्पसंख्यक का दर्जा नहीं दिया गया है। इसक अलावा इस क्षेत्र की पूर्ण स्वायत्त,

भूमि अधिकारों की बहाली,इस क्षेत्र के विसैन्यीकरण तथा इस क्षेत्र से बंगालियों को पुनः हटानें को प्रक्रिया का कोई उल्लेख नही है।

इस प्रकार विरोध के बावजूद समझौतें को क्रियान्वित करने के लिये मार्च 21, मई,17, अगस्त,7 तथा नवम्बर,2,1998 को जनजातीय प्राधिकारियों से बांग्लादे" ा सरकार की बैंठकें आयोजित की गई। परन्तु इन बैठकों म किसी ठोस निर्णय पर नहीं पहुचा जा सका। अतः इन बैठको की कायसूची को भी दर्ज नहीं किया गया।

चकमा " ाान्ति समझौतें की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही कि चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र के लिये एक क्षेत्रिय परिशद की स्थापना की जायेगी। यह इस क्षेत्र के तीन पहाड़ी जिलों की स्थानीय सरकार की तरह से कार्य करेगी। इस परिशद के 22 सदस्यों का चुनाव इन तीन जिलों के लोग पांच वर्शो के लिये चुनेगे। इसके अलावा 14 अन्य आदिवासी सदस्य भी होगें जिनमें दो महिलायें भी होगी। इस परिशद का अध्यक्ष जनजातीय समुदाय का ही सदस्य हो सकेग और इसका स्तर राज्य मंत्री के समान होगा।

इस क्षेत्रिय परिशद का उद्दे" य चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र के लिये एक प्र" ाासनिक और राजनीतिक सत्ता की स्थापना करना होगा। इसके अलावा परिशद को कानून व्यवस्था के पर्यवेक्षण और देख–रेख का अधिकार होगा। सामान्य प्र" ाासनिक मामलों के अलावा परिशद को विकास,परम्परागत कानूनों तथा सामाजिक न्याय की देख–रेख करने की " ाक्ति प्राप्त होगी। महत्वपूर्ण बात यह कि परिशद को इस क्षेत्र में स्थापित किये जाने वाले भारी उद्योग को अनुमति देने का अधिकार भी होगा। यद्यपि इस परिशद को अभी 36 विशयों मे से केवल 31 विशयों के प्रबन्ध की " ाक्तियॉ हस्तान्तरित की जा सकी है।

इस समझौतें की मुख्य बात यह भी है कि इसके द्वारा एक भूमि सम्बन्धी विवादों के निपटारे के लिय एक भूमि आयोग की स्थापना है। इस आयोग को अत्यन्त " ाक्ति" ाली बनाया गया है यहॉ तक कि इसके फैसलों के विरूद्व कहीं भी अपील नही की जा सकती है। यह आयोग " ारणार्थियों की भूमि के स्वामित्व सम्बन्धी विवादों की सुनवाई कर उनक स्वामित्व के बारे में न केवल निर्णय देगा बल्कि " ारणार्थियों क पुनः स्थापन का कार्य भी करेगा। इस आयोग की स्थापना में

यद्यपि ढाई वर्श से अधिक समय लगा परन्तु यह आयोग अप्रेल 06, 2000 को स्थापित हो ही गया। इस आयोग को अन्तिम रूप से नौ सदस्यीय बनाया गया।

इस " ाान्ति समझौंते " ार्तो के अनुसार पी.सी.जे.एस.एस. के स" ास्त्र गुट " ाान्ति वाहिनी के 2000 सदस्यों के हथियारों के समर्पण किया जाना था। यह हथियारों का समपर्ण मार्च 1998 में संभव हुआ और इन समपर्ण कर चुकें सदस्यों ने राश्ट्र की मुख्य धारा में " ाामिल होकर अपना सामान्य जीवन प्रारम्भ कर दिया। इस समझौंते की अन्य " ार्त यह भी थी कि बांग्लादे" ा सरकार सामान्य क्षमादान कर " ाान्तिवाहिनी के सदस्यों पर लगें अभियोग समाप्त कर देगी। " ाान्तिवाहिनी के अभियोजित सदस्यों की सूची बांग्लादे" ा सरकार का सौपनें के बाद सरकार द्वारा 999 मामलों को रद्द कर दिया तथा 461 मामलों को वापिस ले लिया। यद्यपि सैनिक कोर्ट में लम्बित ऐसे मामलों को बांग्लादे" ा सरकार द्वारा न तो रद्द किया गया और न ही वापिस लिया गया है।

जुम्मा " ाान्ति समझौंते के द्वारा ऐसे " ाान्ति वाहिनी के जेल में बन्द सदस्यों को रिहा किया जाना था । ऐसे 1,947 सदस्यों को रिहा होनें पर 50,000 टका दिये गये। इसके अलावा जो जुम्मा जेल जाने से पूर्व " ाासकीय सेवा में थे,उन्हे वापिस ले लिया गया तथा अन्यों को उनकी योग्यतानुसार जैसे 677 को पुलिस में तथा 10 को यातायात व्यवस्था में ले लिया गया।

प्रवासियों का स्वद"ागमन और पुर्नस्थापना–

उपरोक्त " ाान्ति समझौंते द्वारा स्वदे" ा लौटने वाले जुम्मा प्रवासियों को निम्नाकिंत सुविधायें बांग्लादे" ा सरकार द्वारा दी जानी थी–

- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासी परिवार को नकद सहायता के रूप में 15,000 टका दिया जायेगा।
- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासी परिवार के सदस्य को निम्न दर पर रा" ान दिया जायेगा। प्रत्येक वयस्क सदस्य के अनुसार 5 किलो सोयाबीन का तेल, 4 किलो चावल और 2 किलो नमक।
- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासी परिवार को दो पैकट प्रति परिवार टिन" ाीट दी जायेगी।

- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासी परिवार को 8,000 टका बंजर भूमि के विकास हेतु तथा बैल की जोड़ी दी जायेगी।
- भूमिहीन लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासी परिवार को 3,000 टका नगद दिये जायेगें ।
- लौटनें वाले प्रत्येक प्रवासी परिवार के 5,000 टका तक के कृशि ऋण माफ कर दिये जोयगें ।
- ऐसे गैर कृशि ऋणों को भी 5000 टका तक के माफी लायक होगे।
- पूर्व में जुम्माओं द्वारा लिये चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र विकास बोर्ड के ऋणों को भी माफ कर दिया जायेगा।
- अ" ाान्ति के दौरान दर्ज सभी केसों को वापस लिया जायेगा।
- लौटनें वाले प्रत्यक जुम्मा प्रवासीयों की छीनी गयी भूमि उनके मूल मालिको को वापिस कर दी जायेगी।
- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासियों के बच्चों के लिये हाई स्कूल और डिप्लोमा " ोश परीक्षाओं के लिये उपयुक्त व्यवस्था की जायेगी और अधुरी पढ़ायी को पूरा करने की व्यवस्था भी की जायेगी।
- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासियों के लिये भाासकीय सेवाओं में भर्ती के लिये वि" ोश प्रयास किये जायेगें।
- लौटनें वाले प्रत्येक जुम्मा प्रवासियों पर आपराधिक अभियोग पर स्थानीय पंच द्वारा सुनवाई कर माफी दी जा सकेगी।
- इन " ार्तो पर भारत के त्रिपुरा राज्य से जुम्मा " ारणार्थी पुनः स्वदे" ागमन के लिय 64,609 लोगों के आवेदन आये। परन्तु इनमें से 50 प्रति" ात से अधिक लोगा की भूमि और घर–बार पर बांग्लादे" ायों ने कब्जा कर रखा था।

ऐसे में समस्या यह हुई कि इन बांगालियों को किस पकार से पुनः व्यवस्थित किया जाये। इन प्रवासी जुम्मा लोगों के अतिरिक्त बांग्लादे" ा में आंतरिक रूप से विस्थापित जनजातीय पहाड़ियों की संख्या भी लगभग 60,000 थी। इन आंतरिक

रूप से विस्थापितों के पुनस्थापन के बारे में सरकार द्वारा एक समिति का गठन किया गया । किन्तु इस समिति का कोई अधिकार नहीं दिये गये। इन प्रवासियों का क्षेत्रिय परिशद से बातचीत के बाद इन्हे पुर्नस्थापित किया जायेगा। यद्यपि सरकार ने प्रति परिवार दो एकड़ भूमि देनें का नि" चय किया था परन्तु समस्या थी खाली जगह की इसके लिये इस क्षेत्र में एक विस्तृत सर्वेक्षण किया जायेगा।

समझौते की एक अन्य मुख्य बात इस क्षेत्र से सैन्य बलों की वापसी का था। इस क्षेत्र के लिये बनी सहमति के अनुसार " ाान्ति वाहिनी के सदस्यों द्वारा हथियारों के समर्पण के तुरन्त बाद इस क्षेत्र से सेना वापस अपने f" ाविरों में लौट जायेगी। यद्यपि इस हेतु कोई समय सीमा तय नहीं की गयी थी फिर भी इस दौरान ही सेना के 32 f" ाविरों को इस क्षेत्र से हटा लिया गया।

इस समझौतें की वार्ताओं के दौरान समझौता वार्ता केन्द्रीय समिति द्वारा " ाान्ति वाहिनी को यह आ" वासन दिया गया था कि चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र में बसे बंगालियों को इस क्षेत्र से हटा कर मैदानी क्षेत्रों में भेज दिया जायेगा। इस बात की घोशणा बांग्लादे" ा की प्रधानमंत्री " ोख हसीना ने दिसम्बर 2,1997 को कर दी कि इस क्षेत्र से बंगालियों को " ीघ्र ही हटा दिया जायेगा।

यद्यपि बांग्लादे" ा सरकार द्वारा इस बात पर अमल " ाुरू नहीं किया गया इसी के लिये युरोपीयन युनीयन ने एक प्रस्ताव पारित कर बांग्लादे" ा सरकार को इस कार्य हेतु वित्तोय मदद देने का आ" वासन भी दिया है।

इसके अलावा बांग्लादे" ा सरकार द्वारा चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र की भूमि को आदिवासियों हस्तान्तरित करने की दि" ाा में भी ढिलाई बरती जा रही है। समझौतें के दौरान सहमति बनी थी इस क्षेत्र में गैर आदिवासियों को आगे से भूमि का आंवटन नही किया जायेगा और गैर आदिवासियों को आंवटित भूमि वि" ोशकर वह भूमि जिसका अभी तक प्रयोग नही हुआ है के आवंटन को रद्द कर दिया जायेगा।

परन्तु क्षेत्रिय आयुक्त द्वारा अभी विगत दो वर्शो के दौरान भी गैर आदिवासियों और इस क्षेत्र क अनिवासियों को भूमि का आवंटन किया गया है। यद्यपि " ाांति समझौतें के अनुसार इस क्षेत्र की किसी भी प्रकार की भूमि को बिना पहाड़ी क्षेत्र परिशद की अनुमति के बेचा या आवंटन नही किया जा सकता है।

इसके अलावा चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र की वि" ाश्ट सांस्कृतिक प्रणाली की सुरक्षा एवं प्रन्नोनयन के लिये अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाये हैं।

हालांकि इस क्षेत्र के समन्वित विकास के लिये बांग्लादे" ा सरकार द्वारा 2200 करोड़ टका आंवटित किया गया है। किन्तु इस रा" ा के आवंटन का लाभ इस क्षेत्र के मूल आदिवासियों को मिलेगा यह सन्देह से परे नही है। इस क्षेत्र के लिये आंवटन धनरा" ा का अधिकतर भाग बंगाली मूल के अधिकारियों के द्वारा खर्च किया जाना है। ऐसे में यह संभव नही है कि इस धन का प्रयोग आदिवासियों के उत्थान में लगाया जायेगा। एक उदाहरण से यह बात स्पश्ट भी हो जाती है इस क्षेत्र के लिये डिजीटल टेलीफोन प्रणाली को आंवटित किया जाना था इन टेलीफोन प्रणालियों के ज्यादातर भाग इस क्षेत्र के " ाहरी भागों में रहने वाले गैर आदिवासी बंगालियों के घरों में लगाये गये।

इस प्रकार से चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र मे स्थायी और टिकाऊ " ाान्ति की उम्मीदों को बांग्लादे" ा सरकार द्वारा प्राथमिकता नहीं मिल सकी है। यद्यपि भारत से चकमा या जुम्मा प्रवासियों की इस क्षेत्र में पूर्णतया वापसी हो चुकी है। परन्तु अभी भी लोगों को पुर्नस्थापित किया जाना " ाेश है। इनकी भूमि और आवासों को बंगालियों से मुक्त कराना है। इनकी पृथक सांस्कृतिक एवं नागरिक पहचान को सुरक्षित रखना है। इनके मूल मानवीय अधिकारों को बहाल करना है जो कि किसी संवैधानिक प्रत्याभूति के अभाव में भाायद संभव नही है।

अवैध बांग्लादे"ाी प्रवासियों की समस्या–

बांग्लादे" ा और भारत के बीच ही नही बल्कि दक्षिण ए" ाया के सभी दे" ाों में कत्रिम विभाजन के कारण कठोर सीमा रेखाओं के न होने के कारण अवैध प्रवासियों की समस्या से ग्रस्त है। इस क्षेत्र के दे" ाों के मध्य सीमाओं के प्राकृतिक एवं ठोस न होनें के कारण स्पश्टता का भी अभाव है। प्रायः एक दे" ा के लोग सरलता से दूसर दे" ा में दाखिल होते रहें है। एक दे" ा की विशम आंतरिक परिस्थितियों के चलते लोग बड़ी संख्या में भारत जैसे सुरक्षित और समृद्ध आश्रय की ओर उन्मुख होते रहें है। चाहे वह बांग्लादे" ायों का मामला हो चीन के तिब्बतियों का हो या श्रीलंका के तमिलों का हो।

भारत में वि" ोशकर पूर्वोतर राज्यों में बांग्लादे" ा के अभ्युदय के तुरन्त बाद से ही बांग्लादे" ा से आये लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। यह अवैध घुसपैठ के रूप में आज भी जारी ह क्योंकि यह एक अनवरत प्रक्रिया है। भारत द" ाकों से इस समस्या को झेल रहा है परन्तु दे" ा में अवांछित तथा अवैध प्रवासियों को बाहर निकालने की पहल किये जाने पर मानवाधिकार संगठन एवं न्यायिक प्रक्रिया के आड़े आने से समस्या का कोई समाधन नहीं निकल सकता है।

भारत की बांग्लादे" ा के साथ 4,095 किलोमीटर लम्बी सीमा लगती है। इस सीमा में ऐसे असंख्य छिद्र है जिनमें से अवैध प्रवासी भारत में घुसपैठ करते रह है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्श तीन से साढ़े तीन लाख बांग्लादे" ाी भारत में प्रविश्ठ हो रहे है। इसका सबसे बड़ा सबूत बांग्लादे" ा की सीमा से लगते हुये भारतीय क्षेत्र में परिवर्तित जनसंख्या स्वरूप है। भारत के उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री श्री लालकृश्ण आडवाणी के अनुसार भारत में डेढ़ से दो करोड़ बांग्लादे" ाी राश्ट्रीयता के लोग अवैध रूप से रह रहे है। इसके अलावा महत्वपूर्ण बात यह भी है कि बांग्लादे" ा सरकार इस प्रकार के भारत में उसके अवैध नागरिको की उपस्थिति को सिरे से खारिज करती रही है। वस्तुतः बांग्लादे" ा भारत के साथ इस मामलें में सांस्कृतिक एवं प्रजातीय समानता का लाभ उठाने की फिराक में है। विगत फरवरी माह में बांग्लादे" ा के विदे" ा मंत्री के साथ भारतीय सीमा में प्रविश्ट 213 बांग्लादे" ाी नागरिकों की पुनः वापसी को लेकर विवाद हो गया। उनके अनुसार भारत अपने नागरिकों की बांग्लादे" ा के अवैध नागरिकों के रूप में घुसपैठ कराने की कोि" ा" ा में है। यद्यपि बाद में लम्बे कुटनीतिक दबावों के चलते बांग्लादे" ा अपने इन 213 नागरिकों को पुनः लेने के लिये तैयार हो गया था।

समस्या का जटिल स्वरूप–

भारत के उत्तरपूर्वी राज्यों में कई बार इस मुद्दे सामाजिक तनाव का उग्र रूप देखनें में आया है। असम म एक द" ाक तक इस मुद्दे पर संघर्श होता रहा है असम सरकार का इस मामलें पर हुये समाजिक संघर्श के चलते मजबूरन अवैध प्रवासी पहचान पंचाट (आई.एम.डी.टी.) का गठन करना पड़ा। यद्यपि आज यहीं एक्ट या पंचाट अवैध प्रवासियों के स्वेद" ागमन के आगे ढाल बनकर खड़ा है। इस पंचाट की वजह से अवैध प्रवासी को बाहर निकालने की सम्पूर्ण प्रक्रिया को न्यायिक

बना दिया जाता है जिससे यह मामला न्यायालयों की भूल–भूलैया में भटक जाता है। यही वजह है कि आज तक इस कानून या पंचाट के तहत 1991 से लेकर 1999 तक मात्र 6,474 अवैध प्रवासियों को ही वापस बांग्लादे" ा भेजा जा सका है।

भारत का असम राज्य तो अवैध बांग्लादे" ायों की समस्या को लम्बे समय से झेल रहा है। इन अवैध बांग्लादे" ायों को असम से निकालनें के मुद्दे पर तो असमगण परिशद को चुनावों में जनादे" ा मिला था।[1] लेकिन असमगण परिशद भी इस मामले के समाधान को तला" ाने में विफल रही है। असम के अलावा इस क्षेत्र के अन्य राज्य जैसे पं" चम बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय आदि की जनंसख्या प्रतिरूप का गम्भीर रूप से प्रभावित किया है। भारत क उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में " ाान्ति बहाली के नायक रहे पूर्व पुलिस प्रमुख के.पी.एस.गिल के अनुसार इन क्षेत्रों में जहां कभी रंग–बिरगें परिधानों वाले जनजाति समूह निवास करते थे, आज वहॉ पर गांव के गांव लुंगीधारी पुरूशों और साड़ी पहने महिलाओं से भरे नजर आते है।[1]

इसके अलावा भारत में कानून के वर्तमान प्रावधानों के अनुसार किसी विदे" ाी को अवैध प्रवासी सिद्ध करने का उत्तरदायित्व प्र" ाासन का होता है,उस व्यक्ति पर स्वयं को भारत का नागरिक साबित करने की जिम्मेदारी नहीं है। भारत में कानून में इस खामी का फायदा उठाकर लाखों बांग्लादे" ायों द्वारा रा" ानकार्ड बना लिये गये और वोट की राजनीति के चलते स्थानीय राजनेताओं ने भी इनको भारतीय बनाने में मदद की है। इसके लिये इन अवैध बांग्लादे" ायों के नाम मतदाता सूचीयों में भी दर्ज हो गये है। भारत के पूर्वोतर क्षेत्र के राज्यों के कई वि" ाश्ट राजनीतिक दलों का तो यह बांग्लादे" ाी मजबूत वोट बैंक हैं विभिन्न सर्वेक्षण इस तथ्य की पुश्टि करते है कि इन अवैध प्रवासियों की संख्या इतनी अधिक है कि भारत के असम राज्य की आधी विधानसभा सीटों पर ये निणार्यक संख्या में है और करीब सौ अन्य स्थानों पर इनकी प्रभाव" ााली संख्या है। कुल मिलाकर दे" ा की 25 लोकसभा सीटों और 130 के लगभग विधानसभा की सीटों पर इन घुसपैठियों का मत निर्णायक होने की स्थिति में है। इसी कारण इनके विरूद्व स्वदे" ागमन की कोई भी प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती।

इसके अलावा भारत में न्यायालयों के द्वारा भी इस प्रकार के अवैध विदे" ायों को उनके मूल दे" ा वापिस भेजे जाने का समर्थन किया है। राजस्थान

के उच्च न्यायालय ने वर्श 2003 के फरवरी माह में यह अभिनिर्धारित किया कि किसी विदे" ाी को गिरफ्तार कर उसके मूल दे" ा वापस भेजे जाना न्यायसगत है।

इस प्रकार भारत में यह अवैध प्रवास का मामला स्वदे" ाी राजनीति में ही उलझ कर रहा जाता है। असम व पि" चम बंगाल सरकार ऐसे अवैध प्रवासियों से उत्पन्न खतरे के प्रति सचेत है किन्तु इनको संरक्षण प्रदान करने वाले कानूनों को समाप्त करन की पक्षधर नहीं है। विगत एक द" ाक से भारतीय राजनीति में जो गठबन्धन की राजनीति केन्द्रीय सत्ता पर आरूढ़ हुई है,उसका मुख्य घटक दल, नेतृत्वकर्ता भारतीय जनता पार्टी की घोशित रूप से नीति रही है कि दे" ा में से अवैध बगलादे" ाी प्रवासियों को निकाला जाये या इनका स्वदे" ागमन किया जाये भले ही बाध्यकारी ही हो। इस पकार का रूख अभी हाल ही में बांग्लादे" ा की सीमा पार कर आये 213 अवैध प्रवासियों के बारे में सख्त रवैया भारत सरकार का देखने को मिला।

भारत में इन अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासियों को वस्तुतः धकेला जाता है। इस कार्य में बंगलादे" ा की सीमाओं की सुरक्षा करने वाले सैन्य बल ही अधिक जिम्मेदार है वि" ोशकर बांग्लादे" ा राइफल्स (बी.डी.आर.) और डाइरेक्टर जनरल एण्ड फील्ड इंटेलीजंस बांग्लादे" ा (डी.जी.एम.आई.) प्रमुख है। इन संगठनों की ि" ाकायत भारत सरकार क सम्मुख कई बार कर भी चुकी है। इसके अलावा इन पाकिस्तानी खुफिया तंत्र आईएसआई के इ" ाारों पर भारत विरोधी गतिविधियां को बढावा देनें में सलंग्न है।

भारत में अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासियों की घुसपैठ के तीन प्रमुख रास्ते है। उत्तरी दीनाजपुर, कुच बिहार तथा जलपाईगुड़ी यहॉ से ये लोग धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत में फैल जाते है। इस कारण इनकी बाद में पहचान करना भी मु" किल हो जाता है। इनका रूप रंग पहनावा व भाशायी समानताओं के कारण यह तय करना कठिन होता है कि ये बांग्लादे" ाी है या बंगाली ? इन लोगों के लिये सबसे अनुकूल यही बता है जो इन्हे आसानी से भारत में छिपा देती है। इनकी पहचान छिपानें की दूसरा सर्वोत्तम विकल्प है अपना नाम मतदाता सूची में अंकित करा लिया जाये।

भारत में कई राज्यों के महानगरों में बड़ी संख्या में घरेलु नौकरा के रूप में ये अवैध प्रवासी कार्य कर रहे है परन्तु इनकी यहॉ यह पहचान करना बहत कठिन है कि ये सभी अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासी है क्योंकि इनके पास भारत में निवास करने के उपयुक्त कागजात मिलते है। कोई भी राज्य अपने यहॉ ऐसे अवैध प्रवासियों की संख्या को हजार पॉच सौ से अधिक नही बताता है। इसका कारण स्पश्ट है कि वास्तव में किसी को अवैध प्रवासी घोशित करना ऐसी स्थिति में कठिन कार्य है। राजस्थान में ही गैर सरकारी प्रतिवेदनों में इनकी संख्या 10,000 से अधिक बतायी जाती हैं किन्तु सरकारी आकड़ों में इनकी संख्या को दो हजार से कम बताया गया ह।

इसी प्रकार उत्तर प्रदे" ा में इनकी संख्या लाखों में हो सकती है परन्तु सरकार द्वारा ऐसे अवैध प्रवासियों की संख्या 15,000 से अधिक नही बतायी जाती है सरकारी आकड़े पि" चमी उत्तर प्रदे" ा जो कि रोजगार आदि की दृश्टि से सम्पन्न क्षेत्र है में इनकी संख्या मात्र 10 ही बतायी गयी है। यह इसलियें हो रहा है कि ये वे अवैध प्रवासी है जिनका नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है। जबकि ऐसे अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासियों की मिलीभगत से जुगाड़ कर अपना नाम मतदाता सूची तथा रा" ान कार्ड बनवा कर विभिन्न क्षेत्रो में स्थायी निवासी की हैसियत से नागरिक बन बैठे है। इनमें ऐसे अंसख्य लोग भी है जो कि बांग्लादे" ा युद्ध के समय से ही यहॉ आकर रह रहे है।

इसी प्रकार भारत के राश्टोय स्वयंसेवक संघ का भी मानना है कि भारत में अवैध बांग्लादे" ायों की समस्या लम्बे समय से राश्ट्रीय सुरक्षा को गम्भीर रूप से प्रभावित कर रही है। इन अवैध बांग्लादे" ायों की गतिविधियां राश्ट्र विरोधी कार्यो में अधिक देखी जा सकती है। विभिन्न राज्य सरकारों के सम्मुख कानून आर सामान्य व्यवस्थाा की अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासियों द्वारा चुनौती उत्पन्न की गई है। राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख श्रीपत् " ाास्त्री के अनुसार भारत में ऐसे अवैध प्रवासियों की संख्या 1.5 करोड़ से अधिक है। इन्होने यहा रोजगार और नागरिकों से भिन्न करना कठिन हो जाता है। श्री " ाास्त्री के अनुसार भारत में ऐसे अवैध प्रवासियों की अवस्थिति महानगरों से लगी छोटी जगहा से सरलता से

देखी जा सकती है। इनकी संख्या ज्ञात रूप से दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में ही 12,000 से अधिक है।

भारत को सर्वकल्याण एवं मानवीय तथा उदार नीति का दक्षिण एि" ाया के सभी पड़ौसी दे" ाों ने अपने राश्ट्रीय हितों को सिद्ध करने में फायदा उठाया है। इसका उदाहरण क्षेत्रिय दे" ाों द्वारा अनेक बार लोगों को भारत की सीमाओं में धकेलने के प्रयास होते रहे है चाहे वह पाकिस्तान हो या श्रीलंका या बांग्लादे" ा इसी वर्श भारत के साथ लगती बांग्लादे" ा की सीमा पर नो मेंन्स लैण्ड पर 213 बांग्लादे" ाी प्रवासियों को भारत की और धकेलने के प्रयास को भारत ने विफल कर दिया है। इस प्रकरण से सम्पूर्ण दक्षिण एि" ाया की प्रवासियों पर राजनीति का विद्प स्वरूप देखने को मिला।

पि" चम बंगाल के कूचबिहार क्षेत्र में सतागाच्छी नामक स्थान पर इन 213 अवैध प्रवासियों को भारतीय सुरक्षा बलों ने प्रवे" ा से रोक लिया । एक सप्ताह से अधिक चले इस नाटक में बांग्लादे" ा और अन्य अन्तराश्टोय मानवाधिकार संगठनों का दृश्टिकोण अत्यन्त आपति जनक रहा। इन अवैध प्रवासियों के बारें में बांग्लादे" ा सरकार ने माना कि यह भारत द्वारा उसके नागरिकों को बांग्लादे" ा में धकेलने की कोि" ा" ा है। जबकि भारत सरकार के अनुसार इन 213 अवैध प्रवासियों के पास बांग्लादे" ा की नागरिकता के कागजात भी थे आर भारत ने अपना रूख कड़ा करते हुये इन्हे छः दिन तक वही सीमा पर रोके रखा। इस दौरान कई मानवाधिकार संगठनों ने भारत से इन्हे अपने यहॉ मानवता के आधार पर " ारण देने का प्रबल आग्रह किया और इसके लिये दबाव भी बनाया। स्वयं बांग्लादे" ा सरकार से भी हाई लेवल वार्तायें की गई परन्तु बांग्लादे" ा सरकार द्वारा उन्हे अपने नागरिक न मानते हुये वापिस लेने से इन्कार कर दिया इस प्रकार दोनों दे" ाों के मध्य भारी गतिरोध की स्थिति पैदा हो गई। इधर इन अवैध प्रवासियों के दोनों तरफ भारत और बांग्लादे" ा सीमा सुरक्षा बलों को संगीने तनी रही। इससे सीमा पर भारी तनाव फैल गया।

छः दिन बाद अचानक 6 फरवरी को प्रातः 4.30 बजें भारतीय सीमा सुरक्षा बल के सदस्य इन अवैध रोके गये बांग्लादे" ायों को नियमित रूप से जॉच करने के उद्दे" य से नो मेन्स लैण्ड में गये तो पता चला कि वहॉ इन 213 पुरूशो

,महिलाओं और बच्चो म से कोई भी मौजूद नहीं था। यह बड़ो चौकानें वाली घटना थी। बांग्लादे" ाी राइफल्स द्वारा रात अन्धेरें में इन्हें वापिस बांग्लादे" ा में प्रविश्ट करा लेना अप्रत्या"ित ही था। इसी दिन मीडिया की यह प्रमुख खबर बनी कि अचानक भारत सीमा पर से अवैध प्रवासियों का समूह गायब हो गया है। इधर भारतीय विदे" ा मत्रालय का कहना था कि कुछ सपेरे भारत–बांग्लादे" ा के मजबूत सम्बन्धों को बिगाड़ नहीं सकते और बांग्लादे" ा ने इस मुद्दे पर बातचीत करने तथा अवैध प्रवासियों को पुनः वापिस लेने की नीति पर सहमति दिखाई है।

भारत में संयुक्त राश्ट्र " ारणार्थी उच्चायोग के अनुसार इस प्रकार के अवैध प्रवासन की ही समस्या नहीं है बल्कि बांग्लादे" ा में हिन्दु अल्पसंख्यकों को उत्पीड़ित कर पु" ा आउट करने की भी अहम् समस्या है। विगत 2001 के अक्टूबर और दिसम्बर के मध्य अनुमानों क अनुसार 5,000 से 20,000 के लगभग बांग्लादे" ा में अल्पसंख्यकों के विरूद्ध हिंसात्मक गतिविधियों के चलते जिनमें हिन्दु सर्वाधिक है, भारत में आ गये है। यह सब बांग्लादे" ा के आम चुनावों के दौरान इस्लामिक ताकतों के सत्ता में आने से हुआ है। इस सरकार के आने के बाद से ही बांग्लादे" ा में अल्पसंख्यकों के साथ उत्पीड़न, बलात्कार, हिंसा और घरों को लुटने की घटनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। संयुक्त राज्य अमेरिका की " ारणार्थियों पर समिति के अनुसार इन बगलादे" ा के हिन्दु अल्पसंख्यक प्रवासियों ने अधिकतर पूर्वी भारत के पि" चम बंगाल आर त्रिपुरा में " ारण प्राप्त की है। इसके अलावा कुछ लोगों ने आसाम और मेघालय में " ारण ली है।

भारतीय अधिकारियों का मानना है कि बांग्लादे" ा से आये अधिकतर लोग अवैध रूप से भारतीय सीमा पार करके आये है अतः इन्हें " ारणार्था का दर्जा नहीं दिया जा सकता है। इनकी प्रगणना आर्थिक प्रवासी या घुसपैठियें के रूप में की जायेगी। इन्हें बांग्लादे" ा सरकार से बातचीत कर पुनः स्वदे" ा भेजने के प्रयास किये जायेगें। दूसरी ओर पि" चम बंगाल जहॉ पर इन हिन्दु बांग्लादे"ियों ने आश्रय पाया है, इनके साथ भावनात्मक रूप से सहानुभूति जताई जा रही है। इन्हें वहॉ ज्यादा समस्याओ का सामना भी नहीं करना पड़ता है। भारतीय सरकार द्वारा तो इन्हें " ारणार्थियो को मिलने वाली सहायता तो उपलब्ध नहीं करायी गयी है बल्कि कुछ निजी संस्थानो द्वारा इन्हें कतिपय सहायता उपलब्ध करायी गई है।

इसके अलावा भारत में बांग्लादे" ा से आये वे नागरिक भी अच्छी खासी संख्या में है, जो कि बांग्लादे" ा के जन्म से पहले से ही भारत में रह रहे हैं। परन्तु इन्हें आज तक न तो भारत और न ही बांग्लादे" ा अपना रहा है। ऐसे लोग राज्यविहीनता की श्रैणी में " ाामिल किये जा सकते है। इस श्रैणी के अधिकतर लोग भारत के बिहार राज्य में बसते है। 1948 से 1960 तक बारी–बारी से लगभग 125,000 बांग्लाभाशी " ारणार्थी यहॉ आये थे। परन्तु आज तक उन्हें भारतीय नागरिकता या बगलादे" ा की नागरिकता में से कोई भी प्राप्त नहीं हैं। यह अपने आप मे एक विचित्र घटना हैं।[1]

आज इन बांग्लादे" ायों की संख्या में प्राकृतिक वृद्धि होने से इनके बच्चों आदि की भारतीय नागरिकता का प्र" न अर्न्तविलिप्त हो गया हैं। यहॉ तक कि इनके नाम मतदाता सूचीयों में होने के बावजूद इन्हें भारतीय नागरिक नहीं माना जाता हैं। ये लोग भारत के कई आम निर्वाचनो में अपने मताधिकार का प्रयोग भी कर चुके हैं। नागरिकता के बिना किसी दे" ा का मतदाता होना एक अलग ही मामला है। इन्हें नागरिक बनाने तथा इनकी अन्य सुविधाओं के लिये बिहार अल्पसंख्यक आयोग पिछले कई वर्शो से प्रयासरत है।

बिहार अल्पसंख्यक आयोग की पहल पर बिहार विधान परिशद ने विगत सितम्बर 2001 में इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास कर सरकार के सम्मुख रखा हैं। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि, यह विधान परिशद राज्य सरकार से यह अभिप्रस्ताव करती है कि वह 1946 से 1960 के दौरान राज्य में बसे सवा लाख बांग्ला " ारणार्थियो को, जो आज दे" ा की आबादी का भाग बन चुके है, नागरिकता प्रदान करने के लिये भारत सरकार से सिफारि" ा करें।[1]

प्रस्ताव पे" ा करने से पूर्व विधान परिशद के वरिश्ठ सदस्य " ाोदानन्द सिंह ने सदन में अल्पसंख्यक आयोग की संस्तुति का हवाला देते हुय कहा कि केन्द्रीय और राज्य सरकारों के मध्य हुये समझौते के बावजूद भी पूर्व की सरकारो ने लाखो की संख्या में बिहार में बसे इन अभि" ाप्त विस्थापितों को सभ्य जीवन तथा सम्मानजनक जीविका के अवसरों से वंचित रखने का अपराधिक कार्य किया हैं। इनका लगातार तीस चालोस साल से असहाय वोट बैंक क रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।

सदन में इस मामले पर बहस के दौरान सभापति जाबिर हुसैन ने यह जानकारी दी कि पंडित जवाहर लाल नेहरू के हस्तक्षेप के बाद बिहार में जगह प्रदान की गयी थी। उससे पूर्व पि”चम बंगाल की सरकार ने उन्हें अपने यहॉ बसाने से मना कर दिया था। इन लोगों को भारत की नागरिकता नहीं मिलने से कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। विधिक रूप से बिहार सरकार ने भी इन लोगों में से ” ाासकीय नौकरी के पात्र लोगो को नौकरी देने से मना कर दिया क्योंकि ये अभी भारतीय नागरिक नहीं है। 1993 में तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त ने जब इनमें से कुछ ” ारणार्थियो को वृद्धावस्था पें” ान दिलाने की सिफारि” ा की तो भी यह सवाल उठाया गया कि वे भारतीय नागरिक नहीं है। इन ” ारणार्थियों में से खेती से जुड़े प्रत्येक परिवार को राज्य सरकार न सवा चार एकड़ जमीन प्रदान की थी। कुछ परिवारो को मछली पालन के लिये तालाब उपलब्ध कराये गये तथा अन्य परिवारा को दूसरे साधन दिये गये थे। इनकी जमीन का उचित सीमाकंन नहीं होने के कारण भो उस पर अतिक्रमण किये जा रहे हैं।

यद्यपि इन्हें जमीन तो आवंटित की गयी पर इसे वे बेच नहीं सकते है। जमीन के मालिक परिवार के मुखिया के निधन के बाद उस परिवार के किसी पुरूश उत्तराधिकारी को ही उस जमीन का मालिक बनाये जाने का नियम है। यदि उस परिवार में कोई महिला बची है तो उसे जमीन से वंचित होना पड़ेगा। राज्य सरकार के एक ताजा निर्णय से इन ” ारणार्थियो के सामने और भी विकट स्थिति पैदा हो गई हैं। बिहार सरकार ने राज्य के तालाबो को अपने अधिकार में लेकर उनकी बन्दोबस्ती का आदे” ा दिया है। ” ारणार्थी परिवारो को आंवटित तालाबों का राज्य सरकार ने अपवाद नहीं माना। इसका परिणाम यह हुआ कि ” ारणार्थी परिवारों के अधिकारों वाले तालाबों पर भी बाहरी लोग कब्जा करने पहुंच गये। इस ओर बिहार सरकार का ध्यान आकर्शित किया गया तब जाकर राज्य सरकार ने इसमें सुधार के बारे में सोचना ” ाुरू किया है।

इसक अलावा राज्य सरकार ने यह भी आ” वासन दिया कि इनको भारतीय नागरिकता दिलाने के लिये वह भारत सरकार से पुनः निवेदन करेगी। यह आवेदन जिलाधिकारी के माध्यम से प्राप्त किये जायेगें। यद्यपि इस पहल को सहजता से स्वीकार नहीं किया जा रहा है क्योंकि जिलाधिकारी के यहॉ आवेदन देने इन निरक्षर

" ारणार्थियो में से कितने लोग पहुॅच पायेगें और अपने नागरिकता के आवेदन को विधिवत प्रस्तुत कर पायेगें। इसके अलावा भी सरकार द्वारा इन बांग्लादे" ाी " ारणार्थियो को कई अन्य सुविधायें भी प्रदान किया गया हैं । यह बात अलग है कि राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधायें इन तक नहीं पहुॅचती है। केन्द्र सरकार द्वारा किसानो को उपज बढ़ाने के लिये मिनी किट्स दिये जाते है। परन्तु यह सामग्री इन बांग्लादे" ाी " ारणार्थियो को नहीं दी जा रही है क्योंकि वे भारतीय नागरिक नहीं है। जबकि सरकार ने इन्हें खेती के लिये जमीन प्रदान की हैं।

1992 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के चतुरानन मिश्र ने वि" ोश उल्लेख के दौरान राज्य सभा में इन बांग्लादे" ाी " ारणार्थियो की समस्याआ पर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृश्ट करने की कोि" ा" ा की है । इस पर तत्कालीन गृह राज्य मंत्री एम.एम. जैकब ने जवाब देते हुये कहा कि, यह ध्यान में आया है कि 35 अध्यापको को इस आधार पर नियुक्त नहीं किया जा रहा है कि उन्होंने भारतीय नागरिकता अधिनियम, 1955 के तहत सम्बन्धित जिला अधिकारियों से पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं किये हैं। मैं आपको सूचित करना चाहूंगा कि मात्र मतदाता सूचियों में नाम लिखाकर कोई व्यक्ति नागरिकता अधिकार के लिय पात्र नही हो जाता हैं, जब तक कि वह नागरिकता अधिनियम 1955 की धारा–5(1) के तहत अपेक्षित प्रमाण पत्र पाप्त नहीं कर लेता। इसलिये मैं सलाह दूंगा कि इस तरह से प्रभावित व्यक्तियों को निर्धारित प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहिये और सम्बन्धित जिला अधिकारियों के यहॉ आवेदन पत्र देना चाहिये। जैकब ने आगे बताया कि जहॉ तक वर्तमान दखलकारो के हित में अधिकारनामे, महिलाओं के हित में भूमि का हस्तान्तरण, रेहन, बैंक ऋण सम्बन्धी मुद्दो का प्र" न हैं, संभवतः यहॉ भी नागरिकता क प्र" न का पहले समाधान करना होगा। सरकार की इस प्रकार की तुश्टिकरण की नीति के चलते इन बांग्लादे" ाी " ारणार्थियो को इनके अधिकारों से वंचित रखा हैं। पूर्वी पाकिस्तान से जब ये लोग आये थे और इन्हें जिन " ारणार्थी ि" ाविरों में रखा गया था, उनका नाम रखा गया परमानेंट लायबिलिटी कैंप। आज इसी प्रकार इनकी बांग्लादे" ाी " ारणार्थियो की समस्याओं का निराकरण भी स्थायी आधार पर किये जाने की आव" यकता हैं।

अवैध प्रवासियों की समस्या का समाधान–

भारत की राश्ट्रीय सुरक्षा के प्रति इन अवैध प्रवासियों की गतिविधियों से गम्भीर चुनौती मिल रही हैं। दे" ा विरोधी तथा आंतकवादी एवं न" ाीले पदार्थो की तस्करी आदि कार्यो में इनकी संलिप्तता जगजाहिर हो चुकी है। दे" ा की प्रमुख सुरक्षा और खुफियॉ तंत्र ने बार–बार सरकार का ध्यान इस ओर आकृश्ट किया है कि दे" ा में अवैध रूप से पडोसी दे" ाों के नागरिको की घुसपैठ राश्ट्रीय सुरक्षा पर बड़ा खतरा उत्पन्न कर रही हैं। इनका भारत विरोधी गतिविधियों में पाकिस्तान की खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. आदि से सम्पर्क है। इनकी " ाघ्र पहचान कर बाहर निकालने की कार्यवाही की जानी आव" यक हैं।

भारत के प्रधानमंत्री भी इस समस्या की भयावहता से चितिंत हैं। उन्होनें इस समस्या के समाधान के लिये मई 2001 में सुझाव दिया कि भारत में बांग्लादे" ाी अपनी खराब आर्थिक स्थिति के कारण काम धन्धे की तला" ा में अवैध रूप से प्रवे" ा के लिये मजबूर करती है। इसलिये उन्होनें यह सुझाव दिया कि भारत में बांग्लादे" ाियों के लिये वर्क परमिट जारी कर इनकी पहचान और संख्या पर नियंत्रण लगाया जा सकता है। इसके अलावा दे" ा इनकी अज्ञात संख्या व स्थिति से उत्पन्न होन वाली समस्या से भी बच सकता हैं।[1]

भारत के गृह मंत्रालय ने वर्श 2003 से ही इस सम्बन्ध में एक विस्तृत योजना पर दे" ा के गृहमंत्री श्री लाकृश्ण आडवाणी की पहल पर अमल " ाुरू किया है। इसके लिये राश्ट्रीय स्तर पर अवैध बांग्लादे" ाियों और पाकिस्तानियों के विरूद्ध एक व्यापक अभियान चलाया जायेगा। ऐसे अवैध प्रवासियों की सही–सही सख्या का पता लागने के लिये एक राश्ट्रीय रजिस्टर बनाया जायेगा। इसके अलावा दे" ा के प्रत्येक नागरिक के लिये एक बहुउद्धे" य पहचान पत्र तैयार करने की भी योजना है। इस वर्श दे" ा की सभी राज्य सरकारों ने अप्रेल से जून में अवैध रूप से रह रहे विदे" ाियों के विरूद्ध अभियान चलाने पर सहमति जताई थी।[1]

इस राश्ट्रीय पहचान पत्र की योजना के लागु होने से अवैध रूप से भारत में प्रवे" ा करने वाले विदे" ाी की पहचान करने में मदद मिलेगी और उनके अवध प्रवासन पर रोक लग सकेगी। इसके लिये एक बहुउद्द" ाीय राश्ट्रीय पहचान पत्र की पायलेट परियोजना " ाुरू की जायेगी। इस परियोजना को फिलहाल इस

समस्या से सबसे अधिक प्रभावित राज्यों में प्रारम्भ किया जायेगा। ऐसे 13 राज्यों को चिन्हित कर लिया हैं। इन राज्यों में जम्मू एवं क" मीर, गुजरात, उत्तरांचल, राजस्थान, उत्तरप्रदे" ा, पि" चम बंगाल, त्रिपुरा, आंध्र प्रदे" ा, असम, तमिलनाडु, गोआ, पांडेचेरी, और दिल्ली आदि " ाामिल है। इस परियोजना पर 14 करोड़ की लागत आयेगी। यह परियोजना पूरी होने पर बाद में सभी राज्यों में बहुउद्दे" ाीय राश्ट्रीय पहचान पत्र बनाये जायेगें।

इसके अलावा दे" ा के गृह मंत्रालय ने एक योजना बनायी है जिसकी अनुसार हर हफ्ते 200 अवैध प्रवासियों को उनके मूल द" ा भेजने की योजना भी बनायी गयी हैं। इस योजना पर अमल किये जाने की बात तो ठीक है, परन्तु इस प्रकार विदे" ायों की वापसी में कई वर्श लगने का अन्दे" ाा हैं। इस प्रकार की व्यवहारिक योजना पर तो अमल वर्शों पूर्व ही कर लेना चाहिये था। भारत में लाखो गैर नागरिक दे" ा के नागरिकता कानूनों के लाभ उठा रहे हैं और जनंसख्या के स्वरूप को बिगाड़ रहे है। साम्प्रदायिकता तथा अन्य अपराधिक गतिविधियों के विस्तार में संलग्न हैं। कुल मिलाकर दे" ा अपने संसाधनों पर अवांछित लोगों का बोझ ढो रहा हैं।[1]

भारत की इस समस्या का एक बहेतरीन समाधान भविश्य के लिये यह भी हो सकता है कि भारत और बांग्लादे" ा की सीमा रेखा का स्पश्ट तौर पर चिन्हित किया जाये और इसके प" चात इस सीमा पर तारबन्दी कर प्रवासियों के अवैध घुसपैठ को कम किया जा सकता हैं। इस वर्श जून माह में भारत बांग्लादे" ा सरकार के बीच सीमा रेखाकंन को स्पश्ट करने हेतु वि" ोशज्ञ समूह के गठन पर सहमत भी हो गये हैं।

विगत फरवरो माह में 200 से अधिक अवैध प्रवासियों को पुनः वापस बांग्लादे" ा भेजने का फैसला प्रतीकात्मक रूप से इस अभियान की " ाुरूआत हैं। इस प्रकार छोटे पैमाने से इस बड़ी समस्या को हल करने का एक प्रयास हैं। परन्तु इस समस्या का दूसरा पक्ष बांग्लादे" ायों के बहाने अपने यहॉ के मुसलमानों से पीछा छुड़ाना चाहता है। इस प्रकार उसने भारत से लौटाये अवैध प्रवासियों के पहल जत्थे को ही स्वीकार नहीं किया।

बांग्लादे" ा सरकार के विदे" ा मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि भारत का यह आरोप बेबुनियाद है कि भारत में लाखों बांग्लादे" ा अवैध रूप स रह रहे हैं। उनके अनुसार एक भी बांग्लादे" ाी भारत में अवैध रूप से नहीं रह रहा हैं। उन्होनें आगे बताया कि 1971 के मुक्ति संघर्श के दौरान करीब एक करोड़ बांग्लादे" ाी भारत में चले गये थे, लेकिन युद्ध समाप्त होते ही ये सभी बांग्लादे" ा पुनः लोट आये थे । बल्कि आज भारत अपनी आबादी के एक बड़े भाग को बांग्लादे" ा में धकेलने की कोि" ा" ा कर रहा है। इसके विपरीत कि भारत में बांग्लादे" ा के डेढ़ करोड़ से अधिक बांग्लादे" ाी रह रहे है, आरोप लगाया है कि इतनी बड़ी संख्या में बांग्लादे" ाी भारत में किस प्रकार प्रविश्ट हो गये ? और भारतीय सुरक्षा तंत्र चुपचाप बैठा रहा हो। बंगलादे" ा के अनुसार यदि भारत सरकार अपने लोगों का बांग्लादे" ाी होने के आधार पर बांग्लादे" ा के लिये रवाना करती है और इस नीति पर कायम रहती है तो बांग्लादे" ा इस मामले पर चुपचाप नहीं बैठेगा।

स्वदे"ागमन की समस्यायें–

इस प्रकार इन अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासियों को वापस उनके मूल दे" ा भेजने के प्रयास लगातार होन की स्थिति में मामले के अन्तर्राश्ट्रीय होने की आ" ाका भी रहती हैं। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत इस क्षेत्र की एक अहम और लोकतंत्रात्मक प्रणाली है, इन अवैध प्रवासियों के बाध्यकारी स्वदे" ागमन किये जाने से उसकी क्षेत्रिय प्रतिश्ठा पर असर पड़ सकता हैं। भारत सदैव ही ऐसे मामलों के द्विपक्षीय समाधन की नीति का अवलम्बन करता रहा हैं, तृतीय पक्ष को इसमें सम्बद्धता प्रदान करना नीतिपूर्ण नहीं होगा।[1]

इसके अलावा इन अवैध प्रवासियों के स्वदे" ागमन में सबसे बड़ी बाधा यह है कि इनकी पहचान किस प्रकार से की जाये ? रूप, रंग,पहनावा व भाशायी समानताओं के कारण यह तय कर पाना कठिन होता है कि ये बांग्लादे" ाी है या भारत के पि" ाम बंगाल राज्य के निवासी। अभी तक ये अवैध बांग्लादे" ाी प्रवासी इसी बात का सर्वाधिक फायदा उठाते रहे हैं। द्वितीय समस्या यह है कि भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली में राजनीतिक दलों, ट्रेड युनियनों तथा अन्य दबाव समूहों के अपने निजी हितों आदि के चलते इनकी वि" ााल संख्या का आम निर्वाचनों में प्रयोग किया जात रहा हैं। इस कारण इनके नाम, पहचान आदि न केवल रा" ान

कार्ड में होती है, बल्कि मतदाता सूची में भी इनकी उपस्थिति होती है, अतः इनका नाम हटाना या इन्हें यहां से निकालना सरल कार्य नहीं हैं।

तृतीय समस्या यह है कि इनके स्वेद" ागन की नीति पर राज्य या क्षेत्रिय सरकारों तथा केन्द्रीय सरकार के मध्य बेहतर तालमेल नहीं हो पाता है । इसके परिणामस्वरूप कभी–कभी इन अवैध प्रवासियों को स्वदे" ा भेजने का जो" ा बीच में ही ठंडा पड़ जाता है। राज्य या क्षेत्रिय सरकारे आज तक यह सवक्षण भी नहीं कर सकी है कि उनके यहॉ पर कितनी संख्या में अवध अप्रवासी रह रहे हैं। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत में अवैध गैर नागरिक को स्वदे" ागमन के सन्दर्भ में आज तक किसो ठोस नीति का भी अभाव रहा है। यह एक द्विपक्षीय मामला है जिसे दोनो दे" ा पारस्परिक सहयोग और समन्वय से हल किया जा सकता है। यह भी ध्यान में रखना होगा कि इतनी बड़ी सख्या में अवैध रूप से रह रहे बंगलादे" ायों को एक साथ वापस नहीं भेजा जा सकता हैं। यदि ऐसी कोई मुहिम चलायी गई तो उसके परिणाम विपरीत भी हो सकते है। दोनो दे" ों क सम्बन्धों में दरार आ सकती है।

भारत के छोटे–छोटे पड़ौसी दे" ा अपनी पहचान के लिये पहले से ही चिंतित है तथा भारत की ओर भांका की दृश्टि से देखतें हैं। अतः भारत की यह मुहिम उनके पड़ौसियों से सम्बन्धो के मामले में नुकसानदेह हो सकती हैं। इस क्षेत्र में भारत को अपने दूरगामी हितों का भी ध्यान रखना होगा। भारत सरकार को इस बारे में एक द्विस्तरीय योजना बनाकर समाधान की ओर बढ़ना होगा। प्रथम तो दे" ा में अवैध बांग्लादे" ी प्रवासियों को " ीघ्रता स चिन्हित किया जाना आव" यक है तथा इनकी वास्तविक संख्या का पता लगाया जाये। द्वितीय, तत्प" चात बांग्लादे" ा से पारस्परिक सहमति प्राप्त किये जाने की कोि" ा" ा करनी होगी। यह पारस्परिक सहमति इन अवैध बांग्लादे" ी प्रवासियों की चरणबद्ध स्वेद" ागमन के लिये समझौतें का आधार बन। इसके अलावा इस बात के भी प्रबन्ध सुनि" चत रूप से किये जाने आव" यक है कि सीमा पर इस प्रकार का प्रबन्धन करना होगा कि भविश्य में अवैध घुसपैठ नहीं हो पाये।

संदर्भ

[1] अहमद सहाबुद्दीन, बांग्लादे" ा पास्ट एण्ड प्रजेण्ट, ए.पी.एच.पब्लि" ाग हाउस कारपोरे" ान, न्यू देहली, 2004 पृ. 125–126

[2] गुलाटी जे चन्द्रिका, बांग्लादे" ा लिबरे" ान टू फण्डामेन्टलिजम, कामनवेल्थ पब्लि" ार्स, न्यू देहली, 1988, पृ.45

[3] नायर सुकुमारन पी, इण्डो–बांग्ला रिले" ान्स, ए.पी.एच. पब्लि" ाग हाउस, न्यू देहली, 2008 पृ.169

[4] लूथरा, एल.पी., प्रॉबलम्स ऑफ रिफ्यूजीज फ्रोम ईस्ट बंगाल, इकानोमिक एण्ड पॉलिटिकल विकली, दिसम्बर, 2011पृ.2467

[5] फण्डा मारकस, बांग्लादे" ा इन फस्ट डीकेड, साउथ ए" ायन पब्लि" ार्स, न्यू देहली, 1982, पृ.102

[6] बांग्लादे" ा डाक्यूमेन्टस, Vol-II,मिनिस्टो ऑफ एक्सटर्नल अफेयस, न्यू देहली, 1971 पृ. 81

[7] वीनर मायरन, रिजेक्टेड पीपुल एण्ड अनवान्टेड माइग्रेटस इन साउथ ए" ाया, इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल, दिल्ली, 1993 पृ.1740

[8] लूथरा एज.पी., प्राब्लमस ऑफ रिफ्यूजींग फोम ईस्ट बंगाल, पृ. 2472

[9] चौधरी कल्याण, जेनोसाइन इन बांग्लादे" ा, ऑरियन्ट लांगमैन, न्यू देहली, 1972, पृ.95

[10] फोरेन अफेयर्स रिकार्ड –Vol XVII No.12 दिसम्बर 1971 पृ. 345

[11] भााह सी.के., द जेनोसाइड ऑफ 1971 एण्ड द रिफ्यूजींग इन द ईस्ट, सेज पब्लिके" ान, नई दिल्ली, पृ. 216

[12] नायर सुकुमारन, पी., इण्डो–बांग्लादे" ा रिलेसन्स, 2008, पृ. 190

[13] राय बलजीत, डेमोग्राफिक अगेन्स्ट इण्डिया : मुस्लिम अवलेहेन्स फ्रोम बांग्लादे" ा, बी.एस. पब्लिके" ान्स, चण्डीगढ़, 1993 पृ.62

[14] बांग्लादे" ा डाक्यूमेन्टस – वाल्यूम 11 पृ.82

[15] चौधरी कल्याण– जेनोसाइड इन बांग्लादे" ा पृ. 80

[16] नायर सुकुमारन पी.– इण्डो–बांग्लादे" ा रिले" ान्स, पृ. 182

[17] नारायण इकबाल– स्टेड पालिटिक्स इन इण्डिया, पृ. 991

[18] इन्यूअल रिपोर्ट – फोम एक्सटर्नल अफेयर्स एम.ई.ए. इन्यूअल रिपोर्ट ऑफ एम ई.ए.2000 / 2001

[19] इन्यूअल रिपोर्ट – एन्यूअल रिपोर्ट आफ एम.ई.ए. 2002 / 2003

अध्याय–6
निश्कर्श

भारत वह दे" ा है जिसने सदैव सद्भाव व सहिश्णुता की नीति को अपनाते हुए बिना किसी भेदभाव के अपने पड़ौसी राश्ट्रों के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाकर एक अच्छे पड़ौसी होने का परिचय दिया है। भले ही पड़ौसी राश्ट्रों ने भारत का नुकसान पहुंचाने की चेश्टा ही क्यों न की हा।

भारत ने पड़ौसी दे" ाों के नकारात्मक दृश्टिकोण को सकारात्मक रूप से बदलने के लिए काफी प्रयत्न किये तथा भारत के भाासनाध्यक्षों व भाासन प्रमुखों ने भाांति के आधार पर पड़ौसी दे" ाों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं का हल ढूंढने

का प्रयत्न किया तथा आगे भी इसी भाांति मार्ग पर आगे बढ़ते हुये अपनी महानता का परिचय दिया है।

आज भारत की गिनती दुनिया के विकास" ाील दे" ाों मे अग्रणी है। भारत ने अपने आप को सुदृढ़ बनाने के लिए तथा अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर ख्याति पाने के लिए वैधतापूर्ण मार्ग पर चलना ही उचित समझा। भारत की संस्कृति वह संस्कृति है जिसमे अनेकों संस्कृतियों का समावे" ा है। भारत वर्श मे अनेकों लोग आये जिन्होने यहां की संस्कृति से अनेक चीजे ग्रहण की। भारत दक्षिणी ए" ाया का एक भाक्ति सम्पन्न राश्ट्र रहा है। भारत ने अपने वैदिभिक सम्बंधों के संचालन के लिए तथा अन्तर्राश्ट्रीय सम्बंधों के निर्वहन के लिए अपनी विदे" ाी नीति का निर्धारण कर रखा है जिसमे समय परिस्थिति अनुसार परिवर्तन करके भारत अपने पड़ौसी दे" ाों व अन्य दे" ाों के साथ सम्बंधों का निर्वहन करता है। अगर भारत दे" ा की बात की जाये तो भारत दे" ा सदैव से ही उदार दृश्टिकोण को अपनाते हुए व मानवता का परिचय देते हुए अपने आपको स्थापित किये हुए है। भले ही कितनी ही विपत्तीयों का सामना क्यों न करना पड़ा।

यहां पर बात भारत व बांग्लादे" ा सम्बंधों की कर रहे है। भारत व बांग्लादे" ा दोनों ही पड़ौसी दे" ा है। भारत अपने सिद्धान्तों व नीतियों पर चलते हुए अपने सम्बंधों का निर्वहन कर रहा है। लेकिन बांग्लादे" ा बहकावे मे आकर कभी कभी भारत विरोधी स्वर का आलाप करने लग जाता है।

जैसा कि हम सब यह जानते है कि भारत ही वह दे" ा है जिसने बांग्लादे" ा के उदय मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारत ही वह राश्ट्र है जिसने पूर्वी पाकिस्तान को बांग्लादे" ा दे" ा के रूप मे उदित करने मे सहयोग किया है। भारत ने केवल बांग्लादे" ा ही नही बल्कि, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, भूटान, नेपाल, म्यामार जो कि इसके अन्य पड़ौसी राश्ट्र है इनके साथ भी सहयोगात्मक रवैया अपनाया क्योंकि भारत ने अपनी विदे" ा नीति मे संचालन के लिए मानवता, सहिश्णुता, सहयोग, भाांति अहस्तक्षेप आदि सिद्धान्तों का समावे" ा किया हुआ है। इन्ही चीजों को आधार बनाकर भारत वर्श अपनी वैदि" ाक नीति का संचालन करता रहा है।

भारत बांग्लादे" ा दे" ा दोनों ही दक्षिण ए" ियाई राश्ट्र है। भारत प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक बांग्लादे" ा के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाया हुआ है।

पाकिस्तान के दो भाग पूर्वी पाकिस्तान व प" ि चमी पाकिस्तान है पूर्वी पाकिस्तान हिन्दु बाहुल्य था तथा प" ि चमी भाग मुस्लिम बाहुल्य। प्रारम्भ से ही पूर्वी भाग के लोगों मे प" ि चमी भाग के द्वारा अत्याचार पूर्ण नीति अपनायी गयी। पूर्वी पाकिस्तान के लोगों द्वारा विरोध का स्वर उठाया गया जिसका नेतृत्व भोख मुजीबुर्र रहमान के द्वारा किया गया। पूर्वी भाग के जागरण के लिए भोख मुजीबुर्र ने अपनी जान की परवाह किये बिना इसे प" ि चमी भाग के अत्याचारों से मुक्त करवाने के लिए भरसक प्रयत्न किया।

भोख मुजीबुर्र की इस क्रांति को दबाने का प्रयत्न प" ि चमी पाकिस्तान के दमनकारी भाासक याह्या खान ने किया तथा भारत विरोधी रूख को अपनाते हुये वहां के नागरिकों को (पूर्वी पाकिस्तान) वहां से भगना भुरू किया और यहं कहा कि यह पूर्वी भाग मे हिन्दू भारत दे" ा से आये है जो पाकिस्तान मे अस्थिरता फैलाना चाहते है। यह आतंकवादी है जिन्हे यहां से भगाये जाने के लिए दमनाकारी नीति का प्रयोग किया जा रहा है। बांग्लादे" ा का उदय 16 दिसम्बर 1971 को भारत के राजनीतिक और सैन्य संरक्षण के तहत हुआ और इसी से भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों की भुरूआत हुई। बांग्लादे" ा का उदय पूर्वी पाकिस्तानी प्रान्त में असंतोश का परिणाम था। बांग्लादे" ा के उदय के पीछे हम उन कारणों को भी जानना होगा जिन्होने भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन भारत व पाकिस्तान द्वि राश्ट्र सिद्धान्तों के आधार पर किया। 3 जून 1947 को प्रस्तावित माउण्टबेटन योजना से ज्ञात हुआ कि दे" ा के विभाजन के साथ ही पंजाब व बंगाल का विभाजन भी अव" यभांवी था।

1947 के भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान अस्तित्व मे आया। विभाजन परिणाम स्वरूप यहां मुस्लिम समुदाय को अलग भू भाग मिला इसके दो भाग थे प" ि चमी और पूर्वी एक हजार मील की भारत की सीमा से अलग करके पाकिस्तान के पांच प्रान्तों में से पूर्वी बांग्लादे" ा व दूसरे चार थे। प" ि चम बंगाल, सिंध एन. डब्लू.एफ.पी. और ब्लूबिस्तान। प" ि चमी भाग का पूर्वी भाग से अधिक बड़ा था तथा पूर्वी बंगाल में कुल जनसंख्या की 54 प्रति" ात जनंसख्या निवास करती थी।

पाकिस्तान के निर्माण ने इसके खुद के विना" ा के बीज बो दिये। पाकिस्तान के दोनो प्रान्तों मे जाति, भाशा, धर्म, संस्कृति के आधार पर असमानता थी इसी के कारण बांग्लादे" ा का उदय हुआ। तब से ही पूर्वी व पि" चमी भाग एक दूसरे के विरोधी हो गये। पाकिस्तान ने भारत से अलग हुये भागों पर अपनी बाध्यता व दबाव डाल दिया जिसके परिणामस्वरूप अलग अलग क्षेत्रों में विभाजन हुआ।

पाकिस्तान के पूर्वी व पि" चमी भाग मे केवल धर्म ही समान था बाकी अन्य चीजे अलग थी पि" चमी पाकिस्तान की तुलना मे पूर्वी पाकिस्तान में अनेक ऐसे तत्व थे जिनके कारण भी बांग्लादे" ा का उदय हुआ जैसे आर्थिक क्षेत्र मे असंतुलन, भौक्षणिक क्षेत्र मे असंतुलन, सरकारी सेवाओं में असंतुलन, भाशायी आधार पर आंदोलन नागरिक सेवाओं व सैन्य सेवाओं में असंतुलन दमनकारी नीति आदि कारण बांग्लादे" ा उदय के मुख्य कारण बनें। क्योंकि पि" चमी पाकिस्तान द्वारा इन सभी क्षेत्रों में पूर्वी भाग के लोगों के साथ एक बहुत बड़े प्रति" ात के साथ असमानता की गई। इसी बात ने पूर्वी भाग के लोगों मे असुरक्षा की भावना घर कर गयी और उन्हें यह महसूस होने लगा की उनकी खुद की सरकार का भाासन हो तो इन सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

बांग्लादे" ा में सभ्यता का इतिहास काफी पुराना रहा है। आज के भारत का अधिका" ा पूर्वी क्षेत्र कभी बंगाल के नाम से जाना जाता था। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार इस क्षेत्र में आधुनिक सभ्यता की भाुरूआत 700 इसवी इसा पू. में आरम्भ हुआ माना जाता है। यहां की प्रारम्भिक सभ्यता पर बौद्ध और हिन्दू धर्म का प्रभाव स्पश्ट देखा जा सकता है। उत्तरी बांग्लादे" ा में स्थापत्य के ऐसे हजारों अव" ोश अभी भी मौजूद हैं जिन्हें मन्दिर या मठ कहा जा सकता है।

बंगला का इस्लामीकरण मुगल साम्राज्य के व्यापारियों द्वारा 13 वीं भाताब्दी में भाुरू हुआ और 16 वीं भाताब्दी तक बंगाल ए" िया के प्रमुख व्यापारिक क्षेत्र के रूप में उभरा। यूरोप के व्यापारियों का आगमन इस क्षेत्र में 15 वीं भाताब्दी मे हुआ और अंततः 16 वीं भाताब्दी में ब्रिटि" ा ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा उनका प्रभाव बढ़ना भाुरू हुआ। 17 वीं भाताब्दी आते आते इस क्षेत्र का नियंत्रण पूरी तरह उनके हाथों में आ गया जो धीरे–धीरे पूर भारत में फैल गया। जब स्वाधीनता आंदोलन के

फलस्वरूप 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ तब राजनैतिक कारणों से भारत को हिन्दू बहुल भारत और मुस्लिम बहुल पाकिस्तान में विभाजित करना पड़ा।

भारत का विभाजन होने के फलस्वरूप बंगाल भी दो हिस्सों में बंट गया। इसका हिन्दू बहुल इलाका भारत के साथ रहा और पि" चमबंगाल के नाम से जाना गया तथा मुस्लिम बहुल इलाका पूर्वी बंगाल पाकिस्तान का हिस्सा बना जो पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना गया। जमींदारी प्रथा ने इस क्षेत्र को बुरी तरह झकझोंर रखा था जिसके खिलाफ 1950 में एक बड़ा आंदोलन भ्रारू हुआ और 1952 के बांग्ला भाशा आंदोलन के साथ जुड़कर यहं बांग्लादे" ाी गणतंत्र की दि" ाा में एक बड़ा आंदोलन बन गया। इस आंदोलन के फलस्वरूप बांग्ला भाशियों को उनका भाशाई अधिकार मिला। 1955 में पाकिस्तान सरकार ने पूर्वी बंगाल का नाम बदलकर पूर्वी पाकिस्तान कर दिया। पाकिस्तान द्वारा पूर्वा पाकिस्तान की उपेक्षा और दमन की भ्रारूआत यहीं से हो गई और तनाव स्तर का द" ाक आते आते अपने चरमोत्कर्श पर पहुंच गया। पाकिस्तानी भासक याह्या खॉ द्वारा लोकप्रिय अवामी लीग और उनके नेताओं को प्रताड़ित किया जाने लगा, जिसके फलस्वरूप बंगबंधु भोख मुजीबुर्र रहमान की अगुआई में बांग्लादे" ा का स्वाधीनता आंदोलन भ्रारू हुआ। बांग्लादे" ा में खुन की नदीयां बही। लाखों बंगाली मारे गये तथा 1971 के खुनी संघर्श में बांग्लादे" ाी भारणार्थियों को पड़ोसी दे" ा भारत में भारण लेनी पड़ी। भारत इस समस्या से जुझने में उस समय काफी परे" ाानियों का सामना कर रहा था और भारत को बांग्लादे" ायों के अनुरोध पर इस समस्या में हस्तक्षेप करना पड़ा जिसके फलस्वरूप 1971 का भारत पाकिस्तान युद्ध भ्रारू हुआ। बांग्लादे" ा में मुक्तिवाहिनी सेना का गठन हुआ जिसके ज्यादातर सदस्य बांग्लादे" ा का बौद्धिक वर्ग और छात्र समुदाय था, इन्होंने भारतीय सेना की मदद गुप्तचर सूचनायें देकर तथा गुरिल्ला युद्ध पद्धति से की। पाकिस्तानी सेना ने अंतत 16 दिसम्बर 1971 को भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया, लगभग 93000 युद्ध बंदी बनाये गये जिन्हें भारत में विभिन्न कैम्पों मे रखा गया ताकि वे बांग्लादे" ाी क्रोध के शि" ाकार न बनें। बांग्लादे" ा एक आजाद मुल्क बना और मुजीबुर्र रहमान इसके प्रथम प्रधानमंत्री बने।

बांग्लादे"ा के इतिहास की मुख्य घटनाएँः–

– 1947 भारत के विभाजन के बाद बंगाल से कटकर पूर्वी पाकिस्तान बना।

– 1949 अवामी लीग की स्थापना हुई जिसका मकसद पूर्वी पाकिस्तान को स्वायत्तता दिलाना था।

– 1970 भोख मुजीब के नेतृत्व में अवामी लीग ने चुनाव में भारी बहुमत हासिल किया, पाकिस्तान की सरकार ने इन परिणामों को मानने से इनकार कर दिया। पाकिस्तानी सरकार के इस निर्णय के बाद दंगे भड़क उठे।

– 1971 भोख मुजीब और अवामी लीग ने 26 मार्च को स्वतंत्रता की घोशणा कर दी नए दे" ा का नाम रखा गया बांग्लादे" ा, लड़ाई की मार से बचने के लिए करीब एक करोड़ लोग भारत की सीमा में भारणार्थी बनकर आये।

– 1972 भोख मुजीब प्रधानमंत्री बने उन्होने उद्योगों के राश्ट्रीयकरण का अभियान चलाया लेकिन ज्यादा कामयाबी नही मिली।

– 1974 दे" ा के भीशण बाढ़ से पूरी फसल तबाह, 28000 लोगों की मौत, दे" ा में आपात स्थिति, राजनैतिक गड़बड़ियों की भाुरूआत हुई।

– 1975 भोख मुजीब बांग्लादे" ा के राश्ट्रपति बने। अगस्त में हुए सैनिक तख्ता पलट के बाद उनकी हत्या कर दी गई, दे" ा में सैनिक भाासन लागू हो गया।

– 1976 सैनिक भाासन ने ट्रेड यूनियनों पर प्रतिबंध लगाया।

– 1977 जनरल जिया–उर–रहमान राश्ट्रपति बने। इस्लाम को संवैधानिक मान्यता दी गई।

– 1979 दे" ा में चुनाव हुए और सैनिक भाासन समाप्त हुआ। जनरल जिया–उर–रहमान की बांग्लादे" ा ने" ानल पार्टी ने बहुमत हासिल किया।

– 1981 जनरल जिया तख्ता पलट की कोि" ा" ा में मारे गए। अब्दुल सत्तार राश्ट्रपति बने।

– 1982 एक और तख्ता पलट के बाद जनरल ईर" ााद सत्ता में आए। संविधान और राजनैतिक दलों की वैधता समाप्त की गई।

– 1983 सभी स्कूलों मे अरबी और कुरान की पढ़ाई के जनरल ईर" ााद के फैसले के खिलाफ आंदोलन भाुरू हुए। सीमित राजनीतिक गतिविधियों की अनुमति दी गई। ईर" ााद राश्ट्रपति बने।

- 1986 संसद और राश्ट्रपति के लिए चुनाव हुए, ईर" ाद विजयी रहे। सैनिक भाासन हटा और संविधान को बहाल किया गया ।
- 1987 विपक्ष की हड़ताल के बाद दे" ा में इमरजेंसी लगाई गई।
- 1988 एक तिहाई दे" ा पानी में डूबा, लाखों लोग बेघर हुए।
- 1990 भारी जन विरोध के बाद ईर" ाद पद से हटे।
- 1991 भ्रश्टाचार के आरोप मे ईर" ाद जेल भेजे गए। जनरल जिया–उर –रहमान की विधवा खालिदा जिया प्रधानमंत्री बनी। संविधान में परिवर्तन करके राश्ट्रपति के अधिकार सीमित कर दिए गए। चक्रवाती तूफान ने लगभग डेढ़ लाख लोगों की जान ली।
- 1996 अवामी लीग सत्ता में लाटी, भोख हसीना प्रधानमंत्री बनी। दे" ा में हड़तालों का दौर भाुरू हुआ।
- 1998 बाढ़ ने पूरे दे" ा में तबाही मचाई। 1975 के मुजीब हत्याकांड के लिए जिम्मेदार 15 पूर्व सैनिक अधिकारियों को मौत की सजा सुनाई गई।
- 2000 स्वतंत्रता की लड़ाई के बारे में एक पाकिस्तानी राजनयिक के बयान पर विवाद हुआ, पाकिस्तान और बांग्लादे" ा के संबंधों में कटुता आई।
- 2001 आम चुनाव में भोख हसीना की पार्टी अवामी लीग हार गई और धार्मिक दलों के समर्थन के साथ जातीय पार्टी सत्ता में आई और बेगम खालिदा जिया प्रधानमंत्री बनी।
- 2007 भारी बहुमत के बाद भोख हसीना फिर से प्रधानमंत्री बनी और तब से वर्तमान समय तक (2015) प्रधानमंत्री है।

सहयोगात्मक काल (1971 से 1975)

भारत बांग्लादे" ा के सम्बंधों मे 1971 से लेकर 1975 तक मधुरता बनी रही । दोनों दे" ाों मे पारस्परिक सम्बंधों की अच्छी भाुरूआत इसी काल से मानी गयी । इसे मैत्री काल भी माना जा सकता है। इस काल मे भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और बांग्लादे" ा के राश्ट्रपति मुजीबुर रहमान के दृश्टिकोण ने दोनों दे" ाों मे मैत्रीपूर्ण सम्बंधों का विकास किया। इनके " ाासन काल में भारत व

बांग्लादे" ा के मध्य विभिन्न सांस्कृति, व्यापारिक, आर्थिक सहायता सम्बंन्धित समझौते तथा मैत्री सन्धि का जन्म हुआ।

भारत विरोधी काल (1975 से 1982)

भोख मुजीबुर्र रहमान की 15 अगस्त 1975 को हत्या कर दी गई। इनके बाद बांग्लादे" ा में 6 नवम्बर 1976 को जस्टिस आबुसादात सयाम राश्ट्रपति बने तथा 1977 में मेजर जनरल जिया–उर–रहमान मुख्य मा" लि ला प्र" ाासक बनें जिन्होनें भारत विरोधी व पाक समर्थित नीति अपनायी। इस काल में भारत व बांग्लादे" ा के बीच फरक्का समस्या, द्विपक्षीय मामलो को अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर उछालने, अल्पसंख्यकों की समस्या, मुहरी नदी सीमा विवाद, नवमुर द्वीप टापू, चकमा भारणार्थियों की समस्या आदि समस्यायें रही जिनके कारण भारत व बांग्लादे" ा के मध्य तनाव बना रहा। एक तरफ तो भाासनाध्यक्ष का भारत विरोधी रूख और दुसरी तरफ नयी समस्याओं के उदय के साथ ही इस काल को भारत विरोधी काल माना जा सकता है जो भारत बांग्लादे" ा सम्बन्धों के मधुर सम्बंध को बिगाड़ते हुए कटु बना दिया।

सुधारात्मक दृश्टिकोण (1982 से 2003)

24 मार्च 1982 को तख्ता पलट के साथ लेफ्टिनेंट जनरल ईर" ााद को मुख्य मा" लि लॉ बनाया गया। ईर" ााद के सत्ता में होने के बाद से भारत बांग्लादे" ा के राश्ट्रपति ईर" ााद ने अक्टूबर 1982 मे भारत की यात्रा की और एक स्मरण पत्र पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार 1977 को फरक्का समस्या के हल के लिये संयुक्त नदी आयोग तथा संयुक्त आर्थिक आयोग की स्थापना की गयी इसी प्रक्रिया मे 30 जुलाई 1983 को भारत व बांग्लादे" ा के मध्य तीस्ता जल समझौता हुआ।

बांग्लादे" ा में संसदीय प्रणाली की स्थापना के साथ बेगम खालिदा जिया के प्रधानमंत्री बनने से भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों मे मधुरता आने के अवसर बढ़े। 1992 में बेगम खालिदा जिया ने भारत की यात्रा की और 50 हजार चकमा भारणार्थियों की वापसी तथा दोनों दे" ाों के अनाधिकृत आवागमन की समस्या से निपटने के लिये प्रस्ताव किय गये। बांग्लादे" ा की प्रधानमत्री श्रीमती भोख हसीना 10 से 12

दिसम्बर तक भारत की यात्रा पर आयी और गंगाजल ऐतिहासिक सन्धि पर सहमति जताई।

वाजपेयी जी की सरकार मे भी पड़ोसी दे" ाों के साथ सहयोगात्मक रूख अपनाया गया तथा मनमोहन सिंह जी की सरकार मे भी बांग्लादे" ा के साथ कई समझौतों व मुद्दो पर चर्चाए हुई तथा वर्तमान समय की नरेन्द्र मोदी जी की जून 2015 मे बांग्लादे" ा यात्रा के द्वारा भूमि अधिग्रहण तथा मोटर वाहन समझौते के द्वारा दोनों दे" ाों के बीच मधुर सम्बंध बनाये रखने के प्रयत्न किये जा रहे है। फरक्का में गंगा के पानी का विवाद प्रमुख है। भारत व बांग्लादे" ा सम्बंधों को सुचारू व सफलतापूर्वक चलाये जाने मे अनेक समस्यायें व चुनौतियां भारत व बांग्लादे" ा के बीच उत्पन्न है। इसके सबसे प्रमुख समस्या अवैध अप्रवासन की रही है। बांग्लादे" ा के जन्म से लेकर वर्तमान समय तक यह समस्या दोनो दे" ाों के मध्य विवाद का कारण बनी हुई है। भारत में 13 राज्य ऐसे है जिसकी सीमायें बांग्लादे" ा की सीमाओं से नजदीक है तथा अवैध प्रवासियों की भाशा, रहन सहन, खान पान, इन नजदीक के राज्यों से काफी हद तक मिलता जुलता है। इन राज्यों मे जम्मू एवं क" मीर, गुजरात, उत्तर प्रदे" ा, पि" चम बंगाल, त्रिपुरा, आंधप्रदे" ा, असम तमिलनाडु, गोआ, पांडेंचेरी और दिल्ली आदि भाामिल है।

चकमा भारणार्थियों की समस्या भी दोनों दे"ाों के मध्य प्रमुख है–

चकमाओं का आगमन के कारण पूर्वी बंगाल में इनका बढ़ता बाहुल्य चिंता का विशय है। चकमा चिटगांव पहाड़ी क्षेत्र की जुम्मा जाति के लोग है जो बांग्लादे" ा की बहुसंख्यक मुसलमान प्रजाति से पृथक है। इन लोगों के साथ असमानता, अत्याचार के कारण इन्होनें भारतीय सीमाओं में प्रवे" ा करना भुरू कर दिया जिसके कारण इन पूर्वोत्तर राज्यों की जनसंख्या में वृद्धि होने लगी तथा इन राज्यों की जनता मे असंतोश की भावना ने जन्म लिया।

आतंकवाद भी भारत व बांग्लादे" ा सम्बंधों मे प्रमुख तनाव के कारणों मे एक है। क्योकि बांग्लादे" ा भी पाकिस्तान के आतंकाकारी नेटवर्क से जुड़ा हुआ है। यहां का आंतकवादी संगठन हूजी अपनी आतंकवादी गतिविधियों के माध्यम से सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देता रहता है। कई जगह हुये बम विस्फोटो, संसद पर हमला, मुम्बई बम विस्फोट, अजमेर मे दरगाह मे विस्फोट, जयपुर में बम

विस्फोट आदि में इन संगठन का हाथ होना पाया गया है। मादक द्रव्यों की तस्करी भी दोनों दे" ाों के बीच समस्या है। खुली समाओं के कारण सीमा पर से फेंसेडिल व कई न" ाीली वस्तुंए भारत मे भेजी जाती है जिससे यहां पर नवयुवकों को गुमराह कर उनको न" ो का ि" ाकार बनाया जाता है।

भारत बांग्लादे" ा सम्बंधों से जुड़े विवादों की सुलझाने के लिए समय समय पर यहां के भाासनाध्यक्षों व भाासना प्रमुखों के द्वारा यात्राऐं, भाांति वार्ताऐं व समझौते किये। एम.ई.ए. की रिपोर्टस यह बतलाती है कि दोनों दे" ाों मे मधुर सम्बंध बनाये रखने के लिए सन् 2000 से 2015 तक भरसक प्रयत्न किये गये।

अवैध अप्रवासियों की समस्या के समाधान के लिए वहां के राज्यों के राजनीतिज्ञों को अपने वोट बैंक की तरफ ध्यान देकर अपने दे" ा की सुरक्षा तथा यहां के नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अपनी सक्रिय भूमिका अदा करनी होगी। ऐसे अवैध लोगों की पहचान के लिए फर्जी मतदाता पहचान पत्रों को बनाये जाने की प्रक्रिया को बंद करना होगा तथा यहां के नागरिकों से पूछताछ कर सूचना तंत्र को मजबूत बनाकर ऐसे लोगों का पता लगाना होगा। आतंकवाद पर काबू पाने के लिये सीमा सुरक्षा बल को भी अपनी सक्रिय भूमिका अदा करनी होगी। अगर दे" ा को बाह्य अप्रवासियों से बचाना है तो इन पर कड़ी चौकसी रखनी होगी।

सीमा पार से की जा रही गतिविधियों पर नियंत्रण के लिये हमारे सुरक्षा तंत्र को मजबूत करना होगा। तथा सीमाओं पर जो सैन्य अधिकारी है उनको थोड़ा सा और ध्यान देने की जरूरत है की उनके वहां होते हुये भी किस तरह से घुसपैठियें यहां आ जाते है।

जिन राज्यों मे अवैध अप्रवासी घुसपैठ करते है वहां के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर को प्रभावित करते है। इन राज्यों के लोगों मे घुसपैठियों के कारण असुरक्षा के भाव ने जन्म लिया है।

घुसपैठ की समस्या के लिए दोनों के बीच बातचीत होनी आव" यक है। बांग्लादे" ा को चाहिए कि अपने नागरिकों तथा जो उस क्षेत्र मे रह रहे है उन्हे नागरिकता प्रदान करें उनके अवैध प्रवासन पर रोक लगाये। कट्टरपंथियों से खतरा भी एक प्रमुख समस्या रही है। भारत व बांग्लादे" ा केवल पड़ौसी राश्ट्र ही नही है अपितु इन दोनों दे" ाों की समान संस्कृति भाशा सांझा इतिहास एक सांझी विरासत

संस्कृति का मेल तथा इनके अतिरिक्त दोनों ही दे” ा अंतरंग भावनाओं को भी भ्रातत्व भाव से अनुभव करते है। भारत यह प्रयास कर रहा है कि बांग्लादे” ा से भारत मे अध्ययन करने के लिए आये छात्रों को प्रतिवर्श लगभग 300 छात्रों को छात्रवृति मिले।

भारत व बांग्लादे” ा के बीच की सीमा लगभग 4096 कि.मी. की मानी गयी है जो लम्बी है। इस पर गस्त लगाना अत्यधिक कठिन कार्य है। इसके पीछे नदियों के कटाव, घने जंगल वाली पहाड़ियां, कृशि क्षेत्र तथा मानवीय बस्तियां भौगोंलिक विविधताये आदि इसका कारण है। सीमा के छिद्र पूर्ण प्रकृति का होने के कारण अनेकों सीमा पार की। समस्यायें जैसे घुसपैठ, मादक पदार्थो की तस्करी, गैर कानूनी लोगों का आवागमन तथा फिरौती के लिए अपहरण, प” ाुओं की चोरी अवैध रूप स धन छिनना आदि है।

इन समस्या के समाधान के लिए समय–समय पर प्रयास किये जाते रहे है। वर्तमान समय मे भारत के प्रधानमंत्री ने 6 जून 2015 से 8 जून 2015 की दो दिवसीय बांग्लादे” ा यात्रा करके दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर समझौता किया हैः–

1. भारत व बांग्लादे” ा के बीच मोटर वाहन समझौता।
2. भूमि हस्तान्तरण सम्बन्धित समझौता

इसके तहत भूमि की अदला बदली के माध्यम से इस समस्या का हल ढूंढा जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बांग्लादे” ा यात्रा पर दोनों दे” ाों के बीच भूमि सीमा समझौते पर ऐतिहासिक करार हुआ है। इस समझौते के साथ ही दोनों दे” ाों के बीच पिछले 41 वर्शो से चले आ रह सीमा विवाद का समाधान हो गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और बांग्लादे” ा की प्रधानमंत्री भोख हसीना की मौजूदगी में भानिवार को भूमि समझौते के दस्तावेजों का आदान–प्रदान किया गया। इस मौके पर पं” चम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी मौजूद थी। इसे पिछले महीने भारत की संसद ने सर्वसम्मति से पारित किया था। इस समझौते के लागू होने के बाद दोनों दे” ाों की सीमा में बदलाव होगा। इससे पहले, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने दो दिवसीय दौरे पर बांग्लादे” ा पहुंचे। ढाका एयरपोर्ट पर उनका स्वागत

बांग्लाद" ा की पीएम भोख हसीना ने किया। दोनों दे" ाों के बीच द्विपक्षीय व्यापार दस्तावेज सहित 19 समझौते भी हुए।

कोलकाता, ढाका व अगरतला के साथ ढ़ाका, ि" ालांग व गुवाहाटी के बीच बस सेवा भ्रारू की गई है। मोदी, भोख हसीना और ममता बनर्जी ने बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कोलकाता–ढाका–अगरतला सेवा भ्रारू होने से पि" चम बंगाला और त्रिपुरा के बीच की दूरी 560 कि.मी. कम हो जाएगी।

भूमि अदला बदली सम्बन्धित समझौते के तहत दोनों दे" ाों के बीच 162 बिस्तयों का आदान–प्रदान हागा। बांग्लादे" ा को 111 बस्तियां मिलेगी, जबकि 51 भातर का हिस्सा बनेगें। समझौते मे भारत को 7110 एकड भूमि प्राप्त होगी जबकि बांग्लादे" ा को 17160 हजार एकड़ जमीन मिलेगी इसके अलावा 6.1 कि.मी. अनि" चत सीमा का भी सीमांकन किया जाएगा। 51 हजार लोगों की नागरिकता का सवाल भी सुलझ जाएगा। भारत मे जिन 4 राज्यों की भूमि अदला–बदली होगी, उनमें असम, मेघालय, त्रिपुरा और पि" चमबंगाल भाामिल है। बांग्लादे" ा में 111 भारतीय बस्तियों मे कुरीग्राम जिले में 12, नीलफामरी में 59 और पनहागर में 36 भाामिल है। भारतीय बस्तियों मे करीब 37 हजार लोग रहते है, वहीं बांग्लादे" ाी बस्तियों में 14 हजार लोग रहते है। लोगों को नागरिकता चुनने का विकल्प होगा। वे चाहें तो दोनों मे से किसी एक की नागरिकता ले सकेंगे। भारत और बांग्लादे" ा के बीच 4096 कि.मी. लम्बी सीमा लगती है।

***

(संदर्भ ग्रंथ सूची)

प्राथमिक स्रोत–

– ए प्रोजेक्ट ट सेव कलकत्ता पोर्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, न्यू देहली, 1961

- एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ द मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एण्ड रिहेबिले" ान, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, न्यू देहली 1971–72
- एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ कामर्स, गवर्नमेन्ट ऑफ बांग्लादे" ा, ढाका 1983–84
- बांग्लादे" ा कन्टमप्रेरी इवेन्टस एण्ड डॉक्यूमेन्टस मिनीस्ट्री ऑफ फारेन अफेयर्स, गवर्नमेन्ट ऑफ बांग्लादे" ा 1971
- बंगबन्धु स्पीक्स – ए कलेक" ान ऑफ स्पीचेज एण्ड स्टेटमेन्टस मेडबॉय भोख मुजीर्बुर रहमान, ढाका, मिनिस्ट्री ऑफ फारेन अफेयर्स गवर्नमेन्ट ऑफ बंग्लादे" ा 1972
- बांग्लादे" ा डॉक्यूमेन्टस – वाल्यूमन प्रथम, द्वितीय, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया न्यू देहली 1971
- बांग्लादे" ा प्रोग्रेस 1972, डीपार्टमेन्ट ऑफ पब्लिके" ान, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमे" ान एण्ड ब्रोडकास्टिंग, गवर्नमेन्ट ऑफ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा 1972
- बांग्लादे" ा स्टेस्टिकल इयर बुक, ढाका, बांग्लादे" ा स्टेस्टिकल डीवीजन मिनिस्ट्री ऑफ प्लानिंग 1991
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XVII, No.11 नवम्बर 1971
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XVIII No. 2 7 फरवरी, जुलाई 1972
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XXI, No.5 मई 1975
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XXII, No.5 मई 1975
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XXII No.9 11 सितम्बर एण्ड नवम्बर 1977
- फारेन अफेयर्स रिकार्ड वोल्यूम XXY No.4 अप्रैल 1979
- गवर्नमेन्ट ऑफ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा, प्लानिंग, कमी" ान II फाईव ईयर प्लान 1980–85 मई 1981
- गर्वमेन्ट ऑफ वेस्ट बंगाल, चीफ मिनिस्टर्स लेटर टू द सेन्ट्रल गवर्नमन्ट (सलेक्टेड) डीपाटमेन्ट ऑफ मिनिस्ट्री, ऑफ कल्चरल अफेयर्स 1981
- लोकसभा डीबेट्स 14 से" ान 1961–62 एवं 7.8.1961, 19.1.1961
- लोकसभा डोबेट्स 5 से" ान 1968 एस 4 (22.7.1968–2.8.1968)
- लोकसभा डीबेट्स वाल्यूम 2 नं. 3 जुलाई 21,1971

– लोकसभा डीबेट्स 9 अगस्त 1973 (वाल्यूम 3 कालम 69)
– पाकिस्तान नें" ानल असेम्बली डीबेट्स वाल्यूम प्रथम नं. 5 गवर्नमेन्ट ऑफ पाकिस्तान 1967
– रिपोर्ट ऑफ द मिनिस्ट्री एक्सटर्नल अफेयर्स गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया न्यू देहली 1972–73
– रिपोर्ट ऑफ मिनिस्ट्री एक्सटर्नल अफेयर्स गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया न्यू देहली 1975–76
– रिपोर्ट ऑफ द मिनिस्ट्री एक्सटर्नल अफेयर्स गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया न्यू देहली 1976–77
– रिपोर्ट आफ द यू.एन.हाई कमी" ानर फार रिफ्यूजीज जनरल असेम्बली ऑफिसियल रिकार्ड (जी.ए.ओ.आर.) 27 सें" ान सप्लीमेन्ट नं. 12 न्यूयार्क 1972
– ए रिपोर्ट बाय सीनेटर एडवर्ड एम. कैनेडी टू द सब कमेटी टू इनवेस्टिगेट प्राब्लम्स कनेक्टेड विद रिफ्यूजीज एण्ड एस्केपीज वा" ंगटन, नवम्बर 1971
– सलेक्ट इण्डोपाक एग्रीमेन्ट, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स न्यू देहली 1976
– स्टेस्टिकल इअर बुक फार ए" ाया एण्ड पेसिफिक (ई.एस.सी.ए.पी.) यू.एन. 1981
– स्टेट्युट ऑफ इण्डो बंगाल जाईन्ट राइवर्स कमी" ान 1972
– द फरक्का बेरेज– पब्लिके" ान डीवीजन मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स न्यू देहली 1972
– व्हाईट पेपर आल द डेड लोक आनन्द गरिज, गवर्नमेन्ट ऑफ पीपुल्स, रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा सितम्बर 1976
– व्हाईट पेपर आन साउथ तलपति आईसलैण्ड मिनिस्ट्री आफ फोरेन अफेयर्स गवर्नमन्ट ऑफ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा, ढाका 1981
– व्हाईट पेपर आन गंगेज वाटर डीस्पुट्स, गवमेन्ट ऑफ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बंगलादे" ा सितम्बर 1976 किसीग्सं कन्टेमप्रेरी आर्चीज (1971–1980)
– एन्युवल रिपोर्टस– मेटर ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स,

(भारतीय विदे" ा मंत्रालय– वर्श 2000–2014)

द्वितीयक स्रोत–

– अब्बास.बी.एम. द गंगेज वाटर डीसपुट न्यू देहली विकास पब्लि" ांग हाउस प्राइवेट लिमिटेड (देहली 1982)
– अहमद एमाजुद्दीन, फोरन पालिसी ऑफ बांग्लादे" ा यूनिवर्सिटी ऑफ ढाका 1984
– अहमद माउदूह, बांग्लादे" ा, एरा ऑफ भोख मुजीर्बुर रहमान ढाका (1982)
– अहमद सलाउद्दीन, बांग्लादे" ा पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, ए.पी.एच., पब्लि" ांग कार्पोरे" ान (न्यू देहली) 1971
– अली.एस.एम.,आफ्टर द डार्क नाइट, प्राब्लमस ऑफ भोख मुजीबुर्र रहमान थामसन, प्रेस, देहली 1973
– अप्पादोरायी, ए.ए. सलेक्टेड डाक्यूमेन्टस ऑन इण्डिया फारेन पॉलिसी एण्ड रिले" ानस 1947–1972 वाल्यूम द्वितीय। आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यू देहली (1985)
– अयूब, मोहम्मद, इण्डिया पाकिस्तान एण्ड बांग्लादे" ा सर्च फार न्यू रिले" ान ि" ाप, इण्डियन काउन्सिल फार वर्ल्ड अफेयर्स न्यू देहली 1975
– अयूब मोहम्मद एण्ड सुब्रमण्य के., द लिबरे" ान वार न्यू देहली
एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी न्यू देहली 1972
– आजाद मोलाना अब्दुल कलाम, इण्डिया वीन्स फ्रीडम– द कम्पलीट वजन आरियन्ट लागमेन (लिमिटेट) न्यू देहली 1988
– बहादुर कलीम (इडी) साउथ ए" ाया इन ट्रान्सिटन
कानफ्लिक्ट एण्ड ट" ानस न्यू देहली पेट्रीयार पब्लि" ाग 1986
– बेन्स जे.बी. इण्डियाज इन्टरने" ानल डीसपुट्स ए लीगल स्टडी ए" ायन पब्लि" ांग हाउस (लंदन 1962)
– बनर्जी ब्रोजेन्द्रनाथ, इण्डियाज एड टू इटस नेबरिंग कन्टरीज सलेक्ट न्यू देहली 1982

– बेक्सटर सी., बंग्लादे" ा, ए.यू.ने" ानल इन एन आल्ड सेटींग, बावण्डर वेस्ट व्यू 1984
– बेगम खु" ीद, टेन्सन आवर फरक्का बेराज ए टेक्नो पालिटिकल एंगल इन साउथ ए" ाया यूनिवर्सिटी प्रेस ढाका 1987
– भार्गव जी.एस. पाकिस्तान इन क्रीसीस, विकास पब्लि" ांग हाउस प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1969
– भट्टाचारी जी.जी.पी. रेनिसेन्स एण्ड फ्रीडम् मूवमेन्ट इन बंग्लादे" ा द मिलवी एसोसिएटस कलकत्ता 1973
– बिन्द्रा एस.एस. इण्डो बांग्लादे" ा रिले" ान्स" ाप एण्ड दीप पब्लिके" ान्स न्यू देहली 1982
– वि" वास जय श्री यू.एस. बांग्लादे" ा रिले" ान्स मिनर्वा पब्लिके" ान्स कलकत्ता 1984
– ब्लीडिंग बांग्लादे" ा क्राइम अगेन्स्ट ह्यूमिनिटी, एडियटोरियम डीपार्टमेन्ट सागर पब्लिके" ान न्यू देहली 1971
– ब्रास पी.आर. एण्ड फ्रण्डा रेडीकल पालिटिक्स इन साउथ ए" ाया केम्ब्रीज मास द एम.आई.टी. प्रेस 1973
– चक्रवर्ती एस.के. द इवोल्यू" ान ऑफ पालिटिक्स इन बांग्लादे" ा 1947–78 एसोसिएटिंग पब्लिक" ांग हाउस न्यू देहली 1978
– चौधरी कल्याण, जेनोसाइड इन बांग्लादे" ा आरियन्ट लागमेन न्ये देहली 1972
– चौपडा प्राण, द चैलेन्ज ऑफ बांग्लादे" ा पापुलर पब्लिके" ान्स बाम्बे 1971
– चौधरी जी डब्ल्यू द लास्ट डेज ऑफ यूनाइटेड पाकिस्तान यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया नीदरलैण्डस 1974
– चौधरी जी.डब्ल्यू, इण्डिया पाकिस्तान, बांग्लादे" ा एण्ड मेजर पावर पॉलिटिक्स ऑफ द डीवाइडेट सब कान्टिनेन्ट द फ्री प्रेस न्यूयार्क 1975
– दीक्षीत जे.एन., लीबरे" ान एण्ड बीयाण्ड बांग्लादे" ा कोनार्क पब्लिर्स प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1993

– दीक्षीत जे.एन. इण्डियन फारेन पालिसी एण्ड इटस नेबर्स ज्ञान पब्लि" ार्स न्यू देहली 2001
– दत्त वी.पी., फारने पालिसी विकास पब्लि" ंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली
– फलण्ड जस्ट एण्ड पार्किन्सन जे.आर. बांग्लादे" ा, ए टेस्ट के" ा फार डेवलपमेन्ट द यूनिवर्सिटी प्रेस लिमिटेड ढाका 1976
– फेल्ड मेन एच., फ्रोम क्रीसीस टू क्रीसीस पाकिस्तान 1969–71 आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लंदन 1972
– फ्रन्दा मार्कस, बांग्लादे" ा द फर्स्ट डीकेड साउथ ए" िया पब्लिक" ार्स प्राइवेट लिमिटेट न्यू देहली 1982
– फ्रन्दा मार्कस– जिउर रहमानस बांग्लादे" ा पार्ट द्वितीय पार्टी एण्ड डीकान्डेन्ट अमेरिकन यूनिवर्सिटी फील्ड स्टाफ रिपोर्ट ए" िया वाल्यूम 2
– गांधी इन्दिरा, इण्डिया एण्ड बांग्लादे" ा सलेक्टेड स्पीचीज एण्ड स्टेटमेन्टस मार्च टू दिसम्बर 1971 आरियन्ट लागमैन न्यू देहली 1972
– घोश पर्थ एस कॉपरे" ान एण्ड कानफ्लिक्ट इन साउथ ए" िया मनोहर पब्लिके" ानस डीस्ट्रीब्यूटर्स न्यू देहली 1995
– ग्रोवर विरेन्द्र , पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा दीप एण्ड दीप पब्लिके" ान न्यू देहली 2000
– गुजराल आइ.के. कन्टीन्यूटी एण्ड चेन्ज, इण्डियाज फारेन पालिसी मिनीस्ट्री ऑफ एक्सरर्नल अफेयर्स 2003
– गलाटी, चन्द्रिका जे. बांग्लादे" ा, लिबरे" ान टू फण्डामिन्टलिजम कामनवेल्थ पब्लि" ार्स न्यू देहली 1990
– गुप्ता, दास आर.के. रिवोल्यू" ान इन ईस्ट बंगाल न्यू देहली 1972
– गुप्ता, दास, ज्योन्द्रिा लेग्वेज कानफ्लिक्ट एण्ड ने" नल डवपलमेन्ट ग्रुप पालिटिक्स एण्ड ने" ानल लेग्वेज पॉलिसी इन इण्डिया (यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस 1978)
– गुप्ता एण्ड राधाकृश्णा (इडी) वर्ल्ड मीट आन बांग्लादे" ा न्यू देहली 1972

– गुप्ता, भामनी सेन, सोवियत एशियन रिलेशन इन द 1970 एण्ड बियोण्ड, प्रेयर पब्लिशर्स (न्यूयार्क 1977)

– गुप्ता ज्योति, सेन, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमन्ट इन बांग्लादेश 1947–1977 नया प्रोकास (कलकत्ता 1974)

– गुप्ता ज्योति सेन, बांग्लादेश इन ब्लड एण्ड टीअर्स नया प्रोकास, कलकत्ता (1981)

– हेदर सलमान– इण्डिया बांग्लादेश स्ट्रेन्थनिंग पार्टनरशिप सेन्टर फार रिसर्च इन रूरल एण्ड इण्डस्ट्रीयल डेवलपमेन्ट चण्डीगढ़ 2005

– हुसैन, इस्तोयाक – इण्डिया एण्ड द वार ऑफ लिबरेशन इन बांग्लादेश फोरम फोर इन्टरनेशनल अफेयर्स (अगस्त 1978)

– हुडसन जी.एफ. – रिफार्म एण्ड रिवोल्यूशन इन एशिया, जार्ज एलन एण्ड उर्विन लिमिटेड (लंदन 1972)

– हक, मुहम्मद, भामशुल – बांग्लादेश इन इन्टरनेशनल पालिटिक्स द डीलेमाज ऑफ द वीक स्टेट्स यूनिवर्सिटी प्रेस (ढाका 1993)

– हक मुहम्मद, भामशुल : इन्टरनेशनल पालिटिक्स ए थर्ड वर्ल्ड पर्सपेक्टिव स्टरलींग पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड (न्यू देहली 1992)

– इन्टरनेशनल कानफ्रेन्स आन बांग्लादेश इन्टरनेशनल कमेटी ऑफ फ्रेण्डस ऑफ बांग्लादेश (न्यू देहली 1971)

– इस्लाम, नुरूल – डेवलपमेन्ट प्लानिंग इन बांग्लादेश ए स्टडी इन पालिटिकल इकोनोमी हर्स्ट एण्ड कम्पनी लंदन 1977

– इस्लाम नुरूल – डेवलपमेन्ट स्ट्रेटेजी ऑफ बांग्लादेश क्वीन एलिजाबेथ हाउस परगामाने प्रेस (आक्सफार्ड 1978)

– इस पाहनी, एम.ए.एच. क्वेडी आजम जिन्नाह एज.आई.न्यू हीम, फारवर्ड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट करांची 1966

– जेकसन, रोबर्ट – साउथ एशियन क्रीसीस इण्डिया पाकिस्तान बांग्लादेश छाटो एण्ड विवडस लंदन 1975

– जहान रोनक, पाकिस्तान फेल्योर इन इन्टरनेशनल इन्टग्रेशन कोलम्बिया (यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क 1972)

– जोन्स पीटर, द इन्टर ने" ानल इअर बुक ऑफ फारेन पालिसी एनालेसिस क्रुम हेल्थ लंदन 1974
– जुक्स जी.आर. द सोवियत यूनियन इन एि" ाया ओगस एण्ड रोबर्टसन (सीडनी 1973)
– कर्लवान वोरयास, पालिटिकल डेवेलपमेन्ट इन पाकिस्तान प्रिन्सटन सेन्टर फार इण्डरने" ानल स्टडीज प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस (प्रिन्सटन 1965)
– करूणाकरण के.पी.– रिलीजन एण्ड पालिटिकल अवेकिंग इन इण्डिया मीनाक्षी प्रका" ान (कलकत्ता 1965)
– क" यप, सुमाश, बांग्लादे" ा बेकग्राउण्ड एण्ड पर्सपेक्टिवज द इन्स्टीटयूट ऑफ कन्सटिटुय" ान एण्ड पार्लियामेन्टरो स्टडीज (न्यू देहली 1971)
– खान, अयूब फ्रेण्डस एण्ड नाट मास्टर्स ए पालिटिकल बायोग्राफी आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (लंदन 1967)
– खान अजीनूर रहमान, द इकोनोमी ऑफ बांग्लादे" ा मेकमिलन (लंदन 1972)
– खातिब ए.एल. हू कील्ड मुजीब विकास पब्लि" िंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड (देहली 1981)
– किसीजर हेनरी द व्हाइट हाउस इअर लीटिल ब्राउन एण्ड कम्पनी बोस्टन 1979
– कोडीकारा यू" ाल्ज– एक्सटर्नल कम्पलरान्स ऑफ साउथ एि" ायन पॉलिटिक्स सेज पब्लिके" ान्स न्यू देहली 1981
– लीच इटमूण्ड एण्ड मुखर्जी एस.एन. एलिटस इन साउथ एि" ाया केम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस 1970
– लिफ्सब्यूटज लोरन्स बांग्लादे" ा द अनफिनिस्ट रिवोल्यूए" ान जेड प्रेस लंदन 1979
– लंदन कुर्त हाउ फोरेन पालिसी इज मेड सैकण्ड एडी" ान डी वेन नास्ट्रेण्ड कम्पनी (टोरेटो 1950)
– मेक्रिडीस, राम सी– फारेन पालिसी इन वर्ल्ड पालिटिक्स, 5 एि" ायन, एंजलवुड क्लीफ्स, एन.जे. प्रेन्टिस हाल 1976

– मजूमदार रामेन्टु बांग्लादे" ा माई बांग्लादे" ा, भोख मुजीर्बुर रहमान सलेक्टेड स्पीचेज एण्ड स्टेटमेन्ट मुक्ताधारा ढाका 1972
– मानेकर डी.आर.– पाक कालोनिजम इन ईस्ट बंगाल, सौम्या पब्लिके" ान प्राइवेट लिमिटेट (बाम्बे 1971)
– मनिरूज्जसान, तालुकदार– बांग्लादे" ा रिवोल्यू" ान एण्ड इटस आफ्टरनेट बांग्लादे" ा बुकस इण्डरने" ानल ढाका 1980
– मनिरूज्जमान तालुकदार रेडिकल पोलिटिक्स एण्ड द इमरजेन्स ऑफ बांग्लादे" ा, बंगलादे" ा बुक्स इण्डरने" नल ढाका (1978)
– मास्कर नहास, द रेप ऑफ बंगलादे" ा विकास पब्लिसिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1971
– मास्करन हास, बंगलादे" ा ए लेजेसी ऑफ ब्लड लंदन 1986 मिश्रा पी.के. इण्डिया पाकिस्तान नेपाल, एण्ड बंगलादे" ा
– मिश्रा पी.के. इण्डिया पाकिस्तान नेपाल, एण्ड बगलादे" ा संदीप प्रका" ान देहली 1979
– मिश्रा के.पी.– जनता फाइन पालिसी विकास पब्लि" िंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1999
– मोमेन नुरूल, बांग्लादे" ा इन यू.एन.ए.स्टडी इन डिप्लोमेसी यूनिवर्सिटी प्रेस (ढांका 1987)
– मुस्तफा गोलाम– ने" ानल इन्टरेस्ट एण्ड फारेठा पालिसी बांग्लादे" ा रिले" ान वीद सोवियत यूनियन एण्ड इट्स सकेसर स्टेट्स साउस ए" िया पब्लिके" ान्स (न्यू देहली 1955)
– मुहित ए.एम.ए. बांग्लादे" ा, इमरजेन्स ऑफ ए ने" ानल बांग्लादे" ा बुकस इण्डरने" ानल लिमिटेड ढाका 1978
– नायिक जी.ए. इण्डिया रसिया चाइना एण्ड बांग्लादे" ा एस.चन्द एण्ड कम्पनी न्यू देहली 1972
– नारायण, वी.फारेन पालिस ऑफ बंगलादे" ा, 1978–1981 आलेख पब्लिके" ान्स जयपुर 1982

– नजमुल करीम ए.के. द डायनेमिक्स ऑफ बांग्लादे" ा सोसायटी विकास पब्लि" ांग हाउस प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1980
– निक्सन, रिचर्ड एम.यू.एस. फारेन पालिसी फोर द 1970
द इमर्जिंग स्ट्रक्चर ऑफ पीस ए रिपोर्ट टू कांग्रेस वा" ांगटन 1972
– आलीवर थामस डब्ल्यू द यूनाइटैड ने" ान्स इन बांग्लादे" ा प्रिंसटन एन.जे. प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस प्रिन्सटन 1978
– पामर नार्मन डी साउथ ए" ाया यूनाइटेड स्टेटस पालिसी हंगटन मिफलित बोस्टन 1966
– पाटील बी.टी. त्रिवेदी, पी.आर. रिफ्यूजीज एण्ड ह्यूमन राइटस इण्डियन इंस्टीटयूट ऑफ ह्यूमन राइटस न्यू देहली 2000
– पिल्लयी के.रमन इण्डियन फारेन पालिसिज इन द 1990 रेडीयन्ट पब्लि" ार्स न्यू देहली 1977
– रहीम.एम.ए. – बांग्लादे" ा इकानामी प्राब्लम एण्ड इ" यूज, यूनिवर्सिटी प्रेस लिमिटेड बंगलोर 1998
– रहमान मिजालूर– इमरजेन्स ऑफ ए न्यू ने" ानल इन ए मल्टीपोलर वर्ल्ड बांग्लादे" ा मुलिदास्टिी प्रेस लिमिटेड बांग्लादे" ा 1979
– राय बलगीत– डेमोग्राफिक एग्रेसन अगेंसट इण्डिया एवलेन्च फ्रोम बांग्लादे" ा बी.एस. पब्लिके" ान्स चण्डीगढ 1993
– राय.जे.के. डेमोक्रेस एण्ड ने" ानलिजम ऑन ट्रायल एस्टडी ऑफ ईस्ट पाकिस्तान इण्डिया इनस्टीटयूट ऑफ एडवांस स्टडीज ि" ामला 1968
– राय.आर.के. सो" ायल कानफ्लिक्ट एण्ड पालिटिकल अनरस्ट इन बंगाल 1875–1927 आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (न्ये देहली 1984)
– भााह रेखा– इण्डिया एण्ड बांग्लादे" ा, मिनर्वा पब्लि" ाग हाउस कलकत्ता 2000
– भामादार रनवीर – रिफ्यूजीज एण्ड स्टेट– प्रक्टिसेज ऑफ एज्यूलम एण्ड केयर इन इण्डिया 1947–2000 सेज पब्लिके" ान्स (न्यू देहली 2003)
– सेन रंगालाल– पॉलिटिकल एलीट्स इन बांग्लादे" ा, यूनिवर्सिटी प्रेस ढाका (1986)

– भार्मा एस.आर. बांग्लादे" ा क्रिसीस एण्ड इण्डियन फोरन पालिटिक्स यंग एि" ाया पब्लिके" ान न्यू देहली 1978
– सिंह कुलदीप – इण्डिया एण्ड बांग्लादे" ा गुनिमाल पब्लिके" ान्स (न्यू देहली 1987)
– सुब्रमण्यम के. – बांग्लादे" ा एण्ड इडिया सेक्यूरिटी (पब्लिक एण्ड दल) देहरादून 1972
– तारीक अली – पाकिस्तान मिलीटरी रूल और पोप्ल्स पावर जानाथन केंप लदंन 1970
– टीकू रत्ना, इण्डो पाक रिले" ान्स पालिटिक्स और डाइवरजेन्स एण्ड कन्वरजेन्स ने" ानल पाब्लिक हाउस (न्यू देहली)
– अमर बदमाद्दीन– पालिटिक्स एण्ड सोसायटी इग ईस्ट पाकिस्तान एण्ड बांग्लादे" ा मोक ब्रदर्स (ढाका 1973)
– वाजपेयी अटल बी– न्यू डाइमे" ान्स ऑफ इण्डियाज फारेन पालिसी लिमिटेड विजन बुक्स प्राइवेट लिमिटेड न्यू देहली 1979
– वर्मा एस.पी. एण्ड मिश्रा एस.एम. पाकिस्तान सर्च फोर ए कान्स्टीटयू" ानल कॉन्सससस जयपुर 1968
– वर्मा एस.पी. एण्ड नारायण विरेन्द्र पाकिस्तान पालिटिकल्स सिस्टम इन क्रिसीस जयपुर 1972
– विलकोक्स, वामन, द इमरजेन्स ऑफ बांग्लादे" ा प्राब्लम एण्ड अपोच्यूनिटीज फार ए रेडीफाइन्ड अमेरिकन पालिसी इन साउथ एि" ायन इन्स्टीटयूट फार पब्लिक पॉलिसी रिसर्च (वा" िंगटन 1973)
– राइट डेनिस, बांग्लादे" ा – आर्गेन्स एण्ड इण्डियन ओसियन रिले" ान्स 1971–75
स्टर्लिंग पब्लि" ार्स, न्यू देहली, 1998
– जाफर उल्लाह हबीब– द जीया एपिसोड इन बांग्लादे" ा पालिटिक्स साउथ एि" ाया पब्लिके" ान्स प्राइवेट लिमिटेड (न्यू देहली 1996)
– जीरींग एल.– बांग्लादे" ा फ्राम मुजीब टू इर" ाद एण्ड इन्टरप्रेटिव स्टडी आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस आक्सफोर्ड 1992

– जीरींग एलत्र द अयूब खान एरा पालिटिक्स इन पाकिस्तान, यूनिवर्सिटी प्रेस स्याराकस 1971

लेख –

– अब्दुल फजम हक–कन्स्टीटयू" ान मेकिंग इन बांग्लादे" । पे" ाफिक अफेयर्स 46 (1) इसींग 1973

– आचार्य अलका–रिजनल कानफ्लिक्ट एण्ड सेक्यूरिटी इन द 1990 द के" । ऑफ साउथ ए" ाया स्ट्रेटेजिक एनलोसिस VOL XIII : No.11 1981 फ्रेबुवरी–अहमद के.यू.

– डेवलपमेन्ट प्लानिंग इन बांग्लादे" । ए स्टडी इन पालिटिकल इकोनोमी एरिव्यू आर्टिकल बांग्लाद" । डेवलपमेन्ट इकोनोमिक्स 8 (3)–अहसान अली, बांग्लादे" ।–ए पर्सनल एपिसल क्वेस्ट सितम्बर–अक्टूबर 1971 पीपी 9–11

– अलाम क्यू.–द नेचर ऑफ बांग्लादे" । स्टेट इन द पोस्ट 1975 पीरियड कन्टेमप्रेरी साउथ ए" ाया 2, 193, पीपी 311–325

– अलेक्स कनलीफ–द रिफ्यूजी क्रिसीस ए स्टडी ऑफ द यूनाइटेड ने" ानल्स हाइकमी" ान फार रिफ्यूजीज, पॉलिटिकल स्टडीज 1995, XLIII

– अलो मजहर खान–बांग्लादे" । इम्प्रे" ान्स ऑफ ए पाकिस्तानी जर्नलिस्ट स्ट्रेटजिम डाइजेस्ट VOL III No.2 फेब्रुवरो 1973, पीपी 1–31

– अरविन्द आर डीओ–साउथ ए" ायन नेबर्स वर्ल्ड फाकस 12 एनुअन नम्बर , नवम्बर दिसम्बर 147–144 पी.पी. 28–35

– बांग्लादे" ा– प्राब्लमस ऑफ विक्टरी इकोनोमिक एण्ड पालिटिकल विकली 13 (24) जून 17, 1978 पीपी 976–978

– बांग्लादे" । रिकोजनाइज्ड, फाइट फार ह्युमन राइट्स इण्डियन एण्ड फारेन रिव्यू 9 (5) दिसम्बर 15, 1971 पी.पी. 3–6

– बांग्लादे" ा– रिफरेण्डम एण्डारसेस जिया रूल, 134 (3447) जुन 1977, पी. पी. 1048–49

– वाजपेयी यू.एस. इण्डिया एण्ड इट्स नेबर हुड मेन्सट्रीग वाल्यूम अप्रेल 12, 1978 पीपी 11–16

- बख्शी ज्योत्सा –सोवियत एटीट्यूट टुवर्डस बांग्लादे" । लिबरे" ान मूवमेन्ट ए स्टडी इन कान्टेक्ट एनालेसिस ऑफ सोवियत प्रेस – इण्डियन जनरल ऑफ पालिटिकल साइन्स 38 (2) अप्रेल, जून 1977
- बनर्जी सुब्रत– बीग भोयर ऑफ बंगला वाटरर्स फोर बंग्ला इकानोमिक टाइम्स 8 अगस्त 1977
- बेर्टोकी पी.– बांग्लादे" । इन द अर्ली 1980 पेरिटोरियन पालिटिक्स इन एण्ड इन्टरमिडियेट रिजाइम, एसियन सर्वे 22 (10) पीपी 88–1008
- भट्ट पी.आर. ट्रेर्ड फ्लोज इन साउथ एि" ाया, मेन एण्ड डेवलपमेन्ट, वाल्यूम न. 6 नं. 4 सितम्बर 1984 पी.पी. 108–14
- भास्कर प्रसाद मिश्रा– नीड फार रिकोजनाइजे" ान ऑफ बांग्लादे" । मेन्सस्ट्रीम, अगस्त 14, 1971 पीपी 13–14
- भास्करन नेयर एम. इण्डियाज इमेज इन बांग्लादे" । जनता वाल्यूम XXXNo.3 फ्रेबुवकी 1975
- भ्रामनी सेन गुप्ता– मोस्को पीकींग एण्ड द इण्डियन पालिटिकल सेन्" । आफ्टर नेहरू आब्रीस फिलेड फिलडोल्फिया XII No.2 समर 1968
- बिन्द्रा एस.एस. फरक्का बेरेज एग्रीमेन्ट ए. रिव्यू पंजाब जनरल ऑफ पॉलिटिक्स वाल्यूम IV, No 1 जनवरी जून 1980 पी.पी. 64–80 चाइना रिपोर्ट 11 (3) मई–जून 1975 चाइना रिपोर्ट 11 (3) मई जून 1975
- चोपरा के.एल. रिकोजनाईजे" ान ऑफ बांग्लादे" ा, इन्टरने" ानल ला रिपोर्टर वाल्यूम (4–5) 10 अप्रैल मई 1971
- चौधरी जी. डब्ल्यू. द इमरजेन्स ऑफ बांग्लादे" । एण्ड द सोवियत एि" ायन ट्राइ एंगल, द ईअर बुक ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स लंदन VOL 27, 1973
- चौधरी जी. डब्ल्यू यू.एस. पॉलिसी टुवर्डस द सब कान्टिनेन्ट पेसिफिक कम्प्यूनिटी अक्टूबर 1974
- चौधरी जी डब्ल्यू. बांग्लादे" । वाइ इट हेपन्ड इन्टरने" ानल अफेयर्स लंदन वाल्यूमन 48 (2) अप्रैल 72
- देव मार्के बांग्लादे" । क्रीसीस ए रिव्यू फ्रोम मोस्को 123 (3116) कामर्स 4 सितम्बर 1971

– दीक्षित आर.के.–इण्डो पाकिस्तान टाक्स ऑल फरक्का बेराज एण्ड रिलेडेड मेटर इण्यिन जनरल ऑफ इंटरने" ानल ला वाल्यूम IV, 1969
– इस्टर्न इकोनोमिस्ट – 14 (58) अप्रेल 14, 1972
– इस्टर्न इकोनोमिस्ट 11 (65) (15) अगस्त 1975
– इस्टर्न इकोनोमिस्ट – व्हाट मस्ट वेडो 50 (18) अप्रैल 30
– इकोनोमिक्स बिहाइन्ड बंगला रिवोल्ट कामर्स अप्रेल 17, 1971
– इकानोमिक पोस्पेक्टस द न्यू ने" ानल ऑफ बांग्लादे" ा कामर्स कामर्स रिसर्च ब्यूरो 11 दिसम्बर 1971
– इकोनोमिक एण्ड पालिटिकल वीकली वाल्यूम XVI No.2, 23 मई 1981
– इम्पलीके" ान्स ऑफ एगो अमेरिकन मूव जनवरी 23 फेबुवकी 4, 1978
– इकोनोमिक्स एण्ड पालिटिकल विकली एडहाक ऑन फरक्का VOl XI No.4 अप्रेल 3, 1976
– इकोनोमिक एण्ड पालिटिकल विकली मुडीड वाटर्स 17 (1977)
– घोश इनफ्लक्स ऑफ रिफ्यूजीज फ्रोम बांग्लादे" ा ''द हिन्दू 26 सेप्टेम्बर 1971
– हकीम एम.ए. एण्ड हक ए. एस. कन्स्टीटयू" ानल एमेंडमेंट इन बांग्लादे" ा रिजनल स्टडीज 12 (2) 1994
– हक.ए. जियाज पालिटिक्स एण्ड स्ट्रेटेडोज ए.पीप इन टू देयर लिमिटे" ान्स एि" ायन सर्वे, 21, 1994
– हसन एस. बांग्लादे" ा जिया एण्ड द नान एलाइनमेन्ट मूवमेन्ट बी–11 एस. एस. जनरल ए स्पे" ायल इ" यू 1981
– हुसैन एम द नेचर ऑफ स्टेट पावर इन बांग्लादे" ा जनरल ऑफ सो" ायल स्टडीज 5, 1979
– हुसैन एस.ए. बांग्लादे" ा एण्ड इस्लामिक कन्टरीज, 1972–1983 इन चक्रवर्ती, एस.आर. एण्ड नारायण बी बांग्लादे" ा वाल्यूम तृतीय ग्लोबल पॉलिटिक्स न्यू देहली साउथ एि" ायन पब्लि" ार्स
– इण्डिया ब्रेक ग्राउण्डर टवुर्डस सोल्यू" ान आन फरक्का वाल्यूमन 11 नं. 7 (59) मई 16, 1977
– इण्डिया बेक ग्राउण्डर इण्डिया एण्ड बांग्लादे" ा सीन्स मुजीब वाल्यूम 11 नं. 41 (93) जनवरी 9,1970
– राजस्थान समाचार पत्रिका

---

i ग्रोवर वीरेन्द्र, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादे" ा, बांग्लादे" ा गवर्नमेन्ट एण्ड पॉलिटिक्स, दीप एण्ड दीप पब्लिके" ान्स, न्यू देहली, 2002 पृ. 45

ii हक मोहम्मद, " ाम" ुल, 'बांग्लादे" ा इन इन्टरने" ानल पॉलिटिक्स द डिलेमास ऑफ द वीक स्टेट, ढ़ाका यूनिवर्सिटी प्रेस लि.,1993, पृ.20

iii नायर, सुकुमारन पी., इण्डो–बांग्लादे" ा रिले" ान, ए.पी.एन.पब्लि" िंग कॉरपोरे" ान, नई दिल्ली, 2008 पृ.1

iv टिक्कु रत्ना, इण्डो–पाक रिले" ान्स, ने" ानल पब्लि" िंग हाउस, न्यू देहली,1987, पृ.104

v नायर, सुकुमारन पी.,इण्डो–बांग्लादे" ा रिले" ान,ए.पी.एन. पब्लि" िंग कॉरपोरे" ान, नई दिल्ली,2008 पृ. 5–6

vi गुलाटी,जे.सी.,बांग्लादे" ा लिबरे" ान टु फण्डामेन्टलिजम, कॉमनवेल्थ पब्लि" ार्स, न्यू देहली, 1990, पृ. 42

vii दीक्षित,जे.एन., लिबरे" ान एण्ड बियोण्ड बांग्लादे" ा, कोनार्क पब्लि" ार्स प्राइवेट लिमिटेट न्यू देहली, 1999, पृ. 15–16

viii रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ. 107

ix हक मोहम्मद भाम" ूल, बांग्लादे" ा इन इन्टरने" ानल पॉलिटिक्स, पृ.–17

x खान अयूब, ए पॉलिटिकल आटोबायोग्राफो, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 2004, पृ. 36

xi रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ. 121

xii चक्रवर्ती, एस.के., द इवोल्यू" ान ऑफ पॉलिटिक्स इन बांग्लादे" ा, 1947–78, ए" ोसिएट पब्लि" िंग हाउस, न्यू देहली, 1987 पृ.174

xiii रत्ना टिक्कू, इण्डो–पाक रिले" ान्स, पृ.–128

xiv भार्मा एस.आर., बांग्लादे" ा क्राइसिस एण्ड इण्डियन फोरन पॉलिसी, यंग ए" िया पब्लिके" ान्स, न्यू देहली, 2006, पृ. 67

xv दीक्षित जे.एन., लिबरे" ान एण्ड बियोण्ड बांग्लादे" ा, पृ. 38

xvi भार्मा एस.आर.,बाग्लादे" ा क्राइसिस एण्ड इण्डियन फोरेन पॉलिसी, पृ. 29

xvii सेन रंगलाल, पॉलिटिकल एलीट्स इन बांग्लादे" ा, यूनिवर्सिटी प्रेस लि.,ढाका, 1986 पृ. 276–278

xviii गुलाटी जे.सी., बांग्लादे" ा लिबरे" ान टु फण्डामेन्टलिज्म, पृ.–37

xix डाक्यूमेंट्स बांग्लादे" ा, वाल्यूम–द्वितीय, मिनस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, न्यू देहली, 1971, पृ.–646

xx